मौलाइल गाछक फूल

मौलाइल गाछक फूल

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

बेरमा/निर्मली

ISBN : 978-93-87675-27-8

दाम : 350/-

पहिल संस्करण : 2009
पाँचम संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली, जिला- सुपौल, बिहार : 847452

MAULAYAL GACHHAK PHOOL

A Maithili Novel by Sh. Jagdish Prasad Mandal

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ



एकसत्तैर-

अप्पन बात

जहिया एम.ए.क विद्यार्थी रही तहिए नोकरीसँ विराग भऽ गेल। आठ बीघा जमीन रहए। खेतीसँ जीवन-यापन करैक बिसवास भऽ गेल। बिनु गार्जनक–पुरुष गार्जनक–परिवार 1960 इस्वीमे भऽ गेल।

पितेक अमलदारीसँ दू भाँइ पिसियौत रहै छला। तत्काल गार्जनी हुनके दुनू भाँइपर छेलैन। कोसीक उपद्रवसँ भागल पीसा बेरमे माने सासुरेमे रहि गेल रहैथ।

पिताक मृत्युक समय तीन बर्खक हम आ छह बर्खक जेठ भाय छला। पिसियौत भाए 1960 इस्वीमे अपन गाम 'हरिनाही' चलि गेला। दुनू भाँइ, श्री कुलकुल मण्डल 1954 इस्वीमे आ हम 1957 इस्वीमे गामक स्कूलसँ निकैल अपर प्राइमरी स्कूल कछुबीमे नाओं लिखौने रही। 1960 इस्वीसँ परिवारक बोझ पड़ल। पुरुष विहीन भेनौं, माए ओहन परिवारक छेली जइ परिवारमे मामा 1942 इस्वीमे अंग्रेजक गोली खा चुकल छला, साहसी माए अपन गहना, जमीन बेच देल बच्चाकेँ पढ़बै खातिर।

पैंतीस साल धरि समाज सेवा केलाक पछाइत अपन हहरैत शरीर देखि किछु लिखै-पढ़ैक विचार जगल। 2002-4 इस्वीमे डॉ. तारानन्द 'वियोगी'जीक सम्पादनमे देशज पत्रिका निककल। 2005-6 पोथी हाथमे आएल। पढ़लौं। तइसँ पहिनहि किछु-किछु लिखब शुरू केने रही। फोनपर वियोगीजी सँ सम्पर्क भेल। मुदा ढीले-ढाल। जखन मधुबनी एला आ सामने-सामनी बैस गप्प भेल तखन काफी प्रेरित भेलौं। तइसँ पहिने पटनामे उमेशक माध्यमसँ किछु उपन्यास आ किछु कथा संग्रह ऊपरे-

झापड़े देखने रहैथ। पहिल भेँट तँए गप्पे करब जरूरी बुझलैन। सएह भेल। रहुआ (मधेपुर)मे 'सगर राति दीप जरय' (8.11.2008) कथा गोष्ठीमे भाग लइले कहलैन। ताधैर नइ जनैत रही। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक स्थानमे कार्यक्रम भेल। सिद्धपीठ। ओना, केतेक बेर राजनीतिक मंचपर रहुआमे बाजि चुकल छेलौं, कर्म क्षेत्र छल तँए कथा वचैमे संकोच नइ भेल। ओना, एकर दोसरो कारण छल। ओ कारण छल किनको चिन्हैत नै रहिऐन। भिनसरु पहर डॉ. अशोक अविचलजी सँ पुरना चिन्हारेक नवीकरण भेल।

गाड़ी दुआरे लग रहितो पाछू गेलौं। कथा पाठ केलौं। सभ प्रशंसा केलैन। डॉ. रमानन्द झा 'रमण'जी ओ कथा मांगि लेलैन। किछुए मासक उपरान्त 'घर बाहर' पत्रिकामे प्रकाशित केलैन। सिद्ध पुरुषक स्थानमे प्रतिष्ठा भेटल। डायरी-कलम भेटल। गमछा-पाग भेटल। लक्ष्मीनाथ गोसाँइक मुर्ति सेहो भेटल।

मैथिली साहित्यक लेल 'सगर राति दीप जरय' कथाकारक ट्रेनिंग कौलेज सदृश अछि। विद्वान कथाकार सबहक गाइड-लाइन। नव पीढ़ी-ले ऐसँ उपयोगी भऽ की सकैए...।

मौलाइल गाछक फूल 2004 इस्वीमे लिखल पहिल उपन्यास छी। अखन धरि पाँचटा उपन्यास आ किछु कथा, लघुकथा, नाटक सभ अछि। छपबैक जे मजबूरी बहुतो रचनाकारकेँ छैन से हमरो रहल। मुदा तइसँ लिखैक क्रम नै टुटल। 'भैंटक लावा' कथा सेहो दू-हजार चारिक पहिल कथा छी। ओइसँ पहिलुका कथादिक ठौर-ठेकान नइ अछि। घर बाहरमे भैंटक लावा आ बिसांढ़ छपल आ फेर मिथिला दर्शनमे 'चुनवाली' कथा पढ़िते अनेको बधाइ फोन आएल जेना- पञ्जीकार विद्यानन्द झाजीक। एकटा महत्वपूर्ण फोन श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक रहल। हिनकर फोन सुनिते जिनगीक ओहन चौबट्टी टपि गेलौं जे चौबीस घन्टाक खुशी मनमे आबि गेल। जहिना बाल्यकालमे हनुमान सूर्यकेँ

ग्रहण (बाल समय रवि भक्ष लियो) कऽ नेने छेला तद्सद्दश गजेन्द्रोजीक टीम छैन। नवयुवक सभ छैथ, हम तँ बेसी-सँ-बेसी यएह ने कहि सकै छिऐन जे हमरो औरदा लऽ अहीं सभ जीबू।

अन्तमे, तीनू भैंयो (सुरेश, उमेश, मिथिलेश) आ समाजोकेँ कहि दिअ चाहै छिऐन जे मिथिला अहाँक देश छी। ऐठामक माटि-पानिसँ लऽ कऽ साहित्य-कला धरिक विकास करब सबहक दायित्व छी।

ऐठाम एतबे। आगाँ, आगू...।

-जगदीश प्रसाद मण्डल

बेरमा, मधुबनी

एक

दू सालक रौदीक उपरान्तक अखाढ़। गरमीसँ जेहने दिन तेहने राति। भरि-भरि राति बिऐन हौंकि-हौंकि लोक सभ समय कटैत। सुतली रातिमे उठि-उठि पानि पीबए पड़ैत। भोर होइते घाम अपन उग्र रूप पकैड़ लइत। जहिना कियो केकरो मारैले लग पहुँच जाइत तहिना सुरुजो लग आबि गेला। रस्ता-पेराक माटि जमल सिमेन्ट जकाँ सक्कत भऽ गेल। चलै बेर पएर पिछड़ैत। इनार-पोखैरक पानि अपन अस्मिता बँचबैले पतालक रस्ता पकैड़ लेलक। दू सालसँ एक्को बुन्न पानि धरतीपर नै पड़ने धरतीक सुन्दरता धीरे-धीरे नष्ट हुअ लगल।

पानिक चलैत दुबि सभ पाण्डु रोगी जकाँ पीअर भऽ-भऽ परान तियागि रहल अछि। गाछ-पात बेदरंग भऽ गेल अछि। लताम, दारिम, नारिकेल इत्यादि अनेको तरहक फलक गाछ सुखि रहल अछि। आम-जामुन-गमहाइर-शीशो इत्यादि गाछक निच्चाँ पातक पथार लगि गेल।

दसे बजेसँ बाधमे लू चलए लगैत। नमहर-नमहर दराड़ि फाटि धरतीक रूपे बिगाड़ि देलक। की खाएब। की पीब। केना जीब। अपनामे सभ एक-दोसरासँ बतियाइत। घास-पानिक दुआरे मालो-जाल सुखि कऽ संठी सन भऽ गेल। अनधुन मरबो कएल। अनुकूल समय पाबि रोगो-बियाधि बुतगर भऽ गेल। माल-जालसँ लऽ कऽ लोको सबहक जान अवग्रहमे पड़ि गेल अछि।

खेती-बाड़ी चौपट्ट होइत देखि थारी-लोटा बन्हकी लगा-लगा लोक मोरंग, दिनाजपुर, ढाका भागए लगल। जएह दशा किसानक वएह दशा बोनिहारोक। कहिया इन्द्र भगवानक दया हेतैन, ऐ आशामे अनधुन कबुला-पाती लोक करए लगल।

तीन दिनसँ अनुपक घरमे चुल्हि नै पजरल। नल-दमयन्ती जकाँ दुनू परानी अनुप दुखक पहाड़क तरमे पड़ल एक-दोसराक मुँह तकैत। केकरो किछु

बजैक साहस नहि। बारह बर्खक बौएलाल बोरापर पड़ल माएकेँ कहलक- "माए, भूखे परान निकलल जाइए। पेटमे बगहा लगैए। आब नइ जीबौ।"

बेटाक बात सुनि दुनू परानी अनुपक आँखिमे नोर आबि गेल। मुँहक बोल बुताए लगलै। लगमे बैसल रधिया उठि कऽ डोल-लोटा लऽ इनार दिस विदा भेल।

इनारोक पानि निच्चाँ ससैर गेल छै, जइसँ डोलक उगहैनो छोट भऽ गेल। केतबो निहुरि-निहुरि रधिया पानि पेबए चाहैत, मुदा डोल पानिसँ ऊपरे! रधियाक मनमे एलै, जखन अधला होइबला रहै छै तखन अहिना कुसंयोग होइ छइ। बौएलाल नै बँचत! एक तँ पाँचटा सन्तानमे एकटा पिहुआ बँचल, सेहो आइ जाइए। हे भगवान! कोन जन्मक पापक बदला लइ छह..? इनारसँ डोल निकालि लहरेपर छोड़ि रधिया उगहैन जोड़ैले डोरी आनए आँगन आएल। रधियाक निराश मन देखि अनुप पुछलक- "की भेल?"

टुटल मने रधिया बाजल-

"की हएत! जखन दैवेक डाँग लगल अछि तखन की हएत। उगहैन छोट भऽ गेल तँए जोड़ैबला जौड़ी लइले एलौं।"

रधियाक बात सुनि अनुप घरक ओसारेक बनहन खोलि देलक। खड़ौआ जौड़ लऽ रधिया इनारपर जा उगहैन जोड़लक। उगहैन जोड़ि पानि भरलक। पानि भरि लोटामे लऽ रधिया आँगन आबि बौएलालकेँ पीबैले कहलक।

पड़ल बौएलालकेँ उठिए ने होइ। ओसारपर लोटा रखि रधिया बौएलालकेँ बाँहि पकैड़ उठा कऽ बैसौलक। अपने हाथे रधिया लोटासँ चुरुकमे पानि लऽ बौएलालक आँखि-मुँह पोछलक। बौएलालक देह थरथर कँपैत। बौएलालक थरथरी देखि रधियोकेँ थरथरी पैस गेल। लोटा उठा बौएलालक मुँहमे लगबए लगल आकि थरथराइत हाथसँ लोटा छुटि गेल, पानि बोरापर पसैर गेल। दुनू हाथे छाती पीटैत रधिया जोरसँ चिचिया उठल - "आब बौएलाल नै जीत! जइ घड़ी, जइ पहर अछि!"

रधियाक बोल सुनि अनुप जोरसँ कानए लगल। अनुपक कानब सुनि टोलक धियो-पुतो आ जनिजातियो एक्के-दुइए आबए लगल। सबहक मुँह

सुखाएले। के केकरा बोल-भरोस देत। सबहक एक्के गति। अनुपक कानब सुनि रूपनी अँगनेसँ कानैत दौगल आएल। रूपनी अनुपक ममियौत बहिन। रूपनी बौएलालकेँ देखि बाजल- "भैया, बौआकेँ परान छेबे करह। किए अनेरे दुनू परानी कानै छह। जाबे शरीरमे साँस रहतै ताबे जीबैक आशा। चुप हुअ!"

कहि रूपनी बौएलालकेँ समेट कोरामे बैसौलक। तरहत्थीसँ चाइन रगड़ए लगल। बौएलाल आँखि खोलि बाजल- "दीदी, भूखसँ पेटमे बगहा लगैए।"

बौएलालक बात सुनि रूपनी बाजल- "रोटी खेमे?"

"हँ।"

बौएलालक 'हँ' सुनि रधिया घरमे धएल फुलही लोटा–जे रधियाकेँ दुरागमनमे पिता देने रहैन–निकालि अनुपकेँ देलक। लोटा नेने अनुप दोकान दिस दौगल। लोटा बेच गहुम किनने आएल। अँगना अबिते रधिया हबड़-हबड़ चुल्हि पजाइर गहुम उलौलक। दुनू परानी जाँतमे गहुम पिसए लगल। एक रोटी - जोकर चिक्कस होइते रधिया समेट कऽ रोटी पकबए आबि गेल। बाँकी गहुम अनुप पिसए लगल।

रोटी पका रधिया बौएलाल लग लऽ गेल। अपनेसँ रोटी तोड़ि खाइक साहस बौएलालकेँ नहि। छाती दाबि-दाबि रधिया बौएलालकेँ रोटी खुआबए लगल। सौंसे रोटी बौएलाल खा लेलक। रोटी खाइत -खाइत बौएलालोकेँ हूबा जगलै। अपने हाथे लोटा उठा पानि पीलक। पानि पीबते हाफी भेलइ। भुइँएमे ओंघरा गेल।

जाँत लगक चिक्कस समेट रधिया चुल्हि लग आनि सूपमे सानए लगल। जांघपर पड़ल चिक्कस अनुप तौनीसँ झाड़ि, लोटा-डोल नेने इनार दिस बढ़ल। हाथ-पएर धोइ, लोटामे पानि लऽ आँगन आबि खाइले बैसल।

छिपलीमे रोटी आ नून-मेरचाइ नेने रधिया अनुपक आगूमे देलक। भुखे अनुपकेँ होइ जे सौंसे रोटी मोड़ि-सोड़ि कऽ एक्के बेर मुँहमे लऽ ली, मुदा से नै कऽ तोड़ि-तोड़ि खाए लगल। छिपलीक रोटी सठिते अनुप रधिया दिस देखए लगल मुदा तीनियेँटा रोटी पका रधिया चिक्कसक मुजेला कोठीपर रखि देलक। रधियाकेँ देखि अनुप चुपचाप दू लोटा पानि पीब उठि गेल।

दिन अछैते नथुआ दौगल आबि हँसैत अनुपकेँ कहलक-

“गिरहत काका बड़की पोखैर उराहथिन। काल्हिसँ हाथ लगतै। तोहूँ दुनू गोरे काज करए चलिहह।”

नथुआक बात सुनिते रधियाकेँ जेना अशर्फी भेट गेलै तहिना खुशी भऽ गेल। अनुपोक मुहसँ हँसी निकलल। अनुपक खुशी देखि नथुआ फेर बाजल-

“अपने मुसना काका मेटगीरी करत। वएह जन सबहक हाजरी बनौत।”

नथुआ, अनुप आ रधियाक बीच गप-सप्प होइते छल कि बिच्चेमे मुसनो धड़फड़ाएल आबि गेल। मुसना दिस देखि नथुआ बाजल-

“मुसनो काका तँ आबिए गेला। आब सभ गप फरिछा कऽ बुझबहक।”

मेटगीरी भेटलासँ मुसनाक मन तरे-तर गदगद होइत। ओना, कहियो मुसना मेटगीरी केने नहि, मुदा गामक बान्ह-सड़कमे मेट सबहक आमदनी आ रोब देखने, तँए खुशी। मने-मन सोचैत जे जेकरा मन हएत तेकरा जनमे रखब आ जेकरा मन नइ हएत तेकरा नइ रखब। ई तँ हमरे जुतिक काज रहत किने। जेकरा मन हएत ओकरा बेसियो कऽ हाजिरी बना देबइ। पावर तँ पावर होइए। जँ पावर भेटए आ ओकर उपयोग फाजिल करि कऽ नै करी तँ ओहेन पावरे लऽ कऽ की! जँ से नै करब तँ मुसना आ मेटमे अनतरे की हएत। लोक की बुझत..!

मुस्कियाइत मुसना अनुपकेँ कहलक-

“भैया, काल्हिसँ बड़की पोखैरमे काज चलतै, तोंहू चलिहह। दू सेर धान आ एक सेर मरुआ भरि दिनक बोइन हेतह। तेतेटा पोखैर अछि जे कहुना-कहुना रौदी खेपिए जेबह। सुनै छी जे आनो गामक जन सभ अबैले अछि मुदा ओकरा सभकेँ माटि नै काटए देबइ।”

मुसनाक बात सुनि बौएलाल फुरफुरा कऽ उठि बाजल-

“काका, हमरो गिनती कऽ लिहह। हमहूँ माटि काटए जेबह।”

“बेस बौआ, तीनू गोरे चलिहह। हमरे हाथक काज रहत। दुपहरमे भानस करैले भौजीकेँ पहिनहि छुट्टी दऽ देबइ।”

कहि मुसनो आ नथुओ चलि गेल।

दोसर दिन भोरे माने पोखैरमे हाथ लगैसँ पहिनहि चौगामाक जन सभ, कियो कोदारि-टाला तँ कियो पथिया-कोदारि लऽ पोखैरक महारपर पहुँच थहाथही करए लगल। मेला जकाँ लोकक करमान लगि गेल। जेते गामक जन तइसँ कए गुना बेसी आन गामक। जनक भीड़ देखि मुसनाक मनमे अहलदिली पैस गेल। तामसो आ डरोसँ देह थरथर कापए लगलै। मुसनाक मनमे उठलै- हमर बात के सुनत? माथपर दुनू हाथ लऽ बैस गेल। किछु फुरबे ने करइ। ठकमुड़ी लगि गेलइ। सौंसे पोखैर गौंआँ-सँ-अनगौंआँ धरि, जगह छेक-छेक कोदारि लगा टल्ला ठाढ़ केने। सोचैत-सोचैत मुसनाक मनमे एलै जे गिरहत काकाकेँ जा कऽ सभ बात कहिऐन। सएह केलक। उठि कऽ रमाकान्त बाबूसँ भेँट करए विदा भेल।

तैबीच गौंआँ-अनगौंआँ जनमे रक्का-टोकी शुरू भेल। अनगौंआँ सभ जोर-जोरसँ बजैत-

“कोनो भीख मंगैले एलौं। सुपत काज करब आ सुपत बोइन लेब। ”

तहिना गौंआँ जनसभ कहइ-

“हमरा गामक काज छी तँए हम सभ अपने करब।”

सुखेतक भुटकुमरा आ गामक सिंहेसरा एक्केठाम पोखैरक माटि दफानने। दुनूक बीच गारि-गरौवैल हुअ लगलै। सभ हल्ला करैत तँए केकरो बात कियो सुनबे ने करए। सभ अपने बजैमे बेहाल। गारि-गरौवैल करिते-करिते भुटकुमरो सिंहेसर दिस बढ़ल आ सिंहेसरो भुटकुमरा दिस। दुनूक बीच गारियो -गरौवैल होइत आ पकड़ो-पकड़ी भऽ गेल। एक-दोसरकेँ पटैक छातीपर बैसए चाहैत। दुनू बुतगर। पहिने तँ भुटकुमरे सिंहेसराकेँ पटकलक किएक तँ सिंहेसराक पएर घुच्चीमे पड़ि गेलै, जइसँ ओ धड़फड़ा कऽ खसि पड़ल। मुदा सिंहेसरो हारि नै मानलक। हिम्मत करि कऽ उठि भुटकुमरोकेँ छिटकी लगा खसौलक।

दरबज्जापर बैस रमाकान्त बाबू बखारीक धान-मड़ूआक हिसाब मिलबै छला। हलचलाएल मुसनाकेँ देखि रमाकान्त पुछलखिन। मुसनाक बोली साफ-साफ निकलबे ने करैत। मुदा तैयो मुसना कहए लगलैन-

“काका, तेते अनगौंआँ जन सभ आबि गेल अछि जे गौंआकेँ जगहे ने

हएत। केतबो मनाही केलिऐ कोइ मानैले तैयारे नै भेल। कनी अपनेसँ चलि कऽ देखियौ।”

कागत-कलम घरमे रखि रमाकान्त विदा भेला। आगू-आगू रमाकान्त आ पाछू-पाछू मुसना। पोखैरसँ फरिक्के रहैथ कि पोखैरमे हल्ला होइत सुनलखिन। मन चौंक गेलैन। मनमे हुअ लगलैन जे अनगौंआँ सभ बात मानत की नहि! अगर काज बन्न कऽ देब तँ गौंओक कमाइ मरत। जँ काज बन्न नै करब तँ अनगौंओ मानबे ने करत! ..विचित्र स्थितिमे रमाकान्त पड़ि गेला। निअरलाहा सभ गड़बड़ भऽ रहल छेलैन।

पोखैरक महारपर रमाकान्तकेँ अबिते चारूभरसँ जन सभ घेर लेलकैन। सभ हल्ला करैत जे जँ काज चलत तँ हमहूँ सभ खटब।

ततमतमे पड़ल रमाकान्त बाबू अनगौंआँ सभकेँ कहलखिन -

“देखू, रौदियाह समय अछि। सभ गाममे काजो अछि आ करौनिहारो छैथे। चलै चलू अहाँ सबहक संगे हमहूँ चलै छी आ हुनको सभकेँ कहबैन जे अपना-अपना गामक बोनिहारकेँ अपना-अपना गाममे काज दियौ।”

अनगौंआँ सभ अपन-अपन कोदारि, छिट्टा, टल्ला नेने विदा भेल। रमाकान्तो संगे विदा भेला।

किछु दूर बढ़िते रमाकान्त मुसनाकेँ इशारामे कहि देलखिन जे जखन आन गामक लोक निकैल जाएत तखन गौंआँ जनकेँ काजमे लगा दिहक। तैबीच कियो जा कऽ सिंहेसराक घरवालीकेँ कहि देलक जे पोखैरमे तोरा घरबलाकेँ ओंघरा-ओंघरा मारलकौ। घरबलाक मारिक नाओं सुनिते सिंहेसराक घरोवाली आ धियो-पुतो गामेपर सँ गरियबैत पोखैर दिस विदा भेल। मुदा तइसँ पहिनहि अनगौंआँ सभ चलि गेल छल। पो खैरमे मटि-कटिया शुरू भेल। तीनू गोरे अनुप एक्केठाम खत्ताक चेन्ह देलक। कोदारिसँ माटि काटि-काटि अनुप पथियामे भरैत आ रधिया दुनू माय-पुत माथपर लऽ लऽ महारपर फेकए। बारह बाजि गेल। रमाकान्त घुमि कऽ आबि पोखैरक पछबरिया महारपर ठाढ़ भऽ देखए लगला। नजैर पड़िते मुसना दौग कऽ रमाकान्त लग पहुँचल। मुसनाकेँ पहुँचते रमाकान्त आँगुरक इशारासँ बौएलालकेँ देखबैत पुछलखिन-

"ओ के छी। ओकरा साँझमे कहिहक भेँट करैले।"

कहि रमाकान्त घर दिसक रस्ता पकड़लैन। बारह बर्खक बौएलालक माटि उघब देखि सभकेँ छगुन्ता लगैत। जाबे दोसर कियो एक बेर माटि फेकैत ताबे बौएलाल तीन बेर फेक अबैत।

बौएलालक काज देखि अनुप मने-मन सोचए लगल जे बोनियातीसँ नीक ठिक्का होइतए। मुदा हमरे सोचलासँ की हएत...। ताबे मुसनो रमाकान्तकेँ अरियाति घुमि कऽ अनुप लग आबि कहलक-

"भैया, मालिक दुनू बापूतकेँ साँझमे भेँट करैले कहलखुन हेन।"

'मालिकक भेँट करब' सुनि अनुपक हृदयमे खुशीक हिलकोर उठए लगल। मुदा अपनाकेँ सम्हारि अनुप मुसनाकेँ कहलक-

"जखन मालिक भेँट करैले कहलैन तँ जरूर जाएब।"

सुरुज पच्छिम दिस एकोशिया भऽ गेला। घुमैत-फिरैत मुसना अनुप लग आबि रधियाकेँ कहलक-

"भौजी, अहाँ जाउ। भरि दिनक हाजरी बना देने छी। भानसोक बेर उनैह जाएत।"

रधिया आँगन विदा भेल। अनुप आ बौएलाल काज करिते रहल। चारि बजे सभ गोरे काज छोड़ि देलक। गामपर आबि अनुप दुनू बापूत नहा कऽ खेलक। कौल्हुके गहुमक चिक्कसक रोटी आ अरिकंचन पातक पतौरा बना-पका चटनी बनौने छल। खा कऽ तीनू गोरे–अनुप, बौएलाल आ रधिया–ओसारपर बैस गप-सप्प करए लगल। अनुप रधियाकेँ कहलक-

"भगवान बड़ीटा छथिन। सभपर हुनकर नजैर रहै छैन। देखियौ एहेन कहात् समयमे कोन चक्कर लगा देलैन।"

गप-सप्प करिते गोसाँइ डुमि गेल। झलफल होइते अनुप दुनू बापूत रमाकान्त ऐठाम विदा भेल। रस्तामे दुनू बापूतकेँ ढेरो तरहक विचार मनमे उठैत आ खतम होइत। ओना, दुनू बापूतक मन गदगद।

दरबज्जापर बैस रमाकान्त मुसनासँ जनक हिसाब करबैत रहैथ। मुसना

जनक गिनतियो केने आ नामो लिखने। मुदा अपन नाओं छुटल तँए हिसाब मिलबे ने करैत। अही घों-घाँमे दुनू गोरे लागल। तैबीच दुनू बापूत- अनुप पहुँचल। फरिक्केसँ अनुप दुनू हाथ जोड़ि रमाकान्तकेँ गोड़ लगि बिछानपर बैसल। बौएलालो गोड़ लगलकैन। बौएलालकेँ देखि रमाकान्त बिहुँसैत अनुपकेँ कहलखिन-

"अनुप, तोँ अपन ई बेटा हमरा दऽ दएह।"

मने-मन अनुप सोचए लगल जे ई की कहि देलैन! कनी काल गुम्म रहि अनुप बाजल-

"मालिक, बौएलाल की हमरेटा बेटा छी, समाजक छिऐ। जखैन अपनेकेँ जरूरत हएत लऽ लेब।"

अनुपक उत्तर सुनि सभ छगुन्तामेँ पड़ि गेला। मास्टर साहैब अनुपकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगलखिन। एकटा युवक जे दू दिन पहिने भाग्यक मारल आएल छल, ओहो आशा-निराशामे डुमि गेला। ओइ युवककेँ तीन बर्ख कृषि विज्ञानक पढ़ाइ पूरा भेल छेलैन, एक बर्ख बाँकी रहैन। अपन सभ खेत बेच बेमार पिताक इलाज करौलैन मुदा ठीक नइ भऽ मरि गेलखिन। कर्जा लऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलैन। खरचा दुआरे पढ़ाइयो छुटि गेलैन आ जीबैक कोनो उपैयो ने रहलैन।

जिनगीक कठिन मोड़पर आबि युवक निराश भऽ गेल छला। साल भरि पहिने बिआहो भऽ गेलैन। एक दिस बुढ़ माए आ स्त्रीक भार, दोसर दिस जीबैक कोनो रस्ता नहि। सोगसँ माइयोक देह दिने-दिन निच्चे-मुहेँ हहरल जाइत रहैन। रमाकान्त बाबूक उदार विचार सुनि ओ युवक आएल रहए।

सभ दिन रमाकान्त चारि बजे पिसुआ भाँग पीबै छैथ। दोसर-तेसर साँझ होइत-होइत रमाकान्तकेँ भाँगक निशाँ चढ़ि जाइ छैन। भाँगक आदत रमाकान्तकेँ पितासँ लागल छेलैन।

रमाकान्तक पिता न्यायशास्त्रक विद्वान। ओना, गाममे कम्मे-सम्म रहै छला, बेसी काल बाहरे-बाहर। हुनके प्रभाव रमाकान्तक ऊपर। तँए रमाकान्त जेहने इमानदार तेहने उदार विचारक सेहो। पोखैरक चर्चा करैत रमाकान्त

मुसनाकेँ कहलखिन- “काल्हिसँ बौएलालकेँ दोबर बोइन दिहक।”

‘दोबर बोइन’ सुनि मुसना गुम्म भऽ गेल। कनी कालक पछाइत बाजल-

“मालिक, एक गोरेकेँ बोइन बढ़ेबै ते दोसरो-तेसरो जन मांगत। ऐसँ झंझट शुरू भऽ जाएत। झंझट भेने काजो बन्न भऽ जाएत।”

काज बन्न होइक बात सुनि रमाकान्त उत्तेजित होइत बजला-

“काज किए बन्न हएत! जे जेतेक काज करत ओकरा ओते बोइन देबइ।”

रमाकान्तक विचारकेँ सभ मुड़ी डोला समर्थन कऽ देलकैन। समर्थन देखि गदगद होइत रमाकान्त फेर बजला-

“अखन बौएलालकेँ बोइन बढ़ेलौं, बादमे दू बीघा खेतो देबइ। मास्टर साहैब, अहाँ राति-के बौएलालकेँ पढ़ा दियौ। सिलेट-किताबक खरच हम देबइ।”

खेतक चर्चा सुनि मुसना रमाकान्तकेँ कहलकैन- “विपन्न तँ बौएलालेटा नहि, गाममे बहुतो अछि?”

मुसनाक प्रश्न सुनि रमाकान्तक हृदयमे सत्-जुगक हरिश्चन्द्र पैस गेलैन। उदार विचार, इमानमे गम्भीरता, मनुखक प्रति सिनेह, रमाकान्त बाबूक विवेककेँ घेर लेलकैन। अखन धरि ने सुदिखोर महाजनक चालि आ ने धन जमा करैबला जकाँ अमानवीय बेवहार प्रवेश केने छेलैन। नीक समाजमे जहिना धनकेँ जिनगी नइ बुझि, जिनगीक साधन मानि उपयोग कएल जाइए तहिना रमाकान्तोक परिवारमे रहलैन।

जखन रमाकान्तक पिता गाममे रहै छला आ कियो किछु मांगए अबैन तँ खाली हाथ किनको घुरए नै दइ छेलखिन, जे रमाकान्तो देखने। सदिखन पिता कहथिन जे जँ किनको ऐठाम पाहुन-परक अबैन आ ओ किछु मांगए अबैथ तँ जरूर देबैन। किएक तँ ओ गामक प्रतिष्ठा बँचाएब छी। गामक प्रतिष्ठा बेकतीगत नै सामूहिक होइत अछि। तैठाम जँ कियो सोचत जे गाम सबहक छिऐ हमरा ओइसँ कोन मतलब, ओ सोलहन्नी गलती हएत। गाममे अधिकतर लोक गरीब आ मुरुख अछि, ओ ऐ प्रतिष्ठाकेँ नइ बुझैए तँए जे बुझनिहार छैथ हुनकर ई खास दायित्व बनि जाइ छैन। ऐ धरतीपर जेतेक जीव-जन्तुसँ लऽ कऽ मनुख

धरि अछि, सभकेँ जीबैक अधिकार छइ। तँए, जे मनुख केकरो हक छिनए चाहैए ओ ऐ भूमिपर सभसँ पैघ पापी छी। जनकक राज मिथिला छिऐ तँए मिथिलावासीकेँ जनकक कएल रस्ताकेँ पकैड़ चलक चाही। जइसँ ओ प्रतिष्ठा सभदिन बरकरार रहत। ❑

शब्द संख्या : 2338

दू

सुखी-सम्पन्न रमाकान्त जेहने उदार तेहने इमानदार समाजमे बुझल जाइ छैथ। मरौसी जमीन तँ बेसी नहि मुदा पिताक अमलदारीमे जत्था बहुत भेलैन। पितो किनने तँ नहियेँ रहथिन मुदा पुरस्कार स्वरूप पैघ-पैघ दरबार सभसँ भेटल छेलैन। मधुकान्त अध्यात्म, वैयाकरण आ न्यायशास्त्रक विद्वान छला।

बच्चेसँ मधुकान्तक झूकाउ अध्ययन दिस देखि पिता बनारस पढ़ैले पठौलखिन। बनारसमे अध्ययन कऽ मधुकान्त तीन बर्ख काशीक एकटा न्यायशास्त्रक पण्डित ऐठाम अध्ययन केने रहैथ। अध्ययनोपरान्त मधुकान्त पूर्णरूपेण बदैल गेल रहैथ। अध्ययन-अध्यापनक असुविधा दुआरे गाममे मन नै लगैन। ने अपन मनोनुकूल लोक भेटैन आ ने क्रिया-कलापमे सामंजस होइन। तँए जिनगीक अधिक समय गामसँ बाहरे बितबैत रहैथ।

जेहने प्रतिष्ठा मधुकान्तकेँ अपना राज्यमे तेहने आनो-आनो राज्यमे रहैन। भारतीय चिन्तनकेँ बुनियादी ढंगसँ व्याख्या करब मधुकान्तक खास विशेषता रहैन। सामाजिक बेवस्थाक गुण-अवगुणक चर्च अनेको लेखमे उद्धृत केने छला, जे असुविधाक चलैत अप्रकाशिते रहलैन। तगमा, प्रशस्ति-पत्र टाँगि दरबज्जाक शोभा बढ़ौने छला। जखन गाममे रहै छला तखन सबहक ऐठाम जा-जा सामाजिक बेवस्थाक कुरीति बुझबथिन। खास कऽ कर्मकाण्डक। समाजमे सभ चाहैन। अपनो जिनगीक बात दोसरकेँ कहथिन आ दोसरोक जिनगीक अध्ययन करैत रहै छला।

छल-प्रपंचक मिसियो भरि गन्ध मधुकान्तक जिनगीकेँ नहि छुलकैन।

समाजमे मनुख केना मनुखक जिनगीमे बाधा बनि ठाढ़ अछि आ ओइसँ केना छुटकारा भेटतै, नीक-नहाँति मधुकान्त बुझथिन। सत्तैर जाड़ ऐ धरतीपर कटलैन।

सभ दिन चारि बजे रमाकान्त भाँग पीब, पान खा टहलैले निकैल दोसर साँझ धरि घुमि कऽ घरपर अबै छला। घरपर अबिते हाथ-पएर धोइ कऽ दरबज्जापर बैस दुनियाँ-दारीक गप-सप्प करै छला। टोल-पड़ोसक लोक एका-एकी आबि-आबि बैसए। रंग-बिरंगक गप-सप्पक संग चाहो-पान आ हँसियो-मजाक चलैत। मास्टर साहैब–हीरानन्द–आ युवक–शशि शेखर–सेहो टहैल-बुलि कऽ एला। चाह पीब रमाकान्त शशि शेखरकेँ पुछलखिन-

“बौआ, अहाँ की चाहै छी?”

मजबूरीक स्वरमे शशि शेखर कहलकैन-

“एहेन दल-दलमे हम फँसि गेल छी जे एकटा पएर निकालै छी तँ दोसर धँसि जाइए। ऐसँ केना निकलब?”

कृषि कौलेजमे प्रवेशक प्रतियोगितामे सफल होइते शशि शेखरकेँ सुखद भविसक ज्योति भेटलैन। बेटाक सफलता सुनि पिताक उत्साह हजार गुना बढ़ि गेलैन, जेते जिनगीमे कहियो नै भेल छेलैन। जहिना काँटक गाछमे अमर-फल[1] फड़ैए, गुलाबक फूल फुलाइए तहिना पछुआएल परिवारमे शशि शेखर भेला।

शशि शेखरक पिता मनमे अरोपि लेलैन जे बीत-बीत कऽ खेत किएक ने बीकि जाए मुदा बेटाकेँ कृषि वैज्ञानिक बना कऽ छोड़ब। शशि शेखरोक मनमे पैघ-पैघ अरमान आबए लगलैन। कृषि वैज्ञानिक होएब, नीक नोकरी भेटत, माए-बापक सिहन्ता कमा कऽ पूरा करब। सिरिफ परिवारेक नहि, जहाँ धरि समाजोक भऽ सकत सेवा करब। मुदा बिच्चेमे समय एहेन मोड़पर आनि देलकैन जे सभ अरमान हवामे उड़ि गेलैन। जहिना बीच धारमे नाह चलौनिहारक हाथसँ करूआरि छुटि गेलापर जहिना खेबनिहारक संग नाहपर सवार यात्रीकेँ होइत तहिना शशि शेखरोकेँ भेलैन। चारि सालक कोर्समे तीन साल पुरला पछाइत पिता दुखित पड़लखिन। चारिम सालक पढ़ाइ छोड़ि शशि शेखर पिताक सेवामे जुटि गेला। एक दिस पिताक इलाज तँ दोसर दिस

परिवारक बोझ पड़ि गेलैन। आमदनीक कोनो स्त्रोत नहि, मात्र खेतेटा। खेतो बहुत अधिक नहि। तहूमे अदहासँ बेसी बीकिए गेल छेलैन। शशिकेँ बचपनाक बुधि। जिनगी आ दुनियासँ भेँट नहि। छोट बुधिसँ पैघ समस्याक समाधाने नै होइ छेलैन। अन्तमे निराश भऽ खेत बेच-बेच परिवारो आ पितोक इलाज करबए लगला। बीत-बीत कऽ खेत बीकि गेलैन। जहन कि दुनू समस्या[2] बरकरारे रहलैन। पछाइत पितो मरि गेलखिन।

वेवश शशि कर्ज करिकऽ पिताक श्राद्ध-कर्म केलैन। दुनियाँमे केतौ इजोत देखबे नै करैथ। सौंसे दुनियाँ अन्हारे -अन्हार लगए लगलैन।

बेवस भेल शशि मने-मन सोचए लगला जे हम ट्यूशनो पढ़ा कऽ आगू पढ़ए चाहब मुदा परिवारक की दशा होएत। ओतेक तँ ट्यूशनोसँ नहि कमा सकै छी जे अपनो काज चलाएब आ परिवारो चला लेब। अधिक कमाइले अधिक समैयो लगबए पड़त जे सम्भव नइ अछि। अगर जँ सभटा समय ट्यूशनेमे लगा देब तखन अपने कखन पढ़ब आ क्लास केना करब? जहियासँ पिता मुइला तहियासँ माइयोक देह सोगसँ हहरले जा रहल छैन। एक तँ बुढ़ छैथ दोसर सोगसँ सोगाएल सेहो। मनुखमे जन्म लेलापर कियो माए-बापक सेवा नै करए तखन ओ मनुखे की। मनुखक मात्र नकल छी। हम से नै करब। चाहे दुनियाँक लोक नीक कहए वा अधला तेकर हमरा गम नइ अछि। डिग्री लऽ कऽ हम नीक नोकरी करब। नीक दरमाहा भेटत। जइसँ खाइ-पीबै, ओढ़ै-पहिरै आ रहैक सुविधा तँ भेटत, मुदा जिनगी तँ ओतबे-टा नइ अछि। जिनगी-ले ज्ञान, कर्म आ बेवहारक जरूरत सेहो होइए। जिनगी पाबि जँ मनुख प्रतिष्ठित नहि बनि सकल तँ ओ जिनगीए की। आइ जँ हम माएकेँ छोड़ि दिऐन आ हुनका जे कष्ट हेतैन ओइ कष्टक भागी के बनत? दिन-राति हुनका सेवाक जरूरत छैन, उठौनाइ-बैसोनाइसँ लऽ कऽ खुऔनाइ-पिऔनाइ धरि। हम सभ ओइ धरतीक सन्तान छी जैठाम श्रवणकुमार सन बेटा जन्म लऽ चुकल छैथ।

यएह विचार शशि शेखरक पढ़ाइ छोड़ौलकैन। दुनियाँमे कोनो सहारा नै देखि शशि रमाकान्त ऐठाम एला। अपन जीवनक सभ बात हीरानन्दकेँ कहलखिन।

शशिक बातसँ हीरानन्दक हृदय पघिल गेल छेलैन। हीरानन्द मने-मन सोचैत रहैथ जे जे नवयुवक देश सेवामे एकटा खुट्टाक काज करत ओ अपने नष्ट भऽ रहल अछि, तँए ओहेन युवककेँ सोंगर लगा ठाढ़ करैक जरूरत अछि। सोझमतिया रमाकान्त दोहरबैत शशिकेँ पुछलखिन- “नीक जकाँ अहाँक बात हम नइ बुझि सकलौं?”

बिच्चेमे मास्टर साहैब रमाकान्तकेँ बुझबैत बजला- “शशि महाग संकटमे फँसि गेल छैथ। हिनका अहींक मदैतक जरूरत छैन तखने ई उठि कऽ ठाढ़ हेता।”

मास्टर साहैबक बात सुनि धाँइ-दे रमाकान्त बजला- “अगर हमर मदैतसँ शशिकेँ कल्याण हेतैन तँ जरूर करबैन।”

रमाकान्तक अश्वासनसँ शशिक हृदयमे भोरक सुरुज देखि दिनक आशा जगलैन। शशिक मुहसँ हँसी फुटलैन। जिनगीक आमावश्या पूर्णिमामे बदलए लगलैन। गम्भीर भऽ हीरानन्द शशिकेँ कहलखिन- “शशि, चिन्ता छोड़ू। नव जिनगी दिस डेग उठाउ। ई कर्मभूमि छिऐ। ऐठाम कर्मनिष्ठे लोक मनुखक जिनगी पाबि सकैए।”

हीरानन्दक विचार सुनि शशि उठि कऽ ठाढ़ भऽ हुनक हाथ पकैड़ जिनगी भरिक मित्रताक व्रत लैत बजला-

“जहिना कोनो रोगाएल गाछकेँ माली तामि-कोरि पानि दऽ पुनः नव जिनगी दइए तहिना अहाँ दुनू गोरे हमरा देलौं। तइले हम ऋणी छी। जहाँ धरि भऽ सकत सेवा करैत रहब।”

शशिक विचार सुनिते रमाकान्तक हृदयमे कर्णक रूप सन्हिया गेलैन। खुशीसँ गदगद होइत बजला- “बौआ, हम तँ पढ़ल-लिखल नइ छी। पिताजी गाममे नै रहै छला तँए परिवार सम्हारए पड़ै छल। ओना, कोनो वस्तुक अभाव जिनगीमे ने पहिने भेल आ ने अखन अछि। जहिया पिताजी गाम अबै छला तहिया बुझा-बुझा कऽ कहै छला। अखनो मनमे वएह विचार अछि।”

रमाकान्तकेँ दूटा बेटा, दुनू डॉक्टरी पढ़ि मद्रासमे नोकरी करै छैन। कहियो काल दू-एक दिन-ले गाम अबै छैन। दुनू भाँइ मद्रासेमे बिआ हो कऽ नेने

छथिन। दुनू पुतोहुओ डॉक्टरे छथिन। एक परिवारमे चारि डॉक्टर , तँए आमदनियो नीक छैन। दस बर्खक नोकरीमे कमा कऽ ढेर लगा नेने छैथ। अपन तीन मन्जिला मकान मद्रासेमे बनौने छैथ। चारिटा गाड़ी सेहो रखने छैथ। अपन क्लिनिक सेहो बनौने छैथ। बेटा लग जाइक विचार रमाकान्त बहुत दिनसँ करै छैथ मुदा दुरस्तक दुआरे निआरिए कऽ रहि जाइ छैथ।

पुनः रमाकान्त बजला- "पोखैरोक काज सुढ़िआइए गेल अछि ओकरा सम्पन्न कऽ कऽ मद्रास जाएब। मद्राससँ एला पछाइत अहाँक सभ जोगार कऽ देब। ताधैर अहाँ पत्नियोँ आ माइयोकेँ अहीठाम लऽ अबियौन आ एतै रहू।"

बेरू पहर हीरानन्द आ शशि शेखर टहलैले निकलला। दरबज्जाक सोझे पोखैरक महारक निच्चाँ, उत्तर-पूब कोणमे एकटा भरिगर सरही आमक गाछ अछि। दुनू गोरे ओइ गाछक निच्चाँक दुबिपर बैस गप -सप्प करए लगला। हीरानन्द अपन खेरहा कहए लगलैन-

"मैट्रिक पास केलाक पछाइत मास्टरी-ले इन्टरभ्यू दइले गेलौं। जखन ओइठाम गेलौं आ देखलिऐ तँ बुझि पड़ल जे इन्टरभ्यू मात्र देखाबा अछि। मोल-जोल तेजीसँ चलैत रहइ। मुदा सोझे घुमियो जेनाइ उचित नइ बुझि रूकि गेलौं। मनमे आएल जे मोल-जोलक विरोध करी। संगी भँजियाबए लगलौं। मुदा मोल -जोलक पाछू सभ लागल। एक्को गोरे संग दइबला नहि, मनकेँ असथिर केलौं। फेर भेल जे विरोध कऽ हंगामा ठाढ़ कए दिऐ। मुदा दुनू पक्ष एक दिशाहे , सिरिफ हमहींटा कातमे। तामसे देह थरथर कँपैत छल। लाभ -हानिक हिसाब जोड़ी तँ हानियेँ बेसी बुझि पड़ल। मुदा मन तैयो मानैले तैयार नै हुअए। हुअए जे जे बहालीक ऊपरका सीढ़ीपर जे अछि ओकरा चारि धौल लगा दिऐ। दस दिन जहलेमे रहब। फेर हुअए जे जखन डिग्री आ योग्यता अछि तखन एहेन-एहेन नोकरी केतेको आएत जाएत। फेर हुअए जे हजारो नवयुवक देशक आजादी-ले खून बहौलैन। हमरा बुते एतबो ने हएत।

..समुद्रक लहैर जकाँ मनमे संकल्प-विकल्प उठैत आ शान्त होइत रहल। सभ कियो चलि गेल। हम असगरे रहि गेलौं। अचता -पचता कऽ विदा भेलौं। डेगे ने उठै छल मुदा तैयो घरपर एलौं। घरपर अबिते पत्नी बुझि गेली। मुदा

आशा जगबै दुआरे लोटामे पानि नेने आगू आबि कहलैन- "थाकि गेल हएब। हाथ-पएर धोइ लिअ, थाकैन कमि जाएत। जलखै नेने अबै छी।"

..जाबे हम पएर-हाथ धोलौं ताबे थारी नेने पत्नी पहुँचल छेली। पहिनहिसँ जलखैक ओरियान करि कऽ रखने रहैथ। जलखै खा, दरबज्जेक चौकीपर कुरता खोलि कऽ रखि देलिऐ आ बाँहिक सिरमा बना पड़ि रहलौं। पड़िते मनमे ढेरो रंगक विचार सभ आबए-जाए लगल। मुदा दू तरहक विचार सोझमे आबि गेल जेना ठाढ़ भऽ गेल। पहिल जे शिक्षकेक बहालीटा-मे घूसखोरी छै आकि सभ विभागमे अछि? आँखि उठा-उठा सभ दिस देखए लगलौं तँ बुझि पड़ल जे अहूसँ बेसी आन-आनमे अछि। जखन सभ विभागमे घूसखोरी अछि तखन देश आगू-मुहेँ केना ससरत? निच्चासँ ऊपर धरि एक्के रोग सगतैर पकड़ने अछि! ..मन औना गेल। औनाइत मनमे दोसर विचार उपकल। मनकेँ असथिर केलौं कि अनासुरती आएल - जहिना पुरबा-पछबा हवा धरतीसँ अकास धरि बहैए तहिना ई बेवस्थाक हवा छी। तँए एकरा बदलैक एक्केटा रस्ता अछि बेवस्था बदलब। मुदा बेवस्था बदलब छौरा-छौरीक खेल नइ छी। कठिन काज छी। बेवस्था सिरिफ लोकक चालिए-ढालि धरि सीमित नइ अछि। ओ अछि मनुखक चालि-ढालिसँ लऽ कऽ ओकर बुधि-विचार, संगे विवेक धरिमे। मनुखकेँ जेहेन बुधि रहै छै ओहने विचार मनमे अबै छै आ जेहेन विचार मनमे अबै छै तेहने ओ काज करैए। तँए जाधैर मनुखक बुधि नहि बदलत ताधैर ओकर क्रिया-कलाप नहि बदैल सकैए। जाधैर क्रिया-कलाप नहि बदलत ताधैर बेवस्था बदलब मात्र बौद्धिक व्यायाम हएत। तँए जरूरत अछि मनुखमे नव बुधिक सृजन कऽ नव क्रिया-कलाप पैदा करब। नव क्रिया-कलाप एलापर नव रस्ता बनत। नव रस्ता बनला बादे कियो नव स्थानपर पहुँचत। नव जगह पहुँचलापर मनुख मनुखक बराबरीमे औत, छोट-पैघ-धनीक-गरीब आ ऊँच-नीचक खाधि समतल हएत।

..तखन भक्क खुगल। भक्क खुजिते हाइ स्कूलक शिक्षक देवेन्द्र बाबू मोन पड़ला। देवेन्द्र बाबू, सदिखन छात्र सभकेँ कहथिन- "मनुखकेँ कखनो निराश नै हेबा चाहिऐ। जखने मनुखमे निराशा अबै छै तखने मृत्यु लग चलि अबै छइ। तँए सदिखन आशावान भऽ जिनगी बितेबाक चाहिऐ। कठिनसँ कठिन समय

किएक ने आबए मुदा विवेकक सहारा लऽ कऽ सदिछन आगू डेग उठबैत रहक चाहिऐ।”

..देवेन्द्र बाबूक विचार मोन पड़िते संकल्प लेलौं, जहन शिक्षक बनैले डेग उठेलौं तँ शिक्षक बनि कऽ रहब। चाहे जेते विघ्न -बाधा आगूमे उपस्थित हुअए। जखन देवेन्द्र बाबू कौलेजमे पढ़ैत रहैथ तखन आजादीक आन्दोलन देशमे उग्र रूप धेने छल। पाँच-सातटा संगीक संग देवेन्द्र बाबू पोस्ट ऑफिसमे आगि लगा देलखिन। पोस्ट-ऑफिस जरि गेलइ। तीन दिनक पछाइत हुनका पुलिस पकैड़ लेलकैन। मारबो केलकैन आ जहलो लऽ गेलैन। जहल जाइसँ पहिने कनी डरो होइ छेलैन। लोकक मुहेँ सुनने रहथिन जे जहलमे खाइले नै दइ छइ। ऊपरसँ दुनू साँझ मारबो करै छइ। मुदा जहलक भीतर गेलापर देखलखिन जे हजारो देशप्रेमी-क्रान्तिकारी जहलमे छैथ। हुनका सभ-ले जेहने घर तेहने जहल। एक बर्ख ओहो जहलमे रहला। ओइ बर्ख दिनमे ओ बहुत सिखलैन। जिनगीए बदैल गेलैन। आब देवेन्द्र बाबू सिरिफ अपने आ अपना परिवारेटा-ले नइ सोचै छैथ, बल्कि ओ बुझि गेला जे देशक अंग समाज आ समाजक अंग बेकती वा परिवार होइए। तँए, सभकेँ अपनासँ लऽ कऽ देश धरिक सेवा करैक चाहिऐ। जहलसँ निकैल बी.ए.क फार्म भरलैन। बी.ए. पास केलापर हाइ स्कूलक शिक्षक बनला।

हाइ स्कूलमे बहुतो शिक्षक छला मुदा हुनकर जिनगी भिन्न छेलैन। खानगी पढ़ौनीकेँ पाप बुझि किलासमे तेना पढ़बै छला जे विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ैक जरूरते ने रहै छेलइ। स्कूलक पजरेमे टटघर बना असगरे रहै छला। महिनामे एक दिन गाम जा बालो-बच्चाकेँ देखैथ आ दरमहो उठा परिवारमे दऽ अबथिन।”

चौकीपर हीरानन्द पड़ले रहैथ आकि एकटा अनठिया आदमी पहुँचला। ओ नै चिन्हलखिन। मुदा दरबज्जाक लाज रखैले आँगनसँ एक लोटा पानि आनि पएर धोइ कऽ बैसैले कहि आँगन जा पत्नीकेँ कहलखिन-

“एकटा अतिथि एला हेँ, तँए झब-दे चाह बनाउ।”

दरबज्जापर आबि हीरानन्द ओइ आदमीक नाओं -गाओं पुछलखिन।

नाओं-गाओं पुछि काजक गप उठैबते रहैथ कि आँगनसँ पत्नी हाथक इशारासँ चाह लऽ जाइले कहलकैन। गपकेँ विराम दैत हीरानन्द दुनू हाथमे चाहक गिलास लऽ दरबज्जापर आबि दहिना हाथक गिलास अतिथिकेँ देलखिन आ बामा हाथक गिलास दहिना हाथमे लऽ अपनो पीबए लगला। गप्पो चलैत आ चाहो पीबैत रहैथ तँए पीबैमे देरी लगलैन। चाह सठलो ने छेलैन कि आँगनसँ पत्नी जलखैक इशारा देलखिन। पत्नीक इशारा देखि हाथेक इशारासँ थोड़े काल बिलैम जाइले कहलखिन।

..चाह पीब लगले जलखै करब नीक नै होइए। हँ, चाह पीबैसँ पहिने जलखै नीक होइ छइ। चाह पीब पान खा दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला। अतिथिकेँ हीरानन्द पुछलखिन-

“केमहर-केमहर अहाँ एलौं?”

“एकटा बुढ़ हमरा गाममे छैथ। सामाजिक सम्बन्धे दादी हेती। बिधवा छैथ। बेटो नै छैन। हुनक विचार भेलैन जे बच्चा सभकेँ पढ़ैले एकटा स्कूल बनाबी। चारि बीघा खेत छैन। समाजोक सभ आग्रह केलकैन जे सम्पैत तँ राइ-छित्ती भइये जाएत, तइसँ नीक जे स्कूल बना दियौ। अखन ओ दू बीघा खेत स्कूलमे देथिन आ दू बीघा अपना-ले रखती। जखन दादी मरि जेती तखन चारू बीघा स्कूलेक हेतइ।”

धियानसँ अतिथिक बात सुनि मुस्कियाइत हीरानन्द बजला-

“बडड् नीक विचार छैन।”

“ओइ स्कूलकेँ चलबैले अहाँकेँ कहए अएलौं।”

“जरूर जाएब। राति एतै बीता लिअ। भोरे चलब।”

“कोसे भरि तँ अछि दोसर साँझ धरि पहुँच जाएब?”

“एते धड़फड़ाउ नहि, हमहूँ थाकल छी। भोरे चाह पीब दुनू गोरे चलब।”

हीरानन्दक आग्रह अतिथि मानि गेला। अँगनाक टाट लगसँ पत्नी दुनू गोरेक सभ बात सुनैत रहथिन।

दुनू गोरे तमाकुल खा लोटा लऽ मैदान दिस विदा भेला। घुमैत-फिरैत

साँझमे घरपर एला। घरपर आबि दरबज्जापर बैस दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला। भानस भेल, दुनू गोरे खा कऽ सुति रहला।

चारि बजिते दुनू गोरेक नीन टुटि गेलैन। जाबे पैखानासँ आबि दतमैन केलैन ताबे आरती[3] चाह बनौलैन। चाह पीबते रहैथ कि सुरुजक उदय भेल।

औझुका सुरुजमे एक विशेष रंगक आकर्षण तीनू गोरेकेँ बुझि पड़लैन। सुरुजक रोशनीमे विशेष आकर्षण छल आकि सबहक हृदयमे छेलैन..?

..आरतीक मनमे होइ छेलैन जे पति नोकरी करए जा रहल छैथ तँए विशेष आकर्षण। हीरानन्दक हृदयमे जिनगीक एक सीढ़ी बढ़ैक आकर्षण रहैन आ अतिथि-मटकन-क हृदयमे अपन बेटाक पढ़ैक आकर्षण।

चाह पीब हीरानन्द झोरामे धोती-तौनी लऽ दुनू गोरे गप-सप्प करैत विदा भेला। गप-सप्पक क्रममे बुझि पड़लैन जे स्कूल बनबैमे रमाकान्तक विशेष हाथ छैन। तँए गाम पहुँचते मटकनकेँ कहलखिन-

"पहिने रमाकान्तसँ भेँट कऽ लेबैन तखन दादी ऐठाम जाएब।"

दुनू गोरे रमाकान्त ऐठाम पहुँचला। साठि वर्षीय रमाकान्त गाइक नादिमे कुट्टी-सानी लगबैत रहैथ। दलानपर दुनू गोरेकेँ देखि हाँइ-हाँइ हाथ धोइ लग आबि, बैसैले कहलखिन। हीरानन्द चौकीपर बैसला मुदा मटकन ठाढ़े रहल। मटकनकेँ रमाकान्त कहलखिन- "तूँ आगू बढ़ि जाह। हम दुनू गोरे पाछूसँ अबै छी। जहन मास्टर साहैब दुआरपर एला तँ बिना जलखै करौने केना जाए देबैन..?"

मटकन आगू बढ़ि दादी लग पहुँच सभ समाचार सुनौलक। समाचार सुनि दादीक मन खुशीसँ नाचि उठलैन। मनमे हुअ लगलैन जे आब गामक बच्चा अन्हारसँ इजोत दिस बढ़त।

जलखै कऽ चाह पीब रमाकान्त आ हीरानन्द दादी ऐठाम विदा भेला। दादीक घर थोड़बे हटल। रस्तामे रमाकान्तक मनमे आबए लगलैन जे स्कूल तँ बेकतीगत संस्था नइ छी। सामाजिक छी। सामाजिक संस्थामे सबहक सहयोग हेबा चाही। धैनवाद भौजीकेँ दइ छिऐन जे अपन सभटा सम्पैत समाजकेँ दऽ

रहल छथिन। मुदा हमरो सबहक तँ किछु दायित्व बनैए। तँए अइले किछु करब जिम्मा भऽ जाइए। मास्टर साहैबक भोजन आ रहैक जोगार हम कऽ देबैन। दरमाहा रूपमे खेतक उपजा हेतैन आ समाजक सभ मिलि कऽ जँ स्कूलक घर बना दइ तँ सर्वोत्तम होएत। ..एते बात मनमे नचिते छेलैन कि दादी ऐठाम पहुँच गेला। दादीकेँ रमाकान्त भौजी कहै छथिन। किएक तँ सामाजिक सम्बन्धमे दादीक पतिसँ भैयारी रहैन। दादियो मास्टर साहैबक रस्ता तकै छेली। भौजी ऐठाम पहुँचते रमाकान्त मटकनकेँ कहलखिन- "मटकन, स्कूल गामक एक पैघ संस्था छी। तँए समाजो-लोककेँ खबर दहुन। सभ मिलि कऽ विचारि आगूक डेग उठाएब। ओना, भौजीक तियागक प्रशंसा जेते कएल जाए कम हएत। जइ सम्पैत-ले लोक नीच-सँ-नीच काज करैले उतैर जाइए ओइ सम्पैतक तियाग भौजी कऽ रहली अछि। जखन मास्टर साहैब आबिए गेल छैथ तखन हड़बड़ करैक जरूरत नहि। पहिने सौंसे गाममे सभकेँ कहि दहुन आ बेर -मे सभ कियो एकठाम बैस विचारि लेब।"

बेर टगि गेल। समाजक सभ एका-एकी आबए लगला। सबहक मनमे जिज्ञासा रहैन तँए सभ विशेष उत्सुक छला। सबहक बीचमे रमाकान्त बजला-

"समाजक सभ जनिते छी जे भौजी अपन सभटा सम्पैत बच्चा सभ-ले दऽ रहल छैथ। जइसँ हमरे अहाँक कल्याण हएत। मुदा हमरो अहाँक दायित्व बनैए जे हमहूँ सभ किछु भागीदार बनी। जाधैर हम जीबैत रहब ताधैर शिक्षकक रहैक आ भोजनक प्रबन्ध करैत रहबैन। अहाँ सभ स्कूलक घर बना दियौ।"

रमाकान्तक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन कऽ देलखिन। मुस्कियाइत हीरानन्द बजला- "घर बनैमे किछु समय लगत, तैबीच अहाँ सभ अपन-अपन बच्चाकेँ पठाउ। हम पढ़ाइ शुरू कऽ देब।"

मास्टरो साहैबक विचारकेँ सभ थोपड़ी बजा समर्थन कऽ देलकैन। थोपड़ी बन्न होइते दुखिया ठाढ़ भऽ अपन विचार रखैत बाजए लगल -

"खेती करैले केतए-सँ ओते हर-जन अनता। जेते बोनिहार छी सभ मिलि कऽ खेती कऽ देबैन। किएक तँ जहिना मास्टर साहैब हमरा सबहक सेवा करता तहिना तँ हमहूँ सभ मिलि कऽ हुनकर सेवा करबैन।" ❑ शब्द संख्या : 2694

तीन

छह माससँ सोनेलालक स्त्री अस्सक छथिन। परोपट्टाक डॉक्टर, बैद, हकीम आ ओझा-गुनी थाकि गेल मुदा सुगियाक रोग एक्कैसे होइत गेलै जे उन्नैस नइ भेल। फेदरैत-फेदरैतमे सोनेलाल पड़ल। दिन-राति एक्को क्षण मन चैन नहि। कखनो डॉक्टर ऐठाम तँ कखनो दबाइ आनए बजार दौड़ैत रहला। कखनो बच्चा-ले दूध आनए जाथि तँ कखनो माल-जालकेँ खाइ-पीबैले दइ छला। अपन खाइयो-पीबैक सुधि नै रहलैन। कखनो मनतरियाकेँ बजा अनैथ, तँ कखनो साँढ़-पाराकेँ रोमैले खेत जाइ छला। स्त्री मरैक ओते चिन्ता नहि जेते तीन बेटीपर सँ भेल चारिम बेटाक रहैन। कोरैले बेटा जनमै काल सुगियाकेँ दुख पकैड़ लेलकैन। बच्चा जनमै काल तेहेन समय भऽ गेल छेलै जे सोनेलाल डॉक्टर ऐठाम नै जा सकला। एक तँ जाड़क मास, दोसर अनहरिया राति। कनी-कनी पछिया हवा सिहकैत। बर्खाक बुन्न जकाँ टप-टप गाछ सभपर सँ पालाक बुन्न खसैत। समय देखि सोनेलाल बेवस भऽ गेला। पल्हैनक घर लगमे रहितो बजबए गेल नहि भेलैन। डरो होइत रहैन जे हम ओमहर जाइ आ एमहर हिनका किछु भऽ जाइन। गुप-गुप अन्हार। हाथ-हाथ नइ सुझैत। विचित्र संकटमे सोनेलाल पड़ि गेल छला।

जहियासँ बच्चाक जनम भेलै आ स्त्री बिमार पड़लैन, तहियासँ सोनेलालक कोनो दशा बाँकी नै रहलैन। मुदा सोनेलालो हिम्मत नै हारला। जे कियो जे दबाइ वा प्रतिकारक कोनो वस्तुक नाओं कहैन ओ आनि सोनेलाल सुगियाकेँ देथिन। अन्तमे पाँच कट्ठा खेत पाँच हजारमे भरना लगा लहेरियासराय जाइक विचार कऽ लेलैन। बच्चो सभ छोट-छोट तँए घरो आ बाहरो सम्हारैले आदमीक जरूरत भेलैन। घर सम्हारैले सारि आ लहेरियासराय जाइले बहिनकेँ बजौलैन। स्त्रीक दूध सुखि गेलैन तँए बच्चाकेँ बकरीक दूध उठौना केने छला। बहिनक छोटका बच्चा नमहर भऽ गेल छेलै तँए ओकरो दूध सुखि गेल। मुदा बच्चाक दशा देखि बहिन मौसरी दालिक झोड़ो पीबए लगल आ बच्चोकेँ छाती

चटबए लगल, जइसँ कनी-कनी दूध पोनगए लगलै।

लहेरियासराय जाइक तैयारीमे सोनेलाल लगि गेला। मालक घरमे टाँगल खाटकेँ उताइर झोल-झाल झाड़ए लगला। खाटक झोलो साफ केलैन आ केतौ-केतौ जे जौड़ टुटल रहै ओकरो जोड़ि-जोड़ि बन्हलैथ। बहिनकेँ सोनेलाल कहलखिन- “दाइ, नुआ बिस्तर आइए खिंच लएह, भोरके गाड़ी पकैड़ कऽ चलैक छह। दस दिन-जोकर चाउरो-दालि लैये लेब। चाउर तँ कोठीएमे छह, खाली दालि दर्ड़रए पड़तह। सभ ओरियान आइए कऽ कऽ रखि लएह।”

बहिन कहलकैन-

“भैया, तोहर कोन-कोन कपड़ा साफ कऽ देबह?”

“दाइ, एक जोड़ धोती, अँगा आ चद्दैर हम्मर आ तूँ अपनो कपड़ा खिंच लीहह। अखन तँ एकटा धोती पहिरनहि छी। अलगन्नीपर धोती छह, ओकरा अखने खिंच दहक जइसँ नहाइ बेर तकमे सुखि जाएत। नहा कऽ ओकरा पहिर लेब आ पहिरलहा धोतीकेँ खिंच लेब।”

सोनेलालक सारि सेहो लगेमे ठाढ़। सारिकेँ कहलखिन-

“अहाँ दुआर-दरबज्जासँ केतौ बाहर नै जाएब। अँगने-घरमे बच्चो सभकेँ रखब आ मालो-जालकेँ खाइ-पीबैले देबइ। समय साल खराप अछि, तोहूमे ऐ गाममे देखिते छिऐ जे नव-कबरिया छौरा सभ भाँग-गाँजा पीब लेत आ अनेरो लोककेँ गरियबैत रहत। जँ कियो उकट्ठ कऽ दिअए।”

बहिन कोठीसँ मौसरी आ चाउर निकालि अँगनेमे बिछानपर सुखैले देलक। नवकुटुए चाउर तँए सूरा-फाड़ा नहियेँ लगल छेलइ। बहिन कपड़ा खिंचए गेल आ सारि मौसरी दर्ड़ए लगली। सोनेलाल खाट ठीक कऽ दूटा बरहा दुनू भागक पाइसमे बन्हलैन। कपड़ा खिंच बहि न सोनेलालकेँ पुछलकैन-

“भैया, केते चाउर-दालि लऽ जेबहक?”

“दाइ, दुइए गोरे खेनिहार रहब ने, तइ हिसाबसँ चाउरो आ दालियो लऽ लेब। तीमन-तरकारी ओतै किनब।”

बहिन- “भैया, नून तँ ओतौ कीनि लेब मुदा मिरचाइ, हरदी आ करुतेल

एतैसँ नेने जाएब। एकटा थारी, एकटा लोटा आ दुनू छोटकी डेकची सेहो लैये लेब। डेकचीए-मे सभ समान लऽ लेब, किएक तँ फुट-फुट कऽ लेलासँ अनेरे नमहर मोटरी भऽ जाएत। खाइयोक चीज-वौस रहत आ लत्तो-कपड़ा रहत मुदा तैयो मोटरी नम्हरे भऽ जाएत।”

सोनेलाल-

“मोटरी नम्हरे हएत तँ की करबै। जखन गाड़ामे ढोल पड़ल अछि तखन तँ बजबै पड़त किने।”

लहेरियासराय जाइक तैयारी करैत बहिन मने-मन सोचैत जे भगवान भारी विपैतमे भैयाकेँ फँसा देलखिन। जँ कहीं भौजी मरि जेतै तँ भैया फटो - फन्नमे पड़ि जाएत। असगरे की करत। बच्चो सभ लिधुरिए छइ। केना खेती सम्हारत, धिया-पुताकेँ देखत आकि माल-जालकेँ देखत! हे भगवान! एहेन विपैत सात-घर मुद्दैयोकेँ नै दिहक। हमहीं की करबै। हमहूँ तँ असगरूए छी। हमरो चारिटा धिया-पुता आ माल-जाल अछि। छी ऐठीम आ मन टाँगल अछि गामपर। मुदा एहेन बेरमे जँ भैयोकेँ नै देखबै तँ लोक की कहत। लोके की कहत, अपने मनमे केहेन लगत..!

साँझ पड़िते सोनेलाल टीशन जाइले दूटा जन ताकए गेला। ओना तँ अपनो दियाद-वाद छैन मुदा बेरपर केकर के होइ छइ। अचताइत-पचताइत सोनेलाल फुद्दिया ऐठाम पहुँचला। फुद्दियाक जेहने नाओं तेहने काज। सोनेलालकेँ देखिते पुछलकैन-

“केमहर-केमहर एलह, भाय?”

“तोरेसँ काज अछि।”

“की?”

“काल्हि, भोरका गाड़ी पकड़ब। रेखिया माएकेँ लहेरियासराय लऽ जेबइ। अपनेसँ चलैयो-फिरैवाली ने अछि, खाटपर लऽ जाए पड़त। तँए दू गोरेक काज अछि।”

फुद्दिया बाजल-

“तोरा जँ हमर खूनक काज हेतह तँ हम सेहो देबह। तोहर उपकार हम

जिनगी भरि नै बिसरब। हमरा ओहिना मोन अछि जे बेटी विदागरी करैले तीन दिनसँ जमाए बैसल रहैथ आ कपड़ा दुआरे विदागरी नै करिऐ। मगर जहिना आबि कऽ तोरा कहलियह तहिना तोहूँ रूपैआ निकालि कऽ देने रहह। एहेन उपकार हम बिसैर जाएब।"

सोनेलाल-

"समाजमे अहिना सबहक काज सभकेँ होइ छै आ होइत रहतै। जँए तोरापर भरोस छल तँए ने एलौं। भोरेमे गाड़ी छइ। गाड़ी अबैसँ एक घन्टा पहिने घरपर सँ विदा हएब।"

"बड़ बढ़ियाँ, चारिए बजेमे हमरा सभ दिन नीन टुटि जाइए। हम दुनू भाँइ चलि एबह। तोहूँ अपन तैयारीमे रहिहह। भऽ सकैए जे कहीं नीन नै टुटए तँए एक लपकन चलि अबिहह।"

फुद्दी ऐठामसँ आबि सोनेलाल बहिनकेँ कहलखिन-

"दाइ, सभ चीज एकठीन सेरिया कऽ रखि लएह, नहि तँ जाइ काल हड़बड़मे छुटि जेतह।"

सोनेलालक बात सुनि बहिन मने-मन सोचए लगल जे कोनो चीज छुटि तँ ने गेल। गुनधुन करैत बाजल-

"भैया, एक बेर फेरसँ सभ चीजक नाओं कहि दएह। अखने मिला कऽ सेरिया लेब।"

दुनू भाए-बहिन एक-एक करि कऽ सभ वस्तुक नाओं लेलैन। सभ वस्तु देखि सोनेलाल बहिनकेँ कहलखिन-

"दाइ, चारि बजे उठैक अछि जँ भानस भऽ गेलह तँ अखने खाइले दऽ दएह।"

हाथ-पएर धोइ कऽ सोनेलाल खाइले बैसला। चिन्तित मन, तँए खाएले ने होनि मुदा तैयो जी-जाँति कऽ कहुना-कहुना चारि कौर खेलैथ। खा कऽ मालऽ घर गेला। माल-जालकेँ खाइले दऽ आबि कऽ सुति रहला। बहिनो खा कऽ बच्चाकेँ छाती लगा सुति रहल। सुतले-सुतल बहिन भौजाइकेँ पुछलक-

"भौजी, मन नीक अछि किने?"

"हँऽऽ।"

ओछाइनपर पड़ल सोनेलालकेँ नीने ने होइन। विचित्र द्वन्द्वमे पड़ल छला। एक दिस भोरे उठै दुआरे सुतए चाहैथ तँ दोसर दिस पत्नीक चिन्ता नीनकेँ आबै ने दैन। कछ-मछ करैत सोनेलालकेँ केत्ता-रातिमे हाँफी भेलैन, नीन एलैन। मुदा लगले चहा कऽ उठि बहिनकेँ पुछलखिन-

"दाइ, भोर भऽ गेल?"

बहिनो जगले छल, बाजल- "भैया, अखने तँ खा कऽ कड़ देलौं हेन। लगले भोर केना भऽ जेतइ?"

तीन बजे दुनू भाँइ फुद्दिया आबि डेढ़ियापर सँ सोर पाड़लक-

"सोनेलाल भाय? हौ सोनेलाल भाय? अखन तक सुतले छह? उठह-उठह, भुरूकबा उगि गेलह!"

फुद्दियाक आवाज सुनि दुनू भाए-बहिन धड़फड़ा कऽ उठल। आँखि मिड़िते सोनेलाल बाहर निकैल फुद्दीकेँ कहलखिन-

"की कहियह, बड़ी रातिमे नीन भेल। भने तूँ आबि कऽ जगा देलह। हम चीज-वौस निकालै छी आ तूँ खाटकेँ सुढ़ियाबह।"

अन्हारक दुआरे बहिन दूटा डिबिया नेसलक। एकटा डिबिया ओसारक खुट्टा लग रखलक आ दोसर- घरमे। खाट निकालि फुद्दी पाइसमे बान्हल बरहाकेँ अजमा कऽ देखलक जे सक्कत अछि किने। दुनू कात पाइसमे बान्हल बरहाकेँ देखि फुद्दी सोनेलालकेँ कहलकैन-

"भाय, बरहा तँ ठीक अछि। बाँसक टोन कहाँ छह?"

बाँसक टोन घरक पँजरेमे राखल। टोनकेँ ओंगरीसँ देखबैत सोनेलाल कहलखिन-

"हइ-वैह छह।"

टोन आनि फुद्दी डिबियाक इजोतमे देखए लगल जे गिरह सभ छीलल छै कि नहि। छीलल छेलइ। खाटपर बिछबैले सोनेलाल एक पाँज पुआर आनि

बजला- “फुद्दी, तोरा अँटियबैक लूरि छह कनी पुआर सेरिया कऽ चौरस कऽ कऽ बिछा दहक।”

पुआरकेँ सेरिया, फुद्दी बाजल-

“भाइ, ऐपर बिछेबहक की?”

सोनेलाल घरसँ शतरंजी आ सिरमा आनि फुद्दीकेँ देलखिन। बिछान सेरिया फुद्दी बाजल- “भाय, रस्तामे कान्ह बदलै काल कहीं भौजी गिर-तिर ने पड़ैथ तँए पँजरोमे दुनू भागसँ डोरी बान्हि देबइ?”

फुद्दीक विचार सोनेलालकेँ जँचलैन। कनी गुम्म भऽ बजला-

“की कहियह फुद्दी, दुख पड़लापर मनो वौआ जाइ छइ। तोहूँ की अनाड़ी छह जे नइ बुझबहक। जे नीक बुझि पड़ह, से करह।”

खाटपर रोगीकेँ चढ़ा दुनू भाँइ फुद्दी कान्हपर उठौलक। कान्हपर उठैबते सोनेलालकेँ मोन पड़लैन, बजला-

“फुद्दी, घरमे तँ धिए-पुते रहत, कियो चेतन नहियेँ अछि। सारि सेहो आएल अछि, ओहो अनठीए अछि तँए तूँ राति-के एतै खैहह आ सुतिहह।”

‘बड़ बढ़ियाँ’ कहि फुद्दी आगू बढ़ल। चाउर-दालि आ बरतन-बासनक मोटरी माथपर लऽ सोनेलालो निकलला। बच्चाकेँ छाती लगौने बहिनो निकलली। डेढ़ियापर अबिते सुगिया खाटेपर सँ बजली- “कनी अँटैक जाउ।”

फुद्दी ठाढ़ भऽ पुछलकैन-

“किए रोकलौं?”

खाटेपर सँ सुगिया बजली- “हे साधु-गुरु, अगर निकेना घुमि कऽ आएब तँ पचास मुरतेक भनडारा करब।”

फुद्दी खाट उठा विदा भेल। रस्तामे कियो किछु ने बजैत। मने-मन सभ, सभ रंगक बात सोचैत। फुद्दी सोचैत जे भगवानो केहेन बेइमान अछि जे सोनेलाल भाय सन सुधा आदमीकेँ एहेन विपैत देलखिन।

सोनालाल सोचैथ जे तीन बेटीपर बेटा भेल, जँ घरवाली मरि जाएत तँ बेटो हाथसँ चलि जाएत। चुमौन जँ करबो करब तइसँ बेटाक कोन गारंटी। जँ

कहीं बेटीए भेल तखन तँ खनदानोक अन्त हएत आ जिनगी भरि अपनो बिआहे दानक बनर-फाँसमे पड़ल रहब...।

बहिन सोचैत जे जँ कहीं भौजी मरि जेती तँ जिनगी भरि भैयाकेँ दुखे - दुख होइत रहतै।

स्टेशन पहुँच सोनेलाल मोटरी रखि गाड़ीक भाँज लगबए गेला। टिकट कटैत देखि बुझि पड़लैन जे गाड़ी अबैमे लगिचा गेल अछि। हमहूँ टिकट कटाइए लइ छी। टिकट कटौलैन।

कनीए कालक पछाइत गाड़ी आएल। तीनू गोरे मिलि कऽ सुगियाकेँ गाड़ीमे चढ़ौलैन। सोनेलाल गाड़ीए-मे रहला। मोटरी उठा कऽ फुद्दी देलकैन। मोटरी रखि सोनेलाल बहिनक कोरासँ बच्चाकेँ अपना कोरामे लेलैन। बहिनो चढ़ल। गाड़ी खुजिते दुनू भाँइ फुद्दी खाट उठा घर दिस विदा भेल।

गाड़ी दरभंगा पहुँचल। छोटी लाइन दरभंगे तक चलैए। दू घ न्टाक पछाइत फेर घुमि कऽ गाड़ी निर्मलीए जाएत। गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगल। मगर सोनेलाल सबतूर बैसले रहला। मनमे कोनो हड़बड़ी नहियेँ रहैन जखन सभ यात्री उतरल तखन सोनेलाल सीटपर सँ उठि बहिनकेँ कहलखिन-

“दाइ! तूँ एतै रहह, हम कोनो सबारी भँजियौने अबै छी।”

कहि सोनेलाल गाड़ीसँ उतैर प्लेटफार्मक बाहर एकटा टेम्पू लग पहुँचला। ड्राइवर निच्चाँमे ठाढ़ भऽ पसिंजर सभकेँ तकै छल। सिरसिराइत सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन-

“भाय, हमरा डाकडर ऐठाम जेबाक अछि, चलबह?”

सोनेलालक बोलीसँ ड्राइवर बुझि गेल जे देहाती आदमी छी तँए एना बजला। मुदा सोनेलालक प्रति ड्राइवरक आकर्षण बढ़ि गेलैन। असथिरसँ पुछलखिन-

“रोगी कहाँ छैथ?”

“गाड़ीए-मे।”

“बजौने अबियौन।”

"अपने पएरे अबैवाली नै छैथ। पकैड़ कऽ आनए पड़त।"

गाड़ीकेँ सोझ कऽ ड्राइवर सोनेलालक संग प्लेटफार्मपर एला। गाड़ी लग पहुँच ड्राइवर रोगी आ समान देखि मने-मन विचारलैन जे एक आदमीक काज आरो पड़त। प्लेटफार्म दिस नजैर उठा कऽ हियाबए लगला। गाड़ी साफ करैले दू गोरेकेँ अबैत देखि सोर पाड़ैत बजला-

"भैया?"

भैया सुनि झाड़ूबला आँखि उठौलक तँ ड्राइवरकेँ देखलक। ड्राइवरकेँ देखिते लफैर कऽ लगमे आबि बजला-

"की?"

ड्राइवर बजला- "भाय, एकटा दुखित महिला ऐ कोठलीमे छैथ, हुनका उताइर कऽ टेम्पूमे बैसा दियौन।"

झाड़ू रखि दुनू झाड़ूओबला आ ड्राइवरो सुगियाकेँ उताइर टेम्पू दिस बढ़ला। सोनेलाल मोटरी लेलैन आ बहिन बच्चाकेँ कन्हा लगा विदा भेल। सुगियाकेँ चढ़ा कऽ झाड़ूबला गाड़ी साफ करैले घुमए लगल। दुनू झाड़ूबलाकेँ रोकि सोनेलाल एकटा दसटकही निकालि दिअ लगलखिन। रूपैआ देख, अधबेसू झाड़ूबला कहलकैन-

"भाय, हमहूँ रेलबेमे सरकारी नोकरी करै छी। दरमाहा पबै छी। अहाँक मदैत केलौं। अखन जइ मोसीबतमे अहाँ छी, ओइमे हमरा देहो आ रूपैओसँ मदैत करक चाही। मुदा गरीब छी, कहुना-कहुना कमा कऽ गुजर कऽ लइ छी। किएक तँ अहूँ बुझिते हेबै जे सभ दुख गरीबेकेँ होइ छइ। धनीक लोक सोनाक मुरूतकेँ खोआ-मलाइ चढ़ा धरम करैए। हमर भगवान यएह मरल-टुटल लोक छैथ। हम सेवा केलौं। भगवान करैथ जे हँसी-खुशीसँ अहाँ घर जाइ।"

झाड़ूबलाक बात सुनि सोनेलाल अचम्भित भऽ गेला जे जेकरासँ लोक छूत मानैए ओकर आत्मा केतेक पवित्र अछि!

टेम्पू आगू बढ़ल। थोड़े दूर गेलापर सोनेलाल ड्राइवरकेँ कहलखिन -

"डरेबर साहैब, हम अनभुआर छी। कहियो ऐठाम नै आएल छी। अहाँ

एतए रहै छी, सबटा बुझल-गमल अछि। तेहेन डाकडर लग चलू जे हमरा रोगीकेँ छुटि जाए।”

ड्राइवर कहलकैन-

“बड़ बढ़ियाँ।”

मने-मन ड्राइवर सोचए लगला- अस्पतालमे भरती करौनाइ नीक नै हेतैन। एक तँ अस्पतालमे बेवस्थो बढ़ियाँ नै छै, दोसर जेकरे लागि-भागि छै तेकरे सभकेँ सभ सुविधो भेटै छइ। तँए सभसँ बढ़ियाँ डॉक्टर बनर्जी लग लऽ चलिऐन। डॉक्टर बनर्जी रिटायर भऽ अपन घरो आ क्लिनिको बनौने छैथ। डॉक्टरो नीक आ मनुखो नीक छैथ।

बारह बाजि गेल। डॉक्टर बनर्जीक पहिल पाली आठ बजे भिनसरसँ बारह बजे तक आ दोसर पाली चारि बजेसँ सात बजे साँझ धरि होइ छैन। सभ रोगीकेँ देखि डॉक्टर बनर्जी डेरा जाइक तैयारी करिते रहैथ, टेम्पूकेँ ड्राइवर सोझे फाटकसँ भीतर ओसार लग लऽ गेल। टेम्पू देखि डॉक्टर बनर्जी फेर बैस रहला। टेम्पू रोकि ड्राइवर उतैर कऽ सोझे डॉक्टर बनर्जी लग जा कहलकैन- “डॉक्टर साहैब, रोगी अपनेसँ चलै-फिरैवाली नै छैथ, तँए पहिने एकटा डेरा दियौन।”

आँखिक इशारासँ डॉक्टर बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ कहलखिन। बगलेमे अपन डेरा रहैन। कम्पाउण्डर जा कऽ एकटा कोठरी खोलि कुँन्जी सोनेलालकेँ दऽ देलकैन। कम्पाउण्डर घुमि कऽ आबि, नोकरकेँ संग कऽ स्ट्रेचरपर सुगियाकेँ लऽ जा दुजनियाँ चौकीपर सुता देलकैन। स्ट्रेचर रखि कम्पाउण्डर डॉक्टर बनर्जीकेँ कहलकैन- “सभ बेवस्था कऽ देलिऐन।”

डॉक्टर बनर्जी आगू-आगू आ कम्पाउण्डर, ड्राइवर आ सोनेलाल पाछू-पाछू लगमे गेला। सुगियाकेँ देखिते डॉक्टरकेँ रोग परखमे आबि गेलैन, मुदा आरो मजगूती लेल किछ-किछ पुछए लगलखिन।

हतास मन सोनेलालक। मुँह सुखाएल। आँखि नोराएल। बहिनक आँखिसँ नोरक ठोप खसैत। डॉक्टर बनर्जी कम्पाउण्डरकेँ सूइ लगबैले कहलखिन। कम्पाउण्डर सूइ आनए गेल। सोनेलाल डॉक्टर बनर्जीकेँ पुछलखिन- “डागडर साहैब, रोगीक दुख छुटतै किने?”

सोनेलालक प्रश्न सुनि डॉक्टर बनर्जीक हृदय पघिल गेलैन। उत्साह दैत सोनेलालकेँ कहलखिन- "चौबीस घन्टाक भीतर रोगी टहलए-बुलए लगती। अखन एकटा सुइया दइ छिऐन। पाँच बजे तक सुतल रहती। उठेबैन नहि। अपने नीन टुटतैन। नीन टुटलापर कुर्ड़ा-आचमन करा चाह बिस्कुट देबैन।"

ताबे कम्पाउण्डर आबि सुगियाकेँ सूइ लगौलक। सूइ पड़िते सुगियाकेँ नीन आबि गेल। डॉक्टर बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन-

"आब अहाँ सभ खाउ-पीबू-गे।"

डॉक्टर चलि गेला। ड्राइवर सोनेलालकेँ किछ -किछ बुझबैत कहलखिन-

"पानिक कल बगलेमे अछि। भानस करैले चुल्हो अछिए। अपने भानस करब। बाहर चलू, दोकान देखा दइ छी। ऐसँ बाहर नै जाएब। लुच्चे-लम्पट बेसी अछि। जेबीसँ पाइ निकालि लेत, तँए जेतबे काज हुअए तेतबे पाइ मुट्ठीमे नेने जाएब आ सामान कीनि लेब। आब हम जाइ छी। ऐठाम कोनो चीजक डर नै करब। सभ भार डॉक्टर साहैबकेँ छैन।"

पाँच बजिते सुगिया आँखि खोलली। सुगियाक लगेमे सोनेलालो आ बच्चाकेँ कोरामे नेने बहिनो बैसल। आँखि खोलिते सुगिया सुतले सुतल बजली-

"किछु खाइक मन होइए।"

सुगियाक बात सुनिते सोनेलालकेँ मोन पड़लैन जे डॉक्टरो साहैब कहने रहैथ। उठि कऽ चाह-बिस्कुट आनि सुगिया लग रखलैन। कलपर सँ लोटामे पानि आनि कऽ कुर्ड़ा करैले देलखिन। बैसले-बैसल सुगिया कुर्ड़ा करि चाहेमे डुमा-डुमा बिस्कुट खेलैन। चाह-बिस्कुट खा मुँह पोछलैन। सुगियाकेँ मुँह पोछिते सोनेलाल पुछलखिन-

"मन केहेन लगैए?"

"कनी हल्लुक लगैए।"

सोनेलालो आ बहिनोक मनमे खुशी आएल। मने-मन बहिन भगवानकेँ कहए लगल- "हे भगवान, कहुना भौजीकेँ नीक कऽ दियौन!"

सुगियाकेँ सुधार हुअ लगल। तेसर दिनसँ बुलए-टहलए लगली। दिनमे दू

बेर डॉक्टरो साहैब आबि-आबि देखैत रहथिन। सभ तरहक तरद्दुत सोनेलाल करैले हरिदम तैयार।

दसम दिन सुगियाकेँ डॉक्टर साहैब छुट्टी दऽ देलखिन। सोनेलाल कम्पाउण्डरसँ सभ हिसाब केलैन। जेते हिसाब सोनेलालकेँ भेलैन तइसँ पाँच साए रूपैआ अधिक लऽ डॉक्टर साहैबक आगूमे रखि देलकैन। रूपैआ गनि डॉक्टर साहैब फजिलाहा पाँचो साए रूपैआ घुमबैत बजला-

“गनैमे पाँच साए बेसी आबि गेल। ई पाँचो साए रखि लिअ।”

डॉक्टर साहैबक बात सुनि सोनेलाल कहलकैन-

“गनैमे गलती नै भेल, पाँच साए अहाँकेँ खुशनामा दइ छी।”

‘खुशनामा’ सुनि डॉक्टर बनर्जी गुम्म भऽ गेला। मनमे एलैन, वेचाराक बगए-वाणि कहैए जे पैंच-उधार करि कऽ आएल हएत तखनो देखू उद्गार! हमरा कोन चीजक कमी अछि जे ऐ वेचाराक फाजिल पाइ छुबै? मोन पड़लैन, जमीनदारीक समैयक पुनाह...।

जमीनदार सभ सालमे एक बेर पुनाह करै छला। जमीनदारक कचहरीमे पुनाह होइ छेलइ। पुनाह होइसँ पनरह दिन पहिनहि रैयत सभकेँ जानकारी दऽ देल जाइ छल। जमीनदार दिससँ मोती-चूड़ बनौल जाइ छेलइ। एक रूपैआमे एक लड्डु देल जाइ छेलइ। रैयतोमे दू विचारक, एक ओ छल जेकरा खाली अन्नेक आमदनी छेलइ। ओइ तरहक रैयतक हालत कमजोर छेलइ। मगर दोसर तरहक जे रैयत होइ छल ओकरा अन्नक संग-संग नगदो आमदनी छेलइ। जेना कोनो-कोनो जातिकेँ दूध-दहीक, तँ कोनो-कोनो जातिकेँ तीमन-तरकारीक आ कोनो जातिकेँ पानक तँ कोनो-जातिकेँ छोट-छोट कौल्ह इत्यादि..। पुनाह धर्मसँ जोड़ल शब्द अछि। धार्मिक भावना सबहक मनमे रहै छेलै तँए एक-दोसरकेँ निच्चाँ देखबैले मने-मन प्रतियोगिता करै छल। एकटा लड्डुक दाम मोसकिलसँ दू पाइ होइत हेतइ। किएक तँ आठ अने चिन्नी आ रूपैआमे चारि सेर खेरही वा आन कोनो अन्न, जेकर लड्डु बनै छेलइ। प्रतियोगिता दू तरहक होइ छेलइ। पहिल, बेकती-विशेषमे आ दोसर, जाति-विशेषमे। लोक खूब खुशी रहै छल। गामे-गाम मालगुजारीसँ बेसी, पुनाहमे जमीनदार रूपैआ असुल कऽ लइ छला।

जइ समाजमे मालगुजारीक चलैत लोकक खेत निलाम होइ छेलै, ओइ समाजमे पुनाहक नाओंपर लूट सेहो चलै छेलइ। वएह बात डॉक्टर बनर्जीकेँ मोन पड़लैन। हँसैत डॉक्टर बनर्जी सोनेलालकेँ कहलखिन-

"अहाँ, खुशी भऽ ऐठामसँ जा रहल छी यएह हमर खुशनामा भेल। भगवान करैथ परिवार फड़ए-फुलए।"

तीनू गोरे गामक रस्ता धेलैन। बच्चाकेँ सुगिया कोरामे नेने आ बहिन बरतनक मोटरी माथपर नेने आ खालीए देहे सोनेलाल। सभ कियो दरभंगा स्टेशन आबि गाड़ी पकड़लैन।

अपना स्टेशनमे उतैर तीनू गोरे हँसी-खुशीसँ गाम दिसक रस्ता धेलैन। रेलबे कम्पाउण्डसँ निकैल सुगिया सोनेलालकेँ कहलकैन-

"दरभंगा जाइत काल पचास मुरते साधुक भनडारा कबुला केने रही। कबुला-पाती उधार नै रखक चाही। काल्हिखन ओहो कबुला पुराइए लेब।"

सोनेलालोक मन खुशी रहैन। चाउर-दालि घरेमे अछि। रूपैओ किछु उगरले अछि। मुस्कियाइत सुगियाकेँ कहलखिन-

"काल्हिए भनडारा नै सम्हरत। दही पौरैक अछि, हाटसँ तीमन-तरकारी, नून-तेल आनए पड़त। चारि-पाँच दिनमे भनडारा कए लेब। अखन दाइयो आएले अछि।"

दाइक नाओं सुनि बहिन बाजल-

"भैया, तेहने गड्ढमे पड़ि गेल छेलह तँए अपन सभ किछु छोड़ि कऽ छिअ। तूँ नइ बुझै छहक जे हमरो कियो दोसर करताइत नइए। काल्हि हम चलि जेबह।"

सोनेलालक मन गदगद रहबे करैन। जहिना चुल्हिपर चढ़ौल पानि देल बरतनमे निच्चासँ आगिक ताउ लगिते निचला पानि गर्म भऽ ऊपर-मुहेँ उठैए तहिना सोनेलालक मन खुशीसँ नचैत रहैन। स्टेशनसँ निकैल बजला-

"अहाँ दुनू गोरे ऐठाम बैसू। लगले हम चीज-वौस किनने अबै छी।"

सुगियो आ बहिनो, रस्ते कातमे आमक गाछक निच्चाँमे बैसली।

सोनेलाल स्टेशन दिस विदा भेला। स्टेशने कातमे आठ-दसटा दोकान छेलइ। एकटा दोकान माछक, दोसर मुरगी आ अण्डाक, एकटा सुधा दूधक, एकटा चाहक, एकटा पानक आ पान-छहटा तरकारीक।

..सोनेलालक मनमे एलैन जे पान-सात रंगक तरकारियो, दूधो आ राहैरक दालियो कीनियेँ लेब। किएक तँ छह माससँ ने भरि पेट अन्न खेलौं आ ने कहियो मन असथिर रहल। तँए आइ राति अपनो सभ परिवार आ फुद्दियो दुनू भाँइकेँ नौत दऽ खुआ देबइ।

रेलबेक कम्पाउण्डमे जे तरकारी, दूध, माछ इत्यादिक दोकान छेलै ओ स्थायी नहि। साधारण छपरी टाँगि-टाँगि दोकान चलबैत। कियो दोकानदार रेलबेसँ दोकानक पट्टो नहि बनौने। स्टेशनेक स्टाफ, दोकानदारकेँ दोकान लगबए देने छै, जइसँ बट्टीक बदला सभकेँ परिवार-जोकर तरकारी सभ दिन भऽ जाइ छइ। जहिया कहियो रेलबेक अफसरक आगमन होइत, तइसँ पहिनहि स्टाफ दोकानदार सभकेँ कहि दइ छेलइ। अपन-अपन छपरी सभ हटा लइ छल।

दोकान आ रेलबेक बीच मोड़पर ठाढ़ भऽ सोनेलाल सोचए लगला जे दोकानमे जे राहैरक दालि बिकाइए ओ अरबा रहैए। तँए दालिकेँ उलबए पड़त। घरमे तँ लोक पहिने राहैर उला लइए। बिनु उलौल राहैरक दालि तँ खेसारीए जकाँ होइए। मुदा उलौला पछाइत आमील देल राहैरक दालि तँ दालिए होइए! सभसँ नीक...।

लटखेना दोकान पहुँच सोनेलाल एक किलो राहैरक दालि आ अदहा किलो चिन्नी किनलैन। दुनूक दाम दऽ तरकारीबला लग आबि सात -आठ रंगक तरकारी सेहो किनलैन। तड़ै-जोकर गोलका भाँटा-भाँटिन, गंगाकातक बड़का परोर, हैदराबादी ओल टेबि कऽ किनलैन। दू किलो सुधा दूध सेहो लेलैन । सभ समानकेँ गमछामे बान्हि, हाथमे लटकौने घुमि कऽ सुगिया लग एला...।

गमछामे बान्हल समान देखि बहिन पुछलकैन-

“भैया, की सभ कीनि लेलहक?”

बहिनक मनमे भेलै जे धिया-पुता सभ-ले भरिसक लाइ-मुरही कीनि

लेलैन। मुदा मोटरी नमहर तँए पुछलकैन। बहिनक बात सुनि सोनेलाल हँसैत बाजला-

"दाइ, खाइ-पीबैक समान सभ किनलौं। आइ सभ परानी मिलि नीक -निकुत खाएब। वेचारा फुद्दियो, नोकर जकाँ राइत-के घरक ओगरबाही करैत हएत। तँए ओकरो दुनू भाँइकेँ नौत दऽ खुआ देबइ। तीमन -तरकारी, दूध आ दालि कीनि लेलौं। भानस करैले तोहूँ तीन गोरे [4] छेबे करह। एक्को दिन तँ तोरो सबहक मेजमानी हुअए। दाइ, जेते अनका भाइयोसँ सुख नै होइ छै, तइसँ बेसी तोरासँ भेल। तोहर उपकार जिनगीमे नै बिसरब। भगवान तोरा सन बहिन सभकेँ देथुन।"

सोनेलालक बात सुनि गदगद होइत बहिन उत्तर देलकैन-

"भैया, हम अपन काज केलौं। तोहर उपकार की केलियह। एहेन बेरपर जे तोरा नै देखितौं तँ हमरा सन बहिन केकरो रहिए कऽ की हेतइ ?"

ननैदक बात सुनि सुगिया पति दिस तकैत बजली- "दाइ तँ औगुताइए। कहैए जे काल्हि भोरे चलि जाएब। एकोटा धराउ घरमे साड़ियो ने अछि जे देबैन। बिना साड़ी देने केना जाए देबैन, केहेन हएत?"

भौजाइक बात सुनि मुस्कियाइत ननैद बाजल- "भौजी, चारू बेटा-बेटीक बिआहमे तँ हमरा चारि जोड़ साड़ी रखले अछि। एहेन बेरमे साड़ीक कोन काज छइ। अपने तँ भैया पैंच-उधार लऽ कऽ काज चलौलक। तैपर सँ हमरो-ले करजा करत। हमरा जँ दियौ चाहत तँ नइ लेबइ।"

घरपर अबिते परिवारसँ गाम धरि खुशीक बर्खा बरिसए लगल। तीनू बच्चा सुगियाक गरदैनमे लटपटा गेल। सुगिया बच्चाकेँ कोरामे लऽ लऽ मुँह चुमए लगल। जहिना जाड़क मासमे गाछ-बिरीछ पालाक मारिसँ ठिठुइर जाइए मुदा गरमी धबिते नव रूप धारण करैए तहिना सभकेँ भेलइ। छह मासक तबाही, सोग, निराश सोनेलालकेँ छोड़ि पड़ा गेल। पास-पड़ोसक जनिजाति सभ आबि-आबि सुगियाकेँ देखबो करैत आ बिमारीक समैयक खिस्सो सुनैत। एक्के-दुइए सौंसे अँगनासँ धियो-पुतोक आ जनिजातियोक भीड़ हटल। तीनू गोरे भानसक जोगारमे लगि गेली। केते दिनसँ सोनेलाल भरि इच्छा नहाएल नै

छला। साबुन लऽ कऽ नहाएले गेला।

भानस भेल। सभ कियो भरि मन खेलैन। खाइते सभकेँ ओंघी आबए लगलैन। सभ जा-जा कऽ सुति रहला।

पत्नीक संग सोनेलालकेँ लहेरियासराय जाइते गाममे चर्च चलैत। एक दिस जनिजाति सभ सोनेलालक बाहवाही करैत, तँ दोसर दिस मरदा-मरदीक बीच इलाजक खर्चाक चर्च चलैत।

सबेरे स्कूलमे छुट्टी दऽ खसल मने हीरानन्द चलि एला। हीरानन्दकेँ आएल देखि रमाकान्त पुछलखिन-

“सबेरे स्कूल बन्न कए देलिऐ?”

ओना, रमाकान्तोकेँ सोनेलालक सम्बन्धमे बुझल छेलैन मुदा जइ गम्भीरतासँ हीरानन्द सोचै छला ओइ गम्भीरतासँ ओ नै सोचने छला तँए मनमे कोनो तेहेन विचार नइ रहैन।

हीरानन्द उत्तर देलखिन-

“बच्चा सभकेँ पढ़बैमे मन नै लगै छल तँए छुट्टी दऽ देलिऐ।”

“किए नै पढ़बैमे मन लगै छल।”

चिन्तित हीरानन्द बजला-

“एक तँ बाढ़िक मारल वेचारा सोनेलाल तैपर सँ बिमारीक तेहेन चपेटमे पड़ि गेला जे कोनो कर्म बाँकी नै छैन। यएह बात मनमे घुरियाए लगल। पढ़बैमे एक्को रत्ती नीके ने लगैत रहए।”

सोनेलालक बात सुनिते रमाकान्तक मन मौलाए लगलैन। मौलाइत-मौलाइत जहिना हीरानन्दक मन रहैन तहिना भऽ गेलैन। पएरमे ठेँस लगलापर जहिना कियो मुँह-भरे खसैए जइसँ छातीमे चोट लगैत तहिना रमाकान्तक हृदयमे मनक चोट लगलासँ भेलैन। मुदा जोरसँ नहि, चुप्पेचाप कुहरए लगला। मनमे एलैन, जइ गाममे चारि-चारिटा डॉक्टर छैथ ओइ गामक लोक रोगसँ कुहरए ई केतेक दुखक बात छी। एहेन डॉक्टरकेँ लोक भगवान बुझि पुजैन से कहाँ धरि उचित छी..? जइ पढ़ल-लिखल लोककेँ अपना गामसँ सिनेह नहि,

अपन कुटुम्ब परिवार सर-समाजसँ सिनेह नहि, आ खाली अपने सुख-भोगक पाछू बेहाल रहता। हुनका अनेरे दाइ-माइ किए छठियार दिन छातीमे लगा जीबैक असिरवाद देलकैन। ..फेर मनमे एलैन, जहिना माल-जालकेँ डकहा बिमारी होइ छै तहिना तँ मनुखोकेँ चटपटिया बिमारी होइ छइ। जे छने-मे-छनाँक कऽ दइ छइ। चारिटा बेटा-पुतोहु डॉक्टर हमरे छैथ, जँ कहीं अपने कि महेन्द्रक माइएकेँ वएह चटपटिया बिमारी भऽ जाइन तँ की करता ओ सभ हमरा..?

रमाकान्तक मन घोर-घोर भऽ गेलैन। तेना सकदम भऽ गेला जेना बाके हरण भऽ गेलैन।

तीन दिनक पछाइत सोनेलाल भनडाराक कार्यक्रम बनौलैन। खाइ-पीबैक सभ ओरियान दिल खोलि कऽ केलैन। तुलसीफुलक अरबा चाउर, राहैरक दालि, एगारहटा तरकारी, तैसंग दही-चिन्नीक नीक बेवस्था केलैन।

गाममे दू पंथक साधू। पहिल पंथक महंथ रमापति दास आ दोसर पंथक गंगा दास। राम-जानकी मन्दिर रमापति दास बनौने छैथ। दुनू साँझ पूजा करै छैथ। मुदा गंगा दासकेँ से सभ नइ छैन। ओना, गामसँ लऽ कऽ आनो-आन गाममे सेवकान धरि दुनूकेँ छैन..!

सोनेलालक मनमे छल-प्रपंचक मिसियो भरि लसि नहि, तँए पच्चीस मुरते साधुक दल रमापति दासकेँ देलकैन आ पच्चीस मुरतेक दल गंगा दासकेँ। दल देला पछाइत सोनेलाल दुआर-दरबज्जा चिक्कन-चुनमुन करए लगला। भानस करैक बरतन सभ माँजि-मूजि तैयार केलैन। खाइले केराक पात काटि चिक्कनसँ धोइ कऽ रखलैन।

एक गाममे रहितो दुनू पंथक बीच अकास-पतालक अन्तर अछि। पहिल पंथमे ऊँच जातिक बोलबाला जखन कि दोसर पंथमे ऊँच जातिक कम मुदा निम्न जातिक बेसी। छूत-अछूतक कोनो भेद नहि। दिनुके समयमे भनडारा हएत।

दोसर पंथक साधु सभ सबेरे आबि चरण पखारि भजन शुरू केलैन। भजन शुरू होइते टोल-पड़ोसक जनिजातियो आ धियो-पुतो सभ आबए लगल।

सौंसे खरिहाँन भरि गेल। खरिहाँनेमे बैसारो केने रहैथ । तीनटा भजन समाप्त भेला पछाइत रमापति दास चेला सभकेँ संग केने पहुँचला। फरिक्केसँ दोसर पंथक साधुकेँ देखि रमापति दास मने-मन जरए लगला। मुदा क्रोधकेँ दाबि दरबज्जापर एला। दरबज्जापर अबिते रमापति दास सोनेलालकेँ कहलखिन-

"हमरा सबहक बैसार फूटमे करू।"

रमापति दासकेँ प्रणाम कऽ सोनेलाल दलान दिस इशारा दैत कहलकैन-

"अपने सभ दरबज्जेपर बैसियौ।"

सोनेलालक विचार सुनि रमापति दास मने-मन सोचए लगला जे जँ अखन दोसरठाम बैसार बनबैले कहबै तँ औगताइमे सम्भव नै हेतइ। जँ झगड़ा करै छी तँ केकरासँ करूँ। वेचारा घरवारी की करत। घरवारी-ले तँ जहिना हम सभ दल पाबि एलौं अछि, तहिना तँ ओहो सभ आएल अछि। तँए जेहने हम सभ तेहने ओहो सभ। अगर ओहो साधु सभसँ कहा-कही करै छी तँ दू धार्मिक पंथक बीच विवाद उठत। मुदा ऐठाम तँ भनडारा छी, पंथक नीक-अधलाक विवेचनक मंच नहि। जँ अपनाकेँ उन्नैस मानि लइ छी तखन तँ सोलहन्नी कायरता हएत..!

..विचित्र स्थितिमे रमापति दास पड़ि गेला। गुम्म-सुम्म भेल रमापति दास दरबज्जा आ खरिहाँनक बीच खुट्टा जकाँ ठाढ़ रहैथ। ने डेग आगू बढ़ैन आ ने पाछू। मनमे उठलैन- जेते गोरे हमरा संग आएल छैथ जँ हुनका सभसँ विचार पुछबैन आ ओ सभ हमरा मनक विपरीत विचार दैथ तखन की करब? आइ धरि तँ सेहो नै केलौं। करब उचितो नहि। गुरु-चेलाक अन्तर समाप्त भऽ जाएत। रमापति दासक मन औनाए लगलैन। चाइनपर पसेनाक रूप चमकलैन। ताबे कान्हपर रखनिहार हरमुनियाँबलाक कान्ह अगिया गेलै, ओ आगू बढ़ि ओसारक चौकीपर हरमुनियाँ रखि देलक। हरमुनियाँ रखैत देखि ढोलकियो ढोलक रखि देलक। अहिना एका-एकी सभ अपन-अपन कमण्डल-गिलास धरि रखि देलक। मुदा बैसल कियो नहि। तेकर कारण छेलै जे बिना चरण पखरबौने बैसब केना। आ जाबे गुरु महाराज नइ बैसता ताबे हम सभ केना बैसब।

..सभकेँ अपन-अपन सामान[5] रखैत देखि रमापति दासकेँ गर भेटलैन।

विक्षिप्त मने बजला- “जखन सबहक मोन अछि तखन किएक ने दरबज्जेपर बैसल जाए, घरवारियो तँ आदर करिते छैथ?”

एक दिस रमापति दासकेँ मन जरैत रहैन, दोसर ईहो खुशी होइत रहैन जे चरण पखरबाक स्वागतक संग घरवारी हमरे बेसी महत देलैन। सभ कियो चरण पखरबा कऽ बैस जाइ गेला।

बिढ़नी जकाँ सुगिया नाचैत। करवनो घर जा दही देखि अबैत, जे कहीं बिलाइ ने आबि कऽ खा लेलक। तँ लगले ओसारपर रखल सामान सभकेँ देखैत जे कौआ ने आबि कऽ छूता देलक। फेर लगले अँगनामे राखल टौकना, कराह आ बाल्टिनोकेँ देखैत जे धिया-पुता ने गन्दा कऽ दइ। तँ लगले आबि दलानक पाछूमे ठाढ़ भऽ टाटक भुरकी देने दरबज्जो दिस देखैत जे लोकसँ भरल दरबज्जा-खरिहाँन अछि, कहीं मारिए ने शुरू भऽ जाइ। सुगियाक मनमे अहलदिली पसि गेल। तहिना मगज परहक पसेना केशक तर देने गरदैनपर होइत सोनेलालक धोतीकेँ भिजबैत रहैन...।

भजन सुननिहारमे धिया-पुतासँ लऽ कऽ गामक स्त्री-पुरुष धरि बैसल। मोतिया-माए जे पचास बर्खक बुढ़ छैथ। भजन बन्न भेल देखि बुचाइ दासकेँ कहलखिन-

“हे यौ बुचाइ दास, बिना भजन गौने जे पङ्हैत करबै तँ पाप नै लिखत?”

मोतिया माइक करूआएल बात सुनि बुचाइ दास उत्तर देलखिन-

“बड़ी काल गाजा पीना भऽ गेल तँए कनी पीब लइ छी। तखन नाचो देखा देब आ कबीर साहैब की कहलखिन सेहो सुना देब। कनीए काल और छुट्टी दिअ। हुअ हौ रघुदास, जल्दी गुल दहक।”

बिना साजे बाजक, घुन-घुना कऽ गाबए लगला- “हटल रहियौ सन्तो बिलइया मारे मटकी...।”

बुचाइ दासक पाँति आ मुँहक चमकी देखि धियो-पुतो आ जनिजातियो सभ, खापैड़मे देल जनेरक लाबा जहिना भर-भरा कऽ फुटैए तहिना सभ हँसल।

दलानोमे आ खरिहाँनोमे भजन शुरू भेल। दोसर पंथक बैसारमे ढोलक, झालि, खौजरीक संग थोपड़ियो बाजए लगल। मुदा पहिल पंथ दिस पखौज,

झालर, हरमुनियाँक संग सितार बाजब शुरू भेल, संगे एक सूर एक लय आ एक तालमे भजनो आरम्भ भेल- “केशव! कही न जाए का कहिए..!”

मुदा दोसर पंथ दिस भजन तेते जोरसँ होइत जे पहिल पंथक भजन सुनाइए ने पड़ै छल। महंथ रमापति दास बाहर निकैल घुमबो करैथ आ भजनो सुनैथ। रमौथ भजनक आवाज दलानक घरसँ बाहर निकलबे ने करै छल। जइसँ रमापति दास तामसे माहुर भेल छला। मने-मन भनभनेबो करैथ। सोनेलालकेँ सोर पाड़ि कहलखिन- “ई कोन बखेरा ठाढ़ करबा देलिऐ?”

थरथराइत दुनू हाथ जोड़ि सोनेलाल उत्तर देलकैन -

“सरकार, हम अनाड़ी छी। नइ बुझलिऐ जे एना होइ छइ। जे भऽ गेलै से तँ भइये गेलइ। अपने तमसाइयौ नहि। जँ कनी गलतीए भऽ गेल तँ माफ कऽ दिअ। अपने समुद्र छिऐ। नीक-अधला पचबैक सामर्थ्य छै अपनेमे। अखन धरि भोजन बनबैक अहरियो ने खुनल गेल अछि, आदेश दियौ।”

तरैंग कऽ रमापति दास बजला-

“हमर जेते साधु छैथ ओ फुटेमे अहरियो खुनता आ भोजनो बनौता। तँए बरतनसँ लऽ कऽ चाउर-दालि, तरकारी धरि सभ किछु हमरा फुटा दिअ।”

‘बड़ बढ़ियाँ’ कहि सोनेलाल सभ किछु दू भाग कऽ देलकैन। चारि-चारि गोरे भानसक जोगारमे लगि गेला। दूटा अहरी, हटि-हटि कऽ खुनल गेल। सोनेलाल सभ बरतनो आ चाउरो-दालि आनि-आनि दुनू अहरी लग रखि देलकैन।

दलानक भजन बन्न भऽ गेल। मुदा खरिहाँनक भजन चलिते रहल। बुचाइ दास अगुआ मुरते। भजनियाँ सभ गोल-मोल भेल बैसल, तँए बीचमे जगह खाली रहए। ओइ खाली जगहमे बुचाइ दास ठाढ़ भऽ आगू-आगू भजनक पाँतियो गाबए आ नाचबो करए। बीच-बीचमे पाँतिक अर्थ सेहो अर्थाबए।

रमापति दास सोनेलालकेँ हाथक इशारासँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“बड्ड अनघोल होइए। भजन बन्न करबा दियौ।”

बुचाइ दास लग आबि सोनेलाल बाजल-

"गोसाँइ साहैब, भजन बन्न कऽ दियौ। महंथजीकेँ तकलीफ होइ छैन।"

सोनेलालक आग्रह सुनिते, के छोट के पैघ सभ एक्के बात कहए लगलैन जे हम सभ बिना भजन गौने पङ्हैत नइ करब।

सोनेलाल अवाक भऽ गेला। सौंसे देह केराक भालैर जकाँ डोलए लगलैन। मुदा की करितैथ। कियो तँ बिनु दले नै आएल छैन। तँए सभ साधुक महत बरबैर बुझैथ।

अँगनाक टाट लग ठाढ़ भेल सुगिया मने-मन सोचै छेली जे जँ कहीं साधु सभ अपनामे झगड़ा कऽ बिना भोजन केने चलि जेता तखन तँ हमर कबुला पूरा नइ हएत। कबुला नै भेने दुखो घुमि कऽ आबि सकैए। आब जँ दुखित पड़ब तँ जीब की मरब तेकर कोन ठेकान। हे भगवान साधु सभकेँ मति बदैल दियौन जे असथिर भऽ जेता। मने-मन साधु-साधुक जाप करए लगली।

दू बजैत-बजैत निर्गुण पंथ दिस भोजन बनि कऽ तैयार भऽ गेल। भोजन तैयार होइते गंगा दास सोनेलालकेँ कहलखिन-

"भोजन बनि गेल। आब भोजनक जगह तैयार करू।"

गंगा दासक आढ़ैत सुनि सोनेलालक करेज आरो थरथर काँपए लगलैन। ई केहेन हएत। एक दिस साधु सभ भोजन करता आ दोसर दिस बनिते अछि। एक तँ जखनेसँ साधु सभ दरबज्जापर एला तखनेसँ झंझट होइए। कहुना-कहुना अखन धरि पार लगल, मगर आब आखरी बेरमे ने कहीं झगड़ा फँसि जाए। ..बाढ़ैन आनै लाथे सोनेलाल आँगन गेला। आँगन जा बाढ़ैन तकै लाथे बैस रहला। बैसैक कारण रहैन, समय लगाएब। कनीए कालक पछाइत सुनलैन जे हिनको सबहक भोजन तैयार भऽ गेलैन। बाढ़ैन नेने सोनेलाल अँगनासँ निकैल खरिहाँन आबि बाहरए लगला। खरिहाँन बहारि सोनेलाल पानिक छिच्चा मारलैन। छिच्चा दऽ खरही बिछौलैन। खरही बिछैबते साधु सभ हरे-हरे कऽ उठि खरहीपर बैसला। खरहीपर बैसते पात उठल। पातक बँटबारा शुरू होइते रमापति दास अपन सत्तैरमे घुमि-घुमि जय-जयकार करए लगला। दोसर दिस भजन मंगल शुरू भेल।

सभ साधु भोजन केलैन। भोजन कऽ सभ उठला। दोसर पंथ दिसक

सत्तैरमे एक्कोटा अन्न वा कोनो वस्तु पातपर छूतल नहि। जखन कि पहिल पंथक सत्तैरमे बरियातीक भोजन जकाँ छूतल। सभकेँ उठिते चारूभरसँ कौआ-कुकुर आबि-आबि खाए लगल।

भोजन कऽ दोसर पंथबला सभ ढोलक-झालि लऽ विदा हुअ लगला। मुदा रमौथ दिससँ दछिनाक तगेदा भेल। अनाड़ी सोनेलाल सिक्कीक चङेरीमे पान-सुपारी लऽ बीचमे ठाढ़ रहैथ। हाथक इशारासँ रमापति दास सोनेलालकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"आब हम सभ चलब तँए झब-दे दछिना लाउ।"

सोनेलाल- "केना की दछिना..?"

रमापति दास आदेश दैत कहलखिन-

"एक साए एकाबन स्थानक चढ़ौआ, एक साए एक हमर, साधु सभकेँ एकाबन-एकाबन आ भोजन बनौनिहारकेँ एकासी-एकासी दऽ दियौन।"

भोजन बनौनिहारक आ महंथजीक दछिना तँ सोनेलालकेँ जँचल मुदा...।

गंगा दास आ बुचाइ दास सेहो सभ देखैत-सुनैत रहैथ। आँखिक इशारासँ गंगा दासकेँ बुचाइ दास कहलखिन- "अधिकार अधिकार छी। जेते दछिना रमापति दासकेँ हेतैन तइसँ एक्को पाइ कम हमहूँ सभ नै लेब।"

हिसाब जोड़ि सोनेलाल अँगनासँ रूपैआ आनि रमापति दासक हाथमे दऽ देलकैन। रूपैआ ठीकसँ गनि रमापति दास सोनेलालकेँ असिरवाद दैत उठि कऽ विदा भेला। रमापति दासक पाछू-पाछू सोनेलालो अरियातने किछु दूर धरि गेला। फेर घुमि कऽ आबि गंगा दास लग ठाढ़ भऽ पुछलकैन- "गोसाँइ साहैब, अहाँकेँ दछिना केते हएत?"

सोनेलालक कलपैत मोनकेँ गंगा दास अँकलैन। दयासँ हृदय बरफसँ पानि बनए लगलैन। मुहसँ बोली नै फुटैन। सोनेलालकेँ की कहथिन से फुरबे ने करैन। बुचाइ दास दिस देखि बजला-

"की यौ बुचाइ दास, अहूँ तँ अगुआ मुरते छी, बिना अहाँ सबहक विचार

नेने हम केना जवाब देबैन। किएक तँ ऐठाम दूटा प्रश्न अछि। पहिल दू पंथक अधिकारक सवाल अछि, जइसँ दोसर पंथकेँ निच्चाँ-मुहेँ जेनाइ हएत। आ तेसर, सोनेलाल कबुला पुरबैले भनडारा केलैन। एक तँ बिमारीक फेड़मे पड़ि पश्त भेल छैथ, तैपर सँ हमहूँ सभ भार दिऐन, ई हमरा नीक नइ बुझि पड़ैए।"

गंगा दासक प्रश्न सुनि दोसर पंथक सभ साधु गुम्म भऽ मने-मन सोचए लगला जे की कएल जाए? मुदा सोचबोक रस्ता अलग-अलग होइ छइ। एक्के प्रश्नक उत्तर पबैले वैरागीक रस्ता अलग होइए, जहन कि रागीक विचार अलग। भलेँ दुनू गोरे एक्के रंग विद्वान किएक ने होइथ। तेतबे नहि , आध्यात्मिक चिन्तक आ भौतिकवादी चिन्तकक बीच सेहो अहिना होइए। जहन कि निष्पक्ष चिन्तकक अलग होइए। पंथक बीच बँटल समाजमे निष्पक्ष चिन्तक होएब कठिन अछि। किएक तँ पंथ खाली वैचारिकेटा नहि, बेवहारिक सेहो होइए। जे परिवार आ समाजसँ जोड़लो रहैए। जइसँ जिनगीक गाड़ी चलै छइ।

कोनो विषयपर गम्भीर चिन्तन करैले एकटा आरो भारी उलझन अछि। ओ अछि भूखल आ पेट भरल शरीरक मन। मनकेँ बहुत अधिक प्रभावित करैए शरीरक इन्द्रिय। इन्द्रियकेँ संचालित करैए शरीरक उर्जा। उर्जाक निर्माण करैए उर्जा पैदा करैक वस्तु। ओ वस्तु अबैत भोजनसँ। मुदा सिरिफ भोजनेटा-सँ उर्जा पैदा नै होइत। उर्जा पैदा करैक दोसरो वस्तु अछि जेकर भोजन शरीरक भोजनसँ अलगो होइए।

बीच-बचाउ करैत बुचाइ दास गंगा दासकेँ विचार देलखिन-

"गोसाँइ साहैब, हमहूँ सभ अपना पंथक सिपाही छी, तँए मरै-दम तक पाछू हटब धोखाबाजी हएत। पवित्र धर्मक रक्षा करब सेहो हमरे सभपर अछि, तँए सोनेलाल जेते रूपैआ रमापति दासकेँ देलखिन, तेते हमरो सभकेँ दऽ दौथ। छह मासक दुख-तकलीफ हम सभ सोनेलालक सुनबे केलौं तँए हुनकर दुखमे हमहूँ सभ शामिल भऽ रूपैआ घुमा दिऐन।"

सएह भेल। सभ कियो हँसी-खुशीसँ भनडारा सम्पन्न कऽ जय-जयकार करैत विदा भेला। ❑ शब्द संख्या : 5466

चारि

मद्रास स्टेशन गाड़ी पहुँचते रमाकान्त नमहर साँस छोड़लैन। दू राति आ तीन दिनसँ गाड़ीमे बैसल-बैसल रमाकान्तो, श्यामो आ जुगेसरोकेँ देह अकैड़ गेल छेलैन। गाड़ीकेँ रूकिते रमाकान्त हुलकी मारि प्लेटफार्म दिस तकलैन तँ दोसरो-तेसरो लाइनपर गाड़ीए सभकेँ ठाढ़ भेल देखलखिन। अपना सबहक स्टेशन जकाँ नहि जे करवनो काल गाड़ियो अबैत आ भीड़-भाड़ नै रहने पुलोक जरूरत नहि, सगतैर रस्ते। जेमहर मन हुअए तेमहर विदा भऽ जाउ। गाड़ियो छोट आ लाइनो तहिना।

गाड़ीमे रमाकान्तकेँ अनभुआर जकाँ नइ बुझि पड़लैन किएक तँ बिहारेक गाड़ी आ बिहारेक पसिंजरो।

गाड़ीसँ यात्री सभ उतरए लगल। तीनू गोरे रमाकान्तो अपन झोरा-मोटरीक संग उतैर, थोड़े आगू बढ़ि पुलपर चढ़ए लगला। पुलपर लोकक करमान लगल मुदा अपना सभ स्टेशन जकाँ ऍंड़ी-दौड़ी नै लगैत। जेकरा हियासि कऽ रमाकान्त अपनो चेत गेला आ श्यामो-जुगेसरकेँ कहि देलखिन। अखन धरि स्टेशनमे दुनू कात गाड़ीए देखि पड़ैन मुदा पुलपर जेना-जेना ऊपर चढ़ैत गेला तेना-तेना आनो-आनो चीज सभ देखए लगला।

पुलक सीढ़ीपर चलैत-चलैत श्यामो आ रमाकान्तोक जांघ चढ़ि गेलैन। पुलक ऊपर पहुँचते रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

“जुगे, मोटरी कतबाहिमे रखि दहक आ कनी तमाकुल लगाबह। ताबे हमहूँ कनी सुस्ता लइ छी।”

जुगेसर मोटरी भुइयेँमे रखि तमाकुल चुनबए लगल। गाड़ीक जेते चिन्हार पसिंजर रहैन, सभ हेरा गेल। नव-नव लोककेँ पुलोपर आ निच्चोमे देखए लगला। खाली लोकेटा नव नहि, ओकर पहिराबो आ बोलियो। तमाकुल खा झोरा-मोटरी उठा तीनू गोरे पुलपर सँ उतैर हियाबए लगला जे केकरोसँ पुछि

लिऐन। मुदा केकरो बाजब बुझबे नै करैथ। रमाकान्तो लोक सभकेँ देखैथ आ लोको सभ रमाकान्तकेँ देखैन। जेना तमाशा दुनू बनल रहैथ । रमाकान्त आ जुगेसरक धोती पहिरब देखि ओइठामक लोक निंगहारि-निंगहारि देखैत आ रमाकान्तो तीनू गोरे ओइठामक मरदो आ मौगियोक कपड़ा पहिरब देखि मने-मन हँसबो करैथ। अनुभवी लोक सभ तँ बुझि जाइ छला जे बिहारी छैथ। मुदा जेकरा नइ बुझल छल ओ सभ ठाढ़ भऽ भऽ तजबीज करैन।

एक जेर मौगी रस्ता धेने गप-सप्प करैत जाइ छेली, ओ सभ अपने सबहक मरद जकाँ ढेका खोंसने। मौगी सबहक ढेका देखि श्यामा मुस्कियाइत रमाकान्तकेँ कहलखिन-

“देखियौ ऐठामक मौगी सभकेँ ढेका खोंसने !”

श्यामाक बात सुनि रमाकान्त हँसला, मुदा किछु बजला नहि। रमाकान्त आँखि उठा-उठा चारू दिस ताकि मने-मन सोचैथ जे वाह रे ऐठामक सरकार! केते सुन्दर आ चिक्कन-चुनमुन बनौने अछि! केतौ बैस जाउ..! केतौ सुति रहू..! सरकार बनौने अछि..! अपना सभ दिस कोनो स्टेशन एहेन नइ अछि जैठाम भरि ठेहुन गन्दगी नहि। प्लेटफार्मेपर केराक खोंइचा , पानक पीक, चिनियाँ बदामक खोंइचा, कागतक टुकड़ी, रंग-बिरंगक गुटखा सबहक पन्नी छिड़ियाएल रहैए। तेतबे नहि, जेरक-जेर भिखमंगा, पौकेटमार, उचक्का सेहो रेलबे स्टेशनसँ लऽ कऽ बस स्टेण्ड धरि पसरल रहैए। मुदा ऐठाम तँ एक्कोटा नजैरिए ने पड़ैए।

गाड़ीक झमारसँ तीनू गोरेक देह भँसियाइ छेलैन। मुदा की करितैथ। जुगेसर तमाकुल चुनबैत रहए। मने-मन रमाकान्त सोचैथ जे बड़का फेरामे पड़ि गेल छी। की करब। किछु फुरबे नै करै छेलैन। बड़ी काल धरि उगैत-डुमैत रहला। जइ गाड़ीसँ गेल रहैथ ओइ गाड़ीक भीड़ छँटल। लोक पतराएल। तैबीच एक गोरे मोटर साइकिलसँ आबि रमाकान्तेक आगूमे गाड़ी लगौलक। रमाकान्त ओइ आदमी दिस ताकए लगला आ ओहो आदमी रमाकान्त दिस। जेना नजैरेसँ दुनू गोरेक बीच चिन्हा-परिचए भऽ गेल होइन।

..रमाकान्त उठि कऽ ओइ आदमी लग जा, जेबीसँ पुरजी निकालि देखए देलखिन। पुरजीमे पता लिखल देखि ओ आदमी एकटा टेम्पूबलाकेँ हाथक

इशारासँ सोर पाड़लक। टेम्पूबलाकेँ अबिते पता बता लऽ जाइले कहलखिन।

तीनू गोरे टेम्पूमे बैस विदा भेला। मुदा ड्राइवर ने हिन्दी जनैत आ ने मैथिली। तँए ड्राइवरक संग कोनो गप -सप्प रस्तामे नै होइ छेलैन। स्टेशनक हातासँ निकैलते रमाकान्त आँखि उठा-उठा बजारो दिस देखैथ आ लोको सभकेँ। बजारमे ओते अन्तर नइ बुझि पड़ैन जेते लोक आ बोलीमे। मने-मन रमाकान्त अपना इलाकासँ इलाका मिलबए लगला। अपना ऐठाम पिंड -श्याम आ गोर वर्ण एकरंगाह अछि मुदा ऐठाम पिंड-श्याम वर्णक लोक अधिक अछि। लोकक बाजबो दोसरे रंगक छइ। जेना मधुमाछी भनभनाइए, तहिना। मुदा अपना ऐठामक लोक जकाँ ठक ऐठाम नइ बुझि पड़ैए...।

बजारक रस्तासँ जाइत रहैथ तँए गरीबी-अमीरीमे अन्तर बुझिए नै पड़ैन। मुदा अपना इलाकाक बजारसँ ओइठामक बजार बेसी चिक्कन-चुनमुन आ सुन्दर बुझि पड़ैन। गन्दगीक केतौ दरस नहि।

मुख्य मार्गसँ निकैल पूब-मुहेँ एकटा रस्ता गेल अछि। ओही रस्तामे डॉक्टर महेन्द्रक घरो आ क्लिनिको छैन आ जइ अस्पतालमे महेन्द्र नोकरी करै छैथ ओ मुख्य मार्गमे अछि। ..ओही गलीक मोड़पर टेप्पूक ड्राइवर तीनू गोरेकेँ उताइर भाड़ा लऽ आगू बढ़ि गेल। सड़कक दुनू भाग बड़का -बड़का मकान सभ। मोड़पर तीनू गोरे मोटरी रखि बैस रहला। गाड़ीक झमारसँ तीनूक देह-हाथ तेतेक बथैत रहैन जे ठाढ़ रहले ने होइन। जहिना अमावस्याक रातिमे वादल पसैर आरो अन्हार कऽ दइए तहिना रमाकान्तोकेँ होइ छेलैन। एक तँ अनभुआर जगह दोसर बोलीक भिन्नता, बोली मनुख मनुखक बीच केते दूरी बनबैए ई बात रमाकान्त आइए बुझलैन। श्यामा मने-मन सोचैथ जे हे भगवान केहेन जगह अछि जे अछैते मनुखे हम सभ हेराएल छी! तीनू गोरे निराशाक समुद्रमे डुमल। मने-मन रमाकान्तकेँ होनि जे आब की करब? आइ धरि जिनगीमे एहेन फेरा नै पड़ल छल। अपन सभटा बुधि-अकील हेरा गेल अछि...।

रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- “जुगेसर, मन घोर-घोर भऽ गेल अछि। कनी तमाकुल लगाबह।”

जुगेसर तमाकुल चुनबए लगल। सभ सबहक मुँह देखि नजैर निच्चाँ कऽ

लइ छला। तैबीच रमाकान्तक जेठ बेटा डा. महेन्द्र फिएट कारसँ अस्पतालसँ घर अबैत रहैथ कि सड़कक कातमे तीनू गोरेकेँ बैसल देखलैन। पहिने तँ थोड़े धखेला मुदा चिन्हल चेहरा तँए मेन रोडसँ गाड़ी बढ़ा अपन रस्तापर लगौलैथ। गाड़ीसँ उतैर लगमे आबि पिताकेँ गोड़ लगलैन। पिताकेँ गोड़ लागि माएकेँ गोड़ लगलैन। गोड़ लागि पिताक हाथक झोरा लऽ गाड़ीमे रखैले बढ़ला। पाछूसँ ईहो तीनू गोरे उठि गाड़ी दिस बढ़ला। जुगेसरो अपना हाथक मोटरी गाड़ीमे रखलक। चारू गोरे गाड़ीमे बैस आगू बढ़ला।

महेन्द्र अपने ड्राइवरी करैथ। महेन्द्रकेँ गाड़ी चलबैत देखि माए पुछलकैन-

“बच्चा, मोटर अपने हँकै छह?”

“हँ।”

“डरेबर नै छह?”

माइक प्रश्न सुनि महेन्द्र मुस्कियाइत बजला- “जखन गाड़ीमे रहै छी तखन दोसर काजे कोन रहैए जे डरेबर राखब। अनेरे खरचो बढ़त।”

घरक आगू गाड़ी पहुँचते महेन्द्र हौरन बजेला। गाड़ीक आवाज सुनि भीतरसँ नोकर आबि गेटक ताला खोलि देलकैन। महेन्द्र गाड़ी भीतर लऽ गेला। गाड़ी ठाढ़ कऽ उतैर गाड़ीक तीनू फाटक खोलि तीनू गोरेकेँ उतारलैन। गाड़ीसँ उतैरते रमाकान्त मकान दिस तकलैन। तीन-तल्ला बड़का मकान। आगूक फुलवाड़ी देखि रमाकान्त मने-मन सोचए लगला जे सम्पैत तँ गामोमे बहुत अछि मुदा एहेन घर अपन कोन जे परोपट्टामे एहेन मकान केकरो नइ छइ। मनमे उठलैन जे अपन कमाइसँ महेन्द्र एहेन घर बनेलक कि बैंक-तैंकसँ करजा लऽ कऽ आकि भाड़ामे नेने अछि? ओना, कहने छेलए जे जमीन कीनि कऽ मकान बनेलौं। मुदा एहेन घर बनबैमे पचास लाखसँ ऊपरे खरच भेल हेतै , एतबे दिनमे केते कमा लेलक! आगू-आगू महेन्द्र आ तइ पाछू तीनू गोरे मकानमे प्रवेश केलैन। मकानक सिमेन्ट एहेन जमौल जे पएर पिछड़ैत।

सभसँ ऊपरका तल्लामे लऽ जा एकटा कोठरी रमाकान्त आ जुगेसरकेँ दोसर माएकेँ सुमझा देलैन। ताबे नोकर जलखै आ पानि नेने पहुँच गेलैन।

हाथो-पएर नै धोलैन आ रमाकान्त पलँगपर पड़ि रहला। पंखा चलैत। दूटा पलँग कोठरीमे लगौल। दूटा टेबूल, एकटा नमहर ऐना, देवी-देवताक फोटो सेहो देबालमे टाङ्गल। नील रंगसँ कोठरी रंगल। दूटा अलङा सेहो देबाल दिस राखल। खूब मोटगर गद्दीदार ओछाइन पलँगपर बिछौल। मसनद सेहो दुनू पलँगपर राखल। पानिक टँकी सेहो कोठरीक मुहेँपर केबाड़क बगलमे।

पलँगसँ उठि रमाकान्त कुरुर कऽ जलखै करए लगला। दू कौर खा पानि पीब चाह पीबए लगला। जुगेसरो जलखै खा कऽ चाह पीबए लगल आ महेन्द्रो हाथमे कप लेने ठाढ़े-ठाढ़ चाह पीबए लगला। ..चाहक चुस्की लैत रमाकान्त महेन्द्रकेँ पुछलखिन- “बौआ, मकान अपने छी?”

“हँ।”

“बनबैमे केते खरच भेल?”

खर्चाक नाओं सुनि मुस्कियाइत महेन्द्र बजला- “बाबू, खरच तँ डायरीमे लिखल अछि तँए बिना देखने नीक-नाहाँति नै कहि सकै छी मुदा तीन लाखमे जमीन किनलौं से मोन अछि। जखन जमीन भऽ गेल तखन चारू गोरे कमेबो करी आ घरो बनबी। तँए ठीकसँ बिना डायरी देखने नै कहि सकै छी।”

टेबुलपर कप रखि रमाकान्त बजला- “चारि दिन नहेना भऽ गेल, देहमे एक्को रत्ती लज्जैत नइ बुझि पड़ैए तँए पहिने नहाएब-खाएब आ भरि मन सूतब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि महेन्द्र कोठरीसँ निकैल नोकरकेँ कहलखिन-

“तीनू गोरेकेँ फोनसँ कहि दहक जे बुड़हा-बुड़ही एला अछि।”

नोकरकेँ कहि पिता-लग आबि महेन्द्र कहलखिन- “चलू, नहाइक घर देखा दइ छी।”

आगू-आगू महेन्द्र आ पाछू-पाछू रमाकान्त आ जुगेसर चलला। स्नान घरक केबाड़ खोलि महेन्द्र बजला-

“दूटा जोड़ले कोठरी अछि, दुनू गोरे नहाउ।”

कहि दुनू कोठरीक बौल जरा देलखिन।

कोठरीकेँ निंगहारि-निंगहारि दुनू गोरे देखए लगला। पानिक झरना , टँकी, साबुन रखैक चक्का, कपड़ा रखैक अलगनी इत्यादि सभ किछु...।

रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन- “जुगे, चाह तँ पीलौं मुदा तमाकुल खेबे ने केलौं। मन लुलुआएले अछि। जा पहिने तमाकुल नेने आबह। ”

जुगेसर स्नान घरसँ निकैल कोठरी आबि, तमाकुल-चुन लऽ आबि चुनबए लगल। तमाकुल चुना रमाकान्तोकेँ देलकैन आ अपनो ठोरमे लेलक। थूक फेकैत रमाकान्त बजला-

“जुगे, गाममे हमहूँ सम्पैतबला लोक छी मुदा आइ धरि एहेन पैखाना कोठरी आ नहाइक घर नै देखने छेलिऐ। सभ दिन खुल्ला मैदानमे पैखाना जाइ छी आ पोखैरमे नहाइ छी।”

“काका, अपना सभ गाममे रहै छी ने। ई सभ शहर-बजारक छिऐ। जँ शहर-बजारक लोक गाम जकाँ चाहबो करत से थोड़े हेतइ। ऐठाम लोक बेसी अछि आ जगह कम छै तँए लोककेँ एना बनबए पड़ै छइ। मुदा पोखैरमे लोक पानिमे पैस कऽ नहाइए आ ऐठाम पानि ढारि कऽ नहाइए जहिना अपना सभ कहियो काल लोटासँ पानि ढारि कऽ नहाइ छी तहिना। मुदा पानिमे पैस कऽ नहेलासँ जे संतोख होइ छै से ऐमे नै हेतइ।”

“एहेन जिनगी जीनिहारकेँ गाममे रहब पार लगतै, जुगे?”

“से केना लगतै।”

“बाबू हमरा बेसी काल कहै छला जे मनुखक शरीर देखैमे एक रंग लगनौं जीबैक जे ढंग छै ओ दू रंग बना दइ छइ। ”

“अहाँक गप हम नइ बुझलौं, काका?”

“देखहक, जे आदमी भरिगर काज सभ दिन करैए ओकरा जइ दिन भरिगर काज नइ हेतै तँ देहो-हाथ दुखैतै आ अन्नो रुचिगर नै लगतै। तहिना जे आदमी हल्लुक काज करैए आ जँ ओकरा कोनो दिन भरिगर काज करए पड़तै तँ ओकरो देह-हाथ ओते दुखेतै जे अन्नो ने खा हेतइ।”

“हँ, से तँ होइ छइ, हमरो कए दिन भेल अछि।”

“तहिना गामक लोक जे शहर-बजारमे आबि जिनगी बदैल लइए, ओ फेर गाम अही दुआरे नै जाए चाहैए।”

“काका, गामक लोक गरीब अछि, खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ ओढ़े-पीनहै, रहइ आ दबाइ-दारूसँ लऽ कऽ पढ़ै-लिखैक सभ चीजक अभाव छै, तँए लोक नै रहए चाहैए गाममे।”

महेन्द्र पिताकेँ स्नानघर पहुँचा घुमि कऽ अपना कोठरी आबि पत्नी, भाए आ भावोकेँ माने डॉक्टर रविन्द्रकेँ, डॉक्टर जमुनाकेँ आ डॉक्टर सुजाताकेँ फोनसँ कहि देलखिन जे गामसँ माए-बाबू आ जुगेसर एला हेन। तीनू गोरेकेँ जानकारी दऽ अपने भंसा घर जाए मने-मन सोचए लगला जे ऐठामक जे खान-पान अछि ओ हुनका सभकेँ पसिन हेतैन की नहि? तँए गामक जे खान-पान अछि, सएह बनौनाइ नीक हएत। मुदा भनसिया तँ ऐठामक छी, बना पौत कि नहि। तँए अपनेसँ बनाएब। ओना, भात-दालि आ रसगर तरकारी तँ भनसियो बना सकैए। खाली तेतैर परहेज करैक अछि। तेतैरक अलगसँ खटमिट्ठी बना लेब। जँ तरूआ तरकारी नहि बनाएब तँ पिता अपमान बुझता। ओना, दूधो-दही जरूरी अछि। मुदा एक्कोटा चीजसँ काज चलि सकैए। दहियो तँ घरमे नहियेँ अछि। लगक दोकान सबहक दही दब रहै छै तँए रविन्द्रकेँ कहि दिऐन जे दरभंगाबला होटलसँ दही किनने औत। ई बात मनमे अबिते महेन्द्र मोबाइलसँ रविन्द्रकेँ कहलखिन। रविन्द्र अस्पतालसँ सोझे दरभंगाबला होटल विदा भेला।

महेन्द्र अपनेसँ तिलकोरक पात, परोर, झिंगुनी, भाँटा आ आलू तड़ए लगला। गैस चुल्हि, तँए लगले सभ किछु बनि गेलैन।

पैखाना जाइसँ पहिनहि रमाकान्त हाथ मटियबैले माटि ताकए लगला। मुदा माटिक केतौ पता नहि। नहाइसँ लऽ कऽ हाथ धोइ तकमे साबुनेक बेवहार। रमाकान्त जुगेसरकेँ पुछलखिन- “जुगेसर, बिना माटिए हाथ केना मटियाएब?”

रमाकान्तक बात सुनि मुस्कियाइत जुगेसर बाजल- “काका, जेहेन देश ओहेन भेस बनबए पड़ै छइ। गाममे तँ भरि दिन माटिए-पर रहै छी मुदा ऐठाम तँ माटिसँ भेँटो मोसकिल अछि। देखिते छिऐ जे माटि तरमे पड़ि गेल अछि। ने

माटिक घर अछि आ ने रस्ता-पेरा। साबुनो तँ गमकौए छी। की हेतै साबुनेसँ हाथ धोइ लेब।”

“कहलह तँ ठीके मुदा हाथ धुअब आ मनकेँ मानब दुनू दू बात अछि। हाथ धोइए लेब मुदा मन नै मानत तँ ओ हाथ धुअब केना भेल?”

“हँ काका, ई बात तँ हमहूँ मानै छी मुदा गन्दगी साफ करैक सवाल छै किने से तँ हएत। मनकेँ बुइधे चलबै छै तँए मनकेँ बुधि मना लेत।”

“तोहूँ तँ आब बच्चा नै छह जे नइ बुझबहक। एकटा बात कहह जे लोक पेटमे खाइए, पेट भरै छै, तखन लोक किए कहै छै जे भरि मन खेलौं वा पेट भरला पछाइतो कहै छै जे मन नै भरल?”

“अपना सभ काका मिथिलामे रहै छिऐ ने। मिथिलाक माटियो पवित्र छइ। मुदा ई तँ मद्रास छी, तँए ऐठामक लोक जे करैत हुअए सएह करब उचित।”

“बड़ बढ़ियाँ।”

कहि दुनू गोरे अपन क्रिया-कलापमे लगि गेला।

रमाकान्त आ जुगेसर स्नाने घरमे रहैथ, तैबीच रविन्द्र, जमुना आ सुजाता तीनू गोरे अपन-अपन गाड़ीसँ आबि गेलैथ। सबहक मनमे अपन-अपन ढंगक जिज्ञासा रहैन तँए गाड़ीसँ उतैरते कियो पिता रमाकान्त, ससुर रमाकान्तकेँ देखैले उताहुल। मुदा कोठरी अबिते पता चललैन जे ओ नहाइ छैथ। नहाएब सुनि सभ अपन-अपन कपड़ा बदलए अपना-अपना कोठरीमे प्रवेश केलैन।

पेन्ट-शर्ट खोलि रविन्द्र लुंगी पहिरते माइक कोठरी दिस बढ़ला। कोठरीमे पहुँचते माएकेँ गोड़ लागि आगूमे ठाढ़ भऽ गेला।

रविन्द्रकेँ माए चिन्हलकैन तँ नइ मुदा गोड़क जवाब बिन चिन्हनहि दऽ देलखिन। ..रविन्द्र मुस्कियाइत रहैथ। मुदा अनचिन्हार जकाँ माए बेटाक मुँह दिस टकर-टकर तकैत। तैबीच जमुना आ सुजाता सेहो आबि श्यामाकेँ गोड़ लगलकैन। दुनू पुतोहुओकेँ सासु असिरवाद देलखिन। रविन्द्र बुझि गेला जे माए नइ चिन्हलैन। मुस्कियाइत बजला- “माए, हम रविन्द्र छी!”

‘रविन्द्र’ सुनिते श्यामा हक्का-बक्का भऽ गेली। अनासुरती मुहसँ

निकललैन- “रविन्द्र।”

चारि सालसँ रविन्द्र गाम नै आएल छला। पहिने रविन्द्रक देह एकहारा छेलैन। खिरकिट्टी जकाँ। जे अखन मस्त-मौला भऽ गेला अछि। पुष्ट देह भेने रविन्द्रक रूपे बदैल गेलैन। कोरैला बेटा होइक नाते माइक ममता बाढ़िक पानि जकाँ उमैड़ गेलैन। मुँहक बोली पड़ा गेलैन। खाली आँखिए-टा क्रियाशील रहलैन जेहो अश्रुधारासँ सिमैस गेलैन।

..आँचरसँ नोर पोछिते श्यामाकेँ ओ दिन मनमे नचए लगलैन जइ दिन रविन्द्र ऐ आँचरमे नुकाएल रहै छल। सौंझुका तरेगन जकाँ श्यामाक हृदयमे सुखद जिनगीक मनोरथ सभ चमकए लगलैन। हाथक इशारासँ माए दुनू पुतोहुकेँ बैसैले कहलखिन। दुनू पुतोहु माइक दुनू भाग बैसली। दुनू कान्हपर दुनू हाथ दऽ सासु ओइ दुनियाँमे वौआए लगली जइ दुनियाँमे दुखक कोनो जगह नै होइत। मुदा सुखोक तँ दूटा दुनियाँ अछि। एक दुनियाँ श्यामाक आ दोसर रविन्द्रक। जे दुनियाँ श्यामा दुनू परानीक भेल जाइ छेलैन ओ तियाग, करूणा आ दयाक सवारीसँ वैरागक मन्जिल दिस बढ़ैत जाइत रहैन। जखन कि दुनू भाँइ रविन्द्रक जिनगी अधिक-सँ-अधिक धनक उर्पाजन कऽ दैहिक सुख दिस बढ़ि रहल छेलैन...।

रमाकान्त आ जुगेसर नहा कऽ कोठरी एला। नहेला पछाइत दुनू गोरेक देहक थाकैन मेटा गेलैन। नव-नव स्फूर्ति आ ताजगी आबि गेलैन। नव ताजगी अबिते भूखो जगलैन।

रविन्द्र कोठरीसँ निकैल पिताक कोठरी दिस बढ़ला। ताबे महेन्द्र सेहो पिता लग आबि भोजन करैक आग्रह केलकैन।

एमहर सासु लग दुनू पुतोहु बैस एक-दोसराक खनदान, परिवार आ मानवीय सम्बन्ध बनबैले वस्तु-जात एकत्रित करए लगली। गामक देहाती जिनगी बितौनिहारि पचपन बर्खक सासु आ बजारू जिनगी जीनिहारि दुनू पुतोहु, तीनूक मन अपन-अपन जिनगीक रस्तासँ भ्रमण करैत रहैन। मुदा सासु-पुतोहुक रस्तामे केतौ सम्बन्ध नै रहनौं मानवीय संवेदना आ जिनगीक बेवहारिक प्रक्रिया तीनूकेँ लग आनि सटबैत रहैन। बीतल जिनगी तँ स्मृति आ इतिहास

बनि जाइए मुदा अबैबला जिनगीक रूप-रेखा तँ अखने निर्धारित होएत। एककेँ जिनगीक पचपन बर्खक अनुभव तँ दोसर-तेसर आधुनिक शिक्षासँ लैश। सोचमे दूरी रहनौं, सभ एक्के परिवारक छी, ई विचार सभकेँ बलजोरी खींच कऽ एकठाम सटबैत रहैन। श्यामाक मनमे प्रश्न उठैत रहैन जे हम हजारो कोस हटि कऽ बेटा-पुतोहुसँ दूर रहै छी तखन हमरा पुतोहुक सुख केते हएत? समाजमे देखै छी जे अस्सी बर्खक बुढ़-पुरानसँ लऽ कऽ पेटक बच्चा धरि एकठाम रहि हँसी-खुशीसँ जिनगी बितबैए। खाएब-पीब कोनो वस्तु नइ छी। किएक तँ जेकरा हम नीक वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्य-पदार्थ छी आ जेकरा दब वस्तु बुझै छिऐ ओहो भोज्ये-पदार्थ छी। हँ, ई विषमता समाजमे जरूर छै जे कियो नीक वस्तु थारीमे छूता कऽ उठैए जेकरा कुकुर खाइए आ कियो भूखल सुतैए। मुदा हम देखै छी हजारो किसिमक भोज्य-वस्तु धरतीपर पसरल अछि जेकरा ने सभ चिन्हैए आ ने उद्यम कऽ आनए चाहैए...।

जखन कि जमुना आ सुजाता सोचैत जे परिवारकेँ आगू बढ़बैले सन्तान जरूरी अछि। नोकर-दाइक सहारासँ छोट बच्चाक पालन तँ हएत मुदा सेवा नहि, किएक तँ माए अपन बच्चाकेँ दूधो नै पीआबए चाहैत। बच्चा जखन स्कूल जाइ-जोकर होइत तखन आवासीय विद्यालयमे भरती करा शिक्षा-दीक्षा दइत। शिक्षा प्राप्त केलाक पछाइत कमाइक जिनगीमे प्रवेश करैत। जिनगीक एक चक्र ईहो छी।

जहिना जमुना आ सुजाताक मनमे चकभौर लइ छेलैन। श्यामाक मन अपन खनदानी परिवारक फुलवाड़ीमे औनाइ छेलैन। ने आगूक रस्ता देखै छेली आ ने पाछूक।

आगूक रस्ता कठिन अछि आकि सघन आकि संवेदन रहित वा सहित? एक-दोसर मनुखक सम्बन्ध हेबा चाहिऐ, ओ जरूरीए नइ अनिवार्य आ आवश्यक सेहो अछि। जे मनुख ऐ धरतीपर जन्म लेलक, ओकरो ओतेक जीबैक अधिकार छै जेते दोसरकेँ छइ। जँ से नइ अछि तँ लड़ाइ-दंगाकेँ कोन शक्ति रोकि सकैए? मुदा प्रश्न जटिल अछि, आइ धरिक जे दुनियाँक मनुखक जिनगी बनि गेल अछि ओ एतेक विषम बनि गेल अछि, जे सामूहिक मनुखक कोन बात, दू सहोदर भाइक बीच समता रहब कठिन भऽ गेल अछि, तँए..?

भोजनालय। नमगर-चौड़गर कोठरी। देबालपर बहुरंगी फूलक चित्र बनौल। सुन्दर हल्का गुलाबी रंगसँ कोठरी रंगल, एअरकण्डीशन लागल। गोलनुमा नमगर-चौड़गर खेनाइ-खाइक टेबुल। जेकर चारूकात खेनिहार-ले पनरहोसँ बेसीए कुरसी लगल। देबालक खोल्हियामे साउण्ड बॉक्स। जइसँ मधुर स्वरमे गीतक ध्वनि बहराइत।

भोजन करैक बाजारू बेवस्थाकेँ महेन्द्र अपनौने। मुदा माता-पिताक एलासँ धर्म-संकटमे पड़ि गेला। मने-मन सोचए लगला जे हम दुनू भाँइ आ दुनू दियादनी चारू गोरे तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा माए तँ बाबूक सोझमे नै खेती। तेतबे नहि, हमरा दुनू भाँइक संगे तँ ओ खेता मुदा दुनू पुतोहुक संग तँ नै खेता। अगर जँ जोर करबैन तँ कहीं बिगैड़ ने जाथि। जँ बिगैड़ जेता तँ आरो विचित्र भऽ जाएत। ..की करब नीक हएत? गुनधुनमे महेन्द्र। मुदा अनासुरती मनमे एलैन जे माएसँ विचार पुछि लिऐन। माए लग जा पुछलखिन-

“माए, हमसब तँ एक्के टेबुलपर खाइ छी मुदा..?”

महेन्द्रक बात सुनि श्यामा बुझबैत बजली-

“बौआ, हमरो उमेर पचास-साठि बर्खक भेल हएत। आइ धरि जइ काजकेँ अधला बुझलिऐ ओ आब केना करब। केते दिन आब जीबे करब। तइले किए अपन बाप-दादाक बतौल रस्ता तोड़ब। एहेन बेवहार सिरिफ अपनेटा परिवारमे तँ नइ अछि, समाजोमे छइ। जाधैर ऐठाम छी ताधैर, मुदा गाम गेलापर तँ फेर वएह बेवहार रहत। तइले एहेन काज करब उचित नहि। गामक जिनगीक अनुकूल चलैन अछि। कोनो चलैन समाज आ जिनगीक अनुकूल बनैए जे जिनगी-ले नीक होइए। भलेँ दोसर तरहक जिनगी जीनिहारकेँ ओ अधला लगौ।”

माइक विचार सुनि महेन्द्र दू तोरमे खाएब नीक बुझलैन। पहिल तोरमे अपने, जुगेसर आ पिता तथा दोसर तोरमे बाँकी सभ कियो।

भोजन करिते रमाकान्त हफुअए लगला। जुगेसर सेहो हफुअए लगल। हाथ-मुँह धोइ कऽ दुनू गोरे सुति रहला।

एक तँ तीन रातिक जगरना, तैपर अन्नक निशाँ सेहो लगले रहैन। एक्के बेर

चारि बजे रमाकान्तकेँ नीन टुटलैन। नीन टुटिते, सुतले-सुतल रमाकान्तक नजैर देबालक घड़ीपर गेलैन। चारि बजैत। भाँग पीबैक बेर भऽ गेल रहैन। भाँगक आदत रमाकान्तकेँ पहिनहिसँ छैन। तँए मद्रास अबैए काल झोरामे भाँगक पत्ती लऽ नेने छला। श्यामो बुझि गेली जे हुनका भाँग पीबैक बेर भऽ गेलैन।

भाँगक मेजन–मरीच, सोंफ–अननहि छी। सिरिफ पीसैक जरूरत अछि। पलँगपर सँ उठि झोरा खोलि भाँगक सभ समान निकालए लगला। तैबीच सुजाता ब्राण्डीक किलोबला बोतल आ गिलास नेने सासु लग आबि ठाढ़ भऽ गेली। खाइए बेरमे सासु पुतोहकेँ कहि देने रहथिन जे बुढ़ा सभ दिन चारि बजे पीसुआ भाँग पीबै छैथ। भाँगक सम्बन्धमे सुजाता अनाड़ी रहैथ। किछु ने बुझल रहैन। मुदा ब्राण्डीक सम्बन्धमे तँ बुझल रहैन। सुजाता, श्यामा आ रमाकान्त सभ अपन-अपन ढंगसँ साकांच रहैथ।

रमाकान्त जुगेसरकेँ जगा टँकीपर मुँह-हाथ धोइले गेला। खट-खुटक आवाज सुनि श्यामा बुझि गेली। बोतल लऽ सुजाता तैयारे रहैथ। मुदा सुजाताक मनकेँ मिथिलाक संस्कृति झकझोड़ैत रहैन। किएक तँ मिथिलाक संस्कृतिक बेवहारिक पक्ष नै जनै छेली तँए जहिना अनभुआर जंगलमे कोनो जानवर औनाइत तहिना सुजातो औनाइ छेली। मने-मन सोचैथ जे ऐठाम जहिना पुतोहु ससुरक बीच बेवहार होइए तहिना मिथिलोमे होइत हएत की नहि? दोसर प्रश्न उठैन जे पढ़ल-लिखल समाजमे तँ पुरान बेवहारो बदैल नव रूप लऽ लइए...। सुजाता अपना हाथमे ब्राण्डीक बोतल आ गिलास रखने वैचारिक दुनियाँमे वौआइ छेली। रमाकान्तकेँ भाँग पीबैक समय भऽ गेल छेलैन तँए विचारमे मधुरता आबि गेल रहैन। तखने लगमे आबि श्यामा बजली- “अखन भाँग नै पिसलौं हेन। पुतोहुजनी एकटा बोतल रखने छैथ से की कहै छिऐन?”

भाँग नै पिसब सुनि रमाकान्तक मनमे क्रोध आबए लगलैन मुदा बोतलक नाओं सुनि दबि गेलैन। मुस्कियाइत बजला -

“बेटी आ पुतोहुमे की अन्तर छइ। जहिना बेटी तहिना पुतोहु। तहूमे छोटकी पुतोहु, ओ तँ कोरैला बेटी सदृश होइत। एक तँ दुनियाँमे कोनो सम्ब न्ध अधला होइते ने छै मुदा तखन जखन ओ सीमामे रहए। जखन सीमाक उल्लंघन लोक करए लगैत तखन लाज आ परदाक जरूरी भऽ जाइ छइ। जे परम्परा बनि

आगूमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। मुदा ओहनो पैछला बेवहार निपुआंग मरि नहियेँ गेल अछि। तँए नीक बेवहार जिनगीमे धारण करब अधला तँ नहि।”

रमाकान्तक बात सुजातो सुनै छेली। मने-मन खुशियो होइ छेली जे ज्ञानवान ससुर छैथ। मुदा बिना सासुक सहमतिसँ आगू बढ़ब उचित नहि। तँए बोतल-गिलास नेने सुजाता अढ़मे ठाढ़ छेली। रमाकान्तक विचार सुनि श्यामा सुजाताकेँ कहए आगू बढ़ली। पर्दाक अढ़मे सुजातोकेँ ठाढ़ देखि बजली-

“जाउ, भगवान अहाँकेँ भोलेनाथ ससुर देने छैथ। मुदा ससुर जकाँ नहि पिता जकाँ बेवहार करबैन।”

बामा हाथमे बोतल आ दहिना हाथमे गिलास नेने सुजाता ससुर लग आबि मुन्ना खोललैन। मुन्ना खुलिते सौंसे कोठरी महक पसैर गेल। महकसँ हवोमे मस्ती आबि गेल। एक गिलास पीब रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

“जुगेसर, तोंहू एक गिलास पीबह।”

जुगेसर बाजल-

“काका, अहाँ लग बैस केना पीब?”

“अखन, ने तूँ छोट छह आ ने हम पैघ छी। सभ मनुख छी। मनुख तँ मनुखे लगमे रहि ने जिनगी बितौत।”

तैबीच सुजाता गिलास जुगेसरो दिस बढ़ौलैन। जुगेसर एक्के सुढ़िमे भरल गिलासक पीब गेल। पेटमे ब्राण्डी पहुँचते गुदगुदबए लगलै। दोसर गिलास पीबते रमाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन-

“बेटी, किछु नमकीन सेहो लाउ?”

रमाकान्तक आढ़ैत सुनि सुजाता गिलास-बोतलकेँ टेबुलपर रखि कीचेनसँ मद्रासी भुजिया दूटा पलेटमे नेने एली। एकटा पलेट रमाकान्तक आगूमे आ दोसर जुगेसरक आगूमे रखली। ..दू-चारि फँक्का भुजा फाँकि रमाकान्त फेर दू गिलास ब्राण्डी चढ़ा लेलैन। ओना , भाँगक निशाँ रमाकान्तकेँ बुझल जे पीलाक घन्टा-दू-घन्टाक पछाइत निशाँ चढ़ैए मुदा ब्राण्डीक निशाँ तँ पीबते चढ़ि गेलैन। ओना, जुगेसर दुइए गिलास पीलक मुदा तहीमे मन उनैट

गेलइ। सौंसे बोतल पीबते रमाकान्तकेँ ढकार भेलैन। ढकार होइते सुजाताकेँ कहलखिन- "बेटी, इलाइची देल पान खुआउ?"

सासु पतिक खान-पानक सम्बन्धमे सभ बात कहि देने रहथिन। तँए सुजाताकेँ बुझल रहबे करैन। दू खिल्ली पान, सुअदगर तेज जरदाक डिब्बा, इलाइची आ सेकल सुपारीक कतरा पलेटमे नेने सुजाता आबि ससुरक आगूमे रखि देलखिन। शराबक रंगमे जहिना रमाकान्त तहिना जुगेसर रंगि गेला। बजैले दुनूक मन लुसफुसाइत रहैन। पान मुँहमे लैत रमाकान्त सुजाताकेँ पुछलखिन -

"बेटी, अहाँ डॉक्टरी केना पढ़लौं?"

ससुरक सवाल सुनि सुजाता बगलक कुरसीपर बैस संकुचित भऽ कहए लगलैन- "बाबू जी! हमर पिता आ माए अपन महल्लाक कपड़ा साफ करैथ। सभ-दिना काज छेलैन। ऐसँ जेना-तेना गुजर चलै छेलैन। एक्केटा घर रहए। अनके कलपर नहेबो करै छेलौं आ पानियोँ पीबै छेलौं। पिता ताड़ी पीबैथ। एक दिन साँझू पहरमे ताड़ी पीब अबैत रहैथ। बहुत बेसी निशाँ लगि गेल रहैन। रस्तापर एकटा खाधि रहै, ओइ खाधिमे ओ खसि पड़ला। तखने एकटा ट्रक, बिना इजोतेक पास करैत रहए। ट्रक हुनका ऊपरे देने टपि गेलै कुड़कुट-कुड़कुट सौंसे शरीर हड्डी सहित भऽ गेलैन। हम सभ बुझबो ने केलिऐ। दोसर दिन भिनसरमे हल्ला भेलै तखन हमहूँ माए, भाए तीनू गोरे देखए गेलौं। देहक दशा देखि चिन्हबो ने केलिऐन। मुदा कपड़ा आ चप्पल देखि मन खुट-खुट करए लगल। तीनू गोरे दुनू वस्तुकेँ चिन्हि गेलिऐ। तखन हुनका उठा कऽ आनि जरौलयैन। बिच्चेमे जुगेसर बाजि उठल- "अरे बाप रे!"

जुगेसरक 'अरे बाप रे' सुनि सुजाताक आँखिमे नोर आबि गेलैन।

सुजाताक बात रमाकान्त आँखि मूनि कऽ सुनैत रहैथ। जुगेसरक बात सुनिते आँखि खोललैन। हृदय पसीज गेल रहैन। ताड़ी पीआकक बात सुनि रमाकान्तक मनमे उठैत रहैन जे निशाँपान तँ हमहूँ करै छी मुदा ऐठामक जिनगी आ गामक जिनगीमे बहुत अन्तर अछि। तेतबे नहि, पेटबोनियाँ आदमीक सवाल सेहो अछि। हमरा सबहक ग्रामीण जिनगी शान्तिपूर्ण अछि। धनक अभाव तँ जहिना एतौ छै तहिना गामोमे अछि। ऐठाम किछु गनल-गूथल उद्योग आ बेपारी-कारोबारी अछि जे समृद्धशाली अछि। मुदा पेटबोनियाँ ओकरे देखौंस

करए चाहैए जइसँ ओकर जिनगी अशान्त भऽ जाइ छइ। ओइ अशान्तिकेँ शान्त करै दुआरे लोक सड़ल-गलल निशाँपान करैए। जइसँ जिनगी बाटेमे टुटि जाइ छै...।

एते बात मनमे अबिते रमाकान्त पलँगसँ उठि पीक फेकैले निकलला। बाहरक नालीमे पान थुकैड़ कऽ फेक, टँकीमे कुरुर कऽ कोठरी आबि सुजाताकेँ कहलखिन- “बेटा, चाह पिआउ?”

आँचरसँ आँखि पोछैत सुजाता चाह बनबैले किचेन गेली। रमाकान्तक हृदयमे सुजाताक प्रति विशेष आकर्षण बढ़ि गेल रहैन। जेना हनुमानक हृदयमे राम-लक्ष्मण बैसल तहिना सुजातो रमाकान्तक हृदयमे एकटा छोट-छीन घर बना लेली। रमाकान्तक प्रति सुजातोक हृदयमे तस्वीर बनए लगलैन। आइ धरि जे बात सुजातासँ कियो ने पुछने छेलैन से बात सुनि ससुरक हृदय पघिल गेलैन। जरूर रमाकान्तक हृदयमे सुजाता अपन जगह बना लेलैन। चाह आनि सुजाता रमाकान्तो आ जुगेसरोकेँ देलैन। हाथमे चाह लइते रमाकान्त अपन अस्तित्व बिसैर गेला।

सुजाताक आँखिमे अपन आँखि दऽ एक-टकसँ देखए लगला। आर्द्र भऽ रमाकान्त सुजाताकेँ कहलखिन-

“ओइ समैयक जिनगी ओहिना मोन अछि आकि बिसरबो केलौं?”

“बिसरब केना! ओ घटना तँ हमर जिनगीक इतिहासक एक महतपूर्ण कालखण्ड छी!”

“तेकर बाद की भेल?”

“हम, दू भाए-बहिन छी। एगारह बर्खक हम रही आ आठ बर्खक भाए। दुनू गोरे स्कूल जाइत रही। महल्लेमे स्कूल। भाए तँ छोट रहए तँए कोनो काज नइ करै मुदा हम माइक संग कपड़ो खिंची आ परतीपर सुखेबो करी, संगे लोहो दिऐ आ माइक संग महल्लासँ कपड़ा आनबो करी आ दैयो अबिऐ। ओइसँ जे कमाइ हुअए तइसँ गुजर करी। पढ़ल-लिखल परिवारसँ लऽ कऽ बनियाँ-बेकाल धरिक परिवारमे आबा-जाही रहए। पढ़ल-लिखल परिवारमे जखन जाइ तँ फाटल-पुरान किताब मांगि ली। ओइसँ पढ़ैले किताब भऽ जाए। खाइक जोगार

कमाइएसँ भऽ जाए। ऐ तरहेँ मैट्रिक फस्ट डिविजनसँ पास केलौं। जखन मैट्रिकक रिजल्ट निकलल रहए, तखन महल्ला भरिक लोक बाहबाही केलक। हमरो उत्साह बढ़ल। मनमे अरोपि लेलौं जे बी.एस.सी. करब। ओइ समय हमरा मनमे डॉक्टरक विचार रहबे ने करए। रहबो केना करैत। जेतबे बुधि छल, जएह साधन छल तही हिसावे ने सोचितौं। खा एर.., कौलेजमे एडमीशन शुरू भऽ गेल छल। महेन्द्र भैयाक कपड़ा दइले हम तीनू गोरे भिनसुरके पहरमे एलौं। भैया ताबे अस्पतालेक क्वाटरमे रहैत रहैथ। तखन ओसारपर बैस दाढ़ी बनबै छला। माए कपड़ाक मोटरी रखि जमुना दीदीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

"मलिकाइन, कपड़ा लिअ।"

..हम-दुनू भाए-बहिन ठाढ़े रही। कोठरीसँ निकैलते दीदीक नजैर हमरापर पड़लैन। जमुना दीदी माएकेँ कहलखिन- "बेटी पास केलक, मिठाइ खुआउ।"

..जमुना दीदीक बात सुनि महेन्द्र भैया दाढ़ी बनेनाइ छोड़ि हमरा दिस मुड़ी उठा कऽ तकलैन। बिना किछु बजने थोड़े काल देख, फेर हाँइ-हाँइ दाढ़ी काटए लगला। दाढ़ी काटि, सभ समान सैंत कऽ रखि सोर पाड़लैन। हमरा मनमे कोनो तरहक विचार उठबे ने कएल। किएक तँ तेसरा-चारिम दिनपर बरबैर अबिते-जाइते रही। दीदीकेँ भैया कहलखिन-

"कनी चाह बनाउ।"

भैयाक बोली हम नइ बुझलयैन मुदा दीदी बुझि गेलखिन। ओ पाँच कप चाह बनौलैन। दू कप अपने दुनू परानी आ तीन कप हमरा तीनू गोरेकेँ देलैन। पहिल दिन हम भैयाक डेरामे चाह पीने रही। भैया, नाओं पुछलैन, हम कहलयैन। मैट्रिकक रिजल्टक सम्बन्धमे पुछलैन। सेहो कहलयैन। भैया नाओं लिखबैसँ लऽ कऽ किताब-कॉपी धरिक भार उठबैत माएकेँ कहलखिन-

"स्कूल-कौलेज तँ लगेमे अछि, माने महल्लेमे अछि तँए बाहर जा कऽ पढ़ैक समस्ये ने अछि। घरेपर रहि पढ़ि सकैए। तखन स्कूल-कौलेजक खर्चसँ लऽ कऽ पढ़ैक सभ सामग्री धरिक खर्च आइसँ दुनू भाए -बहिनक हम देब।"

..भैयाक बात सुनि खुशीसँ हमर मन नाचि उठल। हम बड़ी काल धरि

टकर-टकर भैयाक मुँह दिस तकिते रहि गेलौं। जाधैर डॉक्टर बनलौं ताधैर भैया सभ खरच दैते रहला।”

सुजाताक बात सुनि रमाकान्तक मनमे एलैन जे जँ कनियों मदैत गरीबकेँ कएल जाए तँ जिनगीक उद्धार भऽ सकैए। पितो बहुत केलैन। बेटो केलक। बीचमे हम तँ किछु नै केलौं..! ओना, दोसरा-ले रमाकान्तो बहुत किछु केनौं रहैथ आ करबो करैथ। मुदा सभ केलहा बिसैर गेला।

रातिक आठ बजि गेल। एका-एकी तीनटा गाड़ी आएल। महेन्द्र अपन गाड़ीसँ उतैर कोठरीमे आबि कपड़ा बदललैन आ सोझे पिता लग एला। महेन्द्रकेँ देखिते रमाकान्त कहलखिन-

“बौआ, हम बेसी दिन नै अँटकब। हम तँ दस गोरेमे समय बितबैबला छी। ऐठाम असगरमे नीक नै लागत।”

महेन्द्र-

“गाड़ीक झमारल छी तँए पहिने चारि दिन अराम करू। तेकर बाद देखि-सुनि कऽ जाइक विचार करब।” ❑

शब्द संख्या : 4454

पाँच

मद्रास एला रमाकान्तकेँ आइ दस दिन भऽ गेलैन। दस दिन केना बितलैन से बुझबे ने केलाह। ऐ दस दिनक बीच महेन्द्र अपने गाड़ीसँ तीनू गोरेकेँ उदकमण्डलम्, कोडाइकनाल आ एकडि हिलस्टेशन सहित शुचीन्द्रम, रामेश्वरम्, तिरुचेंदूर, मदुराइ, पलनी, तिरुचिरापल्ली, श्रीरंगम, तंजोर, कुम्बकोणम, नागोर, वेलांकण्णि, वैत्तीश्वरन कोइल, चिदम्बरम्, तिरुवण्णामलै, कांचीपुरम, तिरुत्तणि आ कन्याकुमारी घुमा देलकैन। मुदा अपना सभसँ भिन्न रीति रेवाज, बेवहार आ जीबैक ढंग ओइठामक लोकक बुझि पड़लैन। तैसंग ईहो जरूर बुझि पड़लैन जे

अपना सभसँ ऐठामक लोक अधिक मेहनतियो आ इमानदारो अछि।

भारतक आजादीक उपरान्त राज्य-पुनर्गठन अधिनियमक अन्तर्गत चौदह जनवरी उन्नैस साए उनहत्तैरमे मद्रास राज्यक नाओं तमिलनाडु राखल गेल। पुरना केरलक किछु हिस्सा आ आन्ध्र प्रदेशक किछु हिस्सा जोड़ि कऽ ऐ राज्यक निर्माण भेल।

तमिलनाडु द्रविड़ सभ्यताक केन्द्र अदौसँ रहल अछि। ई.पू. चारिम शताब्दीमे चोल, पाण्ड्य आ चेर राजवंशक समयमे द्रविड़ सभ्यता अपन चरम सीमापर फुलाएल-फड़ल।

तेरहमी शताब्दीक आरंभमे ऐठाम काकतीयक शासन रहल। तेरह साए तेइस ईस्वीमे दिल्लीक तुगलक सुल्तान काकतीय शासककेँ भगौलक। गोलकुंडाक कुतुबशाही सुल्तान अखनुका हैदरावादक न्यों लेलक। सम्राट औरंगजेब सुल्तानकेँ हेरा आसफजा-केँ गवर्नर बना देलक। मुगल शासनक आखिरी समयमे आसफजा अपनाकेँ निजामक उपाधि धारण कऽ स्वतंत्र शासक घोषित कऽ लेलक।

सोलह साए उनचालीस ईस्वीमे ईस्ट इंडिया कम्पनीक पएर मद्रासमे जमि गेल, ताधैर देशक अधिकांश भागमे अंग्रेजक अधिकार भऽ गेल छेलइ। तमिलनाडुक पूबमे बंगालक खाड़ी, दच्छिनमे हिन्द महासागर, पच्छिममे केरल आ उत्तरमे कर्नाटक आ आन्ध्रप्रदेश अछि।

पैछला राति गप-सप्प करैत सभकेँ डेढ़ बजि गेलैन। गपक विषैयो नमहर, सात दिनक देखल मद्रास...।

अढाइ बजे भोरमे एकठाम गाड़ी दुर्घटना भऽ गेलइ। चारू गोट डॉक्टरकेँ फोन एलैन जे जल्दी दुर्घटनाक जगहपर अबिऐ। फोन सुनि म हेन्द्र तीनू गोरे–रविन्द्र, जमुना आ सुजाता–केँ जानकारी दैत कहलखिन-

“जल्दी-जल्दी तैयार भऽ चलै चलू।”

एक्के गाड़ीसँ चारू गोरे विदा भेला। दुर्घटनाक जगहपर पहुँच महेन्द्र देखलखिन जे गाड़ी एकटा सड़कपर राखल रौलरसँ टकरा गेल अछि। जइसँ

सभ कियो थौआ-थाकर भेल अछि। ..गाड़ीमे एक्के परिवारक आठ गोरे सवार छला। उद्योगपतिक परिवार। दू गोरेक हालत बड़ खराप छेलइ। एकटा बुढ़क माथ फटि गेल रहैन, जइसँ ओ अर्र-दर्र बजै छला आ दोसर महिलाक छाती टुटि गेल रहैन। मुदा वायपर कखनो-कखनो बजबो करै छली। एकटा जुआन महिलाक दुनू जांघ टुटि गेल रहैन। दूटा ढेरबा बचियाक एक-एकटा आँखि फुटि गेल रहैन आ एक-एकटा डेन टुटि गेल रहैन। अबोध बच्चाकेँ किछु नै भेल छेलइ। डॉ. महेन्द्रकेँ पहुँचते धाँइ-धाँइ अस्पतालक आनो-आनो डॉक्टर, नर्स आ स्टाफो सभ आबए लगला। थाना पुलिससँ लऽ कऽ जिला पुलिस धरि सेहो पहुँच गेल। डॉक्टर सभ रोगी सभकेँ देखि विचार केलैन जे अस्पताले लऽ जेनाइ नीक होएत। डॉक्टर सबहक संगमे सिरिफ अलेटा। ने कोनो दबाइ आ ने कोनो औजार रहैन।

आठो गोरेकेँ उठा-पुठा कऽ अस्पताल आनल गेल। अस्पतालमे जाँच-पड़ताल होइते समय दू गोरेक मृत्यु भऽ गेलैन।

साढ़े पाँच बजे चारू गोरे डेरा पहुँचला। गाड़ीक हरहरेनाइ सुनि रमाकान्तोक नीन टुटि गेलैन।

सुतैक समय नै देखि चारू गोरे गाड़ीसँ उतैर अपन-अपन नित्य-कर्ममे लगि गेला। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल रमाकान्त सोचए लगला जे आइ एगारहम दिन छी मुदा एक्को-टा पोता-पोतीक मुँह नै देखि सकलौं! जइ परिवारमे पाँच-पाँचटा पोता-पोती रहत ओइ परिवारक बच्चासँ भेँट नै हुअए, ई केतेक दुखक बात छी। माए-बाप, दादा-दादीक सिनेह बच्चाक प्रति की होइ छै तेकर कोनो नामो-निशान नै देखि रहल छी। जइ बच्चाकेँ माए-बापक सिनेह नै भेटतै ओइ बच्चाकेँ माता-पिताक प्रति केहेन धारणा बनत। हँ, ई बात जरूर जे दुनियाँक सभ मनुख-मनुख छी तँए सबहक प्रति सभकेँ सिनेह हेबा चाही। मुदा जइ परिवेशमे हम सभ जीब रहल छी, जैठाम बेकतीगत सम्पैत आ जवाबदेहीक बीच मनुख चलि रहल अछि, तैठाम सिनेह तँ खण्डित होइए। मनुखक जिनगी स्थायी नहि अस्थायी होइए। उमेरक हिसाबसँ शरीर क्रियाशील रहैए। जहिना बच्चाक उत्तरदायित्व माए-बापपर रहै छै तहिना रोगसँ ग्रसित वा अधिक वयस भेलापर जखन शरीरक अंग शिथिल हुअ लगै छै, तखन माइयो-बापक

उत्तरदायित्व तँ बच्चापर होइ छइ। जँ से नै होइ तखन जिनगी कष्टमय हेबे करत। लोक एक राज्यसँ दोसर राज्य, एक देशसँ दोसर देश कमाइले जाइए, किएक? अहीले ने जे अपनो आ परिवारोक जिनगी चैनसँ चलत...।

रंग-बिरंगक प्रश्न सबहक बीच रमाकान्त पड़ल छला।

महेन्द्रकेँ तीन आ रविन्द्रकेँ दू सन्तान। दुनू मिला कऽ पाँच भाए-बहिन। महेन्द्रक जेठ बेटा हाइ स्कूलमे पढ़ैत, बाँकी चारू नर्सरीमे। महेन्द्रक जेठ बेटाक नाओं 'रमेश', जे हाइ स्कूलक होस्टलमे रहैए आ बाँकी चारू आवासीय स्कूलमे। महिना दू महिनापर महेन्द्र अपनेसँ जा कऽ खरचा पहुँचबै छैथ।

बाबा-दादीक जोर केलापर बच्चा सभकेँ भेँट करैक कार्यक्रम महेन्द्र बनौलैन। रबि दिन स्कूलो बन्न रहत, तँए भेँट-घाँट करैमे सुविधा सेहो होएत। सात बजे डेरासँ चलबाक कार्यक्रम बनल। रमाकान्त, श्यामा आ जुगेसर समयसँ पहिनहि तैयार भऽ गेल छला मुदा भरि रातिक जगरना दुआरे महेन्द्र पछुआएल रहैथ। ओंघीसँ देह भँसियाइत रहैन। मुदा नीन तोड़ैक दबाइ खा पिता लग आबि बजला-

"बाबू, हम तँ भरि राति जगले रहि गेलौं। जखन ओछाइनपर गेलौं, नीन पड़लो ने रही कि फोन आबि गेल जे एकटा गाड़ीक दुर्घटना भऽ गेलै, जइमे सवार एक्के परिवारक आठ गोरे छला, ओ पैघ उद्योगपति परिवार छल। हुनके सभकेँ देखैत-सुनैत भोरमे एलौं।"

बिच्चेमे जुगेसर बाजल-

"मरबो केलइ?"

"हँ! जे दुनू मुख्य कारोबारी छला ओ मरि गेला। एक गोरेकेँ ब्रेन हेम्रेज भऽ गेलैन। आब ओ सभ दिन पगलाएले रहती। एक गोरेकेँ छातीक हड्डी थौकचा भऽ गेल छैन, ओ दू-चारि मासक मेहमान छैथ। तीनटा अधमरू भऽ कऽ जीता। एकटा चारि सालक बच्चाटा सुरक्षित रहल।"

रमाकान्त महेन्द्रक बातो सुनैथ आ मने-मन सोचबो करैथ जे यएह छी जिनगी। अहीले लोक एते नीच-सँ-नीच काजपर उतैर मनुखकेँ मनुख नइ बुझैए। मुदा अनका बुझबैले धरमक नाटक रचि पूजा-पाठ-कीरतन-भजन

करैए। तैसंग हजारो-लाखो रूपैआ खरच कऽ पाथरक मूर्ति सेहो स्थापित करैए, नीक-नीक प्रसाद चढ़बैए। मुदा जइ मनुखकेँ पेटमे अन्न नहि, देहपर वस्त्र नहि, रहैक घर नहि आ जीबैक कोनो ठेकान नहि, ओकरा देखिनहारो कियो नहि! यएह छी कर्मकाण्डक आडम्बर आ चक्रव्यूह!

रमाकान्तकेँ गम्भीर देखि मुस्कियाइत महेन्द्र बजला-

"नोकरीक जिनगीए एहेन होइ छइ। एक रातिक कोन बात जे एकलखाइत पाँचो राति जगल रहब तैयो किछु नइ बुझबै। एहेन-एहेन दबाइ सभ अछि जे खाइत देरी नीन निपत्ता भऽ जाइए। जाबे अहाँ सभ चाह-पान करब ताबे हमहूँ तैयार भऽ जाइ छी।"

कहि महेन्द्र उठि कऽ तैयार होइले अपना कोठली चलि गेला।

चारू गोरे कारमे बैस विदा भेला। दुनू स्कूल एक्केठाम। एक दोस रसँ थोड़बे हटल। चारू गोरे पहिने रमेशक होस्टल पहुँचला। छहरदेवालीक बीचमे होस्टल अछि। अबै-जाइक एक्केटा दरबज्जा, जइ दरबज्जामे लोहाक फाटक लागल, ओतए एकटा दरमान बैसल। दरमान महेन्द्रकेँ चिन्हैत रहैन। किएक तँ मासे-मास ओ अबै छैथ। चारू गोरे भीतर गेला। भीतरमे गार्जन सभ-ले एकटा खुला घर अछि, जइमे चारूकात कुरसी सजल। चारू गोरे ओइ घरमे बैसला। महेन्द्र रमेशकेँ समाद देलखिन। रमेश आबि पिताकेँ गोड़ लागि ठकुआ कऽ आगूमे ठाढ़ भऽ गेल। ने रमेश बाबा दादीकेँ चिन्हैत आ ने बाबा-दादी रमेशकेँ। ठकुआएल ठाढ़ देखि रमेशकेँ महेन्द्र कहलखिन-

"बौआ, बाबा-दादीकेँ गोड़ लगहुन ने!"

महेन्द्रक कहलापर रमेश तीनू गोरेकेँ गोड़ लगलकैन। शिष्टाचार निमाहैत तीनू गोरे असिरवाद देलखिन। मुदा रमाकान्तक मनमे तूफान उठि गेलैन। सोचए लगला- जे पोता चिन्हबो ने करैए ओ सेवा की करत? पढ़नाइ-लिखनाइ, सभ मनुख-ले जरूरी अछि। ऐसँ ज्ञान होइ छै, जे जिनगी जीबैक ढंग सिखबैए। मुदा जँ बच्चाकेँ परिवारसँ अलग जिनगी बना पढ़ौल-लिखौल जाए तँ ओ परिवारकेँ केना चिन्हत आ परिवारक दायित्वकेँ केना बुझत? परिवारोक तँ सीमा छइ। एक परिवार पैछला पीढ़ीकेँ जोड़ि बनैए, जे संयुक्त परिवार कहबैए।

संयुक्त परिवार मिथिलाक धरोहर छी। आ दोसर अपने लगसँ आगू बढ़ि बनैए, जे एकल परिवार कहबैए। जइमे लोक बापो-माएकेँ बीरान बुझि कुभेला करैए। जँ ऐ तरहक परिवारक संरचना हुअ लगत तँ बापो-माएकेँ धिया-पुतासँ कोन मतलब रहतै। तखन समाजक की दुर्दशा हेतै? जँ से हेतै तँ मनुख आ जानवरमे अन्तरे की रहत? अखने देखि रहल छी जे अपन खून रहितो बुझि पड़ैए जे जहिना हाट-बजार वा मेला-ठेलामे हजारो मनुख देखलोपर अनचिन्हारे-अनचिन्हार बुझि पड़ै छै, तहिना भऽ रहल अछि। ऐसँ नीक जे जखन मनुखक समूहसँ परिवार बनैत आ परिवारक समूहसँ समाज तखन समाजेक सदस्यकेँ किएक ने अंगीकार कएल जाए, जइसँ जिनगी हँसैत-खेलैत बितैत रहत...।

पिताकेँ गुम्म देखि महेन्द्र बजला- "बाबू, ऐठामसँ चलू। ऐठाम सभ बच्चाक रुटिंग बनल छइ। अगर अपना सभ बेसी समय अँटकबै तखन बच्चाक रूटिंग गड़बड़ा जेतइ।"

ममता भरल मनकेँ मारि रमाकान्त उठि कऽ ठाढ़ होइत बजला-

"हँ, हँ, चलू। ओहू बच्चा सभकेँ देखैक अछि।"

रमेशो चलि गेल आ ईहो चारू गोरे गाड़ीमे बैस बढ़ला।

नर्सरी विद्यालय लगेमे, लगले सभ कियो पहुँचला। महेन्द्रकेँ दरमान चिन्हिते, तँए कोनो रोक-राक नहियेँ भेलैन। चारू बच्चाकेँ दरमान बजा अनलक। चारू बच्चा आबि महेन्द्रकेँ गोड़ लगलकैन। गोड़ लागि चारू गोरे ठमैक गेल। हाथक इशारासँ रमाकान्त आ श्यामाकेँ देखबैत बच्चा सभकेँ महेन्द्र कहलखिन- "बौआ, बाबा-दादी छथुन। गोड़ लगहुन।"

महेन्द्रक कहलापर चारू बच्चा तीनू गोरेकेँ गोड़ लगलकैन। रमाकान्तो आ श्यामोक मन तरे-तर टुटए लगलैन। मुदा की करितैथ। सोचए लगला जे की सोचि ऐठाम एलौं आ की देखि रहल छी। आब एक्को दिन ऐठाम रहब उचित नहि, मुदा जखन आबि गेलौं तखन तँ बेटे-पुतोहुक विचारसँ ने गाम जाएब। किछु देखैले बाँकी सेहो अछि। टुटल मने रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

"बच्चा सभकेँ देखिए लेलौं, आब ऐठामसँ चलू। गामक सुरता घीचि रहल अछि। जल्दीए चलि जाएब।"

पिताक बात महेन्द्र नइ बुझि सकला। जाधैर महेन्द्र गाममे रहला विद्यार्थीए छला। डॉक्टर बनला पछाइत मद्रासे चलि एला। जइसँ मद्रासेक परिवेशमे ढलि गेला।

बेर टगिते चारू गोरे ब्रह्मचारी आश्रम विदा भेला। बह्मचारी आश्रममे मन्दिर नहि। मात्र दूटा घर। एकटा घर धर्मशाला जकाँ सार्वजनिक आ दोसर घरमे ब्रह्मचारीजी अपने रहै छला। एक भागमे सुतबो करैथ आ दोसर भागमे भानसो-भात। तैसंग बरतनो-बासन सभ रखैथ। ब्रह्मचारीजी मिथिलेक छिआ। अद्वैत दर्शनक प्रकाण्ड पण्डित छैथ। ब्रह्मचारीजीक नस-नसमे अद्वैत दर्शन समाएल छैन।

ब्रह्मचारी आश्रम लगमे रहितो महेन्द्र नै जनै छला। मुदा जखन रामेश्वरम् गेल छला तँ ओतै एकटा पुजेगरी कहलकैन।

मुख्य मार्गसँ ब्रह्मचारीक आश्रम दस लग्गी पच्छिम। एकपेड़िया रस्ता तँए महेन्द्र मुख्य मार्गक कतबाहिमे गाड़ी लगा, चारू गोरे आश्रम दिस बढ़ला। आश्रमक सीमापर पहुँचते रमाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठा-उठा तजबीज करए लगला। ने कोनो तरहक तरक-भरक आ ने लोकक भीड़-भाड़ आश्रममे। घर तँ ईंटाक बनल मुदा धर्म स्थान जकाँ नइ बुझि पड़ैत। साधारण गिरहस्तक घर जकाँ आश्रम। मुदा एकटा नव चीज दुनू गोरेकेँ बुझि पड़लैन। बुझि पड़लैन जे हम सभ मद्रासक जमीन छोड़ि मिथिला चलि एलौं अछि।

ब्रह्मचारीजी करजानमे हाँसू लऽ कऽ केरा गाछक सुखल डपोर सभ कटैत रहैथ। केरा गाछक अढ़मे, तँए ने ब्रह्मचारीजी रमाकान्त सभकेँ देखलखिन आ ने रमाकान्त सभ ब्रह्मचारीजीकेँ देखैथ। मुदा गाड़ीक आवाज ब्रह्मचारीजी सुनने छला। ओना, गाड़ी तँ सदिखन चलिते रहैए, तँए गाड़ीक आवाजपर ब्रह्मचारीजी धियाने नै देलैन। अपन काजमे मस्त छला।

करीब एक बीघा जमीन आश्रम हएत, जइमे सभ किछु बनल अछि। दू कट्ठामे दुनू घर, आँगन आ गाइक थैर सेहो छैन। चारि कट्ठाक एकटा छोटेटा पोखैरो अछि आ करीब पाँच कट्ठामे गाछी-कलम सेहो हएत। दू कट्ठामे गाए-ले घासऽ खेती आ सात कट्ठामे अन्न उपजबै छैथ।

सभसँ पहिने चारू गोरे पोखैर घाटपर पहुँचला। पोखैर घाट पजेबा-सिमटीसँ बनल अछि। घाटपर ठाढ़ भऽ चारू गोरे पोखैरकेँ हियासि-हियासि देखए लगला। पोखैरक किनछैरमे पान-सातटा मिथिलेक बौगुला चरौर करैत रहए। एक टकसँ रमाकान्त बौगुलाकेँ देखि सोचए लगला जे जहियासँ ऐठाम एलौं, आइए अपन इलाकाक बौगुला देखलौं। ओना , बौगुला तँ एतौ अछि मुदा मिथिलाक बौगुला तँ दोसरे चालि-ढालिक होइए।

..बौगुलापर सँ नजैर हटा पोखैर दिस देलैन। पोखैरमेँ दस-बारहटा कुमहीक छोट-छोट समूह फूल जकाँ छिड़ियाएल, जे हवाक सिहकीमे नचैत। तैबीच दूटा पनिडुम्मी भुक-दे जागल, जेकरा अपना सभ पिहुओ कहै छिऐ। पिहुआकेँ तजबीज करिते रहैथ कि एक जेर सिल्ली उड़ैत आबि पोखैरमे बैसल। तैबीच जुगेसर बाजल-

"काका, ई तँ अपने इलाकाक पुरैन गाछ छी। फूलो ओहने बुझि पड़ैए।"

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मुड़ी उठा पुरैनकेँ देखि बजला-

"हँ हौ जुगेसर, छी तँ कमले।"

हाथ-पएर धोइ कऽ चारू गोरे घाटक ऊपरका सीढ़ीपर आबि ब्रह्मचारीजीकेँ हियाबए लगला। ब्रह्मचारीजीकेँ नै देखि रमाकान्त सोचए लगला जे भरिसक केतौ गेल छैथ। तैबीच जुगेसरक नजैर करजान दिस गेल। करजानमे ब्रह्मचारीजीकेँ देखि जुगेसर बाजल-

"काका, एक गोरे करजानमे काज कऽ रहल अछि। हम जा कऽ पुछिऐन जे ब्रह्मचारीजी केतए छैथ?"

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्तो आ महेन्द्रो आँखि उठा कऽ देखलैन। मुदा ओइ बेकतीक छुछुन चेहरा देखि रमाकान्तकेँ भेलैन जे कियो जन-मजदूर काज करैए। तैबीच हनको कानमे रमाकान्तक आवाज पहुँचलैन, कानमे आवाज पहुँचते हाथक हँसुआ नेनहि पहुँचला।

ब्रह्मचारीजी अनेको भाषा आ बोलीक जानकार, चारू गोरेकेँ देखिते बुझि गेला जे ई मिथिलेक छैथ किएक तँ जुगेसर आ रमाकान्तकेँ मिथिलेक ढंगसँ धोती पहिरने देखलैन। मुदा महेन्द्रकेँ देखि तत-मतमे पड़ल छला।

श्यामाक साड़ी पहिरब देखि ब्रह्मचारीजीक मन मानि गेलैन जे ई सभ मिथिलेक छैथ। ..तैबीच रमाकान्त पुछलखिन- "ब्रह्मचारीजी केतए छैथ?"

ब्रह्मचारीजी साधारण धोती पहिरने रहैथ। सेहो फाँड़ बन्हने। देहपर अंगपोछा रहैन। ने बाबरी छटौने आ ने दाढ़ी रखने। ने गरदैनमे कण्ठी-माला आ ने देहमे जनेउ...।

मुस्कियाइत ब्रह्मचारीजी उत्तर देलखिन- "अहाँ सभ मिथिलासँ एलौं। एना ठाढ़ किए छी। चलू बैस कऽ गप-सप्प करब। ब्रह्मचारीजी अपने आबि जेता।"

कहि पोखैर घाटपर हाँसू रखि हाथ-पएर धोइ कऽ अँगनेमे मोथीक बिछान बिछौलैन। चारू गोरेकेँ बैसा घरसँ एक घौर केरा निकालि अनलैन।

..केराक रंग-रूप देखि रमाकान्त बुझि गेला जे ई तँ मिथिलेक गौरिया-मालभोग छी, अँठियाहा नइ छी। घौरो नमहर। गछपक्कू, अँठि-अँठि जुआएल अछि। सुआदो नीक हेतै, अपनेसँ पूर्ण जुआ कऽ पाकल अछि। धुकलाहा नइ छी।

केराक घौर बीचमे राखल आ सभ कियो हाथ बगने। जुगेसर सोचैत जे तेते खेने छी जे पेटमे जगहे ने अछि, नहि तँ सौंसे घौर खा जैतिऐन ।

रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ कहलखिन-

"अखने, एक घन्टा पहिने भोजन केलौं, तँए खाइक क्षुधा नइ अछि। मुदा ब्रह्मचारी आश्रमक परसाद छी तँए दू छीमी जरूर खाएब। "

कहि दूटा छीमी ऊपरका हत्थासँ तोड़ि खेलैन।

रमाकान्तकेँ देखि महेन्द्रो आ जुगेसरो दू-दू छीमी तोड़ि खेलैन। श्यामा हाथ बगने चुपचाप बैसल छेली। श्यामाकेँ हाथ बागल देखि ब्रह्मचारीजी बजला-

"बहिन, अहाँ जइ दुआरे हाथ बगने छी ओ हमहूँ बुझै छी। मुदा अपन मिथिलामे दुनू चलैन अछि। पति आगूमे पत्नीकेँ नै खाएब आ बिआहक प्रकरणमे समाजक माए-बहिन मिलि मौहक करै छैथ, जइमे पति-पत्नीकेँ संगे

खुऔल जाइए। तँए अहूँकेँ लजेबाक नै चाही। ई तँ सहजे आश्रम छी। दोसर धर्म स्थान सेहो छी।”

ब्रह्मचारीजीक विचार सुनि श्यामाक मन डोललैन, मगर बेवहार मनकेँ रोकिते छेलैन। तैबीच असमंजसमे श्यामाकेँ देखि जुगेसर फनैक कऽ बाजल-

“काकी, जखन हमरा घरनीकेँ हाथ ढेकीमे कटि गेल रहैन, तखन हम अपने हाथे खुअबै छेलिऐन। अहाँ तँ सहजे वृद्ध भेलौं।”

जुगेसरक बात सुनि रमाकान्त मुड़ी झूका लेलैन। दू छीमी केरा श्यामो खेलैन। चारू गोरे केरा खा हाथ-मुँह धोलैन।

ब्रह्मचारीजी रमाकान्तकेँ पुछलखिन-

“ऐठाम अपने केना-केना एलिऐ?”

महेन्द्रकेँ देखबैत रमाकान्त बजला-

“ई जेठ बेटा छैथ। डॉक्टरी पढ़ि नोकरी करए ऐठाम चलि एला। सालमे एक बेर अपनो गाम जाइ छैथ। बाल-बच्चा आ स्त्री आइ धरि गाम नइ गेलखिन। ओहो सभ अहीठाम रहै छैथ। दुनू परानीक मनमे आएल जे देशो - कोस आ बच्चो सभकेँ देखि आबी तँए एलौं?”

महेन्द्र दिस देखि ब्रह्मचारीजी बजला- “केते दिनसँ ऐठाम छी?”

कनी कल गुम्म रहि समय मोन पाड़ि महेन्द्र बजला-

“ई बाइसम बर्ख छी।”

“एते दिनसँ ऐठाम रहै छी मुदा कहियो भेँट-घाँट नै भेल?”

अपन विबसता देखबैत महेन्द्र उत्तर देलखिन- “एक तँ नोकरी करै छी, तैपर डॉक्टरी एहेन पेशा अछि जे भरि मन कहियो अरामो नै कऽ पबै छी। घुमनाइ-फिरनाइक कोन बात। मुदा तैयो कहुना समय निकालि ऐबो करितौं से बुझले ने छल।”

“आइ केना एलौं?”

“चारिम दिन रामेश्वरम् गेल रही, ओइठाम एकटा पुजेगरी अपनेक सम्बन्धमे कहलैन।”

महेन्द्रक बात सुनि ब्रह्मचारीजी मुस्कियाइत बजला- “मासमे एक बेर हमहूँ रामेश्वरम् जाइ छी। समाज-रूपी समुद्रक कातमे स्थापित रामेश्वरम लग जा समुद्रमे उठैत लहैरकेँ धियानसँ देखबो करै छी आ विचारबो करै छी। दुनू तरहक लहैर समुद्रमे उठैए- नीको आ अधलो। नीक लहैर देखि मन प्रसन्न होइए आ अधला देखि मन जरए लगैए। मुदा तैयो सोचैत रहै छी जे अधला लहैर बेसी उग्र नै हुअए आ नीक लहैर सदिखन उठैत रहए।”

ब्रह्मचारीजीक विचार जेना महेन्द्रक सुतल बुधिकेँ जगा देलकैन। अनासुरती महेन्द्रक मनमे उठलैन- अन्हार-सँ-इजोतमे आबि गेलौं, कि इजोते-सँ-अन्हारमे चलि गेलौं?

विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। जइ रूपमे माए-बाप आ जुगेसरकेँ अखन धरि देखै छला ओ बदलए लगलैन। बीचसँ उठि महेन्द्र गाछी दिस टहैल गेला। ब्रह्मचारीजी बुझि गेलखिन।

तैबीच रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन-

“अपने मिथिला छोड़ि ऐठाम किए आबि गेलौं। जखन कि ई इलाका दोसर धर्म, दोसर संस्कृति आ दोसर जातिक छी?”

मुस्कियाइत ब्रह्मचारीजी कहए लगलखिन- “कोनो जाति, पंथ आकि संस्कृतिक अधार होइ छै जिनगी। जिनगीक अधार होइ छै मनुखक बुधि, विचार आ कर्म। जखने मनुख अपन सुपत कर्मसँ जिनगी ठाढ़ करैए तखने धर्म, संस्कृति, विचार आ आचार सभ किछु बदैल, सही मनुखक निर्माण करैए। जेकरा हम महामानव, धर्मात्मा आ उच्च कोटिक मनुख बुझै छी, जे मिथिलांचलमे क्षीण भऽ रहल अछि! ओना, सोलहन्नी मरल नइ अछि मुदा दबाइत-दबाइत दुब्बर भऽ गेल अछि। मिथिलाक जे मूलबासी छैथ हुनका सभकेँ अभिजात वर्ग वा कही तँ परजीवी वर्ण वा बाहरी लोक आबि सभ किछुकेँ बदैल एहेन सामाजिक ढाँचामे ढालि देलकैन जे अदौसँ अबैत संस्कृतिकेँ दाबि अभिजात-संस्कृतिकेँ बढ़ा देने अछि। जिनगीक सच्चाइकेँ दाबि बनौआ जिनगीमे बदैल देने अछि। जइसँ लोकक जिनगी वास्तविकतासँ हटि वौआ गेल अछि। ओना, निर्मूल नष्ट नै भेल अछि मुदा एतेक क्षीण जरूर भऽ गेल जे नीक-

अधलाकेँ बेराएब कठिन अछि। हम सभ मनुखकेँ मनुख बुझै छी। ने कियो कारी अछि आ ने कियो गोर। मुदा जिनगीक ढाँचा एहेन बनि गेल अछि जे स्पष्ट रूपमे एक-दोसरसँ पैघ आ छोट बनि गेल अछि आ बनलो जा रहल अछि। ओना, देखबै तँ बुझि पड़त जे सभ एक दोसरसँ पैघ आ एक-दोसरसँ छोट अछि। मगर मकड़ा जकाँ अपने पेटसँ सूत निकालि अपनेसँ जाल बुनि, ओइमे सभ ओझरा गेल छैथ।"

ब्रह्मचारीजी आँखि बन्न केने बजिते छला कि बिच्चेमे रमाकान्त पुछि देलखिन- "अपने तँ प्रकाण्ड पण्डित छी तखन मिथिलाकेँ किएक छोड़ि ऐठाम चलि एलौं?"

रमाकान्तक दोहराएल प्रश्नपर ब्रह्मचारीजी गम्भीर होइत बाजए लगला-

"अहाँक बात हम मानै छी, मुदा पढ़ल-लिखलसँ मुरुख धरिक विचार एहेन बनि गेल अछि जइमे नीक विचारकेँ सन्हिआइए नै देल जाइए। कहलो गेल छै जे 'असगर ब्रहस्पतियो फूसि।' तेतबे नहि, जेकरा कल्याणक जरूरत अछि ओहो नीक रस्ता धड़ैले तैयारे नहि! 'जेकरा-ले चोरि करी सएह कहए चोरा।' की करबै जँ सिरिफ वैचारिके स्तरपर संघर्ष होइ तँ संघर्ष कएल जा सकैए मुदा तेतबे नइ अछि। जिनगीक क्रियामे उपद्रव जे करैए से तँ करबे करैए जे जानोसँ खेलबार करैमे नै चुकैए। अभिजात वर्ग एते सशक्त बनि गेल अछि जे जहिना कोनो साँढ़-पारा पाँकमे चलै काल फँसि जाइए आ परोपट्टाक नढ़िया, कुकुरक संग गीध, कौआ आबि-आबि जीबतेमे आँखि फोड़ि-फोड़ि खाए लगै छै, तहिना इमानदार मनुखोक संग होइए। मुदा हारि मानैले ने हम तैयार छी आ ने मानब..! मुदा जहिना नव सुरुजक संग नव दिनक शुरूआत होइत तहिना नव मनुख नव जिनगी बनबैक दिशामे बढ़ैए, तँए संतोख अछि।"

रमाकान्त- "अपनेक परिवारमे के सभ छैथ?"

ब्रह्मचारी-

"पिता गिरहस्त छला। पनरह बीघा खेत रहैन। ओइ खेतकेँ माता-पिता दुनू परानी उपजबै छला, जइसँ परिवार नीक जकाँ चलै छेलैन। ओना, रौदी-दाही होइते छेलै मुदा तैयो सहि-मरि कऽ ओहीसँ गुजर करै छला। हम दू भाँइ

छी। घरे लग नवानी विद्यालयमे हम पढ़लौं, किछु दिन लोहना पाठशालामे से हो पढ़लौं। हमर छोट भाए बच्चेसँ पिताजीक संग खेती करै छला। नै पढ़लैन। माइयो आ बाबूओ मरि गेला। हम बिआह नै केलौं। भाएकेँ बिआह करा सभ किछु छोड़ि अपने घरसँ निकैल गेलौं। मनमे छेलए जे जइ कुरीति , कुबेवस्था आ कुचालिमे मिथिलाक समाज फँसल अछि ओकरा सुधारि सुरीति, सुबेवस्था आ सुचालि दिस लऽ चली। तइ पाछू लगि गेलौं। मुदा वेबस भऽ छोड़ि चलि एलौं। कारण ओइठामक निआमक आ निआमकक पाछू पढ़ल-लिखल लोक छैथ जे अपनाकेँ बुधियार बुझै छथिन तिनका लगा अभिजात लोकैन सभ, मनुखक साँचकेँ ओहन बना देने छैथ, जइसँ कुपात्र छोड़ि सुपात्रक निर्माणे ने होइत। जेकरा चलैत छीना-झपटी, बलतकारी, चोरी, छिनरपनी, जातीय उन्माद, धार्मिक उन्माद वा ई कहियौ जे मनुख बनैक जेते रस्ता अछि ओ सभटा नष्ट भऽ गेल अछि! सबहक जड़िमे सम्पैत घुइस कऽ काज कऽ रहल अछि। जइ पाछू पड़ि सभ बताह भऽ गेल अछि। सभसँ दुखद बात तँ ई अछि जे नीक-सँ-नीक, पैघ-सँ-पैघ आ विद्वान-सँ-विद्वान धरि बजता किछु आ करता किछु! जइसँ समाजक बीच सत बजनाइए मेटा गेल अछि! एहेन समाजमे नीक लोकक रहब केना सम्भव हएत? तँए छोड़ि कऽ पड़ा गेलौं। देहक सुखक पाछू सभ आन्हर भऽ गेल अछि।”

ब्रह्मचारीजीक बात सुनि रमाकान्तकेँ धनक प्रति मोह भंग हुअ लगलैन। सोचए लगला जे हमरो दू साए बीघा जमीन अछि, ओते जमीनक कोन प्रयोजन? जँ ओइ जमीनकेँ निर्भूमि-गरीबक बीच बाँटि दिऐ तँ केते परिवार आ केते लोक सुख-चैनसँ जिनगी जीबए लगत। जेकरा-ले जमीन रखने छी ओ तँ अपने तेते कमाइ छैथ जे ढेरी लगल छैन। अदौसँ मिथिला तियागी महापुरुषक राज्य रहल, किएक ने हमहूँ ओइ परम्पराकेँ अपनए पुनर्जीवित कऽ दिऐ? ...एते बात मनमे अबिते रमाकान्त ब्रह्मचारीजीकेँ पुछलखिन-

“अपने ऐ जिनगीसँ संतुष्ट छी?”

रमाकान्तक प्रश्न सुनि हँसैत ब्रह्मचारीजी बजला- “हँ, बिल्कुल संतुष्ट छी। ऐसँ नीक जिनगी की भऽ सकै छइ। दुनियाँक जेते भाषा अछि, ओइ भाषाक उद्भव, विकास आ साहित्यक सभ पोथी पुस्तकालयमे रखने छी। तेतबे

नहि, दुनियाँमे जेते धार्मिक सम्प्रदाय अछि ओकरो पुस्तक रूपमे रखने छी आ अध्ययन करै छी। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण संहिता, स्मक्रि़त, ज्योतिष, पुराण, रमायणक संग बाइबिल, कुरान, गुरु ग्रन्थ सेहो रखने छी। सभ दर्शनक पोथी सेहो अछि। शरीर निरोग रखै दुआरे किछु समय शारीरिक श्रम करै छी, बाँकी समय अध्ययन आ चिन्तन-मननमे लगा रमल रहै छी। मासमे एक दिन सभ धार्मिक सम्प्रदायिक पण्डित सभकेँ बजा, अपन-अपन सम्प्रदायपर व्याख्यान करबै छी। एक दिन राजनीतिक व्याख्यान, एक दिन साहित्यिक व्याख्यान मासमे करबै छी। ऐ सबहक अतिरिक्त बेरा-बेरी किसान गोष्ठी, चिकित्सा गोष्ठी, विज्ञान गोष्ठीक संग आइक वैश्वीकरणक दुनियाँमे विज्ञानसँ नीक -अधलापर विचार-विमर्श करबै छी। समय केना खटि जाइए से बुझबे ने करै छी।”

ब्रह्मचारीजी बजिते रहैथ कि महेन्द्र सेहो आबि गेला। उन्मत्त पागले जकाँ महेन्द्रक चेहरा बुझि पड़ैन। रमाकान्तो बाहरी दुनियासँ निकैल भीतरी दुनियाँक बाट पकैड़ नेने छला।

चारू गोरे ब्रह्मचारीजीकेँ पएर छुबि गोड़ लागि चलैक विचार केलैन। चारू गोरेकेँ अरियाति ब्रह्मचारीजी गाड़ीमे बैसा अपने घुमि गेला। गाड़ीमे कियो केकरोसँ गप-सप्प नै करए चाहैत। सभ अपने-आपमे डुमल। डेरा अबिते रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

“बौआ, आब हम एक्को दिन नै अँटकब। गामक सुरता घीचि लेलक, तँए जेते जल्दी भऽ सकए विदा कऽ दिअ?”

“बड़बढ़ियाँ। आइए टिकट बनबा लइ छी। ऐठामसँ दरभंगाक गाड़ी सप्ताहिक अछि तँए अपना औगतेने तँ नै ने हएत। अगर टिकटो बनि जाएत तैयो पाँच दिन रहै पड़त।”

आठ बजे रातिमे सभ कियो एकठाम बैस अपन गामक सम्बन्धमे गप-सप्प करए लगला। गाममे अपन बीतल दिनक चर्चा करैत महेन्द्र बजला-

“की जिनगी छल आ अखन की अछि, ऐ विषयपर अखन धरि विचारैक अवसरे नै भेटल। जहिना अकासमे चिड़ै-चुनमुनी उन्मुक्त भऽ उड़ैए तहिना बच्चामे छेलौं। ने कोनो चिन्ता आ ने फिकिर छल। जहिना मध्यम गतिसँ गाड़ी -

सवारी चलैए तहिना छल। ने कोनो प्रतियोगिता परीक्षा-ले चिन्ता आ ने नोकरीक जिज्ञासा रहए। साधारण गतिसँ आई.एस.सी. पास केलौं आ मेडि कल कौलेजमे नाओं लिखा डॉक्टर बनलौं। डॉक्टर बनला पछाइत नोकरी आ पाइक भूख जागए लगल। जइसँ अपन गाम, अपन इलाका छोड़ि हजारो कोस दूर आबि गेल छी। ऐठाम आबि बजारू समाज आ संस्कृतिमे फँसि अपन परिवार, समाज सभ छुटि गेल। जेते पाइ कमा सुख-भोगक कल्पना करै छी ओते काजक बोझ बढ़ल जाइए। सुख-भोग-ले समय कहाँ बँचैए! ..समयक एते अभाव रहैए जे केता दिन अखबारो ने पढ़ि पबै छी। अखन धरिक जे विचार जिनगीक सम्बन्धमे छल, आइ बुझै छी जे भ्रमक छल। एते दिन अपने सुखटा-केँ सुख बुझैत रहलौं मुदा आब बुझि पड़ैए जे अपने सुखटा सुख नइ छी। हर मनुखकेँ जिनगी चलैक जे आवश्यक वस्तु अछि ओ पूर्ति हेबा चाहिऐ तखने सभ कियो चैनसँ जिनगी बिता सकैए। मनुखसँ परिवार बनै छै आ परिवारसँ समाज। मनुखोक कर्तव्य बनै छै जे सभसँ पहिने ओ अपना पैरपर ठाढ़ भऽ परिवारकेँ ठाढ़ करए। परिवार ठाढ़ भऽ जाएत तखन समाज स्वतः ठाढ़ भऽ आगू बढ़ए लगत। ओना, सुख की छी? सभसँ पहिने ऐ बातक विचार कऽ लेबक चाही। पंचभौतिक शरीर आ आत्माक संयोगसँ मनुख बनैए। सुख-दुख, नीक-अधला आत्माक अनुभूति छी नइ कि शरीरक। ओना, दुनियाँमे जेते मनुख अछि सभकेँ एक स्तरसँ चलक चाहिऐ मुदा से तँ नइ अछि। दुनियाँ देशमे बँटल अछि आ देशक शासन बेवस्था आ समाज खण्ड-परखण्ड भेल भिन्न-भिन्न भाषा, भिन्न-भिन्न संस्कृति आ भिन्न-भिन्न जातिमे बँटल अछि, जइसँ खान-पान, रीति-रेबाज, चालि-ढालिमे भिन्नता छइ। कहैले तँ हमहूँ मनुखेक सेवा करै छी मुदा पाइक दुआरे हम पाइबलाक सेवा करै छी। बिनु पाइबलाक सेवा कहाँ भऽ पबै छइ। जखन कि ओकरा सभसँ बेसी जरूरत छइ। अभावमे ओ खेनाइ-पीनाइसँ लऽ कऽ घर-दुआर, कपड़ा-लत्ता, दबाइ-दारू, सभसँ वंचित रहि जाइए। जइक चलैत गरीब लोकक जिनगी जानवरोसँ बत्तर बनि गेल अछि। ओ सभ मनुखक शकलमे जानवर बनि जीबैए। जइ मनुखक जरूरत ओकरा सभकेँ छै ओ अपने पाछू तबाह अछि।”

डॉक्टर महेन्द्रक बात सभ कियो धियानसँ सुनलैन। रमाकान्त बजला-

"बौआ, जइ गाममे तोहर जन्म भेलह आ जइ माटि-पानिमे रहि डॉक्टर बनलह, ओइ गामक लोक उचित इलाजक दुआरे मरि जाए, ई केते दुखक बात छी?"

रमाकान्तक प्रश्न सुनि सभ कियो गुम्म भऽ गेला। कियो किछु नै बाजि पबैथ। सभ सबहक मुँह देखैथ। हजारो कोसपर गाम अछि। केना ऐठामसँ ओइठाम इलाज भऽ सकै छइ? सबहक मनमे सवाल नचै छेलैन। बड़ी कालक पछाइत महेन्द्र मुँह खोललैन- "बाबू, सवाल तँ एहेन भारी अछि जे जवाबे ने फुरैए। मुदा एकटा उपाय मनमे आएल।"

"की?"

"अहाँ गाम जाएब तँ दू गोरेकेँ माने एकटा लड़का, एकटा लड़कीकेँ जे कम्मो पढ़ल लिखल हुअए, तेकरा ऐठाम पठा दिअ। ओइ दुनू गोरेकेँ ऐठाम रखि छह मास पढ़ा पठा देब। जे तत्काल इलाज करब शुरू कऽ देतइ। संगे हम सभ चारि गोरे सालमे एक-एक मास-ले जाइत रहब आ जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाज करैत रहब। तैबीच जँ कोनो जरूरी रोग उपैक जाएत तँ फोनसँ कहि सेहो बजा लेब। नहि तँ लहेरियासराय अछिए।"

महेन्द्रक विचार रमाकान्तकेँ जँचलैन। मुस्कियाइत बजला- "बौआ, गामक लोक तँ गरीब अछि, ओ केना इलाज करा सकत?"

गरीबक नाओं सुनि धाँइ-दे रविन्द्र उत्तर देलकैन- "बाबू, हम सभ बहुत कमाइ छी। जेते इलाजमे खरच हेतै से देबइ। तेतबे नहि, अखन अहाँ जाउ, पहिने दू गोरेकेँ पठा दिअ। ऐगला मासमे गाम आबि एकटा स्वास्थ्य केन्द्र बनाएब। जइमे सबहक इलाज हेतइ।"

रविन्द्रक विचारसँ सबहक ठोरपर हँसी एलैन। रमाकान्तक मनमे उठलैन, हमरे दू साए बीघा जमीन अछि मुदा छी कए गोरे! जँ इमनदारीसँ देखल जाए तँ की हमहीं चोर नहि? महाभारतोमे कहल गेल छै जे जे जरूरतसँ बेसी सम्पैत रखने अछि ओ चोर छी। जे बात पितोजी बरबैर कहैत रहै छला। ओना, अनका जकाँ हम बेइमानी कऽ कऽ खेत नइ अरजने छी मुदा ढेरिया कऽ तँ रखनहि छी...।

गप-सप्प करैत साढ़े दस बजि गेल। भानसो भेल। सभ कियो गप-सप्प छोड़ि खाइले बैसला।

दोसर दिनसँ चारू गोरे विदाइक जोगारमे लगि गेला। केतेको गोरेसँ दोस्ती चारू गोरेकेँ, जेकरा सबहक काज उद्यममे ईहो सभ नौत पुरने छैथ। तँए सभकेँ जानकारी देब उचित बुझि चारू गोरे अपन-अपन अपेछितकेँ जानकारी दिअ लगलखिन। अपनो सभ फुट-फुट माता-पिताक विदाइमे जुटि गेला।

ऐ चारि दिनक बीच रमाकान्त टहलब-बुलब छोड़ि, दिन-राति आत्मनिष्ठ भऽ सोचमे डुमल रहए लगला। चाह पीबै बेर चाह पीब पान खा, भोजन बेर भोजन कऽ, भरि दिन पलँगपर पड़ल-पड़ल जिनगीक सम्बन्धमे सोचैत रहला। अखन धरि एक्केटा दुनियाँ बुझै छेलिऐ जे आब दोसरो दुनियाँ देखै छी। एक दुनियाँ बाहरी, जेकरा ऊपरका आँखिसँ देखै छी, दोसर दुनियाँ शरीरक भीतर अछि, जइ दुनियाकेँ अखन धरि नै देखै छेलौं। बाहरी दुनियासँ भीतरी दुनियाँ फुलवाड़ी जकाँ सुन्दर अछि। जइमे आशाक जंगल पसरल अछि।

पाँच बजे साँझमे मद्रास स्टेशनसँ दरभंगाक गाड़ी खुजैए। आरक्षित टिकट तँए मनमे बेसी हलचलो नहियेँ छेलैन। गाड़ी पकड़ैक हलचल तँ ओइ यात्रीकेँ होइत जे साधारण बोगीमे टटका टिकट कटा सफर करत। मुदा आरक्षित बोगीमे तँ गनल सीट आ गनल टिकट होइए। बाइली यात्रीकेँ तँ चढ़ैये ने देल जाइए। दुइए बजेसँ सभ समान अटैची आ काटुनमे सैंत तैयार केलैन। रस्ता-ले फुटसँ एकटा झोरामे खाइक सभ सामान सेहो दऽ देलकैन। दस लिटरा गैलेनमे पानि, थर्मसमे चाह, पनबट्टीमे पान आ तैसंग एक काटुन विदेशी शराब सेहो, जे डॉक्टर सुजाता रमाकान्तकेँ आँखिक इशारासँ कहि देने रहैन।

चारि बजे, परोठा-भुजिया खा तीनू गोरे नव वस्त्र पहिर तैयार भऽ गेला। स्टेशनो लगेमे तँए विदा हेबामे हड़बड़ियो नहियेँ। मुदा सामान बेसी तँए गाड़ी खुजैसँ पहिनहि स्टेशन पहुँचब जरूरी अछि। ओना, गाड़ी मद्रासेसँ बनि कऽ चलैत तँए सामानो रखैमे परेशानी नहियेँ रहैन। सबा चारि बजे सभ डेरासँ निकैल गाड़ी पकड़ैले चलला। ❑

शब्द संख्या : 4396

छह

छुट्टीक दिन रहितो हीरानन्द गाम नइ गेला। ओना, लगमे गाम रहने शनियेँ-शनि जाइ छला आ स्कूल खुजबासँ पहिने सोमे-सोम चलि अबै छला। मुदा रमाकान्त अपने नै रहने, परिवारक सभ भार देने गेल छैन।

गोसाँइक धाही निकैलते हीरानन्द नहा कऽ चाह पीब बौएलाल ऐठाम विदा भेला। मने-मन यएह होनि जे रमाकान्त बाबू कहने छला जे मद्रास जाइ छी, धिया-पुताकेँ देखि-सुनि लगले घुमि जाएब मुदा आइ पनरहम दिन भऽ रहल अछि अखन धरि किएक ने एला? ओना, दुरसो छै आ परिवारोक सभ तँ ओतै छैन तँए बिलम्मो भेनाइ तँ सोभाविके...।

रस्तामे जे मास्टर साहैबकेँ धिया-पुता देखैन तँ हाथ जोड़ि-जोड़ि प्रणाम करैन। हीरोनन्द सभकेँ असिरवाद दैत आगू बढ़ैत जाइ छला। बौएलालक घरसँ थोड़े पाछूए रहैथ कि बौएलाल देखलकैन। देखिते आगू बढ़ि, प्रणाम कऽ, संगे-संग अपना ऐठाम लऽ गेलैन।

हीरानन्दकेँ पाबि बौएलाल बहुत किछु सिखबो केलक आ सुधरबो कएल। अपन एकचारीबला बैसकीमे मास्टर साहैबकेँ बैसा पानि आनए आँगन गेल। आँगनसँ लोटामे पानि नेने आबि पएर धोइले कहलकैन। लोटामे पानि देखि हीरानन्दक मनमे मिथिलाक वेबहार नाचि उठलैन। सोचए लगला जे पूर्वज केते विचारवान छला जे एते चलौलैन..!

पएर धोइ कऽ हीरानन्द चौकीपर बैसला। बौएलाल चाह बनबए आँगन गेल। माएकेँ चाह बनौल नै होइ छेलइ। तैबीच अनुपो बाड़ीएमे खुरपी छोड़ि, मटियाएले हाथे आबि मास्टर साहैबकेँ प्रणाम कऽ चौकीक निच्चाँमे, एकचारीक खुट्टा लगा बैसल। मटियाएल हाथ देखि मास्टर साहैब पुछलखिन- “कोन काज करै छेलौं?”

मटियाएल हाथ रहितो अनुपकेँ संकोच नै होइ छेलइ। निःसंकोच भऽ

उत्तर देलकैन- “बाड़ीमे गेनहारी साग बौग केने छी ओहीमे तेते मोथा जनैम गेल अछि जे सागकेँ झाँपि देने अछि, ओकरे कमठौन करै छेलौं।”

सागक कमठौन सुनि हीरानन्द बजला- “चलू, जाबे बौएलाल अबैए, ताबे कनी हमहूँ देखि ली।”

कहि उठि विदा भेला। मास्टर साहैबकेँ ठाढ़ होइत देखि अनुपो ठाढ़ भऽ आगू-आगू विदा भेल। धूर दुइएमे साग बौग केने। साग देखि हीरानन्द बजला-

“जिनगीमे आइए हम एहेन गेनहारी देखलौं! ई तँ अद्भुत अछि! किएक तँ एक रंगक पत्ताबला गेनहारी तँ अपनो उपजबै छी मुदा ई तँ फूल जकाँ लगैए! अदहा पात लाल आ अदहा हरिअर छै! केतए-सँ ई बीआ अनलौं?”

मास्टर साहैबक जिज्ञासा देखि खुशी होइत अनुप कहलकैन-

“हम सढ़आरए नौत पूरए गेल रही। ओतै देखलिऐ। देखि कऽ मन हलैस गेल। ओतैसँ अनलौं। करीब दस बर्खसँ सभ साल करै छी। खाइत -खाइत जहन डाँट जुआ जाइ छै, तहन छोड़ि दइ छिऐ आ ओहीमे तेते बीआ भऽ जाइए जे अपनो बौग करै छी आ जे मंगलक तेकरो दइ छिऐ।”

“ऐ बेर हमरो थोड़े देब।”

“बड़बढ़ियाँ।”

दुनू गोरे घुमि कऽ आबि पुनः एकचारीमे बैसला। तैबीच बौएलालो चाह बनौने आएल। दुनू गोरेकेँ चाह दऽ आँगन जा, अपनो लेलक आ माइयोकेँ देलक। चाह पीब बौएलालक माए घोघ तनने दुआरपर आबि मास्टर साहैबकेँ गोड़ लगलकैन। सुखल शरीर, पाकल केश आ धँसल आँखि रधियाक। रधियाक देह देखि मास्टर साहैबक मन तरे-तर बाजि उठलैन- ‘हाय, हाय-रे गरीबी! आगियोसँ तेज धधड़ा!! पैंतीस-चालिस बर्खक शरीरक ई दशा बना दइए!’

मुस्कियाइत एकटा आँखि उघारि रधिया बाजल-

“आइ हमर भाग जगि गेल जे मास्टर-साहैब एला। बिनु खेने-पीने नै जाए देबैन। जे कन-सागक उपाय अछि से बिनु खुऔने नै जाए देबैन।”

रधियाक सिनेह भरल शब्द सुनि हीरानन्दक आँखि सिमैस गेलैन। दुनू

तरहत्थीसँ दुनू आँखि पोछैत बजला- "ओना, तँ घुमैक विचारसँ आएल छेलौं मुदा अहाँ सबहक सिनेह बिना खेने जाइए नै दिअ चाहैए। जरूर खाएब।"

घरमे सुपारी नै रहने बौएलाल सुपारी आनए दोकान गेल। तैबीच मास्टर साहैब अनुपकेँ पुछलखिन-

"अहाँक पुरखा केते दिनसँ ऐ गाममे रहैत आएल छैथ?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनुप छगुन्तामे पड़ि गेल। मने-मन सोचए लगल, एहेन बात तँ आइ घरि कियो ने पुछने छला! मास्टर साहैब किए पुछलैन? ..मुदा मास्टर-साहैबक उपकार अनुपक हृदयमे ऐ रूपे बसल अछि जे हिनका, आत्माक दोसर रूप बुझैए। हुनके पाबि बेटा दू आखर पढ़बो केलक आ मनुखोक रस्ता सिखैए। हँसैत अनुप कहए लगलैन-

"मास्टर साहैब, हमरा बाउकेँ अपना घराड़ियो ने रहइ। अनके जमीनमे घरो बन्हने रहै आ अनके हरो-फाड़ जोतइ। अनके खेतमे रोपैन-कमठौन सेहो करइ। हम धानोक शीश आ रब्बी-राइक मासमे खेसारियो-मौसरी लोढ़ी। अनके गाइयो पोसियाँ नेने रहइ। सालमे जेते पाबैन-तिहार होइ आ अनदिनो जे करजा-बरजा लिअए ओ ओही गाइक दूधो बेच कऽ आ लेरू जे होइ, ओहो बेच कऽ करजा सदहाबै। एक दिन बाउक मन खराप रहइ। गिरहत आबि कऽ बेटी ओइठाम फोकचाहा भार दऽ अबैले कहलकै। बाउक मन बेसी खराब रहै तँए जाइसँ नासकार गेल। तैपर ओ बेटाकेँ सोर पाड़लकै। बेटा एलइ। दुनू बापूत हमरा बाउकेँ गरियेबो केलकै आ अँगनाक टाट-फरक उजाड़ि कऽ कहलकै जे हमर घराड़ी छोड़ि दे। हमर बाउ केतेक गोरेकेँ कहबो केलकै मुदा सभ ओकरे दिस भऽ गेलइ। तखन हमर बाउ की करैत, आखीरमे माटिक तौला-कराही छोड़ि, थारी-लोटा, नुआ-बसतर, हाँसू-खुरपीक मोटरी बान्हि, माए-बाबू आ हम तीनू गोरे ओइ गामसँ भागि गेलौं। गामसँ निकैल , बाधमे एकटा आमक गाछ रस्तेपर रहै, ओइठिन जा कऽ बैसलौं। बाउकेँ बुकौर लगइ। दुनू आँखिसँ दहो - बहो लोर खसइ। माइयो कानए। थोड़े-खान ओइठिन बैसलौं। तखन फेर विदा भेलौं।"

बजैत-बजैत अनुपक दुनू आँखिमे नोर आबि गेल। अनुपक नोर देखि

हीरानन्दोक आँखिमे नोर आबि गेलैन। रूमालसँ नोर पोछि पुनः पुछलखिन-

"तब की भेल?"

अनुपक हाथ मटियाएल रहै तँए गट्टासँ नोर पोछि पुनः बाजए लगल-

"ई मात्रिक छी। नाना जीबते रहए। हुनका एक्केटा बेटी रहैन, हमरे माएटा। जखन तीनू गोरे ऐठाम एलौं तँ ननो आ नानियों अँगनेमे रहए। नानी आ माए दुनू बाँहि दुनू गरदैनमे जोड़ि कानए लगल। बाउओ कानए लगल। नाना हमरा कोरामे उठा लोर पोछैत अँगनासँ निकैल डेढ़ियापर बुलबए लगल। थोड़े-खान नानी कानि, मोटरीकेँ घरमे रखि हाँइ-हाँइ चुल्हि पजारलक। मुदा माए कनिते रहल।"

बिच्चेमे हीरानन्द पुछलखिन-

"नाना गुजर केना करै छला?"

हीरानन्दक प्रश्न सुनि अनुप गुदगुदाइत बाजल-

"अहाँसँ लाथ कोन माहटर साहैब, महिनामे आठ-दस साँझ भानसो ने होइ। हम बच्चा रही तँए नानी बाटीमे बसिया भात-रोटी रखि दिअए। सएह खाइ छेलौं।"

अनुपक बात सुनि हीरानन्दक हृदय जेना पघिल गेलैन, अनुपकेँ कहलखिन-

"जाऊ, काजो देखियौ। बौएलाल तँ आबिए गेल।"

मास्टर साहैबक कहलासँ अनुप पुन: साग कमाइले चलि गेल। बौएलाल आ हीरानन्द रमाकान्तक चर्चा करए लगला। बौएलाल बाजल-

"करीब पनरह दिनक धक लगि गेल हएत, अखन धरि बाबा किए नै एला? बाजि कऽ गेल रहैथ जे आठ दिनक भीतरे चलि आएब? किछु भऽ ने तँ गेलैन?"

हीरानन्द- "अखन धरि कोनो खबैरो नै पठौलैन जे बुझितिऐ।"

दुनू गोरे उठि कऽ बाड़ी दिस टहलैले विदा भेला। अनरनेबाक गाछकेँ हीरानन्द हिया-हिया कऽ देखए लगला। पहिल खेपक फड़, तँए नमहर-नमहर

रहइ। गोट दसेक नमहर, बॉकी जेना-जेना फड़ ऊपर होइत गेल रहै तेना-तेना छोटो आ खिच्चो। पान-सातटा फड़ छिटकल। जइमे एकटाकेँ लाली पकैड़ नेने रहइ। हीरानन्द बौएलालकेँ ओंगरीसँ देखबैत बजला- “बौएलाल, ओ फड़ तोड़ि लएह। खूब तँ पाकल नइ अछि मुदा खाइ-जोकर भऽ गेल आछि। हम सभ तँ दँतगर छी किने।”

गाछ बेसी नमहर नहि। हाथेसँ बौएलाल ओइ फड़केँ तोड़ि, डन्टीसँ बहैत दूधकेँ माटिपर रगैड़ देलक। दुनू गोरे घुमि कऽ आबि हीरानन्द चौकीपर बैसला आ बौएलाल अनरनेबा रखि आँगन गेल। आँगनसँ कत्ता आ एकटा छिपली नेने आएल। कत्तासँ अनरनेबाकेँ सोहि टुकड़ी-टुकड़ी कटलक। छिपली भरि गेल। भरलो छिपली बौएलाल हीरानन्दक आगूमे देलकैन। भरल छिपली देखि हीरानन्द बजला- “एते हमरे बुते खाएल हएत। पान-सातटा खण्डी खाएब। बाँकी आँगन लऽ जाह।”

बौएलाल सएह केलक। अनरनेबा खा पानि पीब हीरानन्द बौएलालकेँ कहलखिन- “चलू, थोड़े टहैल आबी?”

दुनू गोरे रस्ते-रस्ते टहलए लगला।

जाधैर दुनू गोरे टहैल-बुलि कऽ एला ताधैर रधिया अरबा चाउरक भात, माछक तीमन आ तरूआ बनौलक। भानस कऽ रधिया चिक्कैन माटिसँ ओसार नीपि, हाथ धोइ, कम्मल चौपेत कऽ बिछौलक। थारी, बाटी, लोटा आ गिलासकेँ छौरसँ माँजि धोलक। लोटा-गिलासमे पानि भरि कम्मलक आगूमे रखि बौएलालकेँ बजौने आबैले कहलक। आँगन आबि हीरानन्द कम्मलपर बैस मने-मन सोचए लगला। भोजनसँ तँ पेट भरैए मुदा मन तँ सिनेहेसँ भरैए जे भरि रहल अछि। तैबीच बौएलाल घरसँ थारी निकालि आगूमे देलकैन। गम-गम करैत भात तैपर माछक नमहर-नमहर तरल कुटिया। जम्बीरी नेबोक खण्ड। बाटीमे तीमन। भोजन देख, मुस्कियाइत हीरानन्द रधियाकेँ कहलखिन-

“अलबत्त ढंगसँ भोजनक बेवस्था केने छी। देखिए कऽ पेट भरि गेल!”

मास्टर साहैबक बात सुनि खुशीसँ रधियाकेँ नै रहल गेलै, बाजल-

“माहटर बाबू, अहाँ पैघ छी। देवता छी। हमर भाग जे हमरा सन गरीब

लोकक ऐठाम भात खाइ छी।”

रधियाक बात सुनि हीरानन्द बुझि गेलखिन जे भातकेँ अशुद्ध बुझि बजली। मुदा ओइ विचारकेँ झँपैत बजला- “बौएलाककेँ छोट भाए बुझै छिऐ आ परिवारकेँ अपन परिवार बुझै छी। तखन भात-रोटी खाइमे कोन संकोच?”

हीरानन्दक विचार सुनि रधियाक हृदय सौनक मेघ जकाँ उमैड़ गेल। मनमे हुअ लगलै जे अपन जिनगीक सभ बात कहि सुनबयैन। उत्साहित भऽ बाजए लगल-

“माहटर बाबू, एहनो दुख कटने छी जे एक दिन पिसियौत भाए आएल रहए। घरमे एक्को तम्मा चाउर नहि! चिन्ता भऽ गेल जे भाएकेँ खाइले की देब। तीन-चारि अँगना चाउर पैंच आनए गेबो केलौं मुदा सबहक हालत खराबे रहइ। अपने ने रहै तँ हमरा की दइत। हारि कऽ मरुआ रोटी आ सीम-भाँटाक तीमन रान्हि कऽ खाइले देलिऐ आ अपनो सभ खेलौं। मुदा अखन तँ रमाकान्त कक्काक परसादे सभ किछु अछि।”

थारीमे बाटीसँ झोर ढारैत हीरानन्द बजला-

“पहिलुका आ अखुनकामे केते फरक बुझि पड़ैए?”

“माहटर बाबू, अहाँसँ लाथ कोन! ओइ हिसाबे अखन राजा भऽ गेलौं। पहिने कल्लर छेलौं। हरिदम पेटेक चिन्ता धेने रहै छेलए।”

मुँहक भात आ माछ चिबबैत रहैथ कि दाँतक गहमे एकटा काँट गड़ि गेलैन। भात घोंटि आँगुरसँ काँट निकालि थारीक बगलमे रखि हीरानन्द बजला-

“पहिने जेते खटै छेलौं तइसँ अखन बेसी खटै छी आकि कम ?”

“पहिने बेसी खटै छेलौं। बोइन करि कऽ आबी तखन अँगनाक काजमे लगि जाइ। अँगनाक काज सम्हारि भानस करी। भानस करैत-करैत बेर झूकि जाइत रहए, तखन खाइत रही।”

ओसारपर बैसल अनुप रधियाकेँ चोहटैत बाजल-

“मास्टर साहैबकेँ भोजन करए देबहुन आकि नहि।”

अनुपक बात सुनि हीरानन्द टोकलखिन- “अहाँ तमसाइ किए छिऐन।

भोजनो करै छी आ गप्पो सुनै छी। जे बात काकी कहै छैथ ओ बड्ड नीक लगैए।”

मास्टर साहैबक समर्थन पाबि रधियाक मनमे आरो उत्साह जगि गेलइ। होइ जे जेते बात पेटमे अछि सभटा मास्टर साहैबकेँ सुना दिऐन। बाजल-

“माहटर बाबू, बर्खमे अदहासँ बेसी दिन सागे रान्हि तीमन खाइ छेलौं। माघ-फागुनमे जखन खेसारी-मौसरी उखाड़ै छेलौं आ बोइन जे हुअए तइ दिनमे खाली दस-पाँच दिन दालि खाइ नहि तँ बाड़ी-झाड़ीमे जे तीमन-तरकारी हुअए, से खाइ। बेसी काल सागे। खेसारी मासमे महिना दिन दुनू साँझ चाहे खेसारी साग खाइ नहि तँ बथुआ।”

खेसारी सागक नाओं सुनि हीरानन्द पुछलकैन -

“खेसारी साग केना बनबै छी?”

मास्टर साहैबक प्रश्न सुनि अनुपोकेँ पैछला बात मोन पड़लै। मोन पड़िते खुशी जगलै। मुस्कियाइत बाजल- “मास्टर साहैब, राँड़िन बुते केतौ खेसारी साग रान्हल हुअए..!”

अनुपक बातकेँ धोपैत हीरानन्द बजला-

“खेसारी सागमे कँचका मिरचाइ आ लसुनक फोरन दऽ हमरो कनियाँ बनबै छैथ। हमरा बड़ सुन्दर खाइमे लगैए।”

व्यंगक टोनमे अनुप बाजल-

“अहाँ सबहक कनियाँक परतर राँड़िनकेँ हेतइ। हमहीं छी जे एहेन लोकक गुजर चलै छइ। नहि तँ..?”

व्यंगक भाव बुझि हीरानन्द चुप्पे रहला। मुदा फनैक कऽ रधिया एक लाड़ैन चलबैत बाजल-

“नहि तँ सासुरमे बास नै होइतए।”

अनुप- “मोन पाड़ू जे जइ दिन ऐठीम आएल रही तइ दिन कोन -कोन लूरि रहए। जँ सासु नै सिखबैत तँ कोनो लूरियो होइत?”

पासा बदलैत रधिया बाजल- “माए आ सासुमे अन्तरे कथी होइ छइ।

जहिना अपन माए तहिना घरबलाक माए। सिखलौं तँ हमहीं !”

रधिया अनुप दिस तकैत आ अनुप रधिया दिस। मुदा दुनूक मनमे क्रो ध नै सिनेह भरल। तँए वातावरण मधुर छल। ..हीरानन्द सागक सम्बन्धमे बाजए लगला-

“अपना सबहक पूर्वज बहुत गरीब छला। अखुनका जकाँ समैयो नइ छल। बेसी काल ओ सभ सागे खाइ छला।”

जेहने भोजन बनल, तेहने पवित्र बरतन छेलै आ तहूसँ नीक बैसैक जगहक संग ऐतिहासिक गप-सप्प। जेते वस्तु हीरानन्दक आगूमे आएल छेलैन, रसे-रसे सभ खा लेला। पानि नहि पीलैन, किएक तँ ने गाड़ा लगलैन आ ने बेसी करु। भोजन कऽ बाटीएमे हाथ धोइ कऽ उठैत बजला-

“एते कसि कऽ आइ धरि भोजन नै केने छेलौं।”

आँगनसँ निकैल एकचारीमे आबि मास्टर साहैब सोझे पड़ि रहला। पड़ले-पड़ल अनुपो आ बौएलालोकेँ कहलखिन-

“अहूँ सभ भोजन करै जाउ। हमरा सुतैक मन होइए।”

हीरानन्द असबिस करै छला। लगले-लगले करौट फेरए पड़ैन। मने-मन सोचए लगला जे एतबे दिनमे अनुप केते उन्नैत कऽ गेल। उन्नैतक कारण भेलै सही ढंगसँ परिवारकेँ बढ़ाएब। जे परिवार जेते सही दिशामे चलत ओ ओते तेजीसँ आगू बढ़त। मुदा जिनगीक रस्ता तँ बाँस जकाँ सोझ अछि नहि, टेढ़-टूढ़ अछि। जइमे लोक वौआ जाइए। जिनगीक रस्तामे डेग-डेगपर तिनबट्टी-चौबट्टी अछि। जइमे लोक भटैक जाइए। तहूमे जेकरा रस्ताक आदि-अन्तक ठेकान नै रहल ओ तँ आरो ओझरा जाइए। एहेन-एहेन ओझरी सभ जिनगीक रस्तामे अछि जइमे ओझरा कियो बताह भऽ जाइए तँ कियो घर-दुआरि छोड़ि चलि जाइए। जइसँ क्षणिक सुखक खातिर स्थायी सुखक रस्ता छुटि जाइ छइ। क्षुद्र सुख पैघ सुखक रस्ताकेँ धकेल एहेन पहाड़ जकाँ ठाढ़ भऽ जाइ छै, जेकरा पार करब मोसकिल भऽ जाइ छइ। जिनगीक रस्ता एक नइ अनेक अछि मुदा पहुँचैक स्थान एक अछि। जेते मनुख तेते रस्ता अछि। एक मनुखक जिनगी दोसरसँ भिन्न होइए। अनभुआरो आ बुझनिहारो, अज्ञानियोँ आ ज्ञानियोँ लगले

माने जिनगीक शुरूमे ऐकेँ नहि बुझि पबै छैथ जे कोन रस्ता पकड़लासँ सही जगहपर पहुँचब आ नै पकड़ने छुटि जाएब। मनुखक उद्धारक बात तँ सभ सम्प्रदाय, किस्सा-पिहानी बना कहैए मुदा रस्तामे घुच्ची केते छै जैठाम जा लोक खसैए, से बुझैएमे ने अबै छइ। मुदा ईहो तँ सत अछि जे निष्कलंक जिनगी बना ढेरो लोक ओइ स्थानपर पहुँच चुकल छैथ आ ढेरो जा रहल छैथ जे जरूर पहुँचता। भलेँ हुनका भरि पेट अन्न आ भरि देह वस्त्र नइ भेटैत होइन। सुखल गाछ रूपी समाजकेँ जाधैर गंगाजल सन पवित्र पानिसँ नहि पटौल जाएत ताधैर ओइमे केना कलश कलशत आ फूल फुलाएत। अगर जँ समय पाबि कलशबो करत तँ किछुए दिनमे मौला जाएत। दुखो थोड़ दिनक नइ अछि, जड़ियाएल अछि। अनेको महान बेकती ऐ दिशाकेँ देखबैक कोशिश अदम्य साहस आ शक्ति लगा केलैन मुदा जड़िसँ दुख कहाँ मेटाएल? सभ कियो मातृभूमिक सन्तान छी, सबहक दायित्व बनैए जे माइक सेवा करी। छठियारे राति समाजक माए-बहिन कोरामे लऽ छाती लगौलैन मुदा ओकरा बिसैर केना जाइ छी? की सभ बीराने छैथ? अपन कियो नहि?”

बेर खसैत हीरानन्द चलैक विचार करए लगला। बौएलाल चाह पीबैक आग्रह केलकैन। मुदा भरियाएल पेट दुआरे हीरानन्द चाहक इनकार करैत बजला- “खाइ बेरमे पानि नै पीने छेलौं, खाली एक लोटा पानि पिआबह।”

आँगनसँ लोटामे पानि आनि बौएलाल देलकैन। लोटो भरि पानि पीब हीरानन्द बाजला- “बुझि पड़ैए जे अखने खा कऽ उठलौं। चाह नै पीबह, सिरिफ एक जूम तमाकुल खुआ दएह।”

अनुप तमाकुल चुनबए लगल। तैबीच हीरानन्द बौएलालकेँ कहलखिन-

“तूँ तँ आब धुरझार किताब पढ़ए लगलह। आब तोहूँ पड़ोसीक बच्चा सभकेँ, जखन समय खाली भेटह, पढ़ाबह। ऐसँ ई हेतह जे कखनो बेकारी सेहो नइ बुझि पड़तह आ थोड़-थाड़ बच्चो सभ पढ़ै दिस झूकत।”

पढ़बैक नाओं सुनि अनुप बाजल-

“मास्टर साहैब, केकरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ौत!”

ओंगरीसँ देखबैत अनुप आगू बाजल- “देखै छिऐ, ओ तीन घर कुरमी

छी। ओकरासँ खनदानी दुश्मनी अछि। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने हकार-तिहार।”

फेर ओंगरीसँ देखबैत बाजल- “तहिना ओ घर देखै छिऐ, मलाहक छी। भरि दिन जाल लऽ कऽ चर-चाँचरसँ लऽ कऽ पोखैर-झाँखैरमे मछबारि करैए। जेकरा बेच कऽ गुजरो करैए आ ताड़ी-दारू पीब कऽ औत आ झगड़ा-झाटी शुरू कऽ देत। तहिना ओ कुजरटोली छी। अछि तँ सभटा गरीबे मुदा बेवसायी अछि। स्त्रीगण सभ तरकारी बेचै छै आ पुरुख सभ पुरना लोहा-लक्करक कारोबार करैए। जातिक नाओंपर सदिखन अराड़िये करैत रहैए। तहिना हम दस घर धानुक छी। हमहींटा गरीब रही, बोइन करै छेलौं। आब तँ अपनो रमाकान्त बाबूक देल दू बीघा खेत भऽ गेल तँए खेती करए लगलौं, नहि तँ सभ खबासी करैए। जुआन-जहान बेटी सभकेँ माथपर चँगेरा दऽ आन-आन गाम पठबैए। तँए ओकरा सबहक एकटा पाटी छै आ हम असगरे छी। ने खेनाइ-पीनाइ अछि आ ने कोनो लेन-देन। आब अहीं कहू जे केकरा बच्चाकेँ बौएलाल पढ़ौत?”

अनुपक बात सुनि हीरानन्द गुम्म भऽ गेला। मने-मन सोचए लगला जे समाजक विचित्र स्थिति अछि। एहेन समाजमे घूसब महाग-मोसकिल अछि।

..कनी काल गुम्म रहि हीरानन्द बजला- “कहलौं तँ ठीके अनुप, मुदा ई सभ बिमारी पहिलुका समाजमे बेसी छेलइ। ओना, अखनो थोड़-थाड़ ऐछे मुदा बदैल रहल अछि। आब लोक गाम छोड़ि शहर-बजार जा-जा कल-कारखानामे काज करए लगल अछि। संगे गाममे चाह-पानक दोकान खोलि-खोलि जिनगी बदैल रहल अछि। खेती-बाड़ी तँ मरले अछि तँए ऐमे ने काज छै आ ने लोक करए चाहैए। करबो केना करत। गोटे साल रौदी तँ गोटे साल बाढ़ि आबि सभटा नष्ट कऽ दइ छइ। जहिना गरीब लोक मर-मर करैए तहिना खेतोबला सभ। खेतोबला सभकेँ देखिते छिऐ बेटीक बिआह, बिमारी आ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, बिना खेत बेचने नइ सम्हरै छइ। ओना, सबहक जड़िमे मुरुखपना छै, जे बिना पढ़ने-लिखने नै मेटाएत। धिया-पुताकेँ पढ़बैक इच्छा सभकेँ छै मुदा ओ मने भरि छइ। बेवहारमे एको पाइ नहि। ईहो बात छै जे जेकरा पेटमे अन्न नहि आ देहपर वस्त्र नइ रहत ओ केना पढ़त?”

हीरानन्द आ अनुपक सभ गप बाड़ीमे टाटक पुरना कड़ची उजारैत

सुमित्रा सेहो सुनै छल। ..बारह-तेरह बर्खक सुमित्रा अछि। अनुपक घरक बगलेमे ओकरो घर छइ।

तमाकुल खा हीरानन्द विदा भेला। हीरानन्दकेँ अरियातने पाछू-पाछू बौएलालो बढ़ै छल। थोड़े दूर आगू बढ़लापर हीरानन्दकेँ छोड़ि बौएलाल घुमि गेल।

जाबे बौएलाल घुमि कऽ घरपर आएल ताबे सुमित्रो जरनाक कड़ची आँगनमे रखि बौएलाल लग आएल। ओना, परिवारक झगड़ासँ धिया-पुताकेँ कोन मतलब। धिया-पुताक दुनियाँ अलग होइए। सुमित्रा बौएलालकेँ कहलक -

"हमरा पढ़ा दे।"

बौएलाल किछु कहैसँ पहिने मने-मन सोचए लगल जे हमर बाबू आ सुमित्राक बाबूक बीच केते दिनसँ झगड़ा अछि, दुनूक बीच केता दिन गारि-गरौवैल होइत देखै छी, तखन केना पढ़ा देबइ। मुदा हीरानन्दक विचार मने रहै तँए गुनधुन करए लगल।

कनी काल गुनधुन करैत सुमित्राकेँ कहलक- "पहिने माएसँ पुछि आ।"

सुमित्रा दौग कऽ आँगन जा माएकेँ कहलक- "माए, हम पढ़ब?"

माए- "केतए पढ़मे?"

"बौएलाल लग।"

बौएलालक नाओं सुनि माए मने-मन विचारए लगली जे हमरासँ तँ कम्मो-सम्म मुदा हुनकासँ तँ बौएलालक पिताकेँ झगड़ा छैन..!

कनी काल गुनधुन कऽ माए कहलकै-

"जँ बौएलाल पढ़ा देतौ तँ पढ़।"

खनदानी घरक बेटी सुमित्राक माए। आन-आन घरक बेटियो आ पुतोहुओ चँगेरा उघैए मुदा सुमित्राक माए केतौ नै जाइत। अपने राम प्रसाद भार उघैए। मुदा स्त्री नहि।

जहिया कहियो अनुप आ राम प्रसादक बीच भार उघैक सवालपर झगड़ा होइत, तँ सुमित्रा माइक विचार अनुप दिस रहैत। मुदा मरदक झगड़ामे केना

विरोध करैत। तँए चुपचाप आँगनमे बैस मने-मन अपने पतिकेँ गरियबैत जे कोन कुल-खनदानमे चलि एलौं..! घुमि कऽ सुमित्रा आबि बौएलालकेँ कहलकै-

"माइयो कहलक।"

"ठीक छइ। मुदा पढ़मे करबैन कऽ, भरि दिन हमहूँ काजे उदममे लगल रहै छी आ साँझू पहरकेँ अपने पढ़ैले जाइ छी।"

दुनू गोरे गर लगबैत तँइ केलक जे काजक बेरसँ पहिनहि भोरमे पढ़ब। ❑

शब्द संख्या : 2906

सात

तीन बजे भोरमे हीरानन्दक नीन टुटलैन। नीन टुटिते बाहर निकैल झल-अन्हार देखि पुनः ओछाइनपर आबि पड़ि रहला। अनुपक बात मनकेँ झकझोड़ै छेलैन, समाजमे ऐ रूपे कटुता, विषमता पसैर गेल अछि जे घर-घर, जाति-जाति आ टोल-टोलमे भैंसा-भैंसीक कनारि पकैड़ नेने अछि। एहेन स्थितिमे केना समाज आगू बढ़त? समाजकेँ आगू बढ़ैले एक-दोसरक बीच आत्मीय प्रेम हेबा चाहिऐ। से केना हएत..?

प्रश्नकेँ जेते सोझराबए चाहै छला तेतेक ओझरा जा छेलैन। विचित्र स्थिति हीरानन्दक आगू बनि गेलैन। अनेको प्रश्न मनमे उठैत रहैन आ तर्क-वितर्कक बीच अन्त होइत-होइत ओझरा जाइ रहैन। जेना विवेक काजे ने करैन। तैबीच पूबारि भागमे चिड़ैक चहचहेनाइ सुनलैन। चिड़ैक चहचहेनाइ सुनि कोठरीसँ निकैल हीरानन्द पूब दिस तकलैन तँ मेघ ललिआएल बुझि पड़लैन। घड़ीपर नजैर देलैन तँ पाँच बजैत देखलैन। कोठरी आबि लोटा लऽ मैदान दिस विदा भेला। मुदा मनकेँ एहेन गछाइर कऽ सवाल पकड़ने रहैन जे चलैक सुधिए ने रहलैन। जाइत-जाइत बहुत दूर चलि गेला। खुला मैदान देख, लोटा रखि टहलबो करैथ आ प्रश्नो सोझरबैक कोशिश करैत रहैथ। मुदा तैयो निष्कर्षपर नै पहुँच सकला। पुनः घुमि कऽ घरपर आबि, दतमैन कऽ मुँह हाथ

धोइ चाह बनबए लगला। ओना, चाहक सभ समान चुल्हियेक ऊपरका चक्कापर रखल रहै छैन, मात्र केतली पखारब, गिलास धोअब आ ठहुरी-जारैन डेढ़ियापर सँ आनए पड़लैन। सभ किछु सेरिया हीरानन्द चाह बनबए बैसला मुदा मन वौआइते छेलैन। असथिरे नै होइ छेलैन। असगरे चाह पिबनिहार, मुदा भरि केतली पानि दऽ चुल्हिपर चढ़ा देलैन। जखन चाह खौलए लगल तखन मनमे एलैन जे अनेरे एते चाह किए बनबै छी? फेर केतली चुल्हिपर सँ उताइर दू गिलास दूध मिलौल पानि कातमे राखल गिलासमे रखि , बाँकी दूध मिलौल पानि केतलीमे दऽ चुल्हिपर चढौलैन।

मन वौआइते छेलैन। आँच लगबैत गेला मुदा चाह पत्ती केतलीमे देबे ने केलखिन। आगिक तावपर दुनू गिलास पानि जरि गेल, तखन मोन पड़लैन- जा! चाह पत्ती केतलीमे देबे ने केलिऐ..!

हाँइ-हाँइ कऽ डिब्बासँ तरहत्थीपर चाह पत्ती लऽ हीरानन्द केतलीक झँप्पा उठौलैन। नजैर केतलीक भीतर गेलैन तँ पानियेँ नहि! सभटा पानि जरि गेल! तरहत्थी परहक चाह पत्ती डिब्बामे रखि पुनः केतलीमे पानि देलैन। चाह बनल। भिनसुरका समय तँए दू गिलास पीलैन।

एक तँ ओहिना हीरानन्दक मन समाजक समस्यामे ओझराएल छेलैन तैपर सँ चाह आरो ओझरी लगा देलकैन। खाएर.., चाह पीब दरबज्जापर बैस विचारए लगला। मुदा चाहक गर्मी पाबि मन आरो बेसी वौआए लगलैन। जहिना केकरो कोनो वस्तु हेरा जाइ छै आ ओ खोजए लगैए तहिना हीरानन्द समाजक ओइ समस्याक समाधान खोजए लगला जे समस्या समाजकेँ टुकड़ी-टुकड़ी कऽ देने अछि। लगमे दोसर कियो ने छेलैन जिनकासँ तर्क-वितर्क करितैथ। असगरे हीरानन्द ओझराएल रहला। अपने मनमे सवालो उठैन जवाबो खोजैथ। अध्ययनो बहुत अधिक नहियेँ छैन। सिरिफ मैट्रिक पास छैथ। मुदा तैयो समस्याक समाधान तकिते रहला, छोड़लैन नहि। जहिना पथिककेँ बिनु देखलो पथ हेराइत-भोथियाइत भेटिए जाइ छै तहिना हीरानन्दोकेँ भेटलैन। अनासुरती नजैर मिथिलाक चिन्तन-धारा आ मिथिलाक समाजक बुनाबटिक ढाँचापर पड़लैन। चिन्तनो-धारा आ सामाजिक ढँचो, दुनूपर नजैर पड़िते मनमे एकटा नव ज्योति बिजलोकाक इजोत जकाँ मनमे चमकलैन। बिछानपर सँ उठि

ओसारेपर आबि टहलए लगला। टहैलते अनासुरती मुहसँ निकललैन- “वाह रे मिथिलाक चिन्तक! दुनियाँक गुरु! जे ज्ञान हजारो बर्ख पहिने मिथिलाक धरतीपर आबि गेल छल, वएह ज्ञान उन्नैसम शताब्दीमे मार्क्स कठिन संधर्ष करि कऽ अनलैन, जइसँ दुनियाँक चिन्तनधारा बदलल। मुदा मिथिलाक दुर्भाग्य भेलै जे समाजक निआमक धूरतइ केलक। जे चिन्तक मनुखकेँ सभ मनुख मनुख छी एक रूपमे देखलैन, ओइ रूपकेँ निआमक, शासनकर्ता टुकड़ी-टुकड़ी कऽ काटि देलैन! आइ जरूरत अछि ओइ सभ टुकड़ीकेँ जोड़ि-जोड़ि एक रूप बनबैक। जे नान्हिटा काज नइ अछि। तेतबे नहि, अखनो टुकड़ी बनौनिहारक कमी नइ अछि। जखन कि भेल टुकड़ीकेँ स्वयं ओ चेतना नइ छै जे टुकड़ी भेल कातमे पड़ल छी आ कौआ-कुकुर खाइए..!”

एहेन विचार हीरानन्दक मनमे उपैकते मन असथिर भेलैन, मनमे नव स्फूर्ति, नव चेतना आ नव उत्साह जगलैन। नव ढंगसँ सभ वस्तुकेँ देखए लगला। तैबीच शशि शेखर सेहो टहलैत-बुलैत लगमे एलैन।

हीरानन्दपर नजैर पड़िते शशि शेखरकेँ बुझि पड़लैन जेना अखने नहा कऽ पोखैरसँ ऊपर भेला अछि। हीरानन्दक मन विचारमे डुमले रहलैन। मने-मन सोचैथ जे जहिना पटुआक सोन, सन्नैक सोन वा रूइक रेश महीन होइत मुदा कारीगर ओइ रेशकेँ टेरुआ वा टौकरीक सहारासँ समेट कऽ सूत वा सुतरी बना कपड़ा वा बोरा वा मोटगर रस्सा बनबैए, तहिना समाजोक टुटल मनुखकेँ जोड़ि समाज बनबए पड़त। तखने नव समाजक निर्माण होएत। जे अद्दी-गुद्दी काज नहि बल्कि कठिन काज छी। कठिन काज-ले कठिन मेहनतक जरूरत अछि। सिरिफ कठिन मेहनते केलासँ सभ कठिन काज नइ भऽ सकैए। कठिन मेहनतक संग, सही समझ आ सही रस्ताक बोध सेहो जरूरी अछि। तँए कठिन मेहनत, गम्भीर चिन्तन आ आगू बढ़ैले काज करैक अदम्य साहस सेहो सभमे हेबा चाही। तैसंग मजगूत संकल्प सेहो होएब जरूरी अछि।

विचारक संग-संग हीरानन्दक मनमे कठिन कार्यक संकल्प सेहो अपन जगह बनबए लगल। भिनसुरका समय तँए लाल सुरुजमे ठंढपन सेहो रहबे करए। एक टकसँ सुरुज दिस देखैत हीरानन्द अपन विचारकेँ संकल्प लग लऽ जा दुनूकेँ हाथ पकैड़ दोस्ती करौलैन। दुनूक बीच दोस्ती होइते मनक नव उत्साह

शरीरमे तेजी आनए लगलैन।

दरबज्जाक आगुए देने उत्तरे-दच्छिने रस्ता। हीरानन्द शशि शेखरकेँ कहलखिन- "चलू, कनी बुलियो-टहैल लेब आ एकटा गप्पो करब।"

दुनू गोरे दरबज्जापर सँ उठि आगू बढ़ला आकि उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ तीनटा ढेरबा बच्चाकेँ जाइत देखलैन। तीनूक देह कारी खटखट। केश उड़ियाइत। डोरीबला फाटल-कारी झामर पेन्ट तीनू पहिरने। देहमे केकरो कोनो दोसर वस्त्र नहि। तीनूक हाथमे पुरना साड़ीक टुकड़ाकेँ चारू कोण बान्हल झोरा। तीनू गप-सप्प करैत उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ जाइत। तीनूक गप-सप्प सुनैले हीरानन्द कान पथलैन।

..मुस्कियाइत बेंगबा बजैत रहए-

"रौतुका बसिया रोटी आ डोका तीमन तेते ने खेलियौ जे चललो ने होइए। पेट ढब-ढब करैए।"

दहिना हाथ बढ़बैत फेर बाजल-

"हे सुंहीं, हमर हाथ केहेन गमकै छै! जेना बुझि पड़तौ जे कटुक-मसल्ला लगल छइ!"

हाथ समेट बाजल- "तूँ की खेलँह गै रोगही?"

सिरसिराइत रोगही बाजल- "हमरा माए कहलक जे जो डोका बीछि कऽ ला-गे। ताबे हमहूँ मड़ूआ उला-पीसि कऽ रोटी पकेने रहबौ। डोका चटनी आ रोटी खइहेँ।"

रोगहीक बात सुनि बेंगबा कबुतरीकेँ पुछलक-

"तूँ गै कबुतरी?"

"काल्हि जे माए डोका बेचैले गेल रहै तँ ओमहरेसँ मुरही किनने आएल। सएह खेलौं।"

कबुतरीक बात सुनि बेंगबा पनचैती केलक जे तोहर जतरा सभसँ नीक छौ। आइ तोरा सभसँ बेसी डोका हेतौ। सभसँ बेसी तोरा, तइसँ कम हमरा आ सभसँ कम रोगहीकेँ हेतइ।"

बेंगबाक पनचैतीक विरोध करैत रोगही बाजल-

“बड़ तूँ पण्डित बनै छँह। तोरे कहने हमरा कम हएत आ तोरा सभकेँ बेसी। हमरा जकाँ तोरा दुनू गोरेकेँ डोका बीछैक लूरि छौ? घौदियाएल डोका केतए रहै छै से बुझै छीही?”

मुँह सकुचबैत बेंगबा पुछलक- “केतए रहै छै से तोंहेँ कह?”

“किए कहबौ। तूँ जे खेलेँ से हमरा बाँटि देलेँ?”

बेंगबा- “बाँटि दैतियौ से हम अगरजानी जननिहार भगवान छी। तूँ कहलेँ हेन अखनी आ बाँटि दैतियौ अँगनेमे?”

बेंगबाक बात सुनि रोगही निरूत्तर भऽ गेल। हीरानन्द आ शशि शेखर तीनूक बात चुपचाप ठाढ़ भऽ सुनलैन। ताधैर तीनू गोरे हीरानन्दक लग पहुँच गेल रहए। हाथक इशारासँ तीनू गोरेकेँ हीरानन्द सोर पाड़ि पुछलखिन-

“बौआ, तूँ सभ केतए जाइ छह?”

हीरानन्दक प्रश्न सुनि बेंगबा धाँइ-दे बाजल- “डोका बीछैले!”

“डोका बीछि कऽ की करै छहक?”

“अपनो सभतूर खाइ छी आ माए बेचबो करैए। बाउ कहने अछि जे डोका बेच कऽ पाइ हेतौ तइसँ अँगा-पेन्ट कीनि देबौ। घुरना बिआहमे पिहिन कऽ बरियाती जइहेँ।”

बेंगबाक बात सुनि हीरानन्द रोगहीकेँ पुछलखिन- “बच्चा तूँ?”

रोगही- “हमहूँ डोके बीछैले जाइ छी। माए कहलक जे डोकासँ जे पाइ हेतौ, तइसँ शिवरातिक मेलामे महकौआ तेल, महकौआ साबुन, केश बन्हैले फीता आ किलीप कीनि देबौ।”

मुस्कियाइत हीरानन्द बातक समर्थनमे मुड़ियो डोलबै छला आ मने-मन विचारबो करैथ जे केतेक आशासँ गरीबोक बच्चा जीबैए। शशि शेखर दिस देखि आँखिक इशारासँ कहलखिन- “एकरा सबहक बगए देखियौ आ आशा देखियौ!”

तेसर बचियाकेँ पुछलखिन-

"बौआ, तूँ?"

हीरानन्दक आँखिमे आँखि गड़ा कबुतरी कहलकैन-

"हमरा माए कहने अछि जे डोका-पाइसँ सल्बार-फराक कीनि देबौ।"

काजक समय दुइर होइत देखि हीरानन्द तीनूकेँ कहलखिन-

"जाइ जाह।"

हीरानन्द आ शशि शेखर घुमि कऽ दरबज्जापर एला। ओ तीनू बच्चा गप-सप्प करैत आगू बढ़ल। थोड़े आगू बढ़लापर कबुतरी बेंगबाकेँ पुछलक-

"बेंगबा, तूँ बिआह कहिया करमेँ?"

बिआह सुनि बेंगबाकेँ मनमे खुशी भेलइ। हँसैत बाजल-

"अखनी बिआह नै करबै। मामा गाम गेल रहिऐ तँ भैया कहलक जे कनी और बढ़मेँ तँ तोरा भिबन्डी नेने जेबौ। ओतै नोकरी करबै। जखन बहुत रूपैआ हेतै तब ईंटाक घरो बनेबै आ बिआहो करबै।"

बिच्चेमे रोगही कहलकै-

"तोरा सनक ढहलेल बुते बौह सम्हारल हेतौ?"

बौहुक नाओं सुनि बेंगबाक हृदय खुशीसँ गदगद भऽ गेल। हँसैत बाजल-

"आँइ गे रोगही, तूँ हमरा पुरुख नइ बुझैछेँ। हम तँ ओहेन पुरुख छी जे एगोकेँ के कहए, तीन गो बौहुकेँ सम्हारि लेब!"

कबुतरी-

"खाइले की देबही बौहकेँ?"

बेंगबा-

"भिबन्डीमे जब नोकरी करबै तँ बुझै छीही जे केते कमेबै? दू हजार रूपैआ एक्के महिनामे हेतइ।"

हँसैत रोगही बिच्चेमे टिपलक- "दू हजार रूपैआ गनलो हेतौ?"

"बीस-बीस कऽ गनबै। रूपैआ हेतै तँ फुलपेन्ट सिएबै, खूब चिक्कन अँगा किनबै, घड़ी किनबै, रेडी किनबै, मोबाइल किनबै, डोरीबला जुत्ता किनबै..; तब

देखयहैन जे बेंगबा केहेन लगै छइ।”

“तोरा नोकरी के रखतौ?”

“गामबला भैया नोकरी रखा देतइ। कहलक जे जही मालिक ऐठीम हम रहै छिऐ तही मालिक ऐठीम हमरो रखा देतइ। बड़ धनीक मालिक छइ। मारिते नोकर छइ। हम जे मामा गाम गेल रही तँ भैयो गाम आएल रहए। ओ कहै जे हम मालिकक कोठीमे रहै छिऐ। दरमाहा छोड़ि कऽ बाइलियो खूब कमाइ छइ। मालिककेँ एकटा बेटी छइ। उ बड़का स्कूल-कौलेजमे पढ़ै छइ। अपनेसँ हवागाड़ी चलबै छइ। सभ दिन हमर भैया ओकरा स्कूल संगे जाइ छइ। उ पढ़ै छै आ हमर भैया गाड़ी ओगरै छइ। जखनी छुट्टी भऽ जाइ छै तखनी दुनू गोरे संगे अबै छइ। उ मलिकाइन हमरा भैयाकेँ मानबो खूम करै छइ। संगे-संग सिलेमा देखैले जाइ छइ। बजार घुमैले जाइ छइ। बड़का दोकान-होटलमे दुनू गोरे खूम लड्डू खाइए। अना तँ बड़का मालिक सभ नोकरकेँ दीयाबत्तीमे चिकनका कपड़ा दइ छै, हमरो भैयाकेँ दइ छइ। छोटकी मलिकाइन अपने दिसनसँ निकहा-निकहा फुलपेन्ट, निकहा-निकहा अँगा कीनि-कीनि दइ छइ। रूपैओ खूम दइ छइ... ।”

तीनू गोरे बाध पहुँच गेल। बाध पहुँचते तीनू तीन दिस भऽ गेल। तीन दिस भऽ तीनू गोरे डोका बीछए लगल। ऊपरे सभमे डोका चरौर करैले निकलल रहए। डोका बीछि तीनू गोरे घुमि गेल।

दरबज्जापर आबि हीरानन्द शशि शेखरकेँ पुछलखिन-

“शशि, की सभ ओइ बच्चा सभमे देखलिऐ?”

मुँह बिजकबैत शशि बजला- “भाय, ओइ बच्चा सभकेँ देखि क्षुब्ध छेलौं। ओकरा सबहक बगए देखै छलिऐ आ मनक खुशी देखै छलिऐ! जेना दुनियाँ-दारीसँ कोनो मतलब नहि, एकदम निर्विकार। अपने-आपमे मगन छल।”

हीरानन्द- “कहलौं तँ ठीके मुदा एकटा बात तर्कक छल। अपना सबहक समाज तेते नमहर अछि जइमे भिखमंगासँ राजा धरि बसैए। एक दिस बड़का-बड़का कोठा अछि तँ दोसर दिस खोपड़ी। एक दिस औझुका विकसित मनुख

अछि तँ दोसर दिस आदिम जुगक मनुख सेहो अछि। एते पैघ इतिहास समाज अपना पेटमे रखने अछि, मुदा ने ओइ इतिहासकेँ कियो पढ़निहार अछि आ ने बुझनिहार।"

"ठीके कहलौं भाय!"

"आइ धरि, हम सभ समाजक जइ रूपकेँ देखै छी ओ ऊपरे-झापरे देखै छी। मुदा देखैक जरूरत अछि ओकर भीतरी ढाँचाकेँ। जहिना समुद्रक ऊपरका पानि आ लहैर तँ सभ देखैए मुदा ओइक भीतर की सभ अछि से देखनिहार कए गोरे अछि?"

सभ दिन भोरमे बौएलाल अपनो पढ़ैत आ सुमित्रोकेँ पढ़ा दइत। जाधैर टोल-पड़ोसक लोक सुति कऽ उठैत ताधैर बौएलाल आ सुमित्रा एक-डेढ़ घन्टा पढ़ि लिअए। एक तँ चफलगर, दोसर पढ़ैक जिज्ञासा सुमित्रामे तँए एक्के दिनमे अ-आ-सँ-य-र-ल-व तक सीखि गेल। कब्बीरकाने सीखि सुमित्रा बाल-पोथी पढ़ब आ खाँत सिखब शुरू केलक।

सुमित्राकेँ पढ़ैत देखि माए-बापकेँ खुशी होइ। ओना, माइयो आ बापोक मनमे शुरूहेसँ रहै जे बच्चा सभकेँ पढ़ाएब मुदा समैयक फेड़ आ परिवारक विपन्नताक चलैत मनक सभ मनोरथ मनेमे गलि कऽ विलीन भऽ गेल रहइ। मुदा जहियासँ सुमित्रा पढ़ए लगल तहियासँ ओ मनोरथ अंकुरित हुअ लगलै। मनुखक जिनगीक गति मनुखक विचारो आ बेवहारोकेँ बदलैए। अनुपक प्रति जे कटुता आ दुर्विचार राम प्रसादक मनकेँ गहिया कऽ धेने छेलै ओ नहुँए-नहुँए पघिलए लगलै। सुमित्राक माए अनुपक आँगन जाइ-अबै छेली। तीमन-तरकारीक लेन-देन पतिसँ चोरा कऽ सेहो करिते छेली। मुदा तैयो राम प्रसादक मनमे पैछला दुश्मनी नीक-नहाँति मेटाएल नइ छेलइ। जहिना बरसातमे सुखाएल धारमे पानि अबिते जीवित धारक रूप-रेखा पकैड़ लैत तहिना विद्याक प्रवेशसँ रामप्रसादोक परिवारक रूप-रेखा बदलए लगल। भाए-भैयारीमे भैंसा-भैंसीक दुश्मनी बदलए लगलै।

मिरचाइ, तरकारी आ चुन कीनैले अनुप हाट गेल रहए। कोसे भरिपर कछुआ हाट अछि। तैबीच राम प्रसाद केता बेर अनुपक डेढ़ियापर आबि-आबि अनुपक खोज केलक। राम प्रसादक मनमे अधला विचारकेँ धिक्कारि नीक-

विचार अपन जगह बना लेलक। दोसर साँझमे अनुप हाटसँ घुमि कऽ रस्तेमे अबै छल आकि राम प्रसाद फेर तकैले पहुँचल। अनुपपर नजैर पड़िते राम प्रसाद कठ हँसी हँसि कहलक-

"बहुत दिन जीबह भैया। बेरूए पहरसँ केतए हेरा गेल छेलह?"

राम प्रसादक बदलल चेहरा आ बदलल विचार देखि-सुनि अनुप मने-मन तारतम करए लगल जे आइ सुरुज केमहर उगला। जिनगी भरिक दुश्मनी एकाएक एना बदैल केना गेल?

पैछला गप अनुपकेँ मोन पड़लै। अखन धरि रमपरसदबाक संग हमरा दुश्मनी ओकर अधले काजक दुआरे ने छल। मुदा ताराकान्तकेँ धैनवाद दिऐ जे वेचारा मारियो खा, जहलो जा गाममे खबासी प्रथा मेटौलक। जाबे रमपरसदबा अधला काज करै छल ताबे जँ दुश्मनी छल तँ ओहो नीके रहए। किएक तँ हमहूँ अपना डारिपर छेलौं...। मुदा आब जँ ओ ओइ काजकेँ छोड़ि देलक तँ हमरो मिलान करैमे हरज कथी। कालोक गति तँ प्रबल होइ छइ। समैयो बदैल रहल अछि। एक तँ पहिलुका जकाँ भारो-दौर लोक नै दइए, दोसर पहिने लोक कान्हपर भार उघै छल आब गाड़ी-सवारीमे लऽ जाइए। तेतबे नहि, आब सबहक समांग परदेश सेहो खटए लगल अछि। गामक मालिको-मलिकानाक पहिलुका रूतबा कमले जाइ छइ।

राम प्रसादक बात सुनि अनुप बाजल-

"हाट जेनाइ जरूरी छेलए। घरमे ने मिरचाइ छल आ ने चुन। जे चुनवाली चुन बेचए अबै छेलए ओकर सासु मरि गेलइ। ऐ साल एक्को दिन कटहरक आँठी देल खेरही दालि सेहो नै खेने छेलौं तँए मन लगल छेलए।"

कहि अनुप सोझे आँगन जा ओसारपर आँठी आ मेरचाइक मोटरी रखि, कोहीमे चुन रखलक।

एकचारीमे बैस राम प्रसाद तमाकुल चुनबैत छल। चुनक कोही खोल्हियापर रखि अनुप बाहर आबि राम प्रसादकेँ कहलक-

"ताबे तमाकुल लगाबह, कनी हाथ-पएर धोइ लइ छी। एक तँ कच्ची रस्ता तहूमे तेते टेक्टर सभ चलै छै जे भरि ठेहुन गरदा रस्तामे भऽ गेल अछि।

जहिना लोकक पएर थाल-पानिमे धँसै छै तहिना गरदोमे धँसै छइ।"

कहि अनुप इनारपर जा हाथ-पएर धोइ कऽ आबि राम प्रसाद लग आबि बैसल। अनुपकेँ तमाकुल दैत राम प्रसाद बाजल-

"भैया, दुपहरेसँ मनमे आएल जे तोरो बरदक भजैती आन टोलमे छह आ हमरो अछि। दुनू गोरे ओकरा छोड़ा कऽ अपनेमे लगा लएह। जइसँ दुनू गोरेकेँ सुविधा हेतह।"

थूक फेक अनुप कहलै-

"ई बात तँ केते दिनसँ बौएलाल कहै छेलए जे जेते काल बरद अनैमे लगै छह ओते कालमे एकटा काज भऽ जेतह।"

मुड़ी डोलबैत राम प्रसाद बाजल-

"काल्हि जा कऽ तोहूँ अपन भजैतकेँ कहि दहक आ हमहूँ कहि देबइ। परसूसँ दुनू गोरे एक्केठीन जोतब।"

आँगन बहारब छोड़ि रधियो आबि कऽ टाटक कातमे ठाढ़ भऽ गेल छेली। किएक तँ बहुतो दिनक पछाइत दुनू गोरेकेँ मुँहा-मुँही गप करैत देखलक।

..बरदक भजैतीक गप कऽ अनुप राम प्रसादकेँ कहलक-

"अबेर भऽ गेल। अखन तोहूँ जाह, हमहूँ पर-पैखाना दिस जाएब।"

जहिना सड़ल-सँ-सड़ल पानिमे कमल फुलेलासँ भगवानक माथपर चढ़ैक अधिकारी भऽ जाइए तहिना बौएलालक सेवा सभ-ले हुअ लगल। जइसँ गाममे बौएलाल चर्चाक पात्र बनि गेल। हीरानन्दक असरा पाबि बौएलाल रामायण, महाभारत, कहानी, कविता पढ़ब सीखि लेलक। जइ गाममे लोक भरि-भरि दिन ताश खेलैत, जुआ खेलैत तइ गाममे बौएलालक दिनचर्या सभसँ अलग बितए लगल, जइसँ बौएलालक जिनगीक रस्ता बदैल गेलइ। अधिक काल हीरानन्द बौएलालकेँ कहथिन-

"बौएलाल, गरीबक सभसँ पैघ दोस्त मेहनत छी। जे कियो मेहनतकेँ दोस्त बना चलत वएह गरीबी रूपी दुष्टकेँ पछाड़र सकैए। तँए सदिखन समयकेँ पकैड़ सही रस्तासँ मेहनत केनिहार जे अछि, वएह ऐ धरती आ दुनियाँक सुख

भोगि सकैए।" ❑ शब्द संख्या : 2465

आठ

रौतुके गाड़ीसँ रमाकान्त तीनू गोरे अपना टीशनमे उतरला। अन्हार राति। भकोभन स्टेशन। खाली दुइए गोरे, स्टेशन मास्टर आ पैटमेन स्टेशनक घरमे केबाड़ बन्न केने जगल रहए। लेम्प जरैत रहइ। ने एक्कोरती इजोत प्लेटफार्मपर आ ने मुसाफिरखानामे। अन्हारेमे रमाकान्त तीनू गोरे अपन सभ समान मुसाफिरखानामे रखि, जाजीम बिछा बैसला। गाड़ीक झमारक संग दू रातिक जगरनासँ तीनू गोरेक देह ओंघीसँ भँसियाइत रहैन। प्लेटफार्मक बगलमे ने एक्कोटा चाहक दोकान खुगल आ ने एक्कोटा दोकनदार जगल रहए। ने कोनो दोकानमे इजोत होइ छेलै आ ने गाड़ीसँ एक्कोटा दोसर पसिंजर उतरल। नीन तोड़ै दुआरे रमाकान्त चाह पीबए चाहैथ मुदा कोनो जोगार नै देखि करवनो समान लग बैसैथ तँ करवनो उठि कऽ टहलए लगैथ।

श्यामा सुति रहली आ जुगेसरो सुति रहल। मुदा रमाकान्तक मनमे होनि जे जँ कहीं सुति रहब आ सभ समान चोरि भऽ जाए तखन तँ भारी जुलुम हएत। ओना, नीन तोड़ैक एकटा नीक उपाय ढाकीक-ढाकी मच्छर रहबे करैन। तँए जुगेसरो आ श्यामो अपन-अपन चद्दैर ओढ़ि मुँह झाँपि कऽ सुतल रहैथ।

प्लेटफार्मपर पनरह-बीसटा अनेरुआ कुकुर एमहर-सँ-ओमहर करैत रहए। प्लेटफार्मक पछबारि भागक माल-जालक हड्डीक ढेरीसँ गन्ध से अबैत रहइ। सकरीक एकटा बेपारी हड्डीक कारोबार करैए। गाम-घरमे जे माल-जाल मरैत ओकर हड्डी गामे-घरक छोटका बेपारी, भारपर उघि-उघि अनैए ओही बेपारी ऐठाम बेच-बेच गुजर करैए। जखन बेसी हड्डी जमा भऽ जाइ छै, तखन ओ मालगाड़ीक डिब्बामे लादि बाहर पठबैए। जाधैर हड्डी प्लेटफार्मक बगलमे रहैए ताधैर अनेरुआ कुत्ता सभ ओइ हड्डीकेँ चिबबै पाछू तबाह रहैए। दिन रहौ कि राति, जेते टीशनक कातक कुकुर अछि सभटा ओही इर्द-गिर्द मड़ाइत रहैए।

ओना, आनो-आनो गामक कुकुर अपन गाम छोड़ि ओतए रहैए। ..एकटा पिल्ला एकटा पिल्लीक संग प्लेटफार्मक पुबारि भागसँ अबिते छल कि एकटा दोसर कुत्ताक नजैर पड़लै। बिना बोली देनहि ओ कुकुर दौग कऽ ओइ पिल्ला-पिल्ली लग पहुँच गेल। आगू-आगू पिल्ली आ पाछू-पाछू पिल्ला नाङैर डोलबैत जाइत रहए। ओ (दोसर कुकुर) पिल्लीक मुँह सूँघलक। सुँघिते पिल्ली मुँह चियारि कऽ ओइ कुत्तापर टुटल। पिल्लीकेँ टुटिते पैछला पिल्ला जोरसँ भुकलक। कुत्ताक आवाज सुनिते, जेते अनेरुआ कुकुर प्लेटफार्मपर रहए, सभ भुकैत दौग कऽ ओइ पिल्लीकेँ घेर लेलक। सभ सभपर भूकए लगल। मुदा पिल्ली डेराएल नहि। रानी बनि हस्तिनीक चालिमे पच्छिम-मुहेँ चलल। अबैत-अबैत टिकट घरक सोझमे बैस रहल। पिल्लीकेँ बैसते सभ पिल्ला पटका-पटकी करए लगल।

प्लेटफार्मक पछबारि भाग, कदमक गाछक निच्चाँमे मघैया डोम सभ डेरा खसौने रहए। तखने एकटा छौड़ा एकटा छौड़ीक संग, डेरासँ थोड़े पच्छिम जा लट्टा-पट्टी करैत रहए।

..कुत्ताक आवाज सुनि एक गोरेकेँ नीन टुटलै। नीन टुटिते आँखि तकलक कि पछबारि भाग दुनू गोरेकेँ लट्टा-पट्टी करैत देखलक। ओ केकरो उठौलक नहि। असगरे उठि कऽ ओइ दुनू लग पहुँचल। ओहो दुनू देखलकै। छौरा ससैर कऽ झाड़ा फीड़ैले कातमे बैस गेल। मुदा छौड़ी चलाक। फरिक्केसँ ओइ आदमीकेँ कहलकै- “काका?”

‘काका’ सुनि ओ किछु बाजल नहि, मुदा घुरबो नै कएल। आगुए-मुहेँ ससरैत बढ़ल। छौड़ियो ओकरे दिस ससरल। लगमे पहुँचते छौड़ी कन्हापर दहिना हाथ दैत फुसफुसा कऽ कहलकै- “काका..!”

कान्हपर हाथ पड़िते कक्काक मन बदलए लगलैन। जहिना शिकारीकेँ दोसराक शिकार हाथ लगलापर खुशी होइत तहिना कक्कोकेँ भेलैन। ओहो अपन दहिना हाथ छौड़ीक देहपर देलखिन। देहपर हाथ पड़िते छौड़ी हल्ला केलक। छौड़ो देखैत। उठि कऽ ओहो हल्ला करए लगल। हल्ला सुनि सभ मघैया उठि-उठि दौगल।

स्टेशनक टिकट घरमे टिकट मास्टर पैटमेनकेँ कहलक-

"रघू, प्लेटफार्मपर बड़ हल्ला होइ छै जा कऽ देखहक तँ!"

पैटमेन जवाब देलकैन-

"टीशन छिऐ। सभ रंगक लोक ऐठाम अबै-जाइए। जँ हम ओमहर देखैले जाइ आ एमहर घरमे चोर चलि आबए तखन असगरे अहाँ बुते सम्हारल हएत। भने केबाड़ बन्न छइ। दुनू गोरे जागलटा रहू, नइ तँ सरकारी समान चोरि भेने दुनू गोरेक नोकरी जाएत। कोनो कि सुरक्षा गार्ड अछि जे चोरिक दोख ओकरा लगतै।"

पैटमेनक बात स्टेशन मास्टरकेँ नीक बुझि पड़लैन, बजला-

"ठीके कहलह।"

दुनू गोरे गप-सप्प करए लगला। लेम्प जरिते रहइ। केबाड़क दोग देने पैटमेन प्लेटफार्म दिस तकलक तँ देखलक जे कुत्ता सभ पटका-पटकी करैए। अन्हार दुआरे मघैया सभकेँ देखबे नै केलक।

एक दिस कुत्ता सबहक झौहैर आ पटका-पटकी तँ दोसर दिस मघैया सबहक गारि-गरौवैल प्लेटफार्मकेँ गदमिशान केने। ..रमाकान्त सोचैथ जे भने भऽ रहल अछि। लोकक हल्लासँ हमर समान तँ सुरक्षित अछि। जुगेसरकेँ उठबैत कहलखिन-

"जुगे, कनी आगू बढ़ि कऽ देखहक तँ कथीक हल्ला होइ छइ?"

जुगेसर उठि कऽ बाजल-

"काका, कोन फेरामे पड़ै छी! बस-स्टेण्ड आ रेलबे स्टेशनमे अहिना हरिदम झूठो-फूसि-ले हल्ला होइते रहै छइ। अपन जान बचाउ। अनेरे केतए जाएब।"

भोर होइते टमटमबला सभ आबए लगल। थोड़े हटि कऽ उत्तरबारि भाग, ठकुरबाड़ीमे घड़ी-घण्ट बाजब शुरू भेल। घड़ी-घण्टक आवाज सुनि रमाकान्त नमहर साँस छोड़लैन। जुगेसरकेँ कहलखिन-

"ओंघीसँ मन भकुआएल अछि। चाहो दोकानपर लोक सभकेँ गल -गुल करैत सुनै छिऐ। कनी चाह पीने अबै छी। ताबे तूँ समान सभ देखैत रहह।"

रमाकान्त उठि कऽ कलपर जा कुरुर केलैन। पानि पीलैन। पानि पीब चाहक दोकानपर पहुँच चाह पीलैन। चाह पीब पान खा घुमि कऽ आबि जुगेसरकेँ कहलखिन- "आब तोंहू जाह। चाह पीब दूटा टमटम सेहो केने अबिहह।"

जुगेसर उठि कऽ कलपर जा पहिने कुरुर केलक। कुरुर केलाक पछाइत सोचलक जे अखन भिनसुरका पहर छी। तोहूमे तीनियेँ-चारिटा टमटमबला आएल अछि। जँ कहीं चाह पीबैले चलि जाइ आ एमहर टमटमबला दोसर गोरेकेँ गछि लइ तखन तँ पहपैट भऽ जाएत। तइसँ नीक जे पहिने टमटमेबलाकेँ कहि दिऐ।

..टमटमबला लग पहुँच जुगेसर बाजल-

"भाय, टमटम खाली छह?"

"हँ।"

"चलबह?"

"हँ, चलब।"

पहिल टमटमबलाक घरवाली दुखित छइ। दस बजेमे डॉक्टर ऐठाम जेबाक छइ। एक्कोटा पाइ नइ रहने भोरे स्टेशन पहुँच गेल जे एक्को-दूटा भाड़ा कमा लेब तँ औझुका जोगार भऽ जाएत। किएक तँ कम-सँ-कम पचास रूपैआ दबाइ-दारू, तेकर बाद घरक बुतात, घोड़ाक खरचा आ दस रूपैआ बैंकबलाकेँ सेहो देबाक अछि।

..टमटमबला मने-मन सोचए लगल, भिनसुरका बोहैन छी तँए एकरा छोड़ब नहि। साला टमटमबला सभ जे अछि ओ उपरौंज करैत रहैए। कहैले अपनामे युनियन बनौने अछि मुदा बान्ह कोनो छैहे नहि। लगले बैसार कऽ कऽ विचारि लेत आ जहाँ दस रूपैआ जेबीमे एलै आ ताड़ी पीलक आकि मनमाना करए लगैए। अपनामे सभ विचारने अछि जे बर-बिमारी सन बेगरतामे सभ-सभकेँ सहयोग करब, चन्दा देबइ। मुदा हमरे कएटा पैसा चन्दा देलक? पनरह दिनसँ घरवाली दुखित अछि, जइ पाछू रेजानिस-रेजानिस भऽ गेल छी। ने एक्को मुट्ठी घोड़ाकेँ बदाम दइ छिऐ आ ने अपने भरि पेट खाइ छी। धिया-पुता सभ से

अन्न बेतरे टौआइत रहैए। तखन तँ धैनवाद ओही बच्चा सभकेँ दिऐ जे भूखलो-दूखल माइक सेवा-टहल करैए। अपनो घोड़ाक संग-संग टमटम घिचै छी। जँ से नै करब आ सोल्होअना घोड़े भरोसे रहब तँ ओहो मरि जाएत! यएह तँ हमर लक्ष्मी छी। एकरे परसादे दू पाइ देखै छी। घोड़ाकेँ के ना छोड़ि देब। तहिना घरोवाली कमजोर अछि। जिनगी भरि तँ ओकरे संग सुखो केलौं, छोट -छोट बच्चोकेँ तँ वएह थतमारि कऽ रखलक। हम तँ भरि दिन बोनाएले रहै छी। घर तँ ओही वेचारीक परसादे चलैए..!

टमटमबला सोचिते छल, तैबीच जुगेसर पुछलकै-

“केते भाड़ा लेबहक?”

भाड़ाक नाओं सुनि टमटमबला सोचलक- एक तँ भिनसुरका बोहैन छी, दोसर डॉक्टरो ऐठीम जाइक अछि। जँ भाड़ा कहबै आ ओते नै दिअए तखन तँ बक-झक हएत। जँ कहीं दोसर टमटम पकैड़ लिअए तखन तँ ओहिना मुँह तकैत रहि जाएब। तइसँ नीक जे पहिने समानो आ पसिंजरो चढ़ा ली...। एते बात मनमे अबिते बाजल-

“जे उचित भाड़ा हएत सएह ने लेब। हम तोरा एक हजार कहि देबह तँ की तूँ दाइए देबह?”

टमटमबलाक बात सुनि जुगेसर बाजल-

“अच्छा ठीक छइ। पहिने चाह पीब लएह।”

दुनू टमटमोबला आ जुगेसरो दोकानपर जा चाह पीलक। चाह पीब तीनू गोरे तमाकुल खेलक। चाहबलाकेँ जुगेसरे पाइ देलकै। तीनू गोरे रमाकान्त लग आबि समान सभ उठा-उठा टमटमपर लादलक। एकटा टमटमपर श्यामा, जुगेसर चढ़ल आ दोसरपर असगरे रमाकान्त समानक संग बैसला। किछु दूर आगू बढ़लापर टमटमबलाकेँ पुछलखिन-

“घोड़ा एते लटल छह। खाइले नै दइ छहक?”

रमाकान्तक बात सुनि टमटमबला बेवशी-आँखिए रमाकान्त दिस ताकि उत्तर दिअ चाहैत मुदा कानैत हृदय मुहसँ बकारे नै निकलए दइ। टमटमबलाक आँखि-पर-आँखि दऽ रमाकान्त पढ़ए लगला। तैबीच टमटमबलाक आँखिमे नोर

ढबढबा गेलइ। कान्ह परहक तौनीसँ आँखि पोछि टमटमबला बाजल-

"सरकार, यएह टमटम आ घोड़ा हमर जिनगी छी। अहीपर परिवार चलैए। जइ दिनसँ भनसिया दुखित पड़ल तइ दिनसँ जे कमाइ छी से दबाइए-दारूमे खरचा भऽ जाइए। अपनो बाल-बच्चाकेँ आ घोड़ोकेँ खेनाइक तकलीफ भऽ गेल। की करबै! कहुना परान बँचेने छिऐ। परान रहतै तँ मौसु हेबे करतै।"

टमटमबलाक बेवशी आ धैर्य देखि रमाकान्तक हृदय पघिल कऽ इनहोर पानि जकाँ पातर भऽ गेलैन। बिना किछु बजने मने-मन सोचए लगला जे एक तरहक मजबूर ओ अछि जे किछु करबे नै करैए आ दोसर तरहक ओ अछि जे दिन-राति खटैए मुदा ओकरा प्रकृतिसँ लऽ कऽ मनुख धरि ऐ रूपे संकट पैदा करै छै जइसँ ओ मजबूर अछि। ई टमटमबला दोसर श्रेणीक मजबूर अछि, तँए एहेन लोकक मदैत करब धर्मक श्रेणीमे अबैए। जरूर एहेन लोकक मदैत करक चाहिऐ। मुदा मेहनतकस आदमीक मन एते सक्कत होइ छै जे दोसरसँ हथउठाइ नै लिअ चाहैए। मुदा हम किछु मदैत करए चाहिऐ आ ओ लइसँ नासकार जाए तखन तँ मनमे कचोट हएत!

..असमंजसमे रमाकान्त पड़ि गेला। कोन रूपे एकरा मदैत कएल जाए? सोचैत-सोचैत सोचलैन जे हम अपने नै किछु कहि एकरेसँ पुछिऐ जे अखन तूँ जइ संकटमे पड़ल छह ओइमे केते सहयोग भऽ गेलासँ तोरा पार लगि जेतह। ..ई विचार मनमे अबिते रमाकान्त पुछलखिन-

"अखन तोरा केते मदैत भऽ गेलासँ पार लगि जेतह?"

रमाकान्तक बात सुनि टमटमबलाक मनमे संतोखक छोट-छीन रेगहा घिचा गेल। मने-मन सभ हिसाब बैसबैत बाजल-

"सरकार, अगर अखन पाँच दिनक परिवारोक आ घोड़ोक बुतात आ एक साए रूपैआ भऽ जाए तँ हम अपन जिनगीकेँ पटरीपर आनि लेब। जखने जिनगी पटरीपर आबि जाएत तखने जिनगी अपन सरपट चालि पकैड़ लेत। स्त्रीक इलाज, परिवार आ कारोबार तीनू काज एहेन अछि जे एक्कोटा छोड़ैबला नइए।"

टमटमबलाक बोलीमे रमाकान्तकेँ मदैतक आस बुझि पड़लैन। आशा देखि मनमे खुशी एलैन। खुशी अबिते फुरलैन- अगर पाँच दिनक बदला दस

दिनक बुतात आ साए रूपैआक बदला दू साए रूपैआ जँ मदैत कऽ देबै तँ विरोध नै करत। संगे जखने समस्यासँ निकलैक आशा जगि जेतै तँ काजो करैक साहस बढ़ि जेतइ। मुदा असगरे तँ नइ अछि, दूटा टमटमबला अछि। की दुनू गोरेकेँ मदैत करब आकि एकरेटा।

..ई प्रश्न रमाकान्तक मनमे ठाढ़ भऽ गेलैन। सोचए लगला- मुसीबत तँ ऐ वेचारेकेँ छइ। दोसर टमटमबाला सँ तँ गप नै भेल जे बुझितिऐ। मुदा एकर तँ बुझलिऐ। तँए एकरा मदैत करबै। दोसर टमटमबलासँ पुछि लेबै जे तोहर भाड़ा केते भेलह। जेते कहत तेते दऽ देबइ। मुदा सोझमे एकठाम कम-बेसी देनाइयो तँ उचित नहि, तँए पहिने ओकरा भाड़ा दऽ विदा कऽ देबै आ एकरा रोकि पाछू कऽ सभ किछु दऽ विदा करब। गरीबक हृदयकेँ जुड़ाएब बड़ पैघ काज होइत। एते सोचैत-विचारैत रमाकान्त घरपर पहुँचला।

घरमे ताला लगा हीरानन्द पैखाना गेल रहैथ। दुनू टमटम पहुँच दलानक आगूमे ठाढ़ भेल। टमटम ठाढ़ होइते सभ कियो उतरला। टमटमोबला आ जुगेसरो सभ समानकेँ उताइर दरबज्जाक ओसारपर रखलक। ताबे हीरानन्दो बाध दिससँ आबि पोखैरक पुबरिया महार लग पहुँचला। महार लग अबिते दरबज्जापर टमटम लागल देखलैन। टमटम देखि बुझि पड़लैन जे रमाकान्त आबि गेला। ..हाँइ-हाँइ कऽ दतमैन-कुरुर कऽ लफरल दरबज्जापर आबि घरक ताला खोलि देलखिन। हाथे-पाथे तीनू गोरे सभ सामानकेँ कोठरीमे रखलैन। दोसर टमटमबलाकेँ भाड़ा पुछि रमाकान्त दऽ देलखिन आ पहिल टमटमबलाकेँ आँखिक इशारासँ थम्हैले कहलखिन। दोसर टमटमबला चलि गेल। पहिल टमटमबलाकेँ दू साए रूपैआ आ दस दिनक बुतात –दू पसेरी बदाम आ तीन पसेरी चाउर–दऽ कऽ विदा केलैन। टमटमपर चढ़ि मने-मन गदगद होइत टमटमबला गीत गुनगुनाइत विदा भेल- 'सबहक सुधि अहाँ लइ छी यौ बाबा हमरा किए बिसरल छी यौ...।"

पसेनासँ गन्ध करैत कुरता-गंजी निकालि रमाकान्त चौकीपर रखलैन। भकुआएल मन रहैन। मुदा नीकेना घर पहुँचलासँ मन खुशी होइत रहैन। हीरानन्दक किछु पुछैसँ पहिनहि रमाकान्त बजला- "गाम-घरक हाल-चाल बढ़ियाँ अछि किने?"

"हँ।"

हीरानन्द पुछलखिन- "यात्रा बढ़ियाँ रहल किने?"

"ऐंह, यात्राक सम्बन्धमे की कहू! अखन तँ मनो भकुआएल अछि आ तीन दिनसँ नहेबो ने केलौं हेन तँए पहिने नहाइले जाए दिअ। तखन निचेनसँ यात्राक सम्बन्धमे कहब।"

जुगेसरकेँ जे विदाइ मद्रासमे भेटल छेलै ओ चारिटा काटुनमे छल। ओ चारू काटुन जुगेसर फुटा कऽ ओसारेपर रखलक। जुगेसरक घरवाली आ धिया-पुता सेहो आबि गेल। चारू काटुन जुगेसर अपन घरवालीकेँ देखबैत बाजल-

"ई अपन छी अँगना नेने चलू।"

'अपन' सुनि घरोवाली आ धियो-पुतो चपचपा गेल। चारू काटुन लऽ आँगन विदा भेल।

रमाकान्तक अबैक समाचार गाममे बिहाड़ि जकाँ पसरल। धिया-पुतासँ लऽ कऽ चेतन धरि देखैले आबए लगला। दरबज्जापर लोकक भीड़ बढ़ए लगल। रमाकान्त नहाएब छोड़ि जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, सनेसबला काटुन एतै नेने आबह।"

सनेसमे डॉक्टर महेन्द्र टुकड़ी बनौल दू काटुन नारियल देने रहैन। जुगेसर कोठरी जा एकटा काटुन उठौने आएल। जहियासँ रमाकान्त ब्रह्मचारीजीक आश्रम गेला तहियासँ विचारे बदैल गेलैन। अपन सुख-दुखकेँ ओते महत नै दिअ लगला जेते दोसराक।

दरबज्जापर लोक थहा-थही करए लगल। जेना लोकक हृदय रमाकान्तक हृदयमे मिझर हुअ लगलैन आ रमाकान्तक हृदय लोकमे। अपन नहाएब, दतमैन करब आ आँखिपर लटकल ओंघी, सभटाकेँ बिसैर जुगेसरकेँ कहलखिन -

"चेतनकेँ दू-दूटा टुकड़ी आ बाल-बोधकेँ एक-एकटा टुकड़ी बाँटि दहक। दरबज्जापर आएल एक्को गोरे ई नै कहए जे हमरा नै भेल।"

काटुन खोलि जुगेसर नारियलक टुकड़ी बिलहए लगल। हाथमे पड़िते, की चेतन की धिया-पुता, नारियल खाए लगल। एक काटुन सठि गेल मुदा

देखिनहार, जिज्ञासा केनिहार नै ओराएल। दोसरो काटुन जुगेसर खोललक। दोसर काटुन सठैत-सठैत लोको पतरा गेल।

लोकक भीड़ हटल देखि रमाकान्त नमहर साँस छोड़ैत जुगेसरकेँ कहलखिन- "आब तोहूँ जा कऽ खा-पीअ-गे। हमहूँ जाइ छी।"

आँगन आबि जुगेसर अपन चारू काटुन खोललक। मद्रासमे काटुनक भितरका समान नै देखने छल तँए देखैक उत्सुकता रहइ। एक-एकटा काटुन चारू गोरे–डॉ. महेन्द्र, रविन्द्र, जमुना आ सुजाता–देने रहथिन।

महेन्द्रक देल पहिल काटुनमे, एक जोड़ धोती, एकटा कुरता-कपड़ाक पीस, एकटा आङीक पीस, एकटा चद्दैर, एकटा गमछा आ एक जोड़ जुत्ता जुगेसर-ले आ एक जोड़ साड़ी, जोड़ भरि साया-ब्लौजक कपड़ा, एक जोड़ चप्पल घरवाली-ले। दुनू बच्चाले पेन्ट-शर्टक संग तीन साए रूपैआ रहइ। अहिना तीनू काटुनमे सेहो रहइ।

चारू काटुनक समान देखि जुगेसरक परिवारमे जेना खुशीक बिहाड़ि उठि गेल। दुनू बच्चा अपन कपड़ा देखि खुशीसँ एक-एकटा पहिर आँगनमे नाचए लगल। कपड़ाक एहेन सुख जिनगीमे पहिल दिन भेटल छेलइ। दुनू परानी जुगेसरकेँ सेहो खुशीसँ मन गदगद भऽ गेल। जुगेसर हिसाब जोड़ए लगल- जँ ओरिया कऽ पहिरब तँ दुनू गोरेकेँ जिनगी भरि पार लगि जाएत। एहेन चिक्कन कपड़ा आइ धरि नसीब नै भेल छेलए...।

एक आँखि जुगेसर समानपर देने आ दोसर आँखि घरवालीक आँखिपर देलक। दुनू गोरेक आँखिमे जेना जिनगीक वसन्त आबए लगल। अपन बिआह मोन पड़लै। जुगेसरकेँ होइ जे घरवालीकेँ दुनू बाँहिसँ प जिया कऽ छातीमे लगा ली आ घरवालीकेँ होइ जे घरबलाक कोरामे बैस एकाकार भऽ जाइ। मुदा तीन दिनक गाड़ीक झमारसँ जुगेसरक देहो भँसियाइत आ ओंघी सेहो आँखिक पिपनीकेँ झलफलबैत, जुगेसर घरवालीकेँ कहलक-

"पहिरैले एक-एक जोड़ कपड़ो आ जुत्तो बाहर रखू आ बाँकीकेँ खूब सेरिया कऽ रखि लिअ, दुरि नै हुअए।"

बेर टगि गेल। जुगेसर नवका धोती आ गंजी पहिर कान्हपर गमछा नेने

रमाकान्त ऐठाम पहुँचल। दरबज्जापर रमाकान्त सुतले छला। आँगन जा श्यामाकेँ देखलक तँ ओहो सुति उठि कऽ मुँह-हाथ धोइ छेली। जुगेसरकेँ देख, श्यामा एक टकसँ निंगहारि कऽ मुस्कियाइत पुछलखिन-

“आइ तँ अहाँ दुरगमनियाँ वर जकाँ लगै छी जुगेसर?”

हँसैत जुगेसर उत्तर देलकैन-

“काकी, महिन्दर भाइयक देलहा छी।”

महेन्द्रक नाओं सुनि श्यामा बजली-

“भगवान भोग दैथ! और की सभ बच्चा देलैन?”

जुगेसर बाजल-

“अहाँसँ लाथ कोन काकी, तेते कपड़ा-लत्ता आ जुत्ता-चप्पल चारू गोरे देलैन जे जिनगी भरि केतबो धाँगि कऽ पहिरब तैयो ने सठत।”

बेटा-पुतोहुक बड़ाइ सुनि श्यामाक हृदय उमैड़ गेलैन, अह्लादित भऽ बजली-

“पाइयो-कौड़ी देलैन आकि कपड़े-लत्ताटा?”

“रूपैआ तँ गनलिऐ नहि, मुदा बुझि पड़ल जे दस-पनरहटा नमरी अछि।”

“बाह! मालिक देखलैन की नहि?”

“ओ तँ सुतले छैथ। हुनके देखबैले पहिर कऽ एलौं।”

“हम ताबे चाह बनबै छी। दरबज्जापर जा कऽ उठा दियौन।”

“बड़बढ़ियाँ।”

‘बड़बढ़ियाँ’ कहि जुगेसर दरबज्जापर आबि रमाकान्तकेँ उठबए लगल। आँखि खोलि रमाकान्त देबालक घड़ीपर नजैर देलैन। चारि बजैत। पड़ले-पड़ल सुतैक हिसाब जोड़लैन। हिसाब जोड़ि घुनघुना कऽ बजला-

“एहेन नीन तँ जुआनियोंमे ने आएल छल!”

ओछाइनपर सँ उठि जुगेसरकेँ कहलखिन-

“कनी चाह बनौने आबह। अखनो बुझि पड़ैए जे नीन आँखिए-पर

लटकल अछि। ताबे हमहूँ कुरुर कऽ लइ छी।"

कहि रमाकान्त पहिने लघी करए गेला। लघी करै काल बुझि पड़ैन जे चाहोसँ धीपल लघी होइए। तेतबे नहि, जेते लघी चारि बेरमे करै छी, तोहूसँ बेसी भऽ रहल अछि...।

लघी कऽ कलपर आबि रमाकान्त आँखि-कान पोछि, कुरुर कऽ दमसा कऽ भरि पेट पानि पीलैन। पानि पीबते बुझि पड़लैन जे अदहा नीन पड़ा गेल।

जुगेसर चाह अनलक। रमाकान्त चाह पीबते रहैथ आकि हीरानन्दो स्कूलसँ आबि गेला। शशि शेखरो एला। हीरानन्द जुगेसरकेँ पुछलखिन-

"जात्रा बढ़ियाँ रहल किने?"

हँसैत जुगेसर बाजल-

"जाइ काल टेनमे बड़ भीड़ भेल। जाबे गाड़ीमे रही ताबे ने एक्को बेर झाड़ा भेल आ ने सुतलौं। किएक तँ रिजफ सीट रहबे ने करए। जइ डिब्बामे बैसल रही ओइमे लोकक करमान लगल रहइ। तैपर सँ जइ टीशनपर गाड़ी रूकै सभ टीशनमे एगो-दूगो लोक उतरै आ दस-बीस गोरे चढ़ि जाए। मुदा भगवानक दयासँ कहुना-कहुना पहुँच गेलौं। जखन मद्रास टीशनपर उतरलौं तँ दोसरे रंगक लोक देखिऐ। अपना सभ दिस अछि किने जे सभ रंगक लोक मिलल-जुलल अछि, से नै देखिऐ। बेसी लोक कारीए रहइ। गोटे-गोटे लोक उज्जर बुझि पड़इ। जखन डेरापर पहुँचलौं तँ मकान देखि बिसबासे ने हुअए जे अपन छिऐन। बड़का भारी मकान, कोठलीक कमी नहि।"

"भरि मन देखलौं किने?"

"ऐंह, की कहू मास्टर साहैब, महिन्दर भाय अपने मोटरसँ भरि-भरि दिन बुलबैत रहैथ। मोटरो तेहेन जे जहाँ बैसी आ खुगै आकि ओंघी लगि जाए। केतए की देखलौं से मनो ने अछि।"

मद्राससँ रमाकान्तक एनाइक समाचार सुनि महेन्द्रक स्कूलक संगी सुबुध सेहो एला। सुबुध हाइ स्कूलमे शिक्षक छैथ। महेन्द्र आ सुबुध हाइ स्कूल धरि, संगे-संग पढ़ने। महेन्द्र साइंसक विद्यार्थी आ सुबुध आर्टक। बी.ए. पास केलापर सुबुध शिक्षक भेला आ महेन्द्र डॉक्टरी पढ़ि डॉक्टर बनला। महेन्द्रक कुशल-छेम

बुझला पछाइत सुबुध रमाकान्तकेँ पुछलखिन- “अपना ऐठामक लोक आ मद्रासक लोकमे की अन्तर देखलिऐ?”

दुनू ठामक लोकक तुलना करैत रमाकान्त बजला- “ओत्तुका आ अपना ऐठामक लोकमे अकास-पतालक अन्तर अछि। ओइ ठामक लोक अपना ऐठामक लोकसँ अधिक मेहनती आ इमानदार अछि।”

बिच्चेमे शशि शेखर प्रश्न केलकैन- “की मेहनती?”

“मनुखक तुलना करैसँ पहिने अपन इलाका आ मद्रासक माटि-पानिक तुलना सुनि लिअ। जेहेन सुन्नर माटि अपना सबहक अछि, देखिते छिऐ जे केते मुलाइम आ उपजाऊ अछि, पानियोँ केते बढ़ियाँ अछि। एहेन मद्रासमे नइ छइ। ओतए अपना सभसँ बेसी गरमियो पड़ै छइ। ..जहाँ धरि लोकक सवाल अछि। अपना ऐठामक लोक अधिक आलसी अछि, समयकेँ कोनो महत नै दइए वा ई कहियौ जे ऐठामक लोक समैयक महत बुझबे नै करैए। कियो बुझबो करैए तँ ओ परजीवी बनि जिनगी बितबए चाहैए। हँ! किछु गोरे एहेन जरूर छैथ जे मर्यादित मनुख बनि जिनगी जीब रहल छैथ। जे पूजनीय छैथ मुदा सामाजिक बेवस्था सदिखन हुनको झकझोड़िते रहै छैन। ओइठामक लोक समैयक संग चलैए जइसँ कमजोर इलाका रहितो नीक-नहाँति जिनगी बितबैए। ओइठामक लोक भीखकेँ अधला बुझि नै मंगैए मुदा अपना ऐठाम लोक उपार्जनक स्त्रोत बुझैए।”

बिच्चेमे सुबुध पुछलकैन- “पढ़ाइ-लिखाइ केहेन छइ?”

“स्कूल, कौलेज, युनिवर्सिटी सभ देखलौं। लड़का-लड़कीक स्कूल शुरूहेसँ अलग-अलग अछि। मुदा तैयो दुनूकेँ संगे-संग पढ़ैत सेहो देखलौं। अपना ऐठामसँ बेसी लड़की ओइठाम पढ़ैए। अपना ऐठाम लड़के पछुआएल अछि तँ लड़कीक कोन हिसाब। गाड़ी, ट्रेन, बसमे सेहो अलग-अलग बेवस्था छइ। जखन कि अपना ऐठाम सभ संगे-संग चलैए।”

सुबुध- “खाइ-पीबैक केहेन बेवस्था छइ?”

“गरीब लोकक खान-पान दब होइते छइ। मुदा एक हिसाबसँ देखल जाए तँ अपना सबहक नीक अछि। कपड़ो-लत्ता पहिरब अपना ऐठाम नीक

अछि।”

बिच्चेमे आँखिक इशारासँ रमाकान्त जुगेसरकेँ एक बोतल ब्राण्डी अनैले कहलखिन। जुगेसर उठि कऽ भीतर गेल आ एकटा बोतल नेने आएल। दरबज्जापर आबि चाहेक गिलासकेँ धोइ, सभमे शराब दऽ सबहक आगूमे देलकैन। आगूमे पड़िते रमाकान्त गट दऽ पीब गेला। मुदा हीरानन्दो, शशि शेखरो आ सुबुधोकेँ पीबैत डर होइ छेलैन। कहियो पीने नै छला।

..दोहरी गिलास पीबैत रमाकान्त सभकेँ कहलखिन- “पीबै जाइ जाउ, फलक रस छिऐ। कोनो अपकार नै करत।”

मुदा तैयो सभ-सबहक मुँह तकैत रहला। दोहरा कऽ फेर रमाकान्त सभकेँ कहलखिन। मने-मन सुबुध सोचलैन जे कोनो जहर-माहूर थोड़े छिऐ जे मरि जाएब। अगर मरबो करब तँ पहिने कक्के ने मरता। बुझल जेतइ। आगूमे राखल गिलास उठा आस्तेसँ दू घोट पीब, गिलास रखि हीरानन्दकेँ कहलखिन-

“पीबू, पीबू मास्टर साहैब। सुआद तँ कोनो अधला नहियेँ बुझि पड़ैए।”

सुबुधक बात सुनि हीरानन्दो आ शशि शेखरो गिलास उठा कऽ पीब गेला। ताबे तेसरो गिलास रमाकान्त चढ़ा लेलैन। तेसर गिलास पीबते आँखिमे लाली आबए लगलैन। मन हल्लुक सेहो हुअ लगलैन आ बजैक ताउ चढ़ए लगलैन।

..जहिना आगिपर चढ़ल पानिक बरतनमे ताउ लगलापर निच्चाँक पानि गर्म भऽ ऊपर उठैत रहैए तहिना रमाकान्तकेँ हुअ लगलैन। धीरे-धीरे रंग चढ़ैत-चढ़ैत नीक जकाँ चढ़ि गेलैन। हीरानन्द, सुबुध आ शशि शेखरक आँखि सेहो तेज हुअ लगलैन। तेज होइत नजैरसँ सुबुध पुछलखिन- “काका, महेन्द्र भाय मस्तीमे रहै छैथ किने?”

बजैक वेग रमाकान्तकेँ रहबे करैन तैपर सँ महेन्द्रक मस्ती सुनि आरो बढ़ि गेलैन। बाजए लगला- “मेहनत आ कमाइ देखि क्षुब्ध भऽ गेलौं। अपन बड़का मकान, चारिटा गाड़ी, बजारमे अइल-फइल बास। तैपर सँ बैंकोमे ढेरी रूपैआ जमा केने अछि। ऐठामक सम्पैतक ओकरा कोनो जरूरत नइ छइ! किएक रहतै? जेकरा अपने कमाइ अम्बोह छै...।”

बिच्चेमे सुबुध टोकलखिन- "तखन ऐठामक खेत-पथार गरीब-गुरबाकेँ दऽ दियौ?"

बिना किछु आगू-पाछू सोचने रमाकान्त बजला- "बड़ सुन्नर बात अहाँ कहलौं। अनेरे हम एते खेत-पथार रखने छी। यएह खेत जे गरीबक हाथमे जेतै तँ उपजबो बेसी करत आ सबहक जिनगियो सुधैर जाएत।"

जहिना धधकल आगिमे हवा सहायक होइत तहिना रमाकान्तोकेँ भेलैन। एक तँ ब्राण्डीक निशाँ, दोसर परिवारमे चारि-चारिटा डॉक्टरक कमाइ, तैपर सँ अपार सम्पैत देखि मन उधियाइते रहैन। समाजक सिनेह सेहो बढ़िए गेल छेलैन। तेतबे नहि, अद्वैत दर्शन हृदयकेँ पैघ सेहो बना देने रहैन। ..हँसैत रमाकान्त सबहक बीच, बजला- "अखन धरि हम गुल्लैरक किड़ा बनल छेलौं मुदा आब दुनियाकेँ देखलिऐ। दू साए बीघा जमीन अछि। अनेरे किए हम एते रखने छी। एकटा जमीनदारक खेतसँ सैकड़ो गरीब परिवार हँसी-खुशीसँ गुजर कऽ सकैए। जखन कि ओतेक सम्पैतक सुख एकटा परिवार करए, ई केते भारी अनुचित छी! सभ मनुख मनुख छी। सभकेँ सुख-दुखक अनुभव होइ छइ। कियो अन्न बेतरे काहि कटैए तँ केकरो अन्न सड़ै छइ। घोर अन्याय मनुख मनुखक संग करैए!"

कहि जुगेसरकेँ कहलखिन-

"जुगे, इलाइची देल पान लगाबह?"

जुगेसर पान लगबए गेल। तैबीच बौएलाल सेहो आएल। रमाकान्तकेँ गोड़ लागि कातमे बैसल। ..बौएलालकेँ बैसते रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"मास्टर साहैब, महेन्द्र कहने छल जे एकटा लड़का आ एकटा लड़की, दू गोरेकेँ मद्रास पठा दिअ। ओइ दुनू गोरेकेँ अपना संग रखि छोट -छोट बिमारीक इलाज केनाइ सिखा देबइ। गाममे इलाजक बड़ असुविधा अछि। तेतबे नहि, गरीबीक चलैत लोक रोग-बियाधिसँ मरि जाइए मुदा इलाज नइ करा पबैए। तँए एकटा छोट-छीन अस्पताल सेहो बना देब, जइमे लोकक मुफ्त इलाज हेतइ। तइले जेते दबाइ-दारूमे खरच हएत से हम देब। हम सभ चारि गोरे छी। बेरा-बेरी चारू गोरे सालमे एक-एक मास गाममे रहब आ लोकक इलाज करब।

तैबीच छोट-छोट बिमारी-ले सेहो दू आदमीकेँ तैयार कऽ देबाक अछि। जँ कहीं बीचमे नमहर बिमारी केकरो हेतै, तेकरो इलाजक खरच देबइ...। तँए दू आदमीकेँ मद्रास पठा दियौ, मासुल हम देबइ!"

रमाकान्तक बात सुनि सभ कियो बौएलाल आ सुमित्राकेँ मद्रास पठबैक विचार केलैन। बौएलालकेँ हीरानन्द कहलखिन-

"बौएलाल, सबहक विचार तँ तूँ सुनियेँ लेलह। काल्हि तूँ आ सुमित्रा दुनू गोरे मद्रास चलि जाह।" ❑

शब्द संख्या : 3633

नअ

कछ-मछ करैत हीरानन्द भरि राति जगले रहि गेला। करवनो मनमे होनि जे रमाकान्तक देल जमीन समाजक बीच केना बाँटल जाए, तँ करवनो हुनक उदार विचार नाचि उठैन। करवनो होनि जे निशाँक झोंकमे बजला मुदा निशाँ टुटलापर जँ कहीं नठि जाथि? बात बदलब धनीक लोकक जन्मजात आदत छी। मुदा हम तँ शिक्षक छी, शिक्षकक प्रति आदर आ निष्ठा सभ दिनसँ समाजमे रहलै आ रहतै। ऐ विचारक बीच जेते गोरे छेलौं ओइमे हम आ सुबुध शिक्षक छी। आन कियो तँ कम्मो मुदा हम दुनू गोरे तँ बेसी घिनाएब! कोन मुँह लऽ समाजक बीच रहब..?

विचित्र स्थितिमे हीरानन्द रहैथ। फेर अपनेपर शंका भेलैन जे हमहूँ शराबेक निशाँमे ने तँ वौआइ छी? ई बात मनमे उठिते, उठि कऽ बाहर निकैल चारूभर तकलैन। अन्हार गुप-गुप, सन-सन करैत राति, हाथ-हाथ नइ सुझैत। मुदा अकास साफ। सिंगहारक फूल जकाँ तरेगन चकचक करैत। हवा तँ कोनो नहियेँ बहैत रहै मुदा राति ठंढाएल रहए। पुनः बाहरसँ कोठरी आबि हीरानन्द बिछानपर पड़ि रहला। मुदा नीनक केतौ पता नहि। मनसँ जमीन हटबे ने करैत रहैन। पुनः उठि कऽ कोठरीसँ निकैल लघुसंका करैले कातमे बैसला। भरि-पोख

पेशाब भेलैन। पेशाब होइते मन हल्लुक भेलैन। मन हल्लुक होइते ओछाइनपर आबि पड़ि रहला। ओछाइनपर पड़िते नीन आबि गेलैन।

सुबुध सेहो भरि राति जगले बितौलैन। मुदा हीरानन्द जकाँ ओ ओझरीमे ओझराएल नै छला। समाजशास्त्रक शिक्षक होइक नाते स्पष्ट सोच आ समाज चलैक स्पष्ट दिशा छेलैन तँए मन दृढ़ संकल्प आ सक्कत विचारसँ भरल रहैन। सभसँ पहिने मनमे उठलैन जे जहिना आर्थिक दृष्टिसँ टुटल समाजकेँ रमाकान्त कक्काक सहयोगसँ मजगूत बल भेटत तहिना तँ ओइ बलकेँ चलबैक मजगूत रस्तो भेटक चाही? जे रमाकान्त काका बुते नै हेतैन। इमानदारी आ उदार सोभावक चलैत तँ ओ सम्पैतक तियाग करता। मुदा ओ सम्पैत आगू-मुहेँ बढ़त केना..? जहिना मनुखक परिवार दोबर, तेबर, चारिबरक रफ्तारसँ आगू-मुहेँ बढ़ैए तहिना तँ सम्पैतोक गति हेबा चाहिऐ। मुदा सम्पैतमे ओ गति तखने औत जखन ओइमे श्रमक इंजिन लगौल जाएत। ओना, श्रमक इंजिन लगौनिहार श्रमिक सेहो पर्याप्त अछि मुदा ओकरा श्रमकेँ कोन रूपमे बढ़ौल जाए। एक रूप ई होइत जे सोझे-सोझी ओकरा नव कार्यक ढाँचामे ढालल जाए, नव काज देल जाए, जे सम्भव नइ अछि। किएक तँ नव औजार आ नव तरीका बिना नव ज्ञाने सम्भव नइ अछि, जे नइ अछि। दोसर जे लूरि आ औजार अछि, ओकरे धारदार बना आगू बढ़ौल जाए। जे सम्भवो अछि आ उपयुक्तो होएत। मुदा अहु-ले पथ-प्रदर्शकक जरूरत होएत। जेकर अभाव अछि। हमहूँ तँ नोकरीए करै छी। सात दिनमे एक दिन रबिए-रबि गाममे रहै छी, बाँकी छह दिन गामसँ बाहरे रहै छी। तइसँ काज केना चलि सकैए। किएक तँ समाजो नमहर अछि आ समस्यो ढेर अछि, तैसंग हर समस्याक समाधानक रस्तो फराक-फराक। जेना बुद्धदेव कहने छैथ जे दुश्मनकेँ सूइयाक नोको बरबैर जँ सुराक भेट जाएत तँ ओहू देने हाथी सन विशाल जानवरकेँ प्रवेश करा लेत। समाजक समस्यो तँ ओहने अछि..!

अनासुरती सुबुधक मनमे उपकलैन- जहिना रमाकान्त काका अपन सभ सम्पैत समाजकेँ दइले तैयार छैथ तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि अपन ज्ञान समाजकेँ देब। सभ किछु बुझितो सड़ल-गलल रस्ता अपन अरामक दुआरे धेने चलि रहल छी। सात बीघा जमीन अछि, एकटा पोखैर अछि, दस कट्ठा गाछी-कलम आ खढ़होरि सेहो अछि। जइसँ पिताजी नीक-नहाँति गुजरो केलैन आ हमरो

पढ़ौलैन। मुदा हम नोकरियो करै छी, खेतो-पथार ओहिना अछि मुदा केते आगू-मुहेँ बढ़लौं? हँ, एते जरूर भेल अछि जे घरोवालीकेँ आ बेदरो-बुदरीकेँ धनिकक मन्दिरक मुरती जकाँ नीक-नीक परसाद, नीक-नीक सजाबटसँ सजा काहिल बनौने छी! की हम ई नै देखै छी जे झक-झक करैत छातीक हाड़बला मनुख रिक्शा घिचैए, साठि बर्खक महिला चिमनीमे पजेबा उघैए, मरैबला पुरुख बरदक संग हर ठेलैए, अन्नक बोझ उघैए..! की ओकर देह लोहाक बनल छै आ हमरा सबहक कोढ़िलाक बनल अछि? ई सभ सभटा धन आ बुधिक करामात छी। आइ धरिक समाज आ समाजक निआमक एकरे पोसक रहला जे सुधारैक अछि। नहि तँ मनुख आ जानवरमे की अन्तर रहतै? जइ समाजमे मनुख जानवरक जिनगी जीबए ओइ समाजक प्रबुद्ध लोककेँ चुरुक भरि पानिमे डुमि कऽ नै मरि जेबाक चाहिऐन..?

एते बात मनमे अबिते सुबुध तँइ केलैन, जे सभसँ पहिने काल्हि स्कूलमे तियागपत्र देब। आइ धरि जे जिनगी जीलौं , जीलौं। मुदा काल्हिसँ नव जिनगीक सूत्रपात करब। ..अही संकल्प-विकल्पक बीच सुबुधक मन घुरियाइत रहलैन।

भोर होइते सुबुध ओछाइनपर सँ उठि मैदान दिस विदा भेला। हाथमे लोटा मुदा मन ओही विचारमे डुमल छेलैन। थोड़े दूर गेलापर गाममे गल्ल -गुल होइत सुनलैन। रस्तेपर ठाढ़ भऽ अकानए लगला जे कथीक गल्ल-गुल भऽ रहल अछि। सोझमे केकरो नै देखैथ जे पुछियो लैतैथ। मने-मन अनुमान करए लगला जे भरिसक रातिमे केतौ कोनो घटना घटि गेल। या तँ केकरो साँप-ताँप काटि लेलकै वा केतौ चोरि भऽ गेल। मुदा से सभ नहि छेलइ। साँझमे जे विचार रमाकान्त व्यक्त केलैन ओ राता-राती बिहाड़ि जकाँ सगरे गाम पसैर गेल। रस्तेसँ घुमि सुबुध कड़चीक दतमैन तोड़ि दाँत मजैत घरपर एला। घरपर अबिते देखलैन जे सुकना बैसल अछि। मुदा सुकनाक नजैर सुबुधपर नै पड़ल, किएक तँ ओ अँगनाक दुआरि दिस तकैत रहए। सुबुध सुकनाकेँ पुछलखिन -

"भोरे-भोर केमहर सुकन?"

सुबुधक बात सुनि अकचकाइत सुकन चौकीपर सँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाजल- "मालिक, अहाँ तँ जनिते छी जे कोनो काज-उदममे सभ तूर मिलि

सम्हारि दइ छी। गरीबोपर नजैर रखबै।”

सुबुधकेँ सुकनक बातक कोनो अर्थे ने लगलैन। पुछलखिन-

“सुकन भाय, तोहर बात हम नइ बुझलियह”

“लोक सभ कहलकहेँ जे रमाकान्त काका अपन सभ खेत गरीब-गुरबाकेँ देथिन, जे अहीं बँटबै...।”

सुकनक बात सुनि सुबुध मने-मन सोचए लगला जे जमीन-जयदादक सवाल अछि। धड़फड़ा कऽ केना किछु बाजब। जँ आम लोकक बीच विचार कएल जाएत तँ हो-हल्ला हेतइ। हो-हल्ला भेने काजो बिगैड़ सकैए। तँए असथिरसँ विचार करैक जरूरत अछि। मुदा अखन जँ सुकनकेँ ई बात कहबै तँ दुख हेतइ। तँए आशाक बात कहक चाही। बजला -

“सुकन भाय, जखन गरीबक बीच खेतक बँटबारा हएत तँ तोहूँ गरीबे छह। तखन तोरा किएक ने हेतह। अखन जाह।”

सुकन विदा भेल। कलक आगूमे ठाढ़ भऽ सुबुधक मनमे उठलैन- अजीव स्थिति भऽ गेल। एक दिस गरीबक सवाल अछि। जँ कनियोँ चूक हएत तँ जिनगी भरि बदनामीक मोटरी माथपर चढ़ि जाएत। तँए इमानदारीक जरूरत अछि। मुदा इमानदारी दिस तकै छी तँ अपनोमे बेइमानी घूसल अछि। परिवारोमे तहिना देखै छी आ समाजोमे तँ अछिए। गरीबोमे देखै छी, जे मेहनती अछि ओ बहुत किछु कमा कऽ बनाइयो नेने अछि। जेना रहैक घर, पानि पीबैक कल, जीबैले बटाइ खेतीक संग पोसियाँ मालो-जाल खुट्टापर रखने अछि। जखन कि जे आलसी अछि ओकरा सभ कथूक अभावे छइ। तेतबे नहि, जँ हम इमनदारियोसँ विचार रखए चाहब तैयो उलझन होएत, हमहींटा तँ नइ छी आरो लोक रहता। सबहक नेत सबहक प्रति एक्के रंग हेतैन, सेहो बात नइ अछि। जँ कियो मुँह देखि मुंगबा बँटता, सेहो भऽ सकैए। ओइठाम जँ हुनका कहबे करबैन तँ हमरे बात मानि लेता सेहो सम्भव नहियेँ अछि। जँ रमाकान्त काका केकरो बेसी दिअ चाहथिन तँ की कहबैन, सम्पैत तँ हुनके छिऐन...।

विचारक जंगलमे सुबुध वौआए लगला। दतमैनक घुस्सा करखनो चलैन आ करखनो बन्न भऽ जाइन। एक तँ भरि रातिक जगरना तैपर सँ अमरलत्ती जकाँ

ओझरीकेँ सोझराएब असान नइ बुझि पड़ैन, कनियोँ किम्हरो जोर पड़त तँ टन दऽ टुटि जाएत। तँए जँ समाजक मूल रोगकेँ जड़िसँ नहि पकड़ल जाएत तँ सभ गूड़ गोबर भऽ जाएत।

..तैबीच मुनमा डाबामे दूध नेने सुबुधक आँगन जा डाबा रखि, लगमे आबि दुनू हाथ जोड़ि कहलकैन- "भाय, अबलोपर दया करबै।"

एक तँ सुबुधक मन अपने घोर-घोर भेल रहैन, तैपर सँ लोकक पैरबी आरो घोर कऽ देलकैन। मन मसोसि कऽ बजला-

"अखन जाह। जखन जमीनक बँटबारा हुअ लगतै तँ तोरो बजा लेबह।"

दतमैन करि मुँह-हाथ धोइ कऽ सुबुध आँगन जा पत्नीकेँ पुछलखिन-

"डाबामे मुनमा कथी नेने आएल छल?"

"दूध।"

"दाम देलिऐ।"

"नहि।"

"किएक?"

"हमरा भेल जे अहीं पठेलौं।"

पत्नीक जवाब सुनि सुबुधक मनमे आगि लगि गेलैन। खिसियाइत बजला- "झब-दे चाह बनाउ। स्कूल जाएब।"

पत्नी-

"अखने किए जाएब? आन दिन खा कऽ जाइ छेलौं आ आइ भोरे जाएब?"

"रौतुका खेलहा ओहिना कण्ठ लग अछि तँए नै खाएब।"

कहि सुबुध लुंगी बदैल धोती पहिरए लगला आकि पत्नी चाह नेने एलखिन। कुरता पहिर चाह पीब विदा भेला।

जिनगी भरिमे रमाकान्तकेँ एहेन नीन कहियो नइ भेल छेलैन जेहेन रातिमे भेलैन। समैयक अन्दाजसँ जुगेसर आबि खिड़की देने हुलकी देलक तँ

देखलक जे रमाकान्त ठर्र पाड़ै छैथ।

रमाकान्तकेँ सुतल देखि जुगेसर जोरसँ केबाड़ ढकढकौलक। केबाड़क आवाज सुनि रमाकान्त आँखि मिड़ैत उठला। जुगेसर रमाकान्तकेँ उठा चाह आनए आँगन गेल। रमाकान्तो उठि कऽ कलपर जा कुरुर केलैन। ताबे जुगेसरो चाह नेने आबि गेल।

रमाकान्त चाह पीबते रहैथ, तखने मनमे एलैन जे बाबा चाणक्य ठीके कहने छथिन जे 'धन केकरा-ले रक्खी।' हमरो तँ पितेजीक अरजल छी। जाधैर ओ जीबै छला, हमरा कोनो मतलब नै छल। मुदा हुनका मुइने तँ सभटा हमरे भेल। दुनू बेटा तेते कमाइए जे ऐ धनक ओकरा जरूरते ने छइ। हम केते दिन जीबे करब। तहन तँ सभ धन ओहिना नष्ट भऽ जाएत। कौआ-कुकुर लूझि-लूझि खाएत। तइसँ नीक जे समाजक गरीब-गुरबाकेँ दऽ दिऐ। जहिना तिब्बतक 8म-9म शताब्दीक राजकुमार चेन्पो अपन सभ सम्पैत लोकक बीच बाँटि देलखिन तहिना हमहूँ बाँटि देब। ऐसँ समाजमे भाए-भैयारीक सम्बन्ध सेहो मजगूत बनत। आइ जँ व्यास बाबा जीबैत रहितैथ तँ ओ जरूर बिना कहनौं आबि कऽ असिरवाद दैतैथ। अगर स्वर्ग जाइक रस्ता तियागो होइए तँ हमहूँ किएक ने जाएब। धैनवाद सुबुध आ हीरानन्द मास्टर साहैबकेँ दिऐन जे हमर अज्ञानताक केबाड़ खोललैन। बेटा-पुतोहु सभ जखन सुनत तँ मने-मन खूब खुशी हएत। की हमर कएल धरम ओकरा नै हेतइ?

चाह पीब, पान खा लोटा लऽ रमाकान्त गाछी दिस विदा भेला। कृष्णभोग आमक गाछ तर लोटा रखि, टहैल-टहैल गाछ सभकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगला।

गाछक जे रूप आइ रमाकान्त देखि रहल छैथ ओ रूप आइसँ पहिने कहियो ने देखने छला। गाछ देखि बुझि पड़ैन जे पत्ता-पत्ता हँसि रहल अछि। धरतीक शक्ति पाबि ऐश्वर्यवान बनल अछि। दोसराक सेवा-ले उत्साहित अछि...।

एक टकसँ गाछक रूप देखि रमाकान्तक हृदय गदगद भऽ गेलैन। लोटा उठा पैखाना दिस बढ़ला। तैबीच जय-जयकारक आवाज सुनलैन। आवाज

दूरमे रहै तँए स्पष्ट तँ नहि मुदा सुनै जरूर छला। रसे-रसे आवाज लग अबैत गेलैन। पैखानासँ उठि आवाजकेँ अकानए लगला। जय-जयकारक संग अपनो नाओं सुनाइ छेलैन। अपन नाओं सुनि आरो चौकन्ना भऽ कानक पाछूमे हाथक तरहत्थी रखि अकानए लगला। लोकक समूह जेते लग अबैत जाइत तेते आवाज स्पष्ट भेल जाइत। हाँइ-हाँइ कऽ लोटा नेने पोखैरक घाटपर आबि कुरुर कऽ घर दिस विदा भेला। अपन नाओंक संग जय-जयकार सुनि रमाकान्तक मनमे उठलैन- की बात छिऐ? किएक लोक जय-जयकार कऽ रहल अछि?

रमाकान्तक छातीक धुकधुकी तेज हुअ लगलैन, मनमे गुदगुदी लगए लगलैन। उत्साहसँ छाती फुलैत जाइन।

जाबे लोकक जुलुस घर लग पहुँचल, तइसँ पहिनहि दरबज्जापर आबि रमाकान्त देखए लगला। हीरानन्द आ शशि शेखर सेहो दलानक आगूमे ठाढ़ भऽ देखै छला। की बुढ़, की जुआन, की बच्चा, सभ एक्के सुरमे। सभ मस्त! सभ उत्साहित! सभ नचैत! सबहक मुहसँ हँसी छिटकैत..!

दरबज्जाक आगूमे जुलुस आबि कऽ रूकल। जुलुसक आगूमे पाँच गोरे घोड़ाबला नाच करैत, पाँचो घोड़े जकाँ दौगैत! करवनो हीं-हीं करैत तँ करवनो पाछूसँ चौतालो फेकैत! तइ पाछू डफरा-बौसलीक धून वसन्तक बहार छिड़ियबैत। तइ पाछू लोको सभ नचबो करैत आ जय-जयकारो करैत...।

रमाकान्त सेहो अपन उत्साहकेँ रोकि नै सकला। दलानक ओसारसँ उतैर सोझे जुलुसमे सन्हिया नाचए लगला।

के छोट, के पैघ, के बुढ़, के जवान, सभ बाढ़िक पानि जकाँ उधियाइत रहए। घर-घरसँ स्त्रीगण सभ सेहो आबि चारूकात पसैर गेल।

आँगनसँ श्यामा आबि दरबज्जाक आगूमे ठाढ़ भऽ नाचो देखैथ आ रमाकान्तोपर आँखि गड़ौने छेली। रमाकान्तकेँ नचैत देखि मने-मन सोचए लगली जे एना किए भऽ रहल अछि? लोक सभकेँ कोनो चीजक खुशी हेतै तँए नचैए, मुदा हिनका की भेटलैन जे एना बुढ़ाड़ीमे कुदै छैथ?

छोट बुधि श्यामाक, तँए बुझबे ने करैथ जे धार जखन समुद्रमे मिलए लगैए तखन दुनूक पानि अहिना नचै छै, किएक तँ एक दिस नदीक पानि जे

गतिशील रहल तँ दोसर दिस समुद्रक पानि जे असथिर रहल जइमे सिरिफ लहैर उठै छइ।

अखन धरिक जुलुस आ नाच गामक उत्तरबारि टोलसँ आएल। मुदा आब दछिनबारि टोलसँ दोसर जुलुस, मोर-मोरनीक नाचक संग सेहो पहुँचल। दुनू नाचक बीच सौंसे गामक लोक हृदय खोलि कऽ नचैत...।

कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्द, शशि शेखरकेँ कहलखिन- "अखन जे आनन्द अछि ओ समाजमे सभ दिन केना बनल रहत?"

हीरानन्दक प्रश्नक उत्तर शशि शेखरकेँ किछु नै फुरलैन। मुदा प्रश्नक पाछू मन जरूर दौगलैन। ..गम्भीर प्रश्न अछि, तँए धाँइ-दे उत्तरो देब शशि शेखर उचित नइ बुझि चुप्पे रहला। मुदा एते बात जरूर मनमे उठलैन जे जँ सुकर्मक रस्तासँ मनुख उत्साहित भऽ चलैत रहत तँ जरूर एहने आनन्द जिनगी भरि बनल रहतै। जुलुसक बीच रमाकान्त नचैत-नचैत घामे-पसीने तर-बत्तर भऽ गेला। मुदा तैयो मन नचैले उधैकते रहैन। एकटा छौरा जे अखरहो देखने, ओ नचैत-नचैत लगमे आबि रमाकान्तकेँ दुनू हाथे पँजिया कऽ उठा कन्हापर लऽ नाचए लगल। रमाकान्तकेँ उठेने नचैत देखि सभ कियो दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत जय-जयकार करए लगल। कातमे ठाढ़ भेल हीरानन्दकेँ भेलैन जे कहीं रमाकान्त बाबू खसि-तसि नै पड़ैथ, तँए लफैर कऽ बीचमे जा रमाकान्तकेँ डाँड़ पकैड़ निच्चाँ केलकैन।

निच्चाँ उतैरते रमाकान्त दुनू हाथे थोपड़ी बजबैत फेर नाचए लगला। दुनू हाथ उठा कऽ हीरानन्द सभकेँ शान्त होइले कहलखिन। हाथक इशारा देखि सभ शान्त भऽ गेल। धोतीक खूटसँ रमाकान्त पसेना पोछि कहए लगलखिन-

"अहाँ सबहक बीच कहै छी, जे खेत-पथार आइ धरि हम्मर छल, अखनसँ ओ अहाँ सबहक भऽ गेल।"

रमाकान्तक बात सुनि सबहक मुहसँ धानक लाबा जकाँ हँसी भरभरा गेल। जे समाज आर्थिक विपन्नताक चलैत अखन धरि मौलाएल छल ओइमे खुशीक नव फुल फुलाए लगल। सभ कियो हँसी-चौल करैत अपन-अपन घर दिस विदा भेल।

घरसँ निकैल सुबुध सोझे अपन डेरा गेला, डेरा पहुँच तियाग-पत्र लिखलैन। मेसबलाकेँ सभ हिसाब फरिछबैत स्कूल आबि प्रधानाध्यापककेँ तियाग-पत्र दैत कहलखिन-

“मास्टर साहैब, आइसँ सेवामे सहयोग नै कऽ सकब!”

कहि ऑफिससँ निकलए लगला।

ऑफिससँ निकलैत देखि कुरसीसँ उठि प्रधानाध्यापक बजला- “सुबुध बाबू, कनी सुनि लिअ।”

हेडमास्टरक आग्रह सुनि सुबुध रूकि कऽ मुस्कियाइत बजला- “की कहलौं मास्सैब?”

हेडमास्टरक छातीक धड़कन तेज भेल जाइ छेलैन तँए बोलीक गति सेहो तेज हुअ लगलैन। बजला- “सुबुध बाबू, अहाँ जल्दीबाजीमे निर्णए कऽ लेलौं। अखनो कहब जे अपन कागत आपस लऽ लिअ।”

निशंक आ गम्भीर स्वरमे सुबुध बजला- “मास्सैब, आइ धरि अहाँ सबहक संग रहलौं मुदा आब हम वैरागीक संग जा रहल छी तँए एक्को क्षण एतए अँटकैक इच्छा नइ अछि। एक्को पाइ हमरा दुख नइ भऽ रहल अछि। बेकतीगत जिनगी बना अखन धरि जीलौं मुदा आब सामाजिक जिनगी जीबैले जा रहल छी। अपनौसँ आग्रह करब, जे असिरवाद दिअ।”

एक दिस सुबुधक मुखमण्डल नव ज्योतिसँ प्रखर होइत रहैन तँ दोसर दिस हेडमास्टरक मुखमण्डल मलिन होइत गेलैन...।

सुबुधक तियाग पत्रक समाचार शिक्षकक बीच सेहो पहुँचल। सभ शिक्षक अपना कोठरीसँ उठि हेडमास्टरक चेम्बरमे पहुँचला। दुनू हाथ जोड़ि सुबुध सभकेँ कहलखिन-

“भाय लोकैन, आइ धरिक जिनगी संगे-संग बितेलौं, तैबीच जँ किछु अधला भेल हुअए, ओ बिसैर जाएब। आइ धरि किताबी ज्ञानक बीच ओझराएल छेलौं मुदा आब ओइ ज्ञानकेँ बेवहारिक धरतीपर उतारैले जा रहल छी।”

जहिना सूर्योदयसँ पूर्व थलकमल उज्जर रहैत मुदा सुरुजक रोशनी पाबि धीरे-धीरे लाल हुअ लगैत तहिना सुबुधक हृदय समाजक प्रखर रोशनीक प्रवेशसँ बदैल गेलैन। तेज गतिए स्कूलक ओसारसँ निच्चाँ उतैर गेला।

सुबुधक तेज चालि देखि विवेक बाबू सेहो नमहर-नमहर डेग बढ़बैत सुबुध लग आबि कहलखिन-

“सुबुध भाय, अहाँ जे किछु केलौं अपन विचारक अनुकूल केलौं। तँए ओइ सम्बन्धमे हमरा किछु नै कहक अछि। किएक तँ जहिया स्कूलमे नोकरी शुरू केलौं आ जेते बुझै छेलिऐ, ओइसँ बेसी आइ जरूर बुझै छी, तँए ओइ दिन ओइ दिनक विचारक अनुरूप केलौं आ आइ औझुका विचारक अनुकूल कऽ रहल छी। मुदा हमर अहाँक सम्बन्ध सिरिफ शिक्षकेक नइ अछि बल्कि विद्यार्थीक सेहो अछि।”

सुबुध आ विवेक हाइये स्कूलसँ संगी। हाइ स्कूलसँ कौलेज धरि दुनू संगे-संग पढ़ने। मुदा विवेकसँ सुबुध तीन दिनक जेठ छैथ। जे बात सुबुधोकेँ आ विवेकोकेँ बुझल छैन। स्कूलोमे आ कौलेजोमे सुबुध विवेकसँ नीक विद्यार्थी रहला। विवेकसँ अधिक नम्बरो परीक्षामे सुबुधकेँ अबैत रहैन। ओना, दुनू गोरे एक्के डिवीजनसँ पास करै छला मुदा अंकमे किछु तरपट रहै छल। विवेक सुबुधकेँ सीनियर बुझै छैथ। जेकर उदाहरण अछि जे जइ दिन दुनू गोरेक बहाली स्कूलमे भेल, ओइ दिन सभ कागजात विवेकक अगुआएल रहितो स्वेच्छासँ विवेक सुबुधकेँ तीन नम्बर शिक्षक आ अपनाकेँ चारि नम्बर शिक्षक-ले हेडमास्टरकेँ कहने रहथिन। जेकरा चलैत सुबुधक बहालीक चिट्ठीक समय बदैल हेडमास्टर रजिस्टर मेनटेन केने छेलैन। विवेकक प्रति सुबुधक हृदयमे वएह सिनेह छैन।

सुबुधक संगे विवेक अपना डेरा एला। डेरामे अबिते विवेकक पत्नी चाह बना, दुनू गोरेक आगूमे दऽ बैठकखानासँ निकैल खिड़की लग जा ठाढ़ भऽ गेली। एक जिनगीक टुटैत सम्बन्धसँ कँपैत हृदय विवेक बाबूक रहैन तँए थरथराइत स्वरमे पुछलखिन-

“एक्को दिन पहिने तँ ई बात नै बाजल छेलौं। अनासुरती एहेन निर्णए

केना कऽ लेलिऐ?”

मुस्कियाइत सुबुध उत्तर देलखिन-

“पहिनेसँ निआर नै छल। ऐ बेर जे गाम गेल छेलौं तखन भेल। जहिना देव-असुर मिलि समुद्र मथन केने छला तहिना समाजक मथनक परिस्थिति बनि गेल अछि। जइले हमरो जरूरत समाजकेँ छइ। समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ हमहूँ छी। तँए अपन दायित्व पूरा करैले नोकरी छोड़लौं अछि...।

महान जिनगी लेल सेवा जरूरी होइत अछि। जँ नोकरीकेँ सेवा कहल जाए तँ खेतमे काज करैबला बोनिहारकेँ की कहबै? किएक तँ बोइन-मजूरी लेल ओहो काज करैत अछि आ नोकरियो केनिहार। मुदा पेटक लेल तँ कमाएबो जरूरी अछि, जँ से नइ करब तँ खाएब की आ दोसरकेँ खुएबै केना? भूखलकेँ भोजन चाही। चाहे ओ अन्नक भूखल हुअए आकि ज्ञानक। तँए चाहे नोकरी होइ वा आन कोनो उपार्जनक काज; ओइकेँ इमानदारीसँ निमाहैत आगू बढ़ि किछु करब–चाहे ज्ञानक क्षेत्र होइ वा जीवनक खगता- भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा, शिक्षा आदि–ओ सेवा होइत। ज्ञानक सेवा ताधैर अपन महत्वक स्थान नहि पबैत जाधैर ओ जीवनसँ जुड़ि कर्मक रूप नै लैत अछि। सिरिफ वैचारिके धरातलसँ होइत तँ मिथिलामे महान-महान विचारक, मनुखक उद्धार-ले रस्ता बतौलैन। मुदा अखनो समाजमे ओहेन मनुख ऐछे जे हजारो बर्ख पूर्वमे छल। हँ! किछु आगुओ बढ़ल, ईहो सत अछि। मुदा जे कियो बौद्धिक, आर्थिक क्षेत्रमे आगू बढ़ला ओ पछुआएलक डेन पकैड़ आगू-मुहेँ घिंचलैन वा पाछू-मुहेँ धकेललैन? जँ बाँहि पकैड़ आगू-मुहेँ घिंचए चाहितैथ तखन एतेक जाति, सम्प्रदाय, कर्मकाण्ड पैदा करैक की प्रयोजन? राजसत्ता आ समाजसत्ता- दुनू पछुआएल लोककेँ आरो पाछूए-मुहेँ धकेललक!”

एते कहि सुबुध उठि कऽ ठाढ़ होइत फेर बजला-

“आब एक्को क्षण ऐठाम नै रूकब। हमर बाट रमाकान्त काका तकैत हेता।”

सुबुधकेँ दुनू बाँहि पकैड़ बैसबैत विवेक पत्नीकेँ कहलखिन -

“झब-दे थारी साँठू सुबुध भाय जाइले धड़फड़ाइ छैथ।”

भोजन कऽ सुबुध विवेकक डेरासँ विदा भऽ गेला। दुनू हाथ जोड़ि विवेक कहलकैन-

"हमरोपर धियान रखब।"

गामक सीमामे प्रवेश करिते सुबुध घरक सुधि बिसैर गेला। सौंसे गाम परिवारे जकाँ बुझि पड़ए लगलैन। एक टकसँ खेत-पोखैर-गाछी-कलम-खढ़होरि इत्यादि देखि मने-मन सोचए लगला- जँ ऐ सम्पैतकेँ ढंगसँ आगू बढ़ौल जाए, विकसित ढंगसँ कएल जाए तँ निसचित गामक लोकमे खुशहाली ऐबे करत। अखन धरि जहिना खेत मरनासन्न अछि तहिना पोखैर-झाँखैर सेहो। सभसँ पैघ बात तँ ई अछि जे लोको दबैत-दबैत एते दबि गेल अछि जे सिरिफ मनुखक ढाँचा मात्र रहि गेल अछि। तँए सभमे नव चेतना, नव ढंग आ नव तकनीकक नव औजारक उपयोग आवश्यक अछि। तखने शिशिरक सिकुरल रूप वसन्तक विकसित रूपमे बदैल सकैए...।

सोचैत-विचारैत सुबुध राजिन्दरक घर लग पहुँचला। राजिन्दरक घर देखि रस्ता छोड़ि रूकि गेला।

राजिन्दरकेँ तीनटा घर। अँगनाक एकभागमे टाट लगौने। दछिनबरिया घरमे मालो बन्हैत आ अपनो बैसार बनौने। बैसारमे दूटा चौकी देने। एकटापर अपने सुतैत आ दोसरकेँ पाहुन-परक-ले रखने।

सुबुधकेँ देखि राजिन्दर चौकीपर सँ उठि, दुनू हाथ जोड़ि बाँहि पकैड़ चौकीपर बैसौलकैन। सुबुधकेँ चौकीपर बैसा घरवालीकेँ दरबज्जेपर सँ कहलखिन-

"मास्टर साहैब एला हेन, झब-दे एक लोटा पानि नेने आउ?"

पतिक बात सुनि गुलबिया लोटामे पानि नेने आबि ओलती लग ठाढ़ भऽ गेली। मुँह झँपने। ..स्त्रीकेँ ठाढ़ देखि राजिन्दर बजला-

"हिनका नै चिन्है छिऐन, सुबुध भाय छैथ! मुँह किए झँपने छी?"

राजिन्दरक बात सुनि सुबुध मुस्कियाइत बजला-

"गाममे रहितो हम अनगौंआँ भऽ गेल छी! जहियासँ नोकरी शुरू केलौं, गाम छुटि गेल! सप्ताहमे एक दिन अबै छी जइसँ गाममे घुमियो-फिर नहि पबै

छी तँए नै चिन्है छैथ। मुदा आब गाममे रहै दुआरे नोकरी छोड़ि देलौं। आब चिन्हती।"

सुबुधक बात सुनि राजिन्दर स्त्रीकेँ कहलखिन-

"सुबुध भाय पैघ लोक छैथ। जखन दुआरपर पएर रखलैन तखन बिना किछु खुऔने-पीऔने केना जाए देबैन। जाउ बाड़ीसँ ओरहाबला चारिटा मकइ बालि तोड़ि ओराहि कऽ नेने आउ।"

पतिक बात सुनि गुलबिया मुस्कियाइत विदा भेली।

राजिन्दर सुबुधकेँ पुछलकैन- "भाय नोकरी किए छोड़ि देलिऐ?"

राजिन्दरक प्रश्नक सही उत्तर देब सुबुध उचित नइ बुझि बजला-

"नइ मन लगल। अपनो खेत-पथार अछि आब खेतीए करब।"

चारू ओराहल बालि आ नून-मेरचाइ थारीमे नेने गुलबिया आबि सुबुधक आगूमे रखि अपने निच्चाँमे बैस गेली। मकैक ओरहा देखि सुबुध तिरपित भऽ एकटा बालि हाथमे लऽ गौरसँ दाना देखए लगला। सुभर बालि। एक्कोटा दाना भौर नहि। बालिकेँ देखि सुबुध बजला-

"बड़ सुन्नर मकइ अछि! अपना ऐठामक गिरहत तँ उपजैबते ने अछि, जँ उपजौल जाए तँ खूब हेतइ। बेगूसराय, सहरसा आ मुजफ्फरपुर इलाकामे देखै छिऐ जे मकैक उपजासँ गिरहस्त धनिक भऽ गेल अछि। सालो भरि मकैक खेती होइ छइ। जहिना खेती तहिना उपजा। पाँच मन छह मन कट्ठा मकइ उपजैए। खाइयोमे नीक। रोटी, सतुआ, भुजा, ओरहा सभ किछु मकैक बनैए। बदाम आ मकैक सतुआ तँ बुझू जे बिनु दाँतोबला-ले अमृते छी।"

वामा हाथमे बालि दहिना हाथक ओंगरीसँ दाना छोड़ा मुँहमे लैत सुबुध पुछलखिन-

"राजिन्दर भैया, बाल-बच्चा कएटा अछि?"

सुबुधक प्रश्न सुनि राजिन्दर चुप्पे रहला मुदा गुलबिया बजली-

"तीन भाए-बहिन अछि। जेठकी सासुर बसैए। बड़ बढ़ियाँ गुजर चलै छइ। दोसरोक बिआह केलौं। मुदा जमाए वौर गेल। दिल्लीमे नोकरी करैत रहै ,

ओतैसँ वौरल, ने एक्कोटा चिट्ठी-पुरजी पठबै आ ने रूपैआ-पैसा। छह मास बेटीकेँ सासुरमे रहए देलिऐ, तेकर बाद अपने ऐठाम लऽ अनलिऐ। दिल्लीसँ जे कोइ आबै आ पुछिऐ तँ कोइ कहए दोसर बिआह कऽ लेलक, तँ कोइ कहए अरब चलि गेल। कोइ कहए मलेटरीमे भरती भऽ गेल तँ कोइ कहए उग्रवादी भऽ गेल। कोनो भाँजे ने लगल। आखिरिमे चारि बरिस अपना ऐठीम बेटीकेँ रखलौं। मुदा गामोमे तेहेन लुच्चा-लम्पट सभ अछि जे अनका इज्जतकेँ कोनो इज्जत बुझैए।"

हाथक इशारा सँ देखबैत- "उ घर देखै छिऐ, ओइ अँगनाक एकटा छौरा कहियो माछ कीनि कऽ नेने आबए तँ कहियो फोटो खिंचबैले संगे लऽ लऽ जाइ। हम दुनू परानी बाध-बोनमे भरि-भरि दिन रहै छेलौं। गाम परहक खेल-बेल बुझबे ने करै छेलिऐ। जखन गामक लोक कुट्टी-चौल करए लगल तखन बुझलिऐ। ..जेठकी बेटी आएल रहए। ओकरा कहलिऐ। ओ अपने संगे नेने गेलइ। दोसर बिआह ऐ दुआरे नै करिऐ जे जँ कहीं जमाए जीबते हुअए। पछाइत जेठके जमाए-सँ बिआह कऽ लेलक। दुनू बहिन एक्के घरमे रहैए। दुनूकेँ सखा-पात सेहो छइ। छोट बेटा अछि। ओकरो बिआह-दुरागमन कऽ देलिऐ।"

मुस्कियाइत सुबुध पुछलखिन- "दान-दहेजमे की सभ देलक?"

दान-दहेजक नाओं सुनि गुलबिया हँसैत बजली- "समैध अपने एला। संगमे लड़कीक माम सेहो रहथिन। दुआरपर अबिते भोला बापक पुछारि केलैन। हम नुआँक फाँड़ बान्हि चिपरी पाथैत रही। माथ परहक साड़ी ससैर कऽ गरदैनपर रहए आ दुनू हाथो गोबराएले छल। केना गोबराएल हाथे साड़ी सम्हारितौं। तँए ओहिना चिपड़ी पथिते रहि गेलौं। कोनो की चिन्हैत रहिऐ। ओहो तँ हमरा नहियेँ चिन्हैत रहैथ। अनठिया ओहो आ अनठिया हमहूँ रही। ओहो मनुखे छैथ आ हमहूँ मनुखे छी, तखन बीचमे कथीक लाज?"

गुलबियाक बात सुनि दाँत पिसैत राजिन्दर बिच्चेमे कहलखिन-

"आबो एक उमेरक भेलौं तैयो समरथाइक ताउ कम्म नै भेल? जे मनमे अबैए बकने जाइ छी..!"

राजिन्दरक बातकेँ दबैत गुलबिया बजली- "कोनो की झूठ बात बजै छी

जे लाज हएत। मास्टर बौआ की कोनो अनगौंआँ छैथ जे रस्ते-रस्ते ढोल पीटता?”

बीच-बचाव करैत सुबुध बजला- “तेकर बाद की भेल?”

“ताबे ईहो एला। दुनू गोरेकेँ चौकीपर बैसा गप -सप्प करए लगला। हमरो गोबर सठि गेल। आँगन चलि एलौं। हाथ -पएर धोइ कऽ पछबरिया टाट लग ठाढ़ भऽ गप-सप्प सुनए लगलौं। लड़कीक माम तँ उचक्का जकाँ बुझि पड़ैथ मु दा बाप असथिर। वेचारा बड़ सुन्नर गप बजलैथ। ओ कहलकैन जे देखू अहाँक बेटा छी आ हम्मर बेटी। दुनियाँमे जेते लोक अछि ओ अपने बेटा -बेटी-ले सभ किछु करैए। जहिना अहाँ छी तहिना तँ हमहूँ छी। जहिना अपन नून-रोटीमे अहूँ गुजर करै छी तहिना हमहूँ करै छी। कौआसँ खैर लूटाएब मुरुखपना हएत। हमरे एकटा पितियौत सार अपन बेटाक बिआह केलक। एक लाख रूपैआ नगद नेने रहइ। तेते लाम-झामसँ काज केलक जे अपनो जे बैंकमे साठि हजार रूपैआ रहै सेहो सठि गेलइ। हम ओहेन काज नइ करब। बेटी-जमाएकेँ एकटा चापाकल गड़ा देबइ, दू कोठरीक मकान बना देबइ आ एक जोड़ा गाए ली वा म हींस, से देब। तैसंग दुनू गोरेकेँ लत्ता-कपड़ा, बरतन-बासन, लकड़ीक सभ आवश्यक सामानक संग बिआहक खरच करब। अहाँकेँ ऐ दुआरे नै खरच कराएब जे जे खरच भऽ जेतै ओ तँ ओही दुनूक जेतै किने। ..हमरा पसिन भऽ गेल। मन कछ -मछ करए लगल जे सूहकारि ली। मुदा पुरुखक बीच गप चलैत रहइ। मनमे ईहो हुअए जे जँ कहीं कोनो बाते दुनू गोरेमे रक्का -टोकी भऽ जेतैन तखन तँ कुटुमैतियो नइ हएत। तँए मन कछ-मछ करए लगल। एक बेर खोंखी केलौं जे ओ अपने अबैथ मुदा से नै भेल। तखन दुनू हाथे थोपड़ी बजेलौं। तैयो सएह। आब की करितौं। काज पसिनगर अछि मुदा जँ कहीं कोनो बाधा उपस्थित भऽ गेल तखन तँ सभ नाश भऽ जाएत। पछाइत मुँह उघारनहि हम दुआरपर गेलौं। आगूमे ठाढ़ भऽ हिनका कहलयैन-

“भैया! बड़ सुन्नर बात समैध कहै छथुन, भोलाक बिआह कऽ लएह।”

..कहि चोट्टे घुमि कऽ आँगन आबि शरबत बनेलौं। अपनेसँ जा कऽ तीनू गोरेकेँ देलिऐन। कुटमैती पक्का भऽ गेल। ऐगले लगनमे बिआहो भेल।”

तैबीच चारू बाइलो सुबुध खा लेलैन आ गपो-सप्प सम्पन्न भेल। पानि पीब घर दिसक रस्ता पकड़लैन। थोड़े दूर आगू बढ़लापर सुबुधक मनमे उठलैन - घरपर जाइ आकि रमाकान्त काका ऐठाम?

दुबट्टी लग ठाढ़ भऽ सुबुध गुनधुन करए लगला। एक मन होनि जे भरि दिनक थाकल छी, कनी अराम करब जरूरी अछि। तँए घरेपर जाएब नीक। दोसर मन होनि जे ऐ जुआनीमे जँ अराम करब तँ जिनगी छूटत।

गुनधुनमे पड़ल सुबुधक मनमे एलैन- नोकरी छोड़ैक समाचार घर पहुँचेनाइ जरूरी अछि। तत्-मत् करैत रमाकान्त घर दिसक रस्ता छोड़ि मलहटोलीबला एकपेड़िया पकैड़ घर दिस बढ़ला। घर लग अबिते सभ किछु बदलल-बदलल बुझि पड़लैन। जेना सभ किछु खुशीसँ मस्त हुअए। दरबज्जाक चुहचुही सेहो नीक बुझि पड़लैन। दुआरपर आबि कुरता खोलि चौकीपर रखि पत्नीकेँ सोर पाड़ि कहलखिन-

“कनी एक लोटा पानि नेने आउ, बड़ पियास लगल अछि।”

पतिक आवाज सुनि किशोरी लोटामे पानि नेने एली। हाथसँ लोटा लऽ लोटो भरि पानि पीब सुबुध बजला-

“आइसँ नोकरी छोड़ि देलौं, विद्यालयमे तियागपत्र दऽ देलौं।”

पतिक बात सुनि किशोरी चौंक गेली। मुदा पति -पत्नीक बीच मजाको चलिते अछि। किशोरीकेँ सोलहन्नी बिसबास नहि भेलैन। मुस्कियाइत बजली-

“नीक केलौं। आठ दिनपर जे भेँट होइ छेलौं से दिन-राति भेँट होइत रहब। हमरो नीके।”

किशोरीक बात सुनि सुबुधक मनमे भेलैन जे भरिसक मजाक बुझलैन। दोहरबैत बजला- “अहाँ मजाक बुझै छी। सत बात कहलौं।”

जेबीसँ तियागपत्रक नकल निकालि कऽ देखबैत कहलखिन- “हे देखियौ कागत!”

तैबीच मंगल सेहो आएल। मंगलकेँ देखि किशोरी ससैर गेली। मुस्कियाइत सुबुध मंगलकेँ कहलखिन- “काका, नौकरी छोड़ि देलौं। आब

गाममे रहि खेतियो-पथारी करब आ जहाँ धरि भऽ सकत समाजक सेवा सेहो करब।”

सुबुधक बात सुनि मंगल कहलकैन- “बौआ, हम तँ उमेरेमे ने अहाँसँ जेठ छी मुदा अहाँ पढ़लो-लिखल छी मास्टरियो करै छी तँए नीके जानि कऽ ने नोकरी छोड़ने हएब।”

मंगलक बात सुनि सुबुधक मनमे सवुर भेलैन। मुस्कियाइत बजला-

“काका जाधैर पढ़ल-लिखल लोक समाजमे रहि समाजक क्रिया-कलापकेँ आगू-मुहेँ नै धकलत ताधैर समाज आगू केना बढ़त।”

सुबुध आ मंगल गप-सप्प करिते छला कि किशोरी आँगनमे अर्ड़ाहैट मारि कानए लगली। सुबुध बुझि गेला तँए असथिरसँ बैसले रहला। मुदा अकलबेराक कानब सुनि टोलक जनिजाति दौग-दौग आबए लगली। सौंसे आँगन जनिजातिसँ भरि गेल। ..नवानीवाली किशोरीकेँ पुछलखिन- “कनियाँ की भेल जे एना अकलबेरामे कानै छी?”

मुदा किछु उत्तर नै दऽ किशोरी आरो जोर-जोरसँ कानए लगली। टोलक जेते बहिना, फुल, पान, गुलाब, कदम, चान, पार्टनर किशोरीक छेलैन सभ कियो एक्केटा प्रश्न पुछैत रहलैन- “की भेल?”

मुदा जेते संगी-साथी सभ किशोरीसँ पुछै छेलैन तेते किशोरी जोर-जोरसँ कानै छेली। केकरो कोनो अर्थे नै लगैत। मुदा अनुमानक बजार तेज भेल जाइ छल। कियो किछु बुझैत तँ कियो किछु।

दरबज्जापर बैसल-बैसल सुबुध मने-मन खुशी होइत रहैथ। मनमे होनि जाधैर पुरना चालि-ढालिक लोकक–चाहे मरद हुअए वा स्त्रीगण–चालि नहि बदलत ताधैर नव समाज केना बनि सकैए? ई प्रश्न तँ सिरिफ समाजे-ले नै परिवारो-ले अछि, आ परिवारे किए, मनुखो-ले अछिए। तँए सुबुध किछु बजबे ने करैथ।

अकलबेराक समय रहबे करए। बाध दिससँ गाए, महींस, बकरी चरि-चरि अबैत रहए। घसबहिनी घासऽ पथिया नेने अबै छेली आ गोबर बीछनिहारि

सभ गोबरक छितनी माथपर नेने अबै छेली...।

बुधनी आ सोमनी, घासऽ छिट्टा माथपर नेने जखन सुबुधक घर सिके एली कि सुबुधक अँगनामे कानब सुनली। दुनू गोरे अकाइन कऽ बुझलैन जे सुबुधक पत्नी कानै छथिन। सोमनी बुधनीकेँ कहलक- "बहिन, छिट्टा रखि कऽ चल देखैले।"

तैपर बुधनी बजली- "गै बहिन, ऐ चमचिकनी सबहक भभटपन सुनि कऽ की करबीही। भरि दिन चाह-पान घोंटैत रहैए, बुझैए जे एहने दुनियाँ छइ। मरदकेँ किछु हुअए, मौगी सभ रानी छी। जाबे एतए बरदेमे ताबे गामेपर चलि जेमे। घास-भूसा झाड़ब, जरना-काठी ओरियाएब। थैर खड़ैब, बासन-कुसन धुअब आकि ऐ भभटपनवालीक भभटपन सुनब। चल।"

सोमनी मुड़ी डोलबैत बाजल- "बेस कहलेँ बहिन, जेकरा जेते सुख होइ छै ओ ओते कनैए। अपने सभ नीक छी जे कमाइ छी खाइ छी आ चैनसँ रहै छी। ऐ ललमुहीं सबहक किरदानी सुनबीही तँ हेतौ जे मुहेँपर थुकि दिऐ। " ❑

शब्द संख्या : 4580

दस

भरि दिन सुबुधक मनमे यएह खुटखुटी धेने रहलैन जे जइ गामक लोकमे एते उत्साह बढ़ल अछि, ओइ गाममे जँ बिहाड़िक पूर्व हवा खसै तँ लोकक मनमे अनदेसो बढ़ि सकैए। समाज छिऐ, के की बाजत, नै बाजत तेकर कोन ठेकान। कियो सोचि सकैए जे जेते विचारक सभ अछि ओ पाइ-कौड़ीक भाँजमे कहीं टौहकी ने तँ लगबैए। मुदा लोकक धाराकेँ रोकलासँ खतरो उपस्थित भऽ सकैए। जहिना अधिक रफ्तारसँ चलैत गाड़ीमे एकाएक ब्रेक लगौलासँ दुर्घटनो भऽ सकैए तहिना काजमे ढील-ढाल भेलापर भऽ सकैए। ओना, भरि दिन तँ अपने चक्करमे फँसल रहलौं, से के बुझत। गामक लोक तँ गामक काजे भेलासँ बुझता...।

अचताइत-पचताइत सुबुध रमाकान्त ऐठाम विदा भेला। मुन्हारि साँझ भऽ गेल छेलइ। थोड़े दूर आगू बढ़लापर रस्ताक पछबारि भाग, सुरतिया घरक आगूमे पान-सात गोरे बैस गप-सप्प करैत रहए।

“खेतक बँटबाराक ढोल तँ रमाकान्त काका पीटि देलखिन मुदा बँटै कहाँ छथिन! धनक लोभ केकरा नइ छइ। ओ थोड़े खेत बँटथिन! ई सभटा धनिक लोकक चालबाजी छिऐ।”

“लोक थोड़े नीक-अधलाक विचार करैए, जे सुनलक ओ कौआ जकाँ कौंउ-कौंउ करैत सगरे गाम बिलैह दइए। मुदा तइसँ की , अगर जँ ओ खेत नहियेँ बँटथिन तँ की लोक मरि जाएत!”

“जे अपने ठकि-फुसिया कऽ एते धन जमा केलक ओ सुहरदे मुहेँ लोककेँ जमीन दऽ देतइ! तखन तँ गरीबक कपारेमे जे दुख लिखल छै ओ तँ ओकरा भोगै पड़तै। केहेन निरलज्ज जकाँ रमाकान्त नाचि-नाचि लोककेँ कहलकै..!”

रस्तापर ठाढ़ भऽ सुबुध सुनैत रहला। सुनला पछाइत सुबुधक मनमे जेना आगि लगि गेलैन। मुदा मनमे उठलैन, भरि दिन तँ हमहूँ अनतए छेलौं, गाममे किछु भऽ ने तँ गेल..! बिना किछु बजने सुबुध आगू बढ़ि गेला। रमाकान्त ऐठाम पहुँचला।

सुबुधकेँ देखिते हीरानन्द बजला- “जिनकर चरचा करै छेलौं ओ आबिए गेला।”

रमाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन- “केता बेर तोरासँ गप करैक मन भेल मुदा तोँ तँ भरि दिन निपत्ते रहलह। केतौ गेल छेलह की?”

रमाकान्तक बात सुनि सुबुध बजला- “भरि दिन एते व्यस्त रहलौं जे अखन फुरसत भेल। घरसँ बहार धरि परेशान-परेशान दिन भरि होइते रहलौं।”

रमाकान्त- “की परेशान?”

“काल्हि रातिमे जखन ओछाइनपर गेलौं तँ अहाँक कहलाहा बात मोन पड़ल। मोन पड़िते पेटमे घुरियाए लगल। बड़ी काल धरि सोचैत-विचारैत रहलौं। नीनो ने हुअए। अन्तमे यएह मनमे आएल जे जहिना अहाँ अपन सभ

सम्पैत समाजकेँ देलिऐन तहिना हमहूँ नोकरी छोड़ि देहसँ समाजक सेवा करब। जहिना गाड़ी इंजिनक बले चलैए तहिना तँ समाजोमे इंजिनक जरूरत अछि। तैबीच एकटा इतिहासक घटना मोन पड़ल।"

'इतिहासक घटना' सुनिते उत्सुकतासँ हीरानन्द सुबुधकेँ पुछि देलखिन-

"कोन घटना मोन पड़ल?"

सुबुध- "तिब्बतमे एकटा राजकुमार चेनपो नामक भेला। ओ अपना राज्यमे धनीक-गरीबक बीच खाधि देखलैन। ओइ खाधिकेँ पाटैले अपन सभ सम्पैत प्रजाक बीच बाँटि देलखिन। मुदा किछुए दिनक उपरान्त फेर ओहिना-क-ओहिना भऽ गेल। माने धनिक धनिक बनि गेल आ गरीब गरीब! राजकुमार क्षुब्ध भऽ गेला जे एना किए भेल?"

खिस्सा सुनि बिच्चेमे शशि शेखर पुछि देलकैन-

"एना किएक भेलइ?"

"हम समाजशास्त्रक विद्यार्थी छी तँए ऐ बातकेँ जनै छी। जाधैर बेवस्था नहि बदलत ताधैर मनुखक जिनगी नइ सुधरत। तँए हम अपन दायित्व बुझि नोकरी छोड़लौं। गामक गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरि आ बच्चासँ लऽ कऽ बुढ़ धरि, गाम सबहक छिऐ। तँए हम तिब्बत जकाँ हूसल काज नइ करब।"

पहिलुके प्रशंसा सुनि रमाकान्तक मन उड़ि गेलैन, राजकुमारक पुरा खिस्सा सुनबो ने केलाह। मुदा हीरानन्दोक आ शशि शेखरोक धियान ओइ खिस्सामे घुमए लगलैन। तैबीच जुगेसर चाह अनलक। सभ कियो चाह पीबए लगला। चाह पीब रमाकान्त बजला- "देखू, हम अपन सभ खेत समाजकेँ दऽ देलिऐ। आब हमरा कोनो मतलब ओइ खेतसँ नइ अछि। मुदा एकटा बात जरूर कहब जे कोनो तरहक गड़बड़ी समाजमे नै हुअए। सभकेँ खेत होइ।"

रमाकान्तक बात सुनि शशि शेखर अपन विचार रखलैन-

"गाममे गरीब-लोकक परिवार जेते अछि ओकरा जोड़ि लिअ आ खेतकेँ जोड़ि एक रंग बाँटि दियौ।"

शशिक विचार सुनि हीरानन्द नाक मारैत बजला- "उँ-हूँउ।"

मुँहपर हाथ नेने सुबुध मने-मन सोचैत रहैथ, कियो एहनो अछि जेकरा घराड़ियो ने छै आ कियो एहनो अछि जेकरा घराड़ीक संग दू कट्ठा धनखेतियो छइ। तहिना केकरो पाँचो कट्ठा छइ। जँ जमा सम्पैतमे एक्के रंग देल जाए तँ सभकेँ एक रंग केना हेतइ।

..ऐ ओझरीमे सुबुध पड़ल छला!

हीरानन्द सोचैत रहैथ, गरीबो तँ सभ एक रंग नइ अछि। कियो मेहनती अछि तँ कियो नमरी कोइढ़। कियो निशाँखोर अछि तँ कियो सात्विक। गरीबोक स्थिति तँ विचित्र अछि। लेकिन मूल प्रश्न अछि समाजकेँ ऊपर उठबैक। सभकेँ गुम्म देखि रमाकान्त मुँहमे पान लऽ जरदा फँकैत बजला- “एना सभ गुम्म किए छी? हम समाजक दाउ-पेंच तँ नइ बुझै छिऐ मुदा अहाँ सभ तँ पढ़ल-लिखल होशगर छी। तखन कियो किछु किए ने बजै छी?”

अपन बुधिक कमजोरी व्यक्त करैत हीरानन्द सुबुधकेँ कहलखिन-

“भाय, जे सोचै छी ओ ओझरा जाइए तँए अहीं सोझरबैत किछु कहियौ।”

गम्भीर भऽ सुबुध कहए लगलखिन- “अपन समाज बहुत पछुआएल अछि। पछुआएल समाजमे घनेरो समस्या, समाढ़ जकाँ पकड़ने रहैए। जे बिना समाधान केने आगू नै ससरए देत। मुदा समाधानो तँ कागतपर नक्शा बनौने नइ हएत। समस्या लोकक जिनगीकेँ चुरीन जकाँ पकड़ने अछि। जहिना चुरीन लोकेक देहमे घोंसिया अपन करामात करैए तहिना समस्यो अछि। तँए अखन मात्र दूटा सवालकेँ पकड़ू। पहिल, सभकेँ एक रंग खेत होइ आ दोसर, खेतक संग-संग आरो जे पूजी अछि ओकरो उपयोग ढंगसँ हुअए।”

सुबुध बजिते रहैथ कि बिच्चेमे जुगेसर टपैक गेल- “मास्सैब, कनी बिकछा कऽ कहियौ। एना जे पौतीमे राखल जिनिस जकाँ झाँपि कऽ कहबै तखन हम सभ केना बुझब?”

जुगेसरक बातसँ सुबुधकेँ तकलीफ नहि भेलैन। मुस्कियाइत बजला-

“ठीके अहाँ नइ बुझने हएब जुगे। नीक जकाँ बिकछा कऽ कहै छी।

देखियौ, सिरिफ खेते रहने उपजा नइ भऽ जाइ छइ। ओकरा उपजबए पड़ै छइ। पहिने तामि-कोरि कऽ तैयार करए पड़ै छइ। बर्खा होइ वा पटा कऽ बीआ पाड़ए पड़ै छइ। बीआ जखन रोपाउ होइ छै तखन उखाड़ि कऽ रोपल जाइ छै, कमठौन कएल जाइ छै इत्यादि। से सभ करत तखन ने उपजा हएत। खेतक संग-संग मेहनत जे होएत सेहो ने पूजी भेल। मेहनत करैले ओजारोक जरूरत होइए। ओजारोक नमहर इतिहास रहल अछि। शुरूमे लोक साधारण औजारसँ काज करै छल। जेना-जेना औजारो उन्नैत करैत गेल तेना-तेना लोकक हालतो सुधरैत गेल। अखन अपन गाम बहुत पछुआएल अछि, तँए नव औजारसँ काज करब सम्भव नहि। नव औजार-ले अधिक पैसोक जरूरत होइत, जे नइ अछि। अखन साधारणे औजारसँ काज चलबए पड़त। जेना-जेना हालत सुधरैत जाएत तेना-तेना औजारो सुधरैत जाएत।"

सुबुधक बात सुनि जुगेसर भक-दे निशाँस छोड़ि बाजल- "हँ, आब बुझलौं। सुआइत लोक कहै छै जे पढ़ि-लिख कऽ जँ हरो जोतब तँ सिरौर सोझ हएत..!"

हीरानन्द बजला- "बड़ सुन्दर बात कहलिऐ सुबुध भाय। आब खेतक बँटबाराक सम्बन्धमे कहियौ।"

कनडेरिए आँखिए हीरानन्दक चेहरा दिस ताकि सुबुध बजला-

"हीरा बाबू, गाममे जेते एक बीघा खेतसँ निच्चाँबला गरीब लोक छैथ हुनका सभकेँ एक-एक बीघा खेत भऽ जेतैन। सिरिफ रमाकान्ते काकाबला जमीन नहि, हुनकर अपनो जमीन ओइमे जोड़ा जेतैन। जेना देखियौ, किनको घराड़ियो नै छैन, हुनका बीघा भरि खेत दिअ पड़त। मुदा जिनका पाँच कट्ठा छैन हुनका पनरहे कट्ठा दिअ पड़त। तेतबे नहि, जिनका ओहूसँ बेसी छैन, हुनका आरो कम दिअ पड़त।"

सुबुधक बात सुनि रमाकान्त ठहाका मारि बजला- "बड़ सुन्नर, बड़ सुन्नर। बड़ सुन्नर विचार सुबुधक छैन। आब रातियो बेसी भऽ गेल। खाइयो-पीबैक बेर उनैह जाएत। रोटी गरमे-गरम खाइमे नीक होइ छइ, तँए आब गप-सप्प छोड़ू। काल्हि भोरे ढोलहो दिआ सभकेँ बजा लेबैन आ सबहक बीचमे

अपन निर्णए सुना खेत बँटैक भार सेहो हुनके सभपर छोड़ि देबैन। नहि तँ अनेरे हो-हल्ला करता।”

भोरे ढोलहो पड़ल। एक तँ ओहिना सबहक कान ठाढ़ रहबे करैन, तैपर ढोलहो सुनि घरा-घरी सभ पहुँचला। जहिना केस लड़निहार फैसला सुनैले उत्सुक रहैए तहिना बैसारमे सभ उत्सुक छला। अस्सी बर्खक सोनेलाल बाबा सेहो आएल छैथ। ओना, सोनेलाल बाबाकेँ अपने अढ़ाइ बीघा खेत छैन मुदा गाममे नव उत्सवक उत्साहसँ आएल छैथ। बैसले-बैसल ओ मुड़ी उठा कऽ देखि बजला- “कोनो टोलक कियो छुटलो छैथ? सभ अपन-अपन टोलक लोककेँ गनि लिअ।”

सोनेलाल बाबाक गप सुनि सभ अपन-अपन टोलक लोककेँ घरा-घरी मिलबए लगल। सिरिफ बौका आ गोसैमा बैसारमे नै आएल छला। दुनू टोलक दू आदमीकेँ पठा ओहू दुनूकेँ बजौल गेलैन। दुनू आदमीकेँ देखिते सोनेलाल बाबा पुछि देलखिन- “तोरा दुनू गोरेकेँ ढोल्होक आवाज कानमे नै पहुँचल छेलौ?”

बौका बाजल-

“ढोलहो तँ बुझलिऐ। मगर नोकरी करै छी ने, ने माए-बाप अछि आ ने बौह, तखन खेत लऽ कऽ की करब। बिआहो होइते ने अछि। लोक ढहलेल बुझैए, तखन अनेरे किए अबितौं?”

बौकाक बात सुनि सोनेलाल बाबा मुड़ी डोला स्वीकार केलैन। आब दोसर, गोसैमा बाजल-

“हम दुनू परानी तँ बुढ़े भेलौं, बेटा ऐछे नहि। लऽ दऽ कऽ एकटा ढेरबा बेटी अछि। ओकरो बिआह ऐ बेर कइए देबइ। बिआह हेतै, अपन घर जाएत। भोगनिहार के रहत जे अनेरे हम खेत लेब?”

गोसैमोक विचार सुनि सोनेलाल बाबा मुड़ी डोला स्वीकार केलैन। दुनू गोरेक बात सुनि सोनेलाल बाबाक मनमे एलैन जे समाजमे टूटा परिवार कमि जाएत। दुनू परिवारकेँ बँचौल तँ नै जा सकैए मुदा जँ दुनूकेँ जोड़ि कऽ एकटा परिवार बनाबी ओ तँ सम्भव अछिए। बजला- “बौका तँ सिरिफ नामक अछि।

केहेन बढ़ियाँ बजैए। गोसैमाक बेटी आन गाम चलि जेतइ। जइसँ बाप-माए– दुनू गोरे–कैं बुढ़ाड़ीमे दुख हेतइ। तँए बौकाक बिआह गोसैमाक बेटीसँ करा देने एक परिवार भऽ जाएत।"

सोनेलाल बाबाक विचार सुनि अदहासँ बेसी लोक समर्थन कऽ देलक। मुदा किछु गोरे विरोध करैत बजला-

"एक गाममे लड़का-लड़कीक बिआहक चलैन तँ नइ अछि। जँ हएत तँ अनुचित हएत!"

धड़फड़ा कऽ उठैत लखना जोरसँ बाजल- "कोन गाम आ कोन समाज एहेन अछि जइमे छौरा-छौरी छह-पाँच नै करैए। चोरा कऽ छह-पाँच केलासँ बड़ बढ़ियाँ मुदा देखा कऽ करत से बड़ अधला हेतइ?"

लखनाक विचारक सभ सहमति दऽ देलैन। दुनूक बिआहक बात पक्का भऽ गेल।

सुबुधक मनमे फेर एकटा प्रश्न उठि गेलैन जे बौका आ गोसैमाक दुनू परिवारकेँ एक मानि जमीन देल जाए वा दू माइन? ..तर्क-वितर्क करैत, मिला कऽ एक परिवार मानि हिस्सा दैक सहमति बनल।

फेर प्रश्न उठल जे जमीनक नाप-जोख के करत? रमाकान्त कहि देलखिन जे अपनेमे अहाँ सभ बाँटि लिअ।"

सुबुधोक मनमे भेलैन जे रमाकान्त काका ठीके कहलैन। काजकेँ बाँटि कऽ नै करब तँ गलती हएत। सभ काज जँ अपने करए चाहब तँ एते गोरे जे समाजमे छैथ ओ सभ की करता। जँ कहीं कोनो गलतियो हएत तँ जल्दीए सुधैर जाएत। बजला- "खेत नपैक लूरि केते गोरेकेँ छह। किएक तँ जँ अमीन लऽ कऽ बँटबारा करब तँ बहुत खरच हएत। जे खरच बँटैमे करब ओइ पैसासँ दोसरे काज किए नै कऽ लेब। पैसाक काज तँ बहुत अछि, तँए अन्ट सन्ट खरच नै कऽ सुपत-सुपत खरच करब नीक होएत। देखिते छिऐ जे जहिना देशक संविधान ओकीलकेँ सालो भरि हरिअरी देने रहैए तहिना तँ सर्वेओ अमीनकेँ अछि। कौआसँ खैर लूटाएब नीक नहि। जहिना अहाँ सभकेँ मंगनीमे खेत भेट रहल अछि तहिना सही-सलामत हाथमे चलि जाए। जँ अमीन सबहक भाँजमे पड़ब

तँ ओहिना हएत जहिना लोक कहै छै 'जेतेमे बौह नै तेतेमे लहठी..!"

सुबुधक बात सुनि, जोशमे बिलटा उठि कऽ ठाढ़ भऽ बाजल-

"माघसँ लऽ कऽ जेठ धरि हम सभ खेत तमिया करै छी। से कोनो एक्के साल नहि, सभ साल। सेहो कोनो आइए-सँ नहि जहियासँ ज्ञान-परान भेल तहिए-सँ। कोन अमीन आ कमिश्नर नपैले अबैए। अपन गामक कोन बात जे चरिकोसीमे तमनी करै छी। तेतबे नहि, नेपालो जा-जा तमै छी। तेतबे नहि, साले-साल नपैत-नपैत तँ सौंसे गामक खेत जनै छी जे कोन कोला केतेक अछि। नपैक जरूरतो नइ अछि। मुँहजुआनीए कहि देब जे कोन कोला केते अछि। खाली एक गोरे कागतपर लिखि लिअ जे केकरा केते खेत देबइ। हमरा कहैत जाएब, हम कोला फुटबैत जाएब। एकटा पण्डीजी बड़ बढ़ियाँ नाओं कहने रहथिन मुदा मन नइ अछि, जे ओ तीनियेँ डेगमे दुनियाकेँ नापि नेने रहैथ। तहिना हमहूँ तीन डेगक लग्गी बना, एक गामक कोन बात जे परोपट्टाक जमीन नापि देब।"

बिलटाक बात सुनि रमाकान्त बजला- "बड़ बढ़ियाँ, बड़ बढ़ियाँ।"

सभ कियो उठि-उठि विदा भेला।

बेर झूकिते सौंसे गामक स्त्रीगण, ढेरबा बचिया, छोटका-छोटका ढेन-बकेन चिकनी माटिक खोभार दिस विदा भेल। सबहक हाथमे खुरपी-पथिया..!

सभकेँ हाथमे खुरपी पथिया नेने जाइत देखि श्रीचन मने-मन सोचए लगल जे एना किए लोक कऽ रहल अछि, दसमियो तँ अखन नै एलै हेन! कोनो पावैनो-तिहार नहियेँ छिऐ! तहन स्त्रीगणमे एना उजैहिया किए उठि गेल? कोन बुढ़िया-जादू तरे-तर गाममे पसैर गेल जे मरद बुझबे ने केलक आ मौगी सभ बुझि गेल? अनकर कोन अपनो घरवाली रमकल जाइए..!

जेते श्रीचन सोचैत ओते ओझरीए लगल जाइत। तत्-मत् करैत रूदल ऐठाम विदा भेल। घरो लगेमे। श्रीचने जकाँ रूदलो छगुन्तामे पड़ल रहए मुदा श्रीचनकेँ देखिते पुछि देलकै-

"आँइ हौ श्रीचन भाय, मौगी सभकेँ कथीक रमकी चढ़लै जे एते रौदमे माटि आनैले जाइ जाइए?"

रूदलक बात सुनि श्रीचन आरो छगुन्तामे पड़ि गेल। मनमे एलै जे हम गामपर नै छेलौं तँए नइ बुझलिऐ। मगर ई तँ गामेपर रहए। किए ने बुझलक ? फेर सोचलक जे जखन घरवाली माटि लऽ कऽ औत तँ पुछि लेबइ। मन असथिर भेलइ। मुदा रूदलक मुँहक रंगसँ बुझि पड़ै जे केते भारी काज स्त्री बिना पुछिनहि कऽ लेलकै..!

भीतरसँ खुश मुदा ऊपरसँ गम्भीर होइत श्रीचन रूदलकेँ कहलक-

“आँइ हौ रूदल भाय, तोरा भनसियासँ मिलान नै रहै छह जे बिन पुछनहि चलि गेलखुन?”

श्रीचनक मनक बात नइ बुझि खिसिया कऽ रूदल बाजल-

“की कहियह भाय, मौगीपर बिसबास नइ करी। जखन अपन काज रहतै तँ हँसि-हँसि बजतह मुदा जखन तोरा कोनो काज हेतह तँ कहतह जे माथ दुखाइए!”

मुँह दाबि श्रीचन मने-मन खूब हँसैत मुदा रूदल तामसे भेर भेल जाइत।

विदा होइत श्रीचन बाजल-

“जाइ छिअ भाय। मौगी सबहक किरदानी देखि हमरा किछु फुरबे ने करैए।”

सह पाबि रूदल गरैज उठल-

“बड़ बुधियार मौगी सभ भऽ गेल। जब एतेक बुधियार अछि तँ चलए तँ हमरा संगे कोदारि पाड़ैले, तखन बुझबै!”

थोड़े दूर आगू बढ़ि श्रीचन रूकि कऽ बाजल -

“भाय की करबहक, आब मौगीए सबहक राज भेलइ।”

“हमरा कोन राज-पाटसँ मतलब अछि, हर जोतै छी, कोदारि पाड़ै छी, तीन सेर कमा कऽ अनै छी, खाइ छी। एते दिन पुरुखे चोर होइ छेलए, मुदा आब मौगियो चोरनी हएत। भने जहल जाएत आ पुलिसबासँ यारी लगौत!”

श्रीचन बढ़ि गेल मुदा रूदल अपन दुनू हाथ माथपर लेने सोचिते रहल।

सभ कियो माटि आनि-आनि अपन-अपन अँगनाक माटिक ढेरीपर रखलैन। घामे-पसीने सभ जनानी तर-बत्तर। कनी काल सुसतेला पछाइत दिआरी बनबैले मुंगरी, लोढ़ीसँ माटि फोड़ए लगल। मेहीसँ माटि फोड़ि, इनार-कलसँ अछींजल भरि-भरि आनि माटिमे दऽ सानए लगल, सुखल माटिमे पानि पड़िते सोन्हगर सुगन्ध सौंसे गाममे पसैर गेल। गामक हवे बदैल गेल। जहिना साँझू पहरमे सिंगहार-रातिरानी फूलसँ वातावरण महमहा उठैत तहिना माटि-पानिसँ जन्मल सुगन्ध गामकेँ महमहा देलक।

माटि सानि, छोट-छोट दिआरी सभ बनबए लगल। दिआरी बना, पुरान साफ सूती वस्त्रकेँ फाड़ि-फाड़ि दहिना हाथक तरहत्थीसँ जाँघपर रगैड़-रगैड़ टेमी बनौलक। टेमी बना दिआरीमे करुतेल दऽ टेमी सजौलक। दिआरी सजा कियो फुलडालीमे तँ कियो चङेरीमे, तँ कियो छिपलीमे, तँ कियो केरा पातपर रखलक। दिआरी रखि सभ नहाएल, अजीव दृश्य! नव उत्सव! नव जिज्ञासा! नव आशा सबहक मनमे।

सुरुज डुमबो नै कएल मुदा निच्चाँ जरूर उतैर गेल छल, गाछो सभ परहक रौद बिला गेल छल, सभ अपन-अपन गोसाँइ घर जा सिरा आगूमे दिआरी नेसलक, दिआरी नेस एकटँगा दऽ आराधना करए लगल जे आएल लक्ष्मी पुनः पड़ाए नहि। गोसाँइकेँ गोड़ लागि सभ गामक देव स्थान दिस विदा भेल।

अपन-अपन आँगनमे तँ सभ असगरे-असगर छल मुदा आँगनसँ निकैलते, माने देवस्थान दिस विदा होइते, संगबे सभ भेटए लगलै। संगबे मिलते सभ कियो जइ स्थान दिस जाइत रहए ओइ देवताक गीत गाबए लगल। सौंसे गामक सभ रस्तामे एक नहि अनेक समूह गीत गबैत मगनसँ देवस्थान पहुँचै गेल। सबहक मनमे जमीनक खुशी तँए सभ देवतोकेँ मुस्कियाइत देखैत। सबहक मनमे नचैत जे एकसँ एक्कैस हुअए...।

खेत पाबि गामक सभ गरीब-गुरबाक मनमे दिआरीक इजोत जकाँ आशाक दीप बरए लगलैन। हजारो बर्खसँ पछुआएल गरीबीमे एकाएक आड़ि पड़ि गेल। सभ कियो नव-नव योजना मनमे बनबए लगला। जइसँ जिनगी

दुखक बेड़ीकेँ टपि सुखक सीमामे पएर रखलक। नव जिनगी जीबैक उत्कंठा सबहक मनमे जागि गेल। ❑

शब्द संख्या : 2478

एगारह

खेत भेटलासँ भजुआ-परिवारक सभ समांगक विचारो बदलल। नबो बापूत बैस विचार करैत रहए जे जहिना रमाकान्त काका हमरा सभकेँ रखि लेलैन तहिना हमहूँ सभ समाजक एक अंग बनि कऽ रहब। सभसँ पहिने रमाकान्त काका, सुबुध, शशि शेखर आ मास्टर साहैबकेँ अपना ऐठाम भोजन करेबैन। मुदा अखन धरिक जे हमरा सबहक चालि-ढालि रहल अछि, ओकरा तँ अपने बदलए पड़त। अँगना-घर आ दुआर-दरबज्जाक जे छिछा-बिछा अछि से नीक लोकक बैसै-जोकर नइ अछि। सभ दिन अपना सभ एहनेमे रहलौं तँए रहै छी मुदा नीक लोक एहेन जगहमे केना औता। देखिये कऽ मन भटैक जेतैन, तँए पहिने सभ समांग भोरेसँ दुआर-दरबज्जा आ अँगना-घरकेँ चिक्कन-चुनमुन बनाबह। मरदो आ मौगियो जे भदौस जकाँ नुआ-बस्तर बनौने रहै छी, ओकरो बदलह। जखन अपन काज करै छी तखन जँ फटलो-पुरान आ मैलो-कुचैल कपड़ा पहिरै छी तँ बड़ बढ़ियाँ। मुदा जखन किनको नौत दऽ कऽ खाएले बजेबैन तखन एहेन बगए-बानिसँ काज नइ चलत।

भजुआक जेठ बेटाक सासुर दरभंगा बेला मोड़पर अछि। जखन ओ सासुर जाइत आ ओइठामक रहल-सहन, बात-विचार देखैत तँ मन जरूर आगू-मुहेँ बढ़ैक कोशिश करै मुदा गामक जे गरीबीक अवस्था छै ओ सभ विचारकेँ दाबि दइ छेलइ। मुदा तैयो दरभंगाक देखल परिवार नजैरमे तँ रहबे करइ। भजुआक जेठ बेटा–झोलिया, सातो भाँइक भैयारीमे सभसँ जेठ अछि। तँए सभ भाँइ झोलियाक बात मानैए। झोलिया बाजल-

"सातो भाँइक बीच रमाकान्त बाबा सात बीघा जमीन देलखुन। पाइ तँ एक्कोटा ने लेलखुन। दुनियाँमे केकरा के एना दइ छइ। जँए हुनका मनमे हमरो सबहक प्रति दया एलैन तँए ने। तहिना हमहूँ सभ हुनका ओते पैघ बुझि आदर करबैन। गामेमे भाड़ापर कुरसी, समेना, शतरंजी, जाजीम, सिरमा सभ भेटैए। जहिना बरियाती-ले लोक भोजनसँ लऽ कऽ रहै तकक, सभ बेवस्था करैए तहिना हमहूँ सभ करब।"

झोलियाक विचार सुनि छबो भैंयो आ बापो-पित्ती, सभ कियो मुड़ी डोला समर्थन कऽ देलक। झोलिया फेर बाजल-

"बाउ, तूँ रमाकान्त बाबा ऐठाम चलि जैहह। हुनका चारू गोरेकेँ नतो दऽ दिहौन आ संगे-संग बजेनौं अबिहौन। दू भाँइ भाड़ापर सभ समान आनि जोगार करिहह। दू समांग बजारसँ खाइक सभ समान कीनि अनिहह। सभ सभ काजमे भोरेसँ लगि जैहह।"

दलानपर बैस रमाकान्त आ हीरानन्द चाहो पीबैत रहैथ आ गामेक गपो-सप्प करैत रहैथ। गामक गप-सप्प करैत रमाकान्तक नजैर बौएलाल आ सुमित्रापर गेलैन। गिलास रखि रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"महेन्द्र बौआ कहने रहैथ जे छअ मास सिखा-पढ़ा दुनू गोरेकेँ पठा देब मुदा अखन धरि किएक ने आएल..?"

हीरानन्द बजला-

"कोनो कारण भेल हेतै तँए ने अखन धरि नै आएल। ओना, चिकित्सा कठिन विद्या छी। सुढ़िआइमे तँ किछु समय लगबे करतै।"

दुनू गोरे गप-सप्प करिते रहैथ आकि भजुआ आबि रमाकान्तकेँ गोड़ लगलकैन, रमाकान्तकेँ गोड़ लागि हीरानन्दोकेँ लगलकैन। हीरानन्दकेँ गोड़ लगिते ओ असिरवाद दैत पुछलखिन-

"भजू भाय, नीके रहै छह किने?"

"हँ मास्टर बौआ! हमरा तँ गामसँ भागैक नौबत आबि गेल छेलए!"

रमाकान्त दिस देखि-

“मुदा, काका नै भागए देलैन।”

हलचलाइत रमाकान्त पुछलखिन- “से की, से की?”

गाममे बसैक खिस्सा भजुआ कहए लगलैन-

“ऐ गाममे पहिने हम्मर जाति नै रहए। मुदा डोमक काज तँ सभ गाममे जन्मसँ मरन धरि रहै छइ। हमरा पुरखाक घर गोनबा रहइ। पूभरसँ कोसी अबैत-अबैत गोनबो लग चलि आएल। अखार चढ़िते कोसी फुलेलै। पहिलुके उझूममे तेहेन बाढ़ि चलि आएल जे बाधक कोन गप जे घरो सभमे पानि ढुकि गेल। तीन दिन तक ने माल-जाल घरसँ बहराएल आ ने लोके। पीह-पाह करैत सभ समय बितौलक। मगर पहिलुका बाढ़ि रहै, तेसरे दिन सटैक गेल। हम्मर बाबा दुइए परानी। ताबे हम्मर बाउ नै जन्मल रहइ। बाढ़िक पानि सटैकते दुनू गोरे दसोटा सुगर आ घरक समान लऽ गामसँ विदा भऽ गेल। जखन गामसँ विदा भेल तँ दादी बाबाकेँ कहलकै, अनतए केतए जाएब। हमरो माए-बाप जीबते अछि, ओतै चलू। बबो मानि गेल। दुनू परानी अही गाम देने जाइत रहइ। गाममे अबिते सुगरकेँ चरैले छोड़ि देलकै आ अपने दुनू परानी सुसतए लगल। ऐ गाममे डोम नै तँए गामक बेदरा-बुदरी सभ सुगर देखैले जमा भऽ गेल। गामोमे हल्ला भऽ गेलइ। गामक बाबू-भैया सभ आबि हमरा बाबाकेँ कहलकै जे अही गाममे रहि जा। हमर बाबा रहि गेल। गामक कातमे एकटा परती रहइ। ओही परतीपर सभ बाबू-भैया एकटा घर बना देलकै। ओइ दिनमे परती नमहर रहइ। मगर चारू भाग जोता खेत रहइ। चारू भागक खेतबला सभ परतीकेँ छाँटि-छाँटि खेतमे पियाबैत गेल। परती छोट होइत गेलइ। रहैत-रहैत घर-अँगना आ खोबहारे भरि रहलै। मगर तैयो दिक्कत नै होइ। हमर बाउओ भैयारीमे असगरे। मुदा हम दू भाँइ भेलौं। जखन दुनू भाँइ भीन भेलौं तँ घराड़ियो बँटा गेल आ गिरहतो। मुदा तैयो गुजरमे दिक्कत नै हुअए। अखन दुनू भाँइक बीच सातटा बेटा अछि। चारिटा हमरा आ तीनटा भाएकेँ। गुजर तँ कमा कऽ सभ कऽ लइए मुदा घरक दुख तँ सभकेँ होइते छइ।”

भजुआक खिस्सा सुनि रमाकान्त बजला-

“आब तँ बहुत खेत भेलह?”

"हँ काका, केते पीढ़ी आनन्दसँ रहब! अखन घर तँ नहि बन्हलौं मुदा खेती केनाइ शुरू कऽ देलिऐ।"

बिच्चेमे हीरानन्द पुछलखिन-

"सबेरे-सबेरे केमहर चललह, भज्जु भाय?"

भजुआ-

"रातिमे सभ समांग विचारलक जे जहिना रमाकान्त काका सभकेँ समाजक अंग बना खेत देलैन तहिना हमहूँ सभ हुनका नौत दऽ कऽ खुऐबो करबैन आ धोती पहिरा विदाइयो करबैन। सहए नौत दइले एलौं हेन ?"

नौतक नाओं सुनिते रमाकान्त कहलखिन -

"कहियाक नौत दइ छह? ईहो तीनू गोरे -सुबुध, शशि आ हीरानन्द- जेथुन। हिनको सभकेँ कहि दहुन।"

"हँ काका, अहींटा कँ थोड़े लऽ जाएब। हिनको सभकेँ लऽ जेबैन। ऐठाम तँ अहीं दू गोरे छी। शशि भाय आ सुबुध भाय नै छैथ। ताबे अहाँ दुनू गोरे नहाउ-सोनाउ, हम ओहू दुनू गोरेकेँ बजौने अबै छिऐन।"

हीरानन्द-

"औझुके नौत दइ छह?"

"हँ, मास्टर साहैब!"

रमाकान्त बजला-

"बड़ बढ़ियाँ! शशि तँ पोखैर दिस गेलखुन, अबिते हेथुन। ताबे सुबुधकेँ कहि अबहुन।"

भजुआ सुबुध ऐठाम विदा भेल। चाह पीब सुबुध दुनू बच्चाकेँ पढ़बै छला। भजुआकेँ देखिते पुछि देलखिन-

"भज्जु भाय, केमहर-केमहर?"

प्रणाम करैत भजुआ कहलकैन-

"भाय, अहीं ऐठाम ऐलौं हेन। रमाकान्तो काकाकेँ कहि देलिऐन आ अहूँकेँ कहैले एलौं हेन।"

"की कहैले एलह?"

"नौत दइले एलौं।"

"कोन काज छिअ?"

"काज-ताज नइ कोनो छी। ओहिना अहाँ चारू गोरेकेँ खुअबैक विचार भेल।"

भजुआक बात सुनि सुबुधक मनमे द्वन्द्व उत्पन भऽ गेलैन। मनमे प्रश्न उठलैन, भजुओ तँ अही समाजक अंग छी। जहिना शरीरमे नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला अंग अछि, जइसँ शरीरक क्रिया चलैए तहिना तँ समाजोमे अछि। मुदा शरीर आ समाजकेँ तँ एक नै मानल जाएत। समाजकेँ जाति आ सम्प्रदाय ऐ रूपे पकैड़ नेने अछि जे सभ सभसँ ऊपरो अछि आ निच्चो अछि। एक दिस धर्मक नाओंपर सभ हिन्दू छी मुदा रंग-बिरंगक जाति भीतरमे अछि! एक जाति दोसर जातिक ने छूअल खाइए आ ने कथा-कुटमैती करैए! तेतबे नहि, हिन्दूक जे देवी-देवता छैथ ओहो बँटाएल छैथ! जइ देवी-देवताकेँ एक जाति मानैए! दोसर नै मानैए। जँ मानितो अछि तँ ने हुनकर पूजा करैए आ ने परसाद खाइए! भरिसक हृदयसँ प्रणामो नहियेँ करैए। देवतोकेँ मने-मन अछोप, शूद्र इत्यादि बुझै छैथ! जँ ई प्रश्न हल्लुक-फल्लुक रहैत तँ कोनो बात नहि, मुदा अछि तँ प्रश्न जड़ियाएल! एहेन ने हुअए जे नान्हिटा प्रश्नक चलैत समाजमे विस्फोट भऽ जाए। समाजक लोक ऐ दुनू प्रश्नक बीच तेना ने बन्हाएल अछि, जे जिनगीक सभसँ पैघ वस्तु एकरे बुझै छैथ। जहन कि, छी नहि। मुस्कियाइत सुबुध भजुआकेँ कहलखिन-

"ताबे तूँ रमाकान्त काका ऐठाम बढ़ह, हम नहेने अबै छी।"

भजुआ विदा भेल। मुदा सुबुध मने-मन सोचिते रहला जे की कएल जाए। तर्क-वितर्क करैत सुबुधक मन धीरे-धीरे सक्कत हुअ लगलैन। अन्तमे ऐ निष्कर्षपर पहुँच गेला जे जाधैर ऐ सभ छोट-छीन बातकेँ कड़ाइसँ पालन नै कएल जाएत ताधैर समाज आगू-मुहेँ नै ससरत। समाजकेँ पछुआइक ईहो मुख्य करण छी! तँए एकरा जेते जल्दी हुअए तोड़ि देनाइ उचित हएत। ई बात मनमे अबिते सुबुध नहाइले गेला। नहा कऽ कपड़ा पहिर रमाकान्त ऐठाम विदा भेला।

जाबे सुबुध रमाकान्त ऐठाम पहुँचैथ ताबे रमाकान्त शशि शेखर आ हीरानन्द नहा कऽ कपड़ा पहिर तैयार रहैथ। सुबुधकेँ पहुँचते हीरानन्द बजला-

"सुबुधो भाय आबिए गेला। आब अनेरे बिलम करब उचित नहि।"

सुबुध बैसबो नै केलाह। सभ कियो विदा भऽ गेला। आगू-आगू रमाकान्त पाछू-पाछू सभ। थोड़े दूर आगू बढ़लापर हीरानन्द भज्जुकेँ पुछलखिन-

"कथी सबहक खेती केलह हेन भज्जु?"

मजबूरीक स्वरमे भज्जु कहए लगलैन-

"भाय, अपना बरद नइ अछि। कोदाइरो ने छेलए मुदा छौड़ा सभ जोर केलक आ दस गो कोदारि कीनि अनलक। सभ बापूत भोरे सुति कऽ उठै छेलौं आ खेत तामए चलि जाइ छेलौं। पनरह दिनमे सभ खेत तामि लेलौं। बड़ बढ़ियाँ जजाति सभ अछि। ऐ बेर हएत तँ बरदो कीनि लेब।"

"जखन खेत भेलह तँ बरद किए ने कीनि लेलह?"

"एक्केटा दिक्कत नै ने अछि। बरद कीनितौं तँ बान्हितौं केतए? खाइले की दैतिऐ? जँ सभ काज–बरद कीनिनाइ, घर बनौनाइ, खाइक जोगार केनाइ–एक्के बेर शुरू करितौं तँ ओते काज पार केना लगैत? तँए एका-एकी सभ काज करब!"

"बड़ सुन्दर विचार केलह!"

गप-सप्प करैत सभ कियो भजुआ ऐठाम पहुँचला। घरक आगूमे दू कट्ठा जमीन। ओइमे समियाना टँगने। एक भाग कुरसी लगौने। दोसर भाग शतरंजी, जाजीम, तकिया लगौने। मरदसँ मौगी धरि, भजुआक सभ समांग नहा कऽ नवका वस्त्र पहिरने। जहिना केतौ बरियातीक बेवस्था होइ छइ। तहिना बेवस्था केने।

बेवस्था देखि चारू गोरे रमाकान्त क्षुब्ध भऽ गेला। किनको बुझिए ने पड़ैन जे डोमक घर छिऐ। चारू गोरे चारू कुरसीपर बैसला। कुरसीपर बैसते भजुआक एकटा बेटा शरबत अनलक। सभसँ पहिने रमाकान्त दू गिलास शरबत पीब ढकार करैत बजला-

"आब पान खुआबह।"

शरबत बँटाइते छल कि बिच्चेमे भजुआक पोती चाह नेने आबि गेली। हाँइ-हाँइ कऽ शशि शेखर शरबत पीलैन। स्टीलबला कपमे चाह। शुद्ध दूधक बनल। ने अधिक मीठ आ ने फिक्का। चाहक रंगो तेहने। तैपर कॉफी चक-चक करैत। चाह पीबैत-पीबैत रमाकान्तक पेट अफैर गेल। भरियाएल पेट बुझि रमाकान्त बजला- "ई तीनू गोरे कुरसीपर बैसता, हम ओछाइनेपर पड़ब।"

कहि उठि कऽ ओछाइनपर जा रमाकान्त पड़ि रहला। पान आएल। सभ कियो पान खेलैन। मुँहमे पान सठबो नै कएल छेलैन आकि जलखै करैक आग्रह भजुआ केलकैन।

भजुआक आग्रह सुनि रमाकान्त कहलखिन- "हम ओछाइनेपर खाएब। हुनका सभकेँ टेबुलपर दहुन, मुदा कनी कालक बाद।"

भजुआक सभ समांग दासो-दास। जखनसँ चारू गोरे एला तखनसँ भजुआक परिवारमे नव उत्साहक लहैर उमरल। की मरद की स्त्रीगण सभ उत्साहित। ..जे स्त्रीगण सदिखन झगड़ेमे ओझराएल रहै छल, सबहक मुँहमे हँसी छिटकैत। मनुखे ऐ दुनियाँक सभसँ पैघ कर्ता-धर्ता छी किने। ई विचार सबहक मनमे नाचए लगलैन।

भजुआक पोती, जेकर मात्रिक दरभंगा छिऐ आ ओतै बेसी काल रहबो करैए, हाइ स्कूलमे पढ़बो करैए, ओकर संस्कार आ काज करैक ढंग देखि सुबुध आ हीरानन्द, दुनू गोरे आँखिए-क इशारामे गप करए लगला। आँखिए-क इशारामे सुबुध हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"जँ मनुखकेँ नीक वातावरण भेटै तँ ओ किछु कऽ सकैए, चाहे ओकर जन्म केहनो गिरल परिवारमे किएक ने भेल होइ।"

सुबुधक बात सुनि हीरानन्द कहलखिन-

"ई सभ ढोंग छी जे लोक कहैए जे पूर्व जन्मक कर्मक फल लोक ऐ जन्ममे पबैए। हँ, जँ एकरा ऐ रूपे मानल जाए जे ऐ जन्मक पूर्व पक्षपर पछातिक जिनगी निर्भर करैए तँ एक-तरहक विचार हएत। देखियौ जे यएह बचिया, भजुआक पोती कुशेसरी केते बेवहारिक अछि। अही परिवारमे तँ एकरो जन्म भेल छै मुदा अगुआएल इलाका आ अगुआएल परिवारमे रहने केते अगुआएल

अछि। की पैघ घरक बेटीसँ कम अछि?”

चूरा, दही, चिन्नी, केरा, अचार, डलना तरकारीक संग पाँचटा मिठाइ सेहो जलखैमे आएल। चारू गोरे भरि मन खेलैन। खेला पछाइत अस-बीस करए लगला। हाथ धोइ कऽ रमाकान्त बिछानेपर ओंघरा गेला। मुदा गप -सप्प करै दुआरे सुबुधो आ हीरानन्दो कुरसीएपर बैसल रहला। सभ समांग भज्जुओ जलखै कऽ सरियाती जकाँ बैसल। ..सुबुध पुछलखिन-

“जखन एते समांग छह तखन माल-जाल किए ने पोसने छह?”

नबो समांगमे झोलिया सभसँ होशगर। अपनो सभ समांग झोलियाकेँ गारजन बुझैत। सुबुधक सवालक उत्तर झोलिया दैत बाजल-

“मास्सैब, अखन धरि हमरा सबहक परिवारमे सुगर पोसल जाइत रहल अछि। मुदा सुगर सिरिफ खाइक जानवर छी। आन काज तँ ओकरासँ होइ नइ छइ। ने हर जोतल जाइ छै आ ने दूध होइ छइ। छोट जानवरक दुआरे गाड़ियो नहियेँ जोतल जेतइ। जेकरा नूनो-रोटी नै भेटै छै ओ मौसु केतए-सँ खाएत। तैयो हम सभ पोसै छी। अपन पोसल रहैए तँए पाबैन-तिहारमे कहियो काल खाइयो लइ छी। खेनिहारक कमी दुआरे नेपाल जा-जा बेचै छेलौं। नेपालमे अपना ऐठामसँ बेसी लोक खाइए। किएक तँ सुगरक मौसु खस्सी-बकरीसँ बेसी गरम होइ छइ। अपना ऐठामक मौसम सेहो गरम अछि। सुगर मुख्यतः ठंढ इलाकाक खेनाइ छी। मुदा तैयो सुग्गरे पोसै छेलौं, किएक तँ गाए-महींस जँ पोसबो करितौं तँ हमरा सबहक दूध के कीनैत?”

झोलियाक बात सुनि सुबुध पुछलखिन-

“सेहो तँ नै देखै छिअ?”

झोलिया-

“पहिने जेरक-जेर सुगर रहै छेलए। पोसैयोमे असान होइ छेलए। एक्के गोरेकेँ बरदेलासँ साए-पचास सुगर पला जाइ छल। भोरे किछु खा कऽ सुगरकेँ खोबहारीसँ निकालि चरबैले चलि जाइ छेलौं। घरपर खुअबै -पिअबैक कोनो जरूरते नहि। साल भरि पोसै छेलौं आ सालमे एक बेर नेपाल लऽ जा बेच लइ

छेलौं। पौंरुकाँ साल डेढ़ साए सुगर लऽ कऽ बाउओ आ कक्को नेपाल गेल। ओइठिन एकटा मंगलक हाट लगै छइ। जइ हाटमे सभसँ बेसी सुगर बीकै छइ। बड़का-बड़का पैकार सभ ओइ हाटमे रहैए। हाटक एक भागमे हमरो सुगर छल। एक भाग बाउ बैसल आ दोसर भाग काका। एकटा पैकार पान-सात गोरेक संग आएल। दाम-दीगर हुअ लगलै। दाम पटि गेलइ। सभ सुगरक गिनती करि कऽ, एकटा पैकार रहल आ बाँकी गोरे सुगर हाँकि कऽ विदा भेल। ओ पैकार हमरा बाउओ आ कक्कोकेँ कहलक जे चलू पहिने किछु खा-पी लिअ। हमरो बड़ भूख लगल अछि। एकटा दोकानमे तीनू गोरे गेल। जलखै करए लगल। जलखैमे किछु मिला देने छेलइ। खाइते-खाइते दुनू गोरेकेँ निशाँ लगि गेलइ। लटुआ कऽ दुनू गोरे दोकानेमे खसि पड़ल। तैबीच की भेलै से बुझबे ने केलक। दोसर दिन नीन टुटलै तँ ने ओ पैकार आ ने दोकान। किएक तँ दोकान हाटे-हाटे लगैत रहइ। दुनू भाँइ कानैत-खिजैत विदा भेल। ने संगमे एकोटा पाइ आ ने खाइक कोनो वस्तु। भूखे लहालोठ होइत, कहुना-कहुना कऽ डगमारा आएल। डगमारा अबैत-अबैत दुनू भाँइ बेहोश भऽ गेल। डगमारामे हम्मर एकटा कुटुम अछि। दुनू भाँइक दशा देखि ओ कुटुम गुम्म भऽ गेला। किछु फुरबे नै करैन। बड़ी कालक पछाइत दुनू भाँइकेँ होश भेलइ। होश अबिते दुनू भाँइ पानि पीलक, जखन कनी मन नीक भेलै तँ नहाएल। नहा कऽ खेलक। खा कऽ सुतल। सुति कऽ उठला बाद आरो मन नीक भेलइ। दू दिन औतै रहल। तेसर दिन गाम आएल। ओइ दिनसँ सुगर उपैट गेल।"

सुबुध-

"अपना घरमे रूपैआ-पैसा नै छह?"

झोलिया-

"थोड़बे रूपैआ अछि जे बाबा बाउकेँ देने रहै आ कहने रहै जे जब हम मरब तँ ऐ रूपैआसँ भोज करिहेँ। रूपैआ गनल नइ अछि। बाँसक चोंगामे , सुगरक खोबहारीमे राखल अछि।"

हलचला कऽ रमाकान्त कहलखिन-

"नेने आबह तँ। देखिऐ केते रूपैआ छह?"

सातो चोंगा भजुआ सुगरक खोबहारीसँ नि कालि रमाकान्तक आगूमे रखि देलकैन। फोंकगरहा बाँसक पोरक चोंगा, एक भाग गिरहेसँ बन्न आ दोसर भागमे कसि कऽ लत्ता कोंचने। सातो चोंगाक लत्ता निकालि रमाकान्त आगूमे रूपैआ निकालि-निकालि रखलैन। एकटा रूपैआ उठा रमाकान्त निंगहारि कऽ देखलैन तँ चानीक रूपैआ रहए। रूपैआक ढेरीपर सभ अपन-अपन आँखि जे जेत्तै रहैथ से तेत्तैसँ गड़ौने। रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन-

"मास्सैब, ऐ रूपैआकेँ गनियौ तँ।"

कुरसीपर सँ उठि हीरानन्द रूपैआ लग आबि गनए लगला। सातो चोंगामे सात साए चानीक रूपैआ। सात साए चानीक टाका सुनि सुबुध मने-मन हिसाब जोड़ए लगला जे एक रूपैआक कीमत पचहत्तैर रूपैआ होइए। एक साएसँ पचहत्तैर साए भेल। सात साएसँ बाबन हजार पाँच साए हएत। अगर एक जोड़ बरद किनत तँ पाँच हजार लगतै। एकटा बोरिंग -दमकल लेत तँ पनरह हजारमे भऽ जेतइ। जँ तीन नम्बर ईंटा लऽ ओकरा गिलेबापर जोड़ि, ऊपरमे एसबेस्टस दऽ कऽ सात कोठरीक घर बनौत तँ पच्चीस-तीस हजारमे भऽ जेतइ। अपनो सभ समांग कमाइते अछि आ सात बीघा खेतोक उपजा हेतइ। साले भरिमे बढ़ियाँ किसान-परिवार बनि जाएत। जे अछैते पूजीए लल्ल अछि! सभ कथूक दिक्कत छै..!

विचित्र स्थिति सुबुधक मनमे उठि गेलैन। एक नजैरसँ देखैथ तँ खुशहाल परिवार बुझि पड़ैन आ दोसर दिस देखैथ तँ ने रहैले घर आ ने खाइ-पीबैक समुचित उपाय..!

मुदा एकटा गुण भजुआक परिवारमे सुबुध जरूर देखलैन, आन गामक डोम जकाँ ताड़ी-दारूक चलैन परिवारमे नइ छइ। सिरिफ बुझैक आ बुझबैक जरूरत परिवारमे छइ।

नमहर साँस छोड़ैत सुबुध भजुओ आ भजुआक सभ समांगोकेँ कहए लगलखिन-

"भजु भाय, हम सभ समाजकेँ हँसैत देखए चाहै छी, कनैत नहि। तँए केकरो अधला होइ से नै सोचै छी। सबहक नीक होइ, सबहक परिवार हँसी-

खुशीसँ चलैत रहइ। सबहक बेटा-बेटीकेँ पढ़ै-लिखै आ रहैक नीक घर होइ, दबाइ-दारू दुआरे कियो मरए नहि, तँए हम कहब जे ऐ रूपैआकेँ रस्तासँ खरच करू। ओना, बाबू श्राद्धक भोज-ले कहने छैथ, सेहो थोड़-थाड़ कऽ लेब, जँ एते दिन नै केलौं तँ किछु दिन आरो टारू। पहिने घर , बरद आ बोरिंगमे खरच करू तखन जे उपजा बाड़ी हएत तँ भोजो कए लेब।"

सुबुधक विचारक समर्थन करैत रमाकान्त कहलखिन-

"बड़ सुन्दर विचार सुबुध देलखुन भज्जु। जिनगीकेँ बुझह जे जिनगी केकरा कहै छै आ केना बनतै। से जाधैर नै सिखबह ताधैर अहिना वौआइत रहि जेबह।"

भजुआ तँ चुप्पे रहल मुदा झोलिया टपाक-दे बाजल- "बाबा जे कहलैन ओ गिरह बान्हि लेलौं। अहाँ सभ हमरो छोट भाए बुझू। जाबे हमर परिवार रहत आ हम सभ रहब, ताबे अहाँ सबहक संगे-संग चलैत रहब।"

झोलियाक विचार सुनि हीरानन्द खुशीसँ झूमि उठला। हँसैत बजला-

"भज्जु भाय, अहाँ तँ आब बुढ़ भेलौं तँए नवका काज दिस नजैर नहियोँ जाएत मुदा बेटा-भातीज सभ जुआन अछि, नव काज दिस बढ़ए दियौ। जाधैर लोक समैयक हिसाबसँ नव काज दिस नहि बढ़त ताधैर समैयक संग नै चलि पौत। नहि तँ बाढ़िक पानि जकाँ समय आगू बढ़ैत जाएत आ खढ़-पात जकाँ मनुख आरा लगल रहत। तँए समयकेँ पकैड़ कऽ चलैक कोशिश करू। आब अपनो सभ भाँइ मिला कऽ सात बीघा खेत भेल। सात बीघा खेतबला बढ़ियाँ गिरहस्त तखने बनि सकैए जखन कि खेती करैक सभ जोगार कऽ लिअए। पानिक बिना जजाति नै उपैज सकैए। तहिना बरदोक जरूरी अछि। खेतक महत तँ तखने हएत जखन कि ओकरा उपजबैक सभ जोगार कऽ लेब। बहुत रास रूपैआ अछि, ऐ रूपैआक उपयोग जिनगी-ले करू।"

गप-सप्प चलिते छल कि हहाएल-फुहाएल डॉक्टर महेन्द्र आ बौएलाल पहुँच गेला।

महंथ जकाँ रमाकान्त ओछाइनपर पँजरा तरमे सिरमा देने पड़ल छला। महेन्द्रकेँ देखिते सभ अचम्भित भऽ गेला। महेन्द्र आ बौएलाल सोझे रमाकान्त

लग पहुँच गोड़ लगलकैन। महेन्द्रकैं असिरवाद दैत रमाकान्त बजला-

“ऐठाम किएक एलह। कनीए कालक पछाइत तँ हमहूँ सभ ऐबे करितौं। गाड़ीक झमारल छह, पहिने नहैतह-खैतह अराम करितह। हम कि केतौ पड़ाएल जाइ छेलौं जे भेँट नै होइतियह”

महेन्द्र डॉक्टरक नजैरसँ चुपचाप पिताकेँ देखै छला। पिताकेँ देखि मने-मन अपशोच करए लगला जे गलत समाचार पहुँचल। मुदा किछु बजला नहि। तैबीच महेन्द्र आ बौएलाल दिस इशारा करैत भजुआ झोलियाकेँ कहलक-

“बौआ, पहिने दुनू गोरेकेँ खुआबह।”

महेन्द्रो आ बौएलालोकेँ खुअबैक ओरियान झोलिया करए लगल। ओरियान तँ रहबे करइ। लगले परैस दुनू गोरेकेँ खुऔलैन। दुनू गोरे खा कऽ घर दिस विदा भेला। पाछूसँ कुशेसरी महेन्द्रकेँ सोर पाड़ि कहलकैन-

“चाचाजी, पान-सुपारी लऽ लिअ।”

कुशेसरीक आग्रह सुनि दुनू गोरे रस्तेपर ठाढ़ भऽ गेला। झटैक कऽ कुशेसरी, तस्तरीमे पान-सुपारी नेने, लगमे पहुँचल। लगमे पहुँच अपना हाथे पान सुपारी नै दऽ तस्तरीए महेन्द्रक आगूमे बढ़ौलकैन। पान सुपारी देखि महेन्द्र बजला-

“बुच्ची, हम तँ पान नै खाइ छी। अगर घरमे इलायची आ सिगरेट हुअ तँ नेने आबह।”

कुशेसरी चोट्टे घुमि कऽ आँगन आएल। आँगन आबि सिगरेटक पौकेट, सलाइ आ इलायची नेने पहुँचल। उत्तर-मुहेँ घुमि महेन्द्र ओरिया कऽ सिगरेट लगौलैन जे कहीं पिताजी ने देखि लैथ। दुनू गोरे गप-सप्प करैत विदा भेला। कुशेसरीकेँ देखि महेन्द्र अचम्भित नै भेला। किएक तँ मिथिलाक गाम-ले कुशेसरी अचम्भित लड़की भऽ सकै छेली मुदा मद्रास-ले नहि। पछुआएल जातिमे कुशेसरी सन-सन ढेरो लड़की अछि।

महेन्द्रकेँ गामसँ एकटा गुमनाम पत्र गेल रहैन। ओइमे लिखल छेलै जे पिताजी बताह भऽ गेला! अन्ट-सन्ट काज गाममे कऽ रहल छैथ! तँए समय रहैत हुनका इलाज नइ करेबैन तँ निच्छछ पागल भऽ जेता..!

पत्र पढ़िते महेन्द्र घर अबैक विचार केलैन। भाए रविन्द्रसँ विचारि लेब जरूरी बुझि महेन्द्र एक दिन रूकि गेला। दोसर दिन महेन्द्रक भाबो सुजाता, महेन्द्र, बौएलाल आ सुमित्रा, चारू गोरे गाड़ी पकैड़ गाम विदा भेला।

गाम अबिते महेन्द्र पिताकेँ नै देखि मने-मन आरो सशंकित भऽ गेला। माएकेँ पिताक सम्बन्धमे पुछलैन। माएकेँ मात्र एतबे पुछलैन जे 'बाबू केतए छैथ?'। माए कहलखिन। एटैची रखि महेन्द्र बौएलालक संग सोझे भजुआ ऐठाम चलला। डॉक्टर सुजाता घरेपर रहि गेली। गामक परम्पराकेँ बुझबैत सासु सुजाताकेँ मनाही कए देलखिन जे अहाँ नै जाउ।

चारि बजि गेल। खाइक इच्छा ने रमाकान्तकेँ आ ने आरो किनको रहैन। भानस भऽ गेलइ। जेते बिलम होएत ओते वस्तु सुआदहीन बनत। तँए भजुआ चाहै छल जे गरम-गरम खेनाइ सभ कियो खाइथ। मुदा भूख नै रहने चारू गोरे टाल-मटोल करए लगला। असमंजसमे भजुआ रमाकान्तकेँ कहलकैन-

"काका, भानस भऽ गेल अछि। जएह मन मानए सएह... ।"

ढकार करैत रमाकान्त उत्तर देलखिन-

"जखन भोजन बना लेलह तँ नै खाएब तँ मुँहो छूताइए लेब। मुदा सच पुछह तँ एक्को रत्ती खाइक मन नै होइए।"

भजुआ कहलकैन-

"जेतबए मन मानए तेतबे... ।"

चारू गोरे उठि कऽ आँगन गेला। सौंसे आँगन चिक्कैन माटिसँ टटके नीपल, तँए माटिक सुगन्धसँ अँगना महमह करैत। आँगन तँ छोटे मुदा बेसी लोकक दुआरे पैघ बुझि पड़ैत। कम्मल चौपेत कऽ बिछौल। जेना आइए कीनि कऽ अनने हुअए तेहने थारी, लोटा, बाटी, गिलास चमचम करैत। भोजनक विन्यास देखि रमाकान्त क्षुब्ध भऽ गेला। की पवित्रता! की सुआद! मने-मन रमाकान्त सोचैथ जे अगर खूब भूख लागल रहैत तँ खूब खइतौं। मुदा भूखे ने अछि तँ की खाएब।

भोजन कऽ चारू गोरे विदा हुअ लगला। विदा होइसँ पहिने झोलिया रंगल चँगेरामे चारि जोड़ धोती आनि चारू गोरेक आगूमे रखि देलकैन। धोती

देखि रमाकान्त कहलखिन-

“झोली, तूँ सभ गरीब छह। अपने-ले घोती रखि लएह। तूँ पहिरौलह हम पहिरलौं भऽ गेलइ।” ❑

शब्द संख्या : 3365

बारह

मद्रासमे महेन्द्र चारि बजे भोरे उठि जाइ छला आ अपन जिनगीक लीलामे लगि जाइ छला मुदा गाममे पाँचो बजेमे महेन्द्रकेँ कड़गरे नीन पकड़ने छैन। एना किए भेल? ..रमाकान्त सुति-उठि कऽ महेन्द्रक कोठरीमे जा कऽ देखलखिन जे ओ ठर्र पाड़ैत घोर नीनमे सुतल अछि। नै उठेलखिन। मनमे एलैन जे बापक राजमे बेटा अहिना निसचिन्त भऽ रहैए। लोटा लऽ कलम दिस विदा भऽ भेला।

छह बजे भिनसरमे महेन्द्र जगला। जगिते मनमे प्रश्न उठलैन एते कड़गर नीनक की कारण? की मिथिलाक माटि, पानि, हवाक गुणक प्रभाव छी वा काजक कमी रहने एना भेल? ..अही गुनधुनमे पड़ल छला महेन्द्र।

रमाकान्त टहैल-बुलि, दिशा-मैदानसँ होइत अपन घरक रस्ता छोड़ि टोलक रस्ता पकैड़ घुमला। टोलमे प्रवेश करिते, रस्ता कातेक चापाकलपर मुँह-हाथ धुअ लगला।

कलक बगलेमे मंगलक घर। रमाकान्तकेँ मंगल देखि चुपचाप अँगनासँ बेंतबला कुरसी आ टेबुल आनि डेढ़ियापर लगौलक। मुँह-हाथ धोइ कऽ रमाकान्त अपना घर दिस चलला कि रस्ता कटैत देखि मंगल टोकलकैन-

“काका, कनी एक रत्ती अहूठाम बैसियौ।”

मंगलक बातकेँ कटलैन नहि, मुस्कियाइत आबि कुरसीपर बैसला। कुरसीपर बैसते मंगलकेँ कहलखिन- “बड़ सुन्नर कुरसी छह! कहिया बनौलह?”

"आठम दिन छौड़ा दिल्लीसँ आएल। वएह अनलक।"

मंगलक बेटा रबिया, अँगनामे चाह बनबैत रहए। चाह बना तस्तरीमे बिस्कुट, नमकीन भुजिया आ चाहक गिलास नेने अबि रमाकान्तक आगूमे टेबुलपर रखि, गोड़ लागि कहलकैन-

"बाबा, कनी चाह पीब लियौ।"

रबियाक बात सुनि रमाकान्त सोचए लगला जे यएह मंगला छी जे बिहाड़िमे जखन घर उधिया गेल रहै तँ सात दिन अपनो सभतूरकेँ आ मालो-जालकेँ अपना मालक घरमे रहैले देने रहिऐ। मुदा आइ वएह मंगला छी जे केहेन सुन्दर घरो बना लेलक आ कुरसियो टेबुल कीनि लेलक। वाह..!

मुस्कियाइत पुछलखिन- "बेटा केतए नोकरी करै छह, मंगल?"

"दिल्लीमे काका। बड़ बढ़ियासँ रहैए।।"

रमाकान्त भुजिया, बिस्कुट खा पानि पीब चाह पीबैत रहैथ आकि तैबीच रबिया आँगन जा जर्मनी मेड एकटा पौकेट रेडियो नेने आबि रमाकान्तक आगूमे रखैत कहलकैन-

"बाबा, ई अहींले अनलौं हेन।"

रेडियो देखि रमाकान्त बजला-

"ऐ सबहक सख आब ऐ बुढ़ाड़ीमे की करब। रखि ले। तूँ सभ अखन जुआन-जहान छँह, छजतौ। हम लऽ कऽ की करब।"

दहिना हाथसँ रेडियो आ बामा हाथे रमाकान्तक गट्टा पकैड़ हाथमे दैत रबिया कहलकैन- "बाबा, अहींले किनने आएल छी।"

रमाकान्त चाह पीब, कुरसीपर सँ उठि घर दिसक रस्ता पकड़लैन। आगू-आगू रमाकान्त पाछू-पाछू मंगल हाथमे रेडियो नेने घरपर तक चलि आएल।

एक बाँस सुरुज ऊपर उठि गेल। महेन्द्र दलानक ओसारपर बैस, ब्रश करैत रहैथ। तखने पान-सातटा बचिया माथपर पथिया आ हाथमे लोटा नेने पहुँचल।

महेन्द्र ब्रशो करै छला आ चुपचाप सभकेँ देखबो करै छला।

लोटा पथिया ओसारपर रखि एकटा बचिया महेन्द्रकेँ पुछलकैन-

"बाबा कहाँ छथिन?"

बचियाक प्रश्नक उत्तर महेन्द्र नै देलखिन, किएक तँ नइ बुझल रहैन। सबहक पथिया आ लोटाकेँ निहारि-निहारि देखए लगला। कोनो पथियामे कोबी, कोनोमे टमाटर, कोनोमे करैला तँ कोनोमे भँट्टा, तैसंग लोटामे दूध देखि महेन्द्र सोचए लगला जे ई की भऽ रहल अछि! किए ई सभ ऐठाम अनलकहेँ..?

महेन्द्र गुनधुनमे पड़ि गेला। कोनो अर्थे ने लगैन। मन घुरियाए लगलैन। कनी कालक पछाइत पुछलखिन-

"बौआ, ई सभ किए अनलह?"

एकटा ढेरबा बचिया जे बजैमे चड़फड़, कहलकैन-

"बाबा अपन सभ खेत हमरे सभकेँ दऽ देलखिन। अपना-ले किछु ने रखलखिन तँ खेथिन की? तँए..!"

बचियाक बात सुनि महेन्द्र गुम्म भऽ गेला। सोचए लगला जे हम बेटा छिऐन। हुनकर चिन्ता हमरा हेबा चाही। सुआइत कहल गेल अछि जे 'जेहेन करब तेहेन पएब..!'

मुँहपर हाथ नेने महेन्द्रक मनमे उठलैन- अनेरे लोक अपन आ दोसर बुझैए। जेकरा-ले अहाँ करबै, ओ अहूँ-ले करत। चाहे अपन हुअए आकि आन। सोचिते रहैथ कि पिताजीकेँ अबैत देखलैन। पिताकेँ देखिते उठि कऽ कुरुर करए कल दिस बढ़ि गेला।

रमाकान्तपर नजैर पड़िते सभ बचिया ओसारपर सँ उठि गोड़ लागए आगू बढ़ल। रमाकान्तक नजैर लोटामे दूध आ पथियामे तरकारीपर पड़लैन। तरकारी देखि बजला-

"बच्चा, एते किए अनलह। अच्छा आनियेँ लेलह तँ आँगनमे रखि आबह।"

सभ बचिया अपन-अपन पथिया-लोटा लऽ जा कऽ आँगनमे रखि

आएल।

महेन्द्रक अबैक जानकारी गाममे सभकेँ भऽ गेलैन। एका-एकी लोक आबि-आबि अपन-अपन रोगक इलाज करबए चाहलक। मुदा महेन्द्र तँ निआरि कऽ नै आएल छला तँए ने जाँच करैक कोनो यंत्र अनने रहैथ आ ने दबाइ। मुदा तैयो बौएलाल आ सुमित्राकेँ बजा अनैले जुगेसरकेँ कहलखिन। जुगेसर बौएलालकेँ बजबए गेल। जेते जाँच-पड़ताल करैक यंत्र, चीड़-फाड़ करैक औजार बौएलाल आ सुमित्राकेँ कीनि देने रहथिन ओ सभ सामान नेने दुनू गोरे पहुँचल। बौएलाल महेन्द्र लग बैसल आ सुमित्रा सुजाताक संग दरबज्जाक पाछूक ओसारपर। जनिजाति सुजाता लग जाँच करबैले जाए लगली आ पुरुख महेन्द्र लग।

चारिए-पाँच गोरेकेँ महेन्द्र जाँच केलैन कि चारि-पाँचटा रोगी खाटपर टाँगल अबैत देखलखिन। ओ सभ दोसर गामक छेलइ। खाट देखि महेन्द्रकेँ भेलैन जे भरिसक हैजा-तैजा भऽ गेलइ। ओसारपर सँ उठि महेन्द्रो आ बौएलालो निच्चाँमे ठाढ़ भऽ गेला। खाटोबला आबि गेल। सभ कुहरैत रहए। केकरो कपार फुटल तँ केकरो डेन टुटल आ केकरो मारिक चोटसँ देह फुलल।

अपना लग कोनो दबाइ महेन्द्रकेँ नै रहैन। हाँइ-हाँइ महेन्द्र बौएलालकेँ ड्रेसिंग-पलश्तरक सभ समान आ दबाइक पुरजी बना बजारसँ जल्दी अनैले कहलखिन। साइकिलसँ बौएलाल खूब रेसमे विदा भेल।

रमाकान्त रोगी लग आबि एकटा खाट उठौनिहारकेँ पुछलखिन-

“केना कपार फुटलै?”

डरसँ कँपैत ओ कहलकैन-

“मारिसँ कपार फुटलै।”

सुनिते रमाकान्त महेन्द्रकेँ कहलखिन-

“बौआ, सबहक इलाज नीक जकाँ कऽ दहुन।”

कहि ओसारपर बिछौल बिछानपर बैस, खाट उठौनिहार सभकेँ सोर पाड़लखिन। सभ कियो लगमे आबि बैसलैन। पुछलखिन-

"मारि करवन भेलह?"

"खाइ-पीबै रातिमे।"

"तब तँ खेनौं-पीनौं नै हेबह?"

"नहि।"

भूखल बुझि रमाकान्त जुगेसरकेँ कहलखिन-

"पहिने सभकेँ खुआबह।"

पनरह-बीस गोरेक जलखै तँ घरमे छेलैन नहि। जुगेसर सुमित्राकेँ सोर पाड़ि कहलक- "बुच्ची, काकी तँ बुढ़े छैथ आ कनियाँ अनभुआरे। झब-दे बड़का बरतन चढ़ा कऽ खिचड़ी बना। वेचारा सभ रौतुके भूखल अछि। हम सभ समान जोड़िया दइ छियौ। तोरा सभ किछु बुझल छौ।"

जहिना जुगेसर सुमित्राकेँ कहलक तहिना सुमित्रो भानसमे जुटि गेल। सुजातो संग दिअ लगलखिन।

जहिना बौएलाल निछोह साइकिल हाँकि बजार गेल तहिना लगले सभ समान कीनि चलियो आएल। बौएलालकेँ अबिते महेन्द्रो आ बौएलालो सभ रोगीकेँ पहिने दरदक सुइया देलखिन।

सूइ पड़िते कनीए कालक पछाइत, सभ कुहरनाइ बन्न केलक।

खिच्चैर-तरकारी बना सुजातो आ सुमित्रो रोगी लग एली। मन शान्त होइते, सबहक खून लगलाहा कपड़ा बदैल, खिच्चैड़ खुआ इलाज शुरू भेल। तीन गोरेकेँ कपार फुटल रहै आ दू गोरेकेँ डेन टुटल रहइ। सुजाता आ सुमित्रा दुनू गोरेक पलश्तर करए लगली। महेन्द्र कपारमे स्टीच करैत रहैथ। बौएलाल दौड़-बड़हामे लागल रहए। करवनो किछु अनैत तँ करवनो किछु।

दू घन्टाक पछाइत सभ निचेन भेला।

रमाकान्त पुछलखिन-

"मारि किए भेलह?"

नोर पोछैत जोरवन कहए लगलैन- "मकशूदनक बेटी सितिया भाँटा

बेचए हाट गेल रहइ। सतरह-अठारह बर्खक उमेर हेतइ। नमगर कद। दोहरा देह। चाकर मुँह। गोल आँखि ओकर छइ। पौंरुके साल दुरागमन भेलइ। ओना , हाट ओकर माए करै छै मुदा पान-सात दिनसँ ओ दुखित अछि। डेढ़ कट्ठा खेतमे भाँटा केने अछि। खूब सहजोर फड़लो छइ। भाँटाकेँ जुआइ दुआरे सितिया छाँटि-छाँटि कऽ नमहरका भाँटा तोड़लक। एक छिट्टा भेलइ। भँट्टोकेँ बेचब आ माए-ले दबाइयो कीनब जरूरी छेलइ। दबाइक पुरजी साड़ीक खूटमे बान्हि लेलक जे घुमै कालमे दबाइ किनने आएब। हाटमे भँट्टा बेच दोकानमे दबाइ कीनि कऽ असगरे विदा भेल। गोसाँइ डुमि गेल रहइ। खूब अन्हार तँ नहि, मुदा झलफल भऽ गेल छेलइ। धीरे-धीरे रस्तो चलनिहार पतराए लगल छल। हाट गेनिहार तँ साफे बन्न भऽ गेल छेलइ। मगर हाटसँ घुमनिहार गोटे-गोटे रहबे करए। पाँतरमे जखन सितिया आएल तँ पाछूसँ ललबा आ गुलेतिया सेहो साइकिलसँ अबै छल। गुलेतिया ललबाक नोकर छी। ललबा बापक असगर बेटा अछि बीस-पच्चीस बीघा खेत छइ। बच्चेसँ बहसल तँ अछिए। दुनू गोरे दारू पीब अन्ट-सन्ट बजैत घर दिस अबैत रहए। जखन दुनू गोरे सितियाक लगमे आएल तँ ललबा बाजल- "गुलेती, शिकार फँसलौ!"

..ललबाक बात सुनियोँ कऽ सितिया किछु नै बाजल। मुदा मनमे आगि सुनगए लगलै। आरो डेग नमहर केलक। आगू बढ़ि ललबा साइकिलसँ उतैर, रस्ताकेँ घेर साइकिल ठाढ़ कऽ देलकै। साइकिल ठाढ़ कए जेबीसँ सिगरेट आ सलाइ निकालि, लगा कऽ पीबए लगल। सितियाक मनमे शंका भेलै मुदा डेराएल नहि। साइकिल लग आबि रस्ताक बगल देने आगू टपि गेल। आगूमे ललबो आ गुलेतियो ठाढ़ भऽ सिगरेटो पीबैत आ चढ़ा-उतरीक गप्पो-सप्प करैत फेर आगू बढ़ल। मुँहमे सिगरेट रखि ललबा साए रूपैआक नोट ऊपरका जेबीसँ निकालि सितिया दिस बढ़ौलक। रूपैआ देखि सितियाक देह आगिसँ लह-लह करए लगलै। मुदा ने किछु बाजल आ ने रूकल। लफरल आगू बढ़ैत रहल। सितियाकेँ आगू बढ़ैत देखि ललबो पाछूसँ हाथमे रूपैआ नेने बढ़ल। दुनू गोरेकेँ पछुअबैत देखि सितिया ठाढ़ भऽ गेल। माथ परहक छिट्टाकेँ दहिना हाथे आरो कसिया कऽ पकैड़ सोचलक जे छिट्टेसँ दुनूकेँ चानिपर मारब। तामसे भीतरे - भीतरे जैरते छल सितिया।

..ललबा दहिना हाथे नोट सितिया दिस फेर बढ़ौलक। लगमे ललबाकेँ देख, मौका पाबि सितिया तेना कऽ रूपैआपर थूक फेकलक जे रूपैआपर तँ कम्मे मुदा ललबाक मुँहपर बेसी पड़लै। मुँहपर थूक पड़िते ललबा सितियाक बाँहि पकैड़ खिंचए चाहलक। पहिनहिसँ सितिया छिट्टाकेँ पकैड़ अजमेने रहबे रहए। धाँइ-धाँइ दू छिट्टा ललबाकेँ लगा देलक। दुनू गोरे दुनू बाँहि पकैड़ सितियाकेँ घिंचलक। छिट्टा नेनहि सितिया रस्ताक निच्चाँ, खेतमे खसि पड़ल। खेतमे खसिते हिम्मत कऽ उठि दहिना तरहत्थीक मुक्का बान्हि, मुक्को आ दहिना पएरो अनधुन चलबए लगल। मारिक डरसँ गुलेतिया कात भऽ गेल। मुदा ललबा नै मानलक। ओहो अनधुन मुक्का चलबए लगल। गुलेतियाकेँ कातमे देखि सितियोक जोश बढ़लै। ललबा दारू पीनहि रहए, तिलमिला कऽ खसल। जहाँ ललबा खसल आकि सितिया एँड़े-एँड़ मारए लगल। तही-बीच हाटसँ तरकारी बेचनिहारिक जेर अबैत रहइ। तरकारी बेचनिहारिक चाल-चुल पाबि सितियाक जोश आरो बढ़ि गेल। एक तँ समरथाइक शक्ति सितियाक देहमे, दोसर इज्जत बँचबैक प्रश्न, बाघ जकाँ सितिया मारैत-मारैत ललबाकेँ बेहोश कऽ देलक। ताबे तरकारियो बेचनिहारि सभ लगमे आबि गेली। सितियाक काली रूप देखि हसीना पुछलकै- “बहिन, की भेलौ?”

..सितिया बाजल- “अखन किछु ने पुछ। ऐ छुतहरबाक खून पीब लेबइ।”

..बजबो करैत आ अनधुन एँड़ो देहपर बरिसबैत रहल। चारि गोरे सितियाकेँ पकैड़ कात करए चाहलैन। मुदा चारूकेँ झमारि सितिया पुनः आबि कऽ दस लात ललबाकेँ फेर मारलक। फेर चारू गोरे हसीना, जलेखा, रेहना आ खातून घेर सितियाकेँ पँजिया कऽ पकैड़ घिंचने-तिरने विदा भेली।

..अबैत-अबैत जखन गामक कात आएल कि सितिया फेर चारू गोरेकेँ झमारि, अपन डेन छोड़ा फेर ललबाकेँ मारए दौगल। मुदा रेहना आ खातून दौग कऽ सितियाकेँ आगूसँ घेरलक। हसीना आ जलेखा सेहो दौग कऽ आबि पकड़लक। सितियाक मन क्रोधसँ उफनैत रहइ। मनमे होइ जे ललबाक खून पीने बिना नै छोड़ब, चाहे फाँसीपर किए ने चढ़ऽ पड़ए। चारू गोरे सितियाकेँ

पकड़ने घरपर पहुँचल। सौंसे गाम घटनाक समाचार बिहाड़ि जकाँ पसैर गेल। गाम डोल-माल करए लगल। तनावक वातावरण बनि गेल। राति भारी भऽ गेल। गामक बुढ़बा चोट्टासँ लऽ कऽ नवका चोट्टा धरिक चलती बढ़ि गेलइ।

..तैबीच चारि गोरे ललबाकेँ खाटपर टाँगि सेहो अनलक। ललबाक बेहोशी तँ टुटि गेलै मुदा कुहरनी धेनहि रहइ। ललबाक पितियौत भाए डॉक्टर बजा ललबाक इलाज करबए लगल। स्लाइन लगा डॉक्टर बगलमे बैस पानिक गति देखैत रहए। तैबीच ललबाक पितियौत भाए गाममे लाठीक संगोर करए लगल। जेते गामक मुँहगर-कन्हगर लोक सभ छल से सभ ललबाक पक्ष लेलक। अपन मजगूत पक्ष देखि ललबाक बाप बाजल-

"जखन इज्जत चैलिए गेल तँ समपैते रखि कऽ की करब।"

..'दुर्गा-महरानी की जय' कहि पनरह-बीसटा गामक हुरदंगहा, लाठी लऽ सितिया ऐठाम विदा भेल। रस्तोमे सभ जय-जयकार करैत रहए।

..मकशूदनक टोल मात्र बारह परिवारक। गरीब घरक टोल तँए समांगो सभ मरदुआरे। मुदा तैयो जेते पुरुख रहै, लाठी लए-लए गोलिया कऽ बैस विचारलक जे इज्जतक खातिर मरि जेनाइ धरम छी, तँए जे हेतै से हेतै मुदा पाछू नइ हटब। दोसर दिस टोलक सभ जनिजाति सेहो तैयार होइत निर्णए केली जे जाधैर पुरुख ठाढ़ रहत ताधैर अपना सभ कातमे रहब। मगर पुरुखकेँ खसिते अपनो सभ लाठी उठाएब। एक तँ सितियाक देहमे आगि लगले रहै आरो धधैक गेलइ। बाजल- "जेते जुआन बेटी छँह आ जुआन पुतोहु, सभ अपन-अपन साड़ीकेँ कसि कऽ बान्हि ले आ माथोमे साड़ीए-क नमहर मुरेठा कसि कऽ बान्हि ले, जइसँ कपार नै फुटौ। बुढ़िया सभकेँ छोड़ि देही। मरुआ बीआ पटबैबला जे पटै घरमे छौ से निकालि कऽ एकठाम सभ रख आ देखैत रही जे की सभ होइ छइ। जहिना सभ बहिन मिलि मरब तहिना संगे संगे सभ बहिन जनमो लेब।"

..टोलक जेते छोट बच्चा रहै, सभकेँ घरक बुढ़-बुढ़ानुस लए-लए टोलसँ हटि गाछीमे चलि गेल। दोसर हँसेरी टोलक लग आबि बोली देलक। बोली सुनि सितियाकेँ होइ जे असगरे सभसँ आगू जा हँसेरीकेँ रोकी। मुदा लड़ाइमे अनुशासन आ निर्णयक महत बढ़ि जाइ छइ, तँए सितिया आगू नहि बढ़ि ठाढ़े

रहल। टोलक लोक, अपना तागत भरि हँसेरीकेँ रोकलक। अनधुन लाठी दुनू दिससँ चललै। मुदा पछैर गेल। पाँच गोरे घाइलो केलक मुदा हँसेरी घुमल नहि बल्कि धन आ इज्जत लूटैक खियालसँ आगू बढ़ल। अपन समांगकेँ खसल आ हँसेरीकेँ आगू बढ़ैत देखि मुरेठा बन्हने आगू-आगू सितिया आ तइ पाछू टोलक सभ स्त्रीगण पटै लऽ हँसेरीकेँ रोकलैन। की बिजलोका चमकै छै तहिना गामक बेटी अपन चमकी देखौलैन! वाह रे मिथिलाक धी..!

..मिथिला सिरिफ कर्म भूमिए आ धर्म भूमिए नहि, वीर भूमि सेहो छी। चारि आदमीक कपार असगरे सितिया ढाहलक। चारू खसलै। खूनक रेत चललै। हँसेरीमे हूर भेलइ। सभ पाछू-मुहेँ पड़ाएल। ईहो सभ भागल हँसेरीकेँ रेबाड़लैन। मुदा किछु दूर रेबाड़ि घुमि गेली।

..अपन सभ समांगकेँ उठा-उठा सभ अनलक। मुदा दोसर दिसक लोककेँ अपन समांग अनैक साहसे नै होइ छेलइ। होइ जे कहीं हमहूँ सभ अनैले जाइ आ हमरो सभकेँ ओहिना हुअए। बड़ीकालक पछाइत चोरा कऽ अपना समांग सभकेँ ओहो सभ लऽ गेल। गाममे दुइयेटा डॉक्टर। सेहो डिग्रीधारी नहि, गमैया प्रेक्टिनर। सेहो दुनू ललबे ऐठाम रहैथ। रातिमे केतए जइतौं। दोहरा कऽ आक्रमणक डर सेहो रहए। सभ तत-मतमे पड़ल रही। मुदा जेहो सभ घाइल छल ओकरो मुँह मलिन नै छेलइ। मनमे खुशी होइत रहइ। तँए दर्दकेँ अङेजने रहए। इन्होर पानि करि कऽ सभकेँ स्त्रीगण सभ ससारए लगली, कपारक फाटल जगहमे सिन्नुर दए-दए कपड़ासँ बान्हि खून बन्न केलक। भरि राति कियो सुतल नहि। जहाँ-तहाँ अहीक चरचा बेसी काल चलैत रहैए। भिनसरमे डॉक्टर महेन्द्रक जानकारी भेल जे गाममे छैथ। तँए एलौं।”

जोखनक बात सुनि रमाकान्त बमैक उठला। ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ बाजए लगला-

“जदी कियो अपन इज्जत-आबरू बँचबैले हमरा कहत तँ हम अपन सभ सम्पैत ओइ पाछू फुकि देब। मुदा छोड़बै नहि। बौआ, जेते तोरा हूनर छह तइमे कोताही नै करिहक। खेनाइ-पीनाइ, दबाइ-दारू सभ कथुक मदैत कऽ दहक। फेर ऐ धरतीपर जन्म लेब। ई कर्मभूमि छिऐ। मनुख किछु करैले धरतीपर

अबैए। सिरिफ अपनेटा नै आनो जे कर्मनिष्ठ अछि, ओकरो जहाँ धरि भऽ सकत मदैत करबै। जोखन, जे भऽ गेल से भऽ गेल मुदा सुनि लएह जहिया-कहियो कोनो भीड़ पड़ह, हमरो एक बेर खोज करिहह। जाधैर घटमे परान अछि ताधैर जरूर मदैत करबह।”

बेर टगैत चारिटा बचिया अपना आदमी सभ-ले खाएक लऽ कऽ पहुँचली। एक कठौत भात बड़का डोलमे दालि आ छोटका डोलमे तरकारी लेने, तैसंग खाइ-ले केराक पात आ दूटा लोटा सेहो अनने छेली।

चारू बचियाकेँ देखि रमाकान्त पुछलखिन-

“बुच्ची, खाएक किए अनलह।”

रमाकान्तक बात सुनि सितिया कहलकैन- “बाबा, हमरा सभकेँ नइ बुझल छेलए तँए अनलौं।”

“अच्छा, अनलह तँ सभकेँ पुछि लहुन जे खाएब आकि घुरौने जाएब।”

सितियाक संग रमाकान्त गप-सप्प करिते रहैथ कि बिच्चेमे जोखन कहलकैन-

“काका, यएह सभ बचिया मारि कऽ ओइ पाटीकेँ भगौलक।”

अकचकाइत रमाकान्त बजला-

“आँइ! यएह सभ छी! वाह-वाह! तोरे सभ सन-सन बेटी ऐ धरतीक मान रखि सकैए।”

बिहाड़ि जकाँ जोखनक बात, रमाकान्तक दरबज्जा आ आँगनसँ लऽ कऽ गाम धरिमे पसैर गेल जे सितिया सभ मरदक हँसेरीकेँ अनधुन मारबो केलक, कपारो फोड़लक आ गामक सीमान धरि खिहारबो केलक।

ई समाचार सुनि गामक स्त्रीगण मरद सभ उनैट कऽ ओइ बचिया सभकेँ देखैले आबए लगल। अजीव दृश्य बनि गेल।

श्यामा आँगनसँ सुमित्रा दिया समाद पठौलैन जे कनी ओइ बचिया सभकेँ अँगना पठा दियौ जे हमहूँ सभ देखब।

दरबज्जापर आबि सुमित्रा रमाकान्तकेँ कहलकैन। अँगनाक समाद सुनि रमाकान्त चारू बचियाकेँ कहलखिन- “बेटी, कनी आँगन जाइ जाह।”

चारू बचियाकेँ संग केने सुमित्रा आँगन विदा भेल। ओसारपर ओछाइन ओछा श्यामो आ सुजातो बैसल छेली। आगू-आगू सुमित्रा आ पाछू-पाछू चारू बचियो आएल।

चारू बचिया श्यामा आ डॉक्टर सुजाताकेँ गोड़ लगलकैन। एकाएकी गामक स्त्रीगण आ गामक बेटी सभ सेहो अँगने जा-जा सितिया सभकेँ देखए लगली। अपने लगमे चारू बचियाकेँ श्यामा बैसौने रहथिन। सुजाता निहारि-निहारि चारूकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि, देखैत रहली। ..अजीव शक्ति चारूक चेहरामे बुझि पड़ैन। चारू बचियो आँखि उठा-उठा कखनो श्यामापर तँ कखनो गामक स्त्रीगण सभपर दइ छेली। सबहक मनमे खुशी रहितो, मुहसँ हँसी नै निकलै छेलैन। जेना खुशीक पाछू अदम्य उत्साह, अदम्य साहस आ जोश सबहक चेहरापर नचैत रहैन। चारूक विशेष आकर्षण सभकेँ अपना दिस घिचै छल। जेहो स्त्रीगण कनी हटि कऽ ठाढ़ भऽ देखै छेली, ओहो सहैट-सहैट सितियाक लगमे आबए चाहैथ। श्यामा सुमित्राकेँ कहलखिन-

“सुमित्रा, एहेन लोककेँ आँगनमे कहिआ देखबीही, तँए बिना किछु खिऔने-पिऔने नै जाए दहुन।”

श्यामाक बात सुनि सुजाता उठि कऽ अपन आनल मद्रासी भुजियाक डिब्बा घरसँ उठेने एली। भुजियाक डिब्बा देखि सितिया बाजल- “बाबी, लगले खा कऽ विदा भेल छेलौं। एको -रत्ती खाइक छुधा नइ अछि।”

तैबीच रमाकान्त चारू गोरेकेँ बजबैले जुगेसरकेँ अँगना पठौलखिन। जुगेसर अँगना आबि सभकेँ कहलक। उठि कऽ चारू गोरे श्यामाकेँ गोड़ लागि विदा हुअ लगली। असिरवाद दैत श्यामा कहलखिन-

“भगवान हमरो औरदा तोरे सभकेँ देथुन जे हँसैत-खेलैत जिनगी अहिना बितैत रहह।”

चारू गोरेकेँ अँगनासँ निकैलते सभ विदा भेल।

चारिक अमल। रौदक गरमियो कमए लगल। डॉ. महेन्द्र जोखनकेँ कहलखिन- “ऐठाम रोगी सभकेँ रखैक जरूरत नइ अछि। घरेपर साँझ-भिनसर सभ दिन बौएलाल जा-जा कऽ सूइया दऽ-दऽ औत। गोटी सेहो लगातार चलबैत रहब। पनरह-बीस दिनमे पूरा ठीक भऽ जाएत।”

पएरे सभ विदा भेल...।

साँझू पहर, रमाकान्त आ जुगेसर दरबज्जापर बैस मद्रासेक गप-सप्प शुरू केलैन। मुस्कियाइत जुगेसर कहलकैन-

“काका, एक बेर आरो मद्रास चलू।”

नाक मारैत रमाकान्त बजला-

“धुर बुड़िबक! गाड़ीमे लोक मरि जाइए। ऐठाम केहेन निचेनसँ रहै छी। ओमहर ने गाड़ी-बसमे शान्ति आ ने रस्ता-पेराक ठेकान। सड़क धऽ कऽ चलू। तहूमे सदिखन लोकेक धक्का लगैत रहत। केहेन सुन्दर अपना सबहक गाम अछि जे रस्ताक कोन बात जे आइरे-धुरे, खेते-पथारे जेतए मन हुअए तेतए जाउ। ने गाड़ी बसक धक्काक डर आ ने पएरमे काँटी-शीशा गड़ैक। जेकरासँ मन हुअए तेकरासँ गप करू, कुशल-समाचार पुछि लिऔ। ओइठाम तँ जेना मुँहमे बकारे नै रहए तहिना बौक भेल रहै छेलौं।”

व्यंग करैत जुगेसर कहलकैन-

“केहेन ठंढा घरमे रहै छेलौं। ने नहाएले केतौ जाए पड़ै छेलए आ ने पर - पैखाना-ले?”

रमाकान्त- “धुर बुड़ि! ओइठाँ जँ दुइयो मास रहितौं तँ कोढ़ि भऽ जइतौं। उठैयो-बैसैयोमे आसकैते लगैत रहए। सच पुछ तँ एते दिन रहलौं मुदा ने कहियो भरि मन पानि पीलौं आ ने झाड़ि कऽ पैखाना भेल। सभ दिन जेना कब्जियते बुझि पड़ैत रहए। जखने पानि मुँह लग लऽ जाइ कि मन भटैक जाइ छेलए।”

फेर मुस्कियाइत जुगेसर कहलकैन-

“अंगुरक रस पीबैमे केहेन लगैत रहए! बिसैर गेलिऐ?”

अंगुरक रस सुनि थोड़ेक असथिर होइत रमाकान्त बजला-

"लोक कहै छै जे अंगुरमे बड़ तागत छै मुदा अपना सबहक जे केरा, आम, बेल, लताम इत्यादि अछि, ओते तागत अंगुरमे केतए-सँ औत। अंगुरेक शराब बनैए मुदा अपना ऐठामक भाँगक परतर करतै। अंग्रेजिया शराब सनसना कऽ मगजपर चढ़ियो जाइ छै आ लगले उतैरियो जाइ छइ। मुदा अपन जे भाँग अछि ओ रइसी निशाँ छी। ने अपराध करैले सनकी चढ़ौत आ ने एको मिसिया चिन्ता आबए दइ छइ।"

रमाकान्त आ जुगेसरक गप-सप्प सुजातो अढ़सँ सुनै छेली। दुनू गोरेक गप्पो सुनै छेली आ मने-मन विचारबो करै छेली। तखने हीरानन्द आ शशि शेखर सेहो टहलैत-बुलैत एला।

दुनू गोरेकेँ बैसते रमाकान्त हीरानन्दकेँ कहलखिन -

"मास्सैब, खेतक झंझट तँ सम्पन्न भेल। बड़ बढ़ियाँ भेल। एकटा बात कहू जे जेते लोक गाममे अछि सभ अपन गाम कहैए किने?"

हीरानन्द-

"हँ। ई तँ कोनो नव नइ अछि। अदौसँ कहैत आएल अछि आ आगूओ कहैत रहत।"

"जखन गाम सबहक छिऐ तँ गामक सभ किछु ने सबहक भेलइ?"

"तइमे थोड़े गड़बड़ अछि। हँ! गड़बड़ ई अछि जे अखन धरि जे बनैत-बनैत समाज आ गाम अछि ओ टुटैत टुटैत खण्ड-परखण्ड भऽ गेल अछि। तँए एक-एककेँ जोड़ि कऽ समाज बनबए पड़त जे लगले नइ भऽ सकैए।"

हीरानन्द बजिते रहैथ कि उत्तर दिससँ सुबुध आ दक्षिण दिससँ महेन्द्र आ बौएलाल सेहो आबि गेला।

रमाकान्त बौएलालकेँ कहलखिन-

"बौएलाल, आब तँ तूँ डॉक्टर बनि गेलेँ मुदा तैयो ऐठाम सभसँ बच्चा तोँही छँह। जो, चाह बनौने आ।"

डॉक्टरक नाओं सुनि महेन्द्रो आ हीरानन्दो मने-मन खुश भेला। किएक तँ दुनू गोरेक पढ़ौल बौएलाल छिऐन। मुस्कियाइत बौएलाल चाह बनबए विदा

भेल। रमाकान्त सुबुधकेँ कहलखिन-

“सुबुध, जमीनक ठौर तँ लगि गेल, खाली पोखैर बँचल अछि। शशि नौजवानो छैथ आ पढ़लो-लिखल छैथे आ लूरियो छैन्हे। पोखैरमे माँछ पोसथु।”

सुबुध- “बड़ सुन्दर विचार अपनेक अछि काका। हमहूँ यएह सोचै छेलौं जे गाममे तँ दुइयेटा चीज- माटि आ पानि अछि। तँए दुनूकेँ एहेन ढंगसँ उपयोग कएल जाए जे जहिना एक गोरेकेँ पाँचटा बेटा भेने पाँच गुना परिवार बढ़ि जाइ छइ।..तहिना खेतो आ पानियोँक हुअए। ढंगसँ मेहनत आ नव तरीका अपनौल जाएत तँ मनुखे जकाँ ओहो पाँचो गुनाक रफ्तारसँ किएक ने आगू बढ़त। जँ एहेन रफ्तार पकैड़ लिअए तँ गामकेँ बढ़ैमे केते देरी लगत। बीस बीघासँ ऊपरे गाममे पानि अछि जे बैशाखो-जेठमे नइ सुखैए। अगर जँ महाग-अकालो पड़ि जाएत तैयो बोरिंगक सहारासँ उपैज सकैए।

..अखन धरि सभ पोखैर ओहिना पड़ल अछि। सौंसे पोखैरकेँ केचली - घास छारने छइ। ने नहाइ-जोकर अछि आ ने माछ-मखान उपजबै-जोकर। जे इलाका माछ-मखानक छी, ओइ इलाकाक लोककेँ माछ-मखान नै भेटै, केते लाजक बात छी। ऐ लाजक कारण की हम सभ नै छिऐ? जरूर छिऐ। भलेँ हरसी-दीरघी लगा अपनाकेँ निर्दोष साबित कऽ ली मुदा...।

देखै छी जे किछु सुभ्यस्त परिवारकेँ तँ माछ-मखानक कोन बात जे अहूसँ नीक-नीक वस्तु भेटैए, मुदा विशाल समूहक गति की छइ? खाली जितिया पाबैनमे माछसँ भेँट होइ छै आ कोजगरामे दूटा मखान देखैए! तँए मनुखकेँ खुशहाल बनैले वस्तुक परियाप्तता जरूरी अछि। जँ वस्तुक कमी रहत तँ खुशहाली औत केना?”

सुबुध बजिते रहैथ कि बौएलाल चाह नेने आएल। चाह देखिते कियो कुरुर करए उठला तँ कियो तमाकुल थुकरैले। जुगेसर चाह बँटए लगल। एक घोंट चाह पीब हीरानन्द महेन्द्रकेँ पुछलखिन -

“डॉक्टर साहैब, केते दिनक छुट्टीमे आएल छी?”

हीरानन्दक प्रश्न सुनि महेन्द्र असमंजसमे पड़ि गेला। मने-मन सोचए

लगला जे केना चिट्ठीक चरचा करब। चिट्ठीक बात तँ सोलहन्नी झूठ निकलल। जँ बेसी दिनक छुट्टीक चरचा करब तँ सेहो झूठ हएत। धड़फड़ाएले आएल छी। की कहिऐन आकि नइ कहिऐन।

विचित्र स्थितिमे महेन्द्र पड़ि गेला। मुदा बिच्चेमे जुगेसर बाजल-

"ऐंह मास्सैब! डाकडर साहैब तँ आला भऽ गेला। कोनो चीजक कमी नै छैन। जखन अपना गाड़ीमे चढ़ा कऽ बुलबै छला तँ बुझि पड़ै छल जे इन्द्रासनमे छी।"

हीरानन्दक बात तर पड़ि गेलैन। मने-मन सोचलैन जे महेन्द्र भरिसक पिता दुआरे गुमकी लधने छैथ।

सभ कियो चाह पीब-पीब गिलास बौएलालकेँ देलखिन। सभटा गिलास लऽ बौएलाल अखारैले कलपर गेल। तैबीच सुबुध महेन्द्रकेँ कहलखिन-

"महेन्द्र भाय, गामक लोककेँ जे देह देखै छिऐ तइसँ की बुझि पड़ैए? बुझि पड़ैए ने जे किछु-ने-किछु रोग सभकेँ पछारने छइ। तँए सभकेँ जाँचि कऽ इलाज कए दियौ।"

सुबुधक प्रश्न महेन्द्रकेँ जँचलैन, बजला-

"अपनो विचार अछि। चारि-पाँच दिन जँचैमे लगत। सभकेँ जाँचि, जहाँ धरि भऽ सकत तहाँ धरि इलाजो कइए देबइ। आइ तँ भरि दिन दोसरे ओझरीमे ओझरा गेलौं मुदा काल्हिसँ ऐमे लगि जाएब।"

शशि पुछलकैन-

"डॉक्टर साहैब, बुड़हा जे अपन सभ खेत बाँटि देलैन तइले अपनेकेँ..?"

शशि शेखरक बात सुनि महेन्द्र मुस्कियाइत बजला- "दू भाँइ छी। दुनू भाँइकेँ पिताजी डॉक्टर बना देलैन। ऐसँ बेसी एक पिताकेँ पुत्रक प्रति की बाँकी रहि जाइए जे किछु कहबैन। खेतक बात अछि, हम थोड़े खेती करए आएब। तखन तँ जे खेती करैबला छैथ जँ हुनका हाथमे गेलैन तँ ऐसँ बेसी उचित की होएत। बाबाक अरजल खेत छिऐन, जेकर हकदार तँ पितेजी छैथ। जँ अपन

सम्पैत लूटाइए देलैन तइसँ हमरा की। ओनाहितो वैरागी पुरुषकेँ रागी बनाएब पाप छी।"

पुनः शशि शेखर पुछलखिन-

"मद्रासमे केहेन लगैए?"

जेना किछु मोन पाड़ए लगला तहिना थोड़ेक रूकि कऽ महेन्द्र बजला-

"जहिया डॉक्टरीक शिक्षा पेलौं तहिया नीक बुझि मद्रास गेलौं। मुदा अखन गामक सिनेह हृदयकेँ तेना पकैड़ लेलकहेँ जेना छातीमे लगल तीरसँ चिड़ै छटपटाइए तहिना छटपटाइ छी, होइए जे मद्रासक सभ किछु छोड़ि-छाड़ि अहीठाम रही। मुदा केतए-सँ जिनगीक लीला शुरू कएल जाए, ई गम्भीर प्रश्न अछि। अही प्रश्नक बीच मन ओझरा गेल अछि। स्पष्ट उत्तर नै भेट रहल अछि। किएक तँ ऐ प्रश्नक उत्तर दृष्टिकोणक मुताबिक भिन्न-भिन्न भऽ जाइए।" ❑

शब्द संख्या : 3770

तेरह

गामक दुखताहक दुख जाँचि दबाइ देबाक समाचार गाममे पसैर गेल। काल्हि भिनसरसँ सभ टोलक दुखताहकेँ बेरा -बेरी जाँचो होएत आ दबाइयो देल जाएत।

भिनसर होइते ओइ टोलक लोक आबए लगला जइ टोलक पार छेलैन। मरदक जाँच डॉक्टर महेन्द्र करैथ आ स्त्रीगणक डॉक्टर सुजाता। डॉक्टर महेन्द्रक सहयोगी बौएलाल आ सुजाताक सुमित्रा।

तीन दिनमे सौंसे गामक रोगीक जाँच भेलैन। दबाइयो भेटलैन। लोकक बीच एहेन खुशी दौग आएल जेना गामसँ बिमारीए पड़ा गेल होइ। सबहक मनक खुशी एक्के रंगक रूप बना नाचए लगल। मनमे एहेन खुशी जे आब ने हमरा देहमे कोनो रोग अछि आ ने मरब। खुशीक नाच एहेन छल जेना रोग

देखिए कऽ भागि गेल होइ। मुदा जिनगीमे तँ इहेटा रोग तँ नहि, आरो बहुत तरहक अछि। मुदा ई तँ मनक बात छल। जँ ई मनक बात छी तखन वास्तविक बात की अछि, ओ तँ लोकेमे देखए पड़त।

सभ दिन भलेसराकेँ देखै छेलिऐ जे दुखताहे अछि जइसँ काज -उद्यम छोड़ि देने छल मुदा आइ बड़का छिट्टामे छौर-गोबर नेने खेतमे फेकैले जाइत रहए। रस्तामे सोनमा पुछलकै तँ बाजल-

“आब देहमे कोनो दुख नइ अछि। जाइ छी छाउरो फेक लेब आ गरमा धानो काटि कऽ नेने आएब।”

तहिना तेतरो बहिंगामे गाँथि दूटा धानक बोझ कन्हापर उठेने अबैत रहए।

सोनमाक मनमे नाचए लगलै जे एना केना भेलइ? देखै छिऐ जे लहेरियासराय असपतालमे छअ-छअ मास रोगीकेँ लोहाबला खाटपर रखि, सुइयो पड़ै छै आ गोलियो खाइले देल जाइ छै, तैयो मरि जाइए। मुदा ऐ गामक दुखताहक दुख केना एते असानीसँ पड़ा गेल! अजीव भेल! ओह! भरिसक दुख केकरा कहै छै से बुझबे ने करै छी।

गुनधुनमे पड़ल सोनमाक मनमे उठल- जब अपने बुझबे नै करै छी तब बुझब केना। अपने सोचौ चाहब आ जँ गलतीए सोचा जाए तखन तँ गलतीए बुझब। गलती बुझब आ नइ बुझब, दुनू एक्के रंग। बिनु बुझलो काज लोक करए लगैए आ गलतियो करबे करैए। भलेँ दुनूक फल अधले होइ मुदा करै तँ अछिए। एहेन स्थितिमे की करब? जेकरा बुझै छिऐ जे फल्लाँ बुझनिहार अछि जँ ओकरो नइ बुझल होइ आ झूठे अन्ट-सन्ट कहि दिअए। तेतबे नहि, जे बुझनिहारो अछि आ ओकरा पुछिऐ आ जँ ओ गलतीए कहि दिअए, तैयो तँ ओहिना रहि जाएब। मुदा तोहूमे तँ एकटा बात अछि जे ओ कहै आ हम करी आ तेकर फल जँ गलती होइ तखन दोखी के हएत? तब की करब? आब उमेरो ने अछि जे स्कूलोमे जा कऽ पढ़ब। धिया-पुता सभ स्कूलमे पढ़ैए...।

गुनधुन करैत सोनमाक मन कहलकै- जखन स्कूल जाइबला रही तखन

किए ने पढ़लौं? पढ़लौं केना नहि, स्कूलमे नाओं लिखौने रही। पाँच किलास तक तँ पढ़बो केलौं। तखन छोड़ि किए देलिऐ? छोड़लिऐ आकि मास्टर मारि कऽ छोड़ा देलक? मास्टर मारि कऽ किए छोड़ा देलक? जखन छअ किलासमे गेलौं आ अंग्रेजी मास्टर आबि कऽ पढ़बए जे बी.यू.टी. 'बट' आ पी.यू.टी. 'पुट', तहीपर ने कहने रहिऐ जे अहाँ गलती पढ़बै छिऐ। कोनो गलती कहने रहिऐ। जब गलती नै कहने रहिऐ तब ओ मारलक किए। नै पढ़बैक मन रहै तँ ओहिना कहितए जे तोरा नै पढ़ेबौ, स्कूलसँ चलि जो। मारलक किए? जँ मारबो केलक तँ हमरा मनकेँ तँ बुझा दइतए। अपन मन मानि लइत। मन मानि लैत, भऽ गेलइ। से तँ नै केलक। तँए ने हम मुरुख रहि गेलौं। नहि तँ हमर की हाथ -पएर कोनो पातर-छितर अछि जे दरोगा नहि बनलौं। हमर जे दरोगाक नोकरी गेल से ओ मास्टर हमरा देत जे मारि कऽ स्कूल छोड़ा देलक? धिया-पुतामे सएह भेल, चेतनमे तहिना देखै छी। आब केना जीब?

तर्क-वितर्क करैत सोनमाकेँ शंका भेलै- भरिसक हमरो ने तँ बतहा दुख पकैड़ लेलकहैं मुदा केकरासँ पुछबै, के कहत, सभकेँ तँ सएह देखै छिऐ। की हम भरि जिनगी हरे जोतैत रहब, घोड़ापर चढ़ि कऽ शिकार खेलैले कहिया जाएब..?

दुनू हाथ माथपर लऽ सोनमा गाछक निच्चाँमे बैसल गुनधुनमे पड़ल सोचैत-विचारैत रहए, जहिना आमोक गाछ रोपल जाइ छै तहिना तँ खएरो-बगुरक रोपल जाइ छइ। जइसँ आममे मीठहा फल फड़ै छै आ खएर-बगुरमे काँट होइ छइ। मुदा रोपैक इलम तँ एक्के होइ छइ। ओना, अनेरुओ होइ छइ। आमोक गाछ अनेरुओ होइ छै आ खएरो-बगुरक।

साते दिनक छुट्टीमे महेन्द्र गाम आएल छला जे आठ दिन पहिनहि बीति गेलैन। मद्रास अबै-जाइक रस्ता सेहो पाँच दिनक अछि। छुट्टी बढ़बए पड़तैन। काल्हि भोरका गाड़ीसँ चलि जेता, ई बात सुबुधोकेँ बुझल छेलैन। तँए सुबुधक मनमे एलैन जे महेन्द्र बच्चेक संगी छी मुदा भरि मन गप एक्को दिन नै केलौं। काल्हि भोरमे चैलिए जाएत। तँए आइए भरि समय अछि। ..ई सोचि सुबुध अपन सभ काज छोड़ि महेन्द्रसँ गप करए एला।

दरबज्जापर बैस डॉ. महेन्द्र अपन पिताकेँ कहैत रहथिन- “बाबू, गामक जेते रोगीकेँ जँचलौं ओइमे एक्को गोरे पैघ रोग जेना टी. वी., कैंसर, एड्स इत्यादिसँ ग्रसित नइ अछि। आश्चर्य लगैए जे बिमारी शहर-बजारमे धरहल्लेसँ होइए, ओइ रोगक नामो-निशान गाममे नइ अछि। बहुत खुशीक बात छी।”

महेन्द्रक रिपोर्ट सुबुधो सुनलैन। ‘खुशीक बात’ सुनि रमाकान्त पुछलखिन- “तखन जे एते लोक बिमार अछि ओकरा कोन रोग छइ?”

मुस्कियाइत महेन्द्र बजला-

“साधारण रोग। जे बिना दबाइयो-दारूसँ ठीक भऽ सकै छइ। अगर ओकर खान-पान सुधैर जाइ तँ ई सभ रोग लोककेँ नै हेतइ। अदहासँ बेसी रोगी ओहेन अछि जेकरा कोनो रोग नहि, सिरिफ शंका छइ। मुदा जँ ओकरा दुइयो-चारिटा गोली नै दितिऐ तँ मन नै मानितै। तँए पुरजो बना देलिऐ आलासँ छातियो जाँचि लेलिऐ आ दू-चारिटा गोलियो दऽ देलिऐ।

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तो आ सुबुधो मने-मन हँसए लगला। हँसी रोकि सुबुध महेन्द्रकेँ पुछलखिन- “महेन्द्र भाय, काल्हि तँ तूँ चलि जेबह, फेर कहिया भेँट हेबह कहिया नहि, तँए तोरेसँ गप-सप्प करैले अपन सभ काज छोड़ि एलौं। जिनगीक तँ ढेरो गप होइत मुदा तोँ डॉक्टर छिअ आ हम शिक्षक छेलौं, जे आब नइ छी। मुदा रोगक कारण बुझैक जिज्ञासा तँ जरूर अछि। तँए अखन रोगेक सम्बन्धमे किछु बुझए चाहै छी।”

“की?”

“पहिल सवाल बताहेक लएह। जखन बताह दिस तकै छी तँ बुझि पड़ैए जे जेते मनुख अछि सभ बताह अछि।”

धड़फड़ा कऽ रमाकान्त बिच्चेमे पुछि देलखिन-

“से केना?”

सुबुध कहलकैन- “काका, जे एक नम्बर प्रशासक छैथ, जे एक इलाकासँ लऽ कऽ देश भरिक शासनमे दक्ष रहै छैथ, ओ परिवारक शासनमे लटपटा जाइ छैथ। तहिना देखै छी जे जे बड़का-बड़का हिसाबी गणितज्ञ छैथ

ओ जिनगीक हिसाबमे फेल भऽ जाइ छैथ। तहिना देखै छी, जे बड़का-बड़का इंजीनियर छैथ ओ परिवारक नक्शा बनबैमे चूकि जाइ छैथ। नेताक तँ कोनो बाते नहि। किएक तँ जहिना गोटे साल मानसुन अगते उतैर खूब बरसैए जइसँ बेंगक वृद्धि अधिक भऽ जाइ छै तहिना ओकरो छइ।

मुस्कियाइत रमाकान्त बजला-

“हँ, ठीके कहै छहक!”

“तेतबे नइ काका, कियो ताड़ी-दारू पीबै पाछू बताह अछि, तँ कियो धनक पाछू। कियो पढ़ैक पाछू बताह रहैए, तँ कियो ऐश-मौजक पाछू। कियो खाइ पाछू बताह, तँ कियो ओढ़ै-पहिरै पाछू। कियो काजेक पाछू बताह रहैए, तँ कियो अरामेक पाछू। कियो खेले-कुदक पाछू बताह रहैए, तँ कियो नाचे-तमाशाक पाछू। एते बताहक इलाज केतए हएत? तेतबे नहि, एक रंगक बताह दोसरकेँ बताह कहै छै आ दोसर तेसरकेँ। तहिना कियो शरीरक रोगसँ दुखित वा रोगी कहबैए तँ कियो अन्नक अभावसँ, तँ कियो वस्त्रक अभाव वा घरक अभावसँ दुखी अछि। तहिना कियो कोनो उकड्ड बात सुनलासँ दुखी भऽ जाइए। ऐ दृष्टिए जँ देखल जाए तँ केते लोक निरोग अछि? तेतबे नहि, जँ एक-एक गोरेमे देखल जाए तँ कए-कएटा रोग धेने छइ। मुदा ई सभ ऊपरी बात भेल। मूल प्रश्न अछि जे वसन्त-ऋृतुक गुलाब जकाँ जिनगी सभदिन फुलाइत रहए, जे... ।”

‘गुलाबक फूल जकाँ जिनगी केना फुलाइत रहत’ सुनि डॉक्टर महेन्द्र नमहर साँस छोड़लैन। आँखि उठा सुबुधक आँखिपर देलैन। सुबुधक नजैरसँ नजैर मिलते जेना महेन्द्रकेँ बुझि पड़लैन जे अथाह समुद्रमे सुबुध हेल रहला अछि। आ हम छोट-छीन पोखैरमे उग-डुम कऽ रहल छी। ई बात मनमे अबिते महेन्द्र माए-बापसँ लऽ कऽ अपन भैयारी होइत धिया-पुता दिस नजैर दौड़ौलैन। केते आशासँ पिताजी हमरा दुनू भाँइकेँ पढ़ौलैन मुदा हम हुनकासँ केते दूर हटि कऽ रहै छी। एते दूर हटल रहलापर केना हुनका सेवा कऽ सकबै न। आब हुनका सेवाक जरूरत दिनो-दिन बेसीए होइत जेतैन। उमेरो अधिक भेलैन आ

दिनानुदिन बढ़िते सेहो जेतैन। जेते उमेर बढ़तैन तेते शरीरक अंग कमजोर होइत जेतैन। जेते अंग कमजोर हेतैन तेते शरीरक क्रियामे रूकाबट औतैन। जइसँ केतेको नव-नव रोग शरीरमे प्रवेश करतैन। जेते रोग शरीरमे प्रवेश करतैन तेतेक कष्ट हेतैन...। की ओइ कष्टक जिम्मेदार हम नै हेबइ? हएब। मुदा तइले करै की छी? किछु नहि! अखन हम सभ दुनू भाँइ आ दुनूक पत्नी जुआन छी मुदा किछु दिनक उपरान्त तँ हमहूँ सभ हुनके जकाँ बुढ़ हएब। कोनो जरूरी नइ अछि जे हमरो सबहक बेटा हमरे सभ लग रहत। अखन तँ हम देशेमे छी। अन्तर एतबे अछि जे देशक एक छोरपर माए-बाबू छैथ आ दोसर छोरपर अपने छी। मुदा आइक जे हवा बहि रहल अछि जे आन-आन देश जा लोक नोकरी करैए आ जीवन-यापन करैए। जँ कहीं हमरो संगे सएह हुअए तखन की हएत..?

महेन्द्रक चेहरा उदास हुअ लगलैन। मन वौआए लगलैन। देहसँ पसेना निकलए लगलैन। बुझि पड़ए लगलैन जे देह शक्ति विहीन भऽ रहल अछि। एक्को पाइ लज्जैत देहमे ऐछे नहि। ..पसेनासँ तर-बत्तर होइत महेन्द्र सुबुधकेँ कहलखिन- "सुबुध भाय, जिनगीक अजीव रस्ता अछि। जेते मनुख ऐ धरतीपर जन्म नेने अछि, ओकरा तँ जिनगी बितबए पड़तै। मुदा जिनगीक रस्ता एहेन पेंचगर अछि जे बिरले कियो-कियो बुझि पबैए, बाँकी सभ औनाइते रहि जाइए।"

मुस्कियाइत सुबुध बजला- "महेन्द्र भाय, अहाँ तँ डॉक्टर छी। पढ़ल-लिखल लोकक बीच सदिखन रहबो करै छी। अहाँ किए एहेन बात कहि रहल छी? हम तँ जाबे मास्टरी केलौं ताबे धिया-पुताकेँ पढ़ेलौं आ जखन नोकरी छोड़ि गाममे रहै छी तखन जेहेन समाजमे रहै छी से देखबे करै छी।"

महेन्द्र- "भाय, अहाँ जे बात कहलौं ओ तँ आँखिक सोझमे जरूर अछि मुदा अहाँमे मनुख चिन्हैक आ ओकर चलैक रस्ताक लूरि जरूर अछि। अहाँ अपनाकेँ छिपा रहल छी।"

महेन्द्रक बात सुनि रमाकान्तकेँ मनमे उठलैन- जे आदमी घरसँ हजारो कोस दूर हटि कमा कऽ एते बनेलक ओ अपनाकेँ एते कमजोर किए बुझि रहल अछि? मुदा दुनू संगीक बीच नै आबि रमाकान्त गुम्मे रहला। बैसले -बैसल एक

नजैर महेन्द्रकेँ देखैथ आ एक नजैर सुबुधकेँ।

अपनाकेँ छिपाएब सुनि सुबुध बजला- "महेन्द्र भाय, जइ प्रश्नक बीच अहाँ ओझरा रहल छी ओ प्रश्न ओतेक ओझराएल नइ अछि। मुदा असानो नइ अछि। सिरिफ आँखिमे ज्योति आनि देखि-देखि कऽ चलैक अछि।"

दलानक आँगन दिसक भितुरका कोठरीमे बैस सुजाता खिड़की देने सभकेँ देखबो करै छेली आ गपो-सप्प सुनै छेली। कखनो मनमे खुशियो अबै छेलैन तँ कखनो मन करुएबो करैन। मुदा किछु बाजैथ नहि। बाजब उचितो नइ बुझै छेली। ओना, पढ़ल-लिखल रहने, कखनो-कखनो बजैक मन जरूर होइ छेलैन। मुदा किछुए दिनमे सासु मिथिलाक रीति-रेवाज आ बेवहारक सम्बन्धमे तेना कऽ बुझा देलकैन जे 'मद्रासक सुजाता', 'मिथिलाक सुजाता' बनि गेली। जइसँ मुँहपर नुआ रखब तँ उचित नइ बुझैथ मुदा बाजब-भुकबपर नजैर जरूर रखए लगली। किनकासँ कोन ढंगे बाजी, केते आवाजमे बाजी, कोन शब्दक प्रयोग करी, ऐ सभपर नजैर अबस्स रखए लगली। तँए सुजाताक बोली संयमित भऽ गेल रहैन। ओना, ऐठामक चालि-ढालि पूर्ण रूपे अंगीकार नै कऽ सकल छेली मुदा अंगीकार करैक पूर्ण चेष्टा तँ करिते छेली।

सुबुधक उट-पटाँगों बातसँ महेन्द्रकेँ दुख नइ होइ छेलैन। हल्लुको बातमे ओ गम्भीर रहस्यक अनुमान करए लगला। भलेँ ओ गम्भीर नहि, हल्लुके किएक ने होइ।

महेन्द्रक गम्भीर मुद्रा देखि सुबुधकेँ बुझि पड़लैन जे आब ओ गम्भीर बात बुझैक चेष्टामे उताहुल भऽ रहल छैथ तँए जिनगीक गम्भीर बातकेँ खोलि देब उचित होएत। बजला-

"महेन्द्र भाय, अपना गाममे सभसँ अगुआएल परिवार अहाँक अछि। चाहे धन-सम्पैतक हुअए वा पढ़ाइ-लिखाइमे। मुदा कनी गौर करि कऽ देखियौ जे एतेक धन-सम्पैतक उपरान्तो धनेक पाछू घरसँ हजारो कोस हटि कऽ रहै छी। अहीं कहू जे केते धन भेलापर मनमे संतोख होएत। मुदा ऐ प्रश्नक दोसरो पक्ष अछि, ओ अछि, 'विश्व-बन्धुत्व'क विचार। अपनो ऐठामक महान-महान

चिन्तक ऐ विचारकेँ सिरिफ मानबे नै केलैन बल्कि बनबैक प्रयासो केलैन। ओना, सैद्धान्तिक रूपमे विश्व-बन्धुत्वक विचार महान अछि मुदा जेते महान अछि ओइसँ कनियोँ कम बेवहारिक बनबैमे असान नइ अछि। लोक गामक वा आन गामक देवस्थानमे दीप जरबैसँ अर्थात् साँझ दइसँ पहिने अपना घरक गोसाँइ-आगूमे दीप जरबैए, जे उचिते नहि गम्भीर विचारक दिग्दर्शन सेहो छी। तहिना सभकेँ अपना लगसँ जिनगीक लीला शुरू करक चाहिऐ। अपनासँ आगू बढ़ि समाज, समाजसँ आगू बढ़ि इलाका, इलाकासँ आगू बढ़ि देश-दुनियाँ दिस बढ़ैक चाहिऐ। जँ से नै कऽ कियो परिवार-समाज छोड़ि आगू बढ़ि करैए तखन केतौ-ने-केतौ गड़बड़ जरूर हेतइ। जहिना दुनियाँमे समस्याग्रस्त मनुख असंख्य अछि तहिना तँ ओइ समस्यासँ मुकबलो करैबला मनुख असंख्य छैथ। एक्के आदमीक केलासँ तँ दुनियाँक समस्या नै मेटा सकत। तँए, जे जेतए जन्म नेने छैथ ओ ओतइ इमानदारी आ मेहनतसँ कर्ममे लगि जाइथ।”

सुबुधक प्रश्नकेँ स्वीकार करैत महेन्द्र बजला- “हँ! ई दायित्व तँ मनुखमात्रक छी।”

सुबुध- “जखन ई दायित्व सभ मनुखक छी तखन अपने गाममे देखियौ- ऐ सालसँ, जखन सभकेँ खेत भेलै, थोड़-बहुत खुशहाली गाममे आएल। मुदा ऐसँ पहिने तँ देखबे करै छेलिऐ जे ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छेलै, ने भरि देह वस्त्र आ ने रहैले सुरक्षित घर छेलइ। ओना, अखनो नै छै आ ने रोग-बियाधिसँ बँचैक सुरक्षित उपाय। बाजू, छेलै की नै छेलइ?”

धीमी स्वरमे डॉक्टर महेन्द्र बजला- “हँ से तँ ठीके।”

“आब अहीं कहू जे हमर-अहाँक जन्म तँ अही समाजमे भेल अछि। की हम ओते कमजोर छी जे गाम छोड़ि पड़ा जाइ, पड़ाइक मतलब जेतए पेट भरत ओतए जाएब। जँ कियो पड़ाइए तँ ओकरा कायर-कामचोर छोड़ि की कहबै? मुदा तैयो लोक जाइ किए अछि? एकरो कारण छइ। एकर कारण छै अधिक पाइ कमाएब वा कम मेहनतसँ जिनगी जीब। मुदा कम मेहनत आ असानीसँ जिनगी जीनाइ ताधैर सम्भव नइ अछि, जाधैर मेहनतसँ देशकेँ समृद्धिशाली नहि बना लेब। अगर जँ किछु गोरेकेँ समृद्धशाली भेने देशकेँ समृद्धशाली बुझब तँ ओ

बुझनाइ नेने-नेने गुलामीक जीनजीरमे बान्हि देत। कोनो देश गुलाम नै होइए, गुलाम होइए ओइ देशक मनुख आ गुलाम होइ छै ओकर जिनगीक क्रिया। पाइबला सबहक जादू समाजमे ओइ रूपे चलि रहल अछि जे जहिना हम -अहाँ पोखैरमे कनी बोर दऽ बनसी पाथि दइ छिऐ आ नमहर-नमहर माछ खेनाइक लोभे फँसि जाइए तहिना मनुखोक बीच चलि रहल अछि। जेकरा नजैर गड़ा कऽ देखए पड़त।”

सुबुधक विचारकेँ महेन्द्र मुड़ी डोला मानि लेलैन। मुदा मुड़ी डोलौला पछाइतो मनमे किछु शंका रहबे करैन। जे मुँहक हाव-भावसँ सुबुध बुझि गेलखिन। पुनः अपन विचारकेँ आगू बढ़बैत सुबुध बजला- “अपना ऐठामक दशा देखियौ। जेकरा अपना सभ क्रीम ब्रेन कहै छिऐ, ओ छी वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर इत्यादि। ओ सभ आन-आन देश जा अपन बुधिकेँ पाइबलाक हाथे बेच लइ छैथ। भलेँ किछु अधिक पाइ कमा लैत हेता मुदा ओ ओइ धनिककेँ आरो धन बढ़बै छैथ जे नव-नव मशीन, नव-नव हथियारक अनुसन्धान कऽ कऽ पछुएलहा देशपर आक्रमण कऽ वा बेपारिक माल बेच आरो पछुअबैए। एकटा सवाल आरो मनमे अबैत होएत। ओ ई जे अपना देशमे ओतेक साधन नइ अछि जे ओ अपन बुधिक सदुपयोग कऽ सकता। तँए अपन बुधिक सदुपयोग करैले आन देश जाइ छैथ। मुदा हमरा बु झने ऐ तर्कमे कोनो दम्म नइ अछि। आइ धरिक जे दुनियाँक इतिहास रहल ओ यएह रहल जे सम्पन्न देश सदिखन कमजोर देशकेँ माने पछुआएल देशकेँ लूटैत रहलै। चाहे लड़ाइक माध्यमसँ होइ वा बेपारक माध्यमसँ। जइसँ जेहो सम्पैत-साधन ओइ देशकेँ रहत, ओहो लूटा जाइए। जखन ओ लूटा जाएत तखन आगू-मुहेँ केना ससरत?”

माथ कुड़ियबैत महेन्द्र बजला- “तखन की करक चाही?”

सुबुध- “आँखि उठा कऽ देखियौ जे दुनियाँमे कियो बिना अ -आ पढ़ने विद्वान बनि सकल। वा बनि सकै छैथ? जँ से नहि, तखन पछुआएल देश वा लोक केना बिना कठिन मेहनत केने आगू बढ़ि सकैए? ..तँए पछुआएल देशक लोककेँ ऐ बातकेँ बुझए पड़तैन। जँ से नइ बुझि अगुएलहाक अनुकरण करता तँ पुनः गुलामीक बाटपर चढ़ि जेता। केते लाजिमी बात छी जे हम अपने बनौल हथियारसँ अपने घाइल होइ। आब दोसर दिस चलू... ।”

डॉक्टर महेन्द्रक चेहरा दिस देखैत पुनः सुबुध बाजए लगला- “अपना ऐठाम जे पारिवारिक ढाँचा अदौसँ रहल ओ दुनियाँमे सभसँ नीक रहल अछि। आइक चिन्तनमे दुनियाँ परिवारवाद दिस बढ़ल अछि। जे हमरा सबहक संयुक्त परिवारक धरोहर रूपमे अछि। मनुखक जिनगी केतेटा होइ छै, ऐपर नजैर दियौ। तीन अवस्था तँ सबहक होइ छइ। बच्चा, जुआनी आ बुढ़ाड़ीक। ऐमे दू अवस्था बच्चा आ बुढ़ाड़ीमे सभकेँ दोसराक मदैतक जरूरत पड़ै छइ। जे एकाकी परिवारमे नइ भऽ पाबि रहल अछि। आइक जे एकाकी परिवार बनि गेल अछि, ओ कुम्हारक घराड़ी जकाँ भऽ गेल अछि। जहिना कुम्हारक घराड़ी बेसी दिन धरि असथिर नै रहैत तहिना भऽ रहल अछि। बाप-माए केतौ, बेटा-पुतोहु केतौ आ धिया-पुता केतौ रहए लगल अछि। मानवीय सिनेह नष्ट भऽ रहल अछि। सभ जनै छी जे काँच बरतन जकाँ मनुख होइए। कखन की ऐ शरीरमे भऽ जाएत तेकर कोनो गारंटी नहि। स्वस्थ अवस्थामे तँ मनुख केतौ रहि जीब सकैए मुदा अस्वस्थक अवस्थामे तँ से नइ भऽ सकैत अछि। तखन केहेन कष्टकर जिनगी मनुखक सामने उपस्थित भऽ जाइ छइ। तोहूपर तँ नजैर दिअ पड़त।”

सुबुधक विचार महेन्द्रकेँ झकझोड़ि देलकैन। देहमे कम्पन आबि गेलैन। बोली थरथराए लगलैन। कनी काल धरि असथिर भऽ मनकेँ थीर केलैन। मन थीर होइते महेन्द्र बजला- “सुबुध भाय, भलेँ हाइ स्कूल धरि संगे-संग पढ़लौं मुदा जिनगीकेँ जइ गहराइसँ अहाँ चिन्हलौं ओ हम नै चीन्हि सकलौं। सच पुछी तँ आइ धरि अहाँकेँ साधारण हाइ स्कूलक शिक्षक मात्र बुझै छेलौं मुदा ओ भ्रम छल। संगी रहितो अहाँ गुरु छी। कखनो काल, जखन एकांत होइ छी, अपनो सोचैत रहै छी जे एतेक कमाइ छी, मुदा तैयो दिन-राति खटैत-खटैत बेचैने किए रहै छी, कखनो चैन किए ने भऽ पबै छी। कोन सुखक पाछू बेहाल छी से बुझिए ने रहल छी। टी.भी. घरमे अछि मुदा देखैक समय नइ भेटैए। खाइले बैसै छी तँ चिड़ै जकाँ दू-चारि कौर खाइत-खाइत मन उड़ि जाइए, जे फल्लाँकेँ समय देने छिऐ, नै जाएब तँ आमदनी कमि जाएत। तहिना सुतैयोमे होइए। मुदा एते फ्रिसानीक लाभ की भेटैए तँ सिरिफ पाइ। की पाइए जिनगी छी..?”

महेन्द्रक बदलल विचार सुनि, मुस्कियाइत सुबुध बजला- “भाय, पाइ

जिनगी चलबैक मात्र साधन छी, नइ कि जिनगी। पाइक भीतर एते पैघ दुर्विचार छिपल अछि जे मनुखकेँ कुकर्मी बना दइए। कुकर्मी बनलापर मनुषत्व समाप्त भऽ जाइ छइ। जइसँ चीन-पहचीन सेहो समाप्त भऽ जाइ छइ। तेतबे नहि, अपराधिक वृत्ति सेहो पनपए लगै छइ। अपराधिक वृत्ति मनुखमे एलापर पैघ-सँ-पैघ अपराधमे स्वत: धकला जाइए। तँए अपन जिनगीकेँ देखैत परिवार आ समाजक जिनगी देखब जिनगी छी। ओना, मनुख मात्रक सेवा-ले सेहो सदिखन तत्पर रहक चाही, जहाँ धरि भऽ सकए, करबो करी। मुदा कर्मक दुनियाँ बड़ कठिन अछि। एतेक कठिन अछि जे कर्मठ-सँ-कर्मठ लोक रस्तेमे थाकि जाइ छैथ। मुदा ओ थाकब हारब नहि, जीतब छी। जे समाज रूपी गाछ मौला गेल अछि ओइ जड़िमे तामि-कोरि-पटा कऽ नव जिनगी देबाक अछि। जइसँ ओ अनवरत फुलाइत रहत। ऐ काजमे अपनाकेँ समरपित कऽ देबाक अछि।"

सुबुधक संकल्पित विचारसँ महेन्द्रक विचार सक्कत बनए लगलैन। आँखिमे प्रखर ज्योति आबए लगलैन। दृढ़ स्वरमे पितो आ सुबुधोकेँ कहलखिन-"दुनू गोरेक बीच बजै छी जे सालमे एक्को दिन ओहेन नै बँचत जइ दि न हमरा चारू गोरेमे सँ कियो-ने-कियो ऐठाम नै रहब। ओना, मद्रासोमे अज-गज बहुत भऽ गेल अछि, ओकरो छोड़ब नीक नै होएत मुदा परिवारो आ समाजोकेँ नइ छोड़ब। मद्रासक कमाइ परिवारो आ समाजोमे लगाएब। अखन तँ ओते अनुभव नइ अछि मुदा चाहब जे समाजमे बिमारी-ले जे खरच हएत ओ पूरा करब। जहिना पिताजी समाजकेँ खाइक ओरियान कऽ देलखिन तहिना हमहूँ स्वस्थ्य-ले ओरियान जरूर करब। समाजकेँ कहि दियौन जे जिनका किनको कोनो रोग बिमारी होइ ओ आँखि मूनि कऽ ऐठाम चलि अबैथ। हुनकर इलाजक सेवा जरूर हेतैन। ऐ बेर बिना निआरे गाम आएल छेलौं तँए किछु लऽ कऽ नहि एलौं। मुदा कहै छी जे जहाँ धरि रोग जँचैक औजारक जोगार भऽ सकत ओ मद्रास जाइते पठा देब। तत्काल अखन भाबो गामेमे रहती। बौएलाल आ सुमित्रा सेहो रहबे करत। आब जे आएब ओ बेसी दिन-ले आएब। आ ऐठाम आबि अधिक-सँ-अधिक गोरेकेँ चिकित्साक ज्ञान करा गामसँ रोगकेँ भगा देब। समाज हम्मर छी आ हम समाजक छिऐ।" ❑❑❑ शब्द संख्या : 3095

(2004 इस्वी)

[1] बेल

[2] परिवार आ इलाज

[3] हीरानन्दक पत्नी

[4] बहिन, स्त्री आ सारि

[5] बाजा, लोटा, गिलास